सम्पूर्ण विल करने से विल-पावर की प्राप्ति

18.1.70

आज किसलिए बुलाया है? आज बापदादा क्या देख रहे हैं? एक एक सितारे को किस रूप से देख रहे हैं? सितारों में भी क्या विशेषता देखते हैं? हरेक सितारे की सम्पूर्णता की समीपता देख रहे हैं। आप सभी अपने को जानते हो कि कितना सम्पूर्णता के समीप पहुँचे हो? सम्पूर्णता के समीप पहुंचने की परख क्या होती है? सम्पूर्णता की परख यही है कि वह सभी बातों को सभी रीति से, सभी रूपों से परख सकते हैं। आज सारे दिन में क्या-क्या स्मृति आई? चित्र स्मृति में आया वा चरित्र स्मृति में आया? चित्र के साथ और कुछ याद आया? (शिक्षा याद आई, ड्रामा याद आया)। चित्र के साथ विचित्र भी याद आया? कितना समय चित्र की याद में थे कितना समय विचित्र की याद में थे या दोनों की याद मिली हुई थी? विचित्र के साथ चित्र को याद करने से खुद भी चरित्रवान बन जायेंगे। अगर सिर्फ़ चित्र और चरित्र को याद करेंगे तो चरित्र की ही याद रहेगी। इसलिए विचित्र के साथ चित्र और चरित्र याद आये। आज के दिन और भी कोई विशेष कार्य किया? सिर्फ़ याद में ही मग्न थे कि याद के साथ और भी कुछ किया? (विकर्म विनाश) - यह तो याद का परिणाम है। और विशेष क्या कर्त्तव्य किया? पूरा एक वर्ष का अपना चार्ट देखो? इस अव्यक्ति पढ़ाई, इस अव्यक्त स्नेह और सहयोग की रिज़ल्ट चेक की? इस अव्यक्त स्नेह और सहयोग का १२ मास का पेपर क्या है, चेकिंग की? चेकिंग करने के बाद ही अपने ऊपर अधिक अटेन्शन रख सकते हैं। तो आज के दिन स्वयं ही अपना पेपर चेक करना है। व्यक्तभाव से अव्यक्त भाव में कहाँ तक आगे बढ़े – यह चेकिंग करनी है। अगर अव्यक्ति स्थिति बढ़ी है तो अपने चलन में भी अलौकिक होंगे। अव्यक्त स्थिति की प्रैक्टिकल परख क्या है? अलौकिक चलन। इस लोक में रहते अलौकिक कहाँ तक बने हो? यह चेक करना है। इस वर्ष में पहली परीक्षा कौन सी हुई? इस निश्चय की परीक्षा में हरेक ने कितने-कितने मार्क्स ली। वह अपने आप को जानते हैं। निश्चय की परीक्षा तो हो गई। अब कौन सी परीक्षा होनी है? परीक्षा का मालूम होते भी फ़ेल हो जाते हैं। कोई-कोई के लिए यह बड़ा पेपर है

लेकिन कोई-कोई का अब बड़ा पेपर होना है। जैसे इस पेपर में निश्चय की परीक्षा हुई वैसे ही अब कौन सा पेपर होना है? व्यक्त में भी अब भी सहारा है। जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा हैं। पहले भी निमित्त ही थे। अब भी निमित्त हैं। यह पूरे परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है। अव्यक्त में तो साथ है ही। जितना स्नेह होता है उतना सहयोग भी मिलता है। स्नेह की कमी के कारण सहयोग भी कम मिलता है। साकार से स्नेह अर्थात् सारे सिजरे से स्नेह। साकार अकेला नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा तो उनके साथ परिवार है। माला के मणके हो ना। माला में अकेला मणका नहीं होता है। माला में एक ही याद के सूत्र में, स्नेह में परिवार समाया हुआ है। तो यह जैसे माला में स्नेह के सूत्र में पिरोये हुए हैं। दैवी कुल तो भविष्य में है, इस ब्राह्मण कुल का बहुत महत्व है। जितना-जितना ब्राह्मण कुल से स्नेह और समीपता होगी उतना ही दैवी राज्य में समीपता होगी। साकार में क्या सबूत देखा? बापदादा किसको आगे रखते हैं? बच्चों को। क्योंकि बच्चों के बिना माँ बाप का नाम बाला नहीं हो सकता। तो जैसे साकार में कर्म करके दिखाया वही फ़ालो करना है। यहाँ पेपर पहले ही सुनाया जाता है। निश्चय का पेपर तो हुआ। लेकिन अब पेपर होना है हरेक के स्नेह, सहयोग और शक्ति का। अब वह समय नज़दीक आ रहा है जिसमें आप का भी कल्प पहले वाला चित्र प्रत्यक्ष होना है। अनेक प्रकार की समस्याओं को परिवर्तन के लिए अंगुली देनी है। कलियुगी पहाड़ तो पार होना ही है। लेकिन इस वर्ष में मन की समस्यायें, तन की समस्यायें, वायुमण्डल की समस्यायें सर्व समस्याओं के पहाड़ को स्नेह और सहयोग की अंगुली देनी है। तन की समस्या भी आनी है। लौकिक सम्बन्ध में तो पास हो गये। लेकिन यह जो अलौकिक सम्बन्ध है, उस सम्बन्ध द्वारा भी छोटी-मोटी समस्यायें आयेंगी। लेकिन यह समस्यायें सभी पेपर समझना, यह प्रैक्टिकल बातें नहीं समझना। यह पेपर समझना। अगर पेपर समझकर उनको पास करेंगे तो पास हो जायेंगे। अभी देखना है पेपर आउट होते भी कितने पास होते हैं। फिर इस पेपर की रिज़ल्ट सुनायेंगे। इस समय अपने में विल पावर धारण करना है। अभी विल पावर नहीं आई है। यथा योग्य यथा शक्ति पावर है।

विल पावर कैसे आ सकेगी? विल पावर आने का साधन कौन सा है? विल

पावर की कमी क्यों है? उसके कारण का पता है? याद की कमी भी क्यों है? बाप ने साकार में कर्म कर के दिखाया है, विल पावर कैसे आई। पहला पहला कदम कौन सा उठाया? सभी कुछ विल कर दिया? विल करने में देरी तो नहीं की? जो भी बुराई है अन्दर वा बाहर। वह सम्पूर्ण विल नहीं की है तब तक विल पावर आ नहीं सकती। साकार ने कुछ सोचा क्या? कि कैसे होगा, क्या होगा, यह कब सोचा? अगर कोई सोच-सोच कर विल करता है तो उसका इतना फल नहीं मिलता। जैसे झाटकू और बिगर झाटकू का फ़र्क होता है। पहले स्वीकार कौन होता है? जो पहले स्वीकार होता है उनको नम्बर वन की शक्ति मिलती है। जो पहले स्वीकार नहीं होते उनको शक्ति भी इतनी प्राप्त नहीं होती है। इस बात पर सोचना। बापदादा वर्तमान के साथ भविष्य भी जानता है। तो भविष्य कर्मबन्धन की रस्सियाँ देखकर इतनी तेज़ दौड़ी नहीं पहनाते हैं। कर्मबन्धन की रस्सियों को काटना अपना कर्त्तव्य है। अगर कोई भी रस्सी टूटी हुई नहीं होती है तो मन की खिंचावट होती रहती है। इसलिए रस्सियाँ कटवाने के लिए ठहरे हैं। रस्सियाँ अगर टूटी हुई हैं तो फिर कोई रुक सकता है? छूटा हुआ कब कोई भी बन्धन में रुक नहीं सकता।

आज के दिवस पर क्या करना है और अगले वर्ष के लिए क्या तैयारी करनी है – वह सभी याद रखना है। विदेही को युगल बनायेंगे तो विदेही बनने में सहयोग मिलेगा। विदेही बनने में सहयोग कम मिलता है, सफ़लता कम देखने में आती तो समझना चाहिए कि विदेही को युगल नहीं बनाया है। कमाल इसको कहा जाता है जो मुश्किल बात को सहज करे। सहज बातों को पार करना कोई कमाल नहीं है। मुश्किलातों को पार करना वह है कमाल। मुश्किलातों को मुश्किल न समझकर चलना यह है कमाल। अगर मुश्किलातों में ज़रा भी मुरझाया तो क्या होगा?...एक सेकेण्ड में सौदा करने वाले कहाँ फँसते नहीं हैं। फास्ट जाने वाला कहाँ फँसेगा नहीं। फँसने वाला फास्ट नहीं जा सकेगा। लास्ट स्थिति को देख फास्ट जाना है। अब भी फास्ट जाने का चान्स है। सिर्फ़ एक हाई जम्प लगाना है। लास्ट में फास्ट नहीं जा सकेंगे। अच्छा–

अव्यक्त स्थिति द्वारा सेवा

18.1.71

आज आवाज़ से परे जाने का दिन रखा हुआ है। तो बापदादा भी आवाज़ में कैसे आयें? आवाज़ से परे रहने का अभ्यास बहुत आवश्यक है। आवाज़ में आकर जो आत्माओं की सेवा करते हो उससे अधिक आवाज़ से परे स्थिति में स्थित होकर सेवा करने से सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण देख सकेंगे। अपनी अव्यक्ति स्थिति होने से अन्य आत्माओं को भी अव्यक्त स्थिति का एक सेकेण्ड में अनुभव कराया तो वह प्रत्यक्ष फल स्वरूप आपके सम्मुख दिखाई देगा। आवाज़ से परे स्थिति में स्थित हो फिर आवाज़ में आने से वह आवाज़, आवाज़ नहीं लगेगा। लेकिन उस आवाज़ में भी अव्यक्ति वायब्रेशन का प्रवाह किसी को भी बाप की तरफ आकर्षित करेगा। वह आवाज़ सुनते हुये उन्हों को आपकी अव्यक्त स्थिति का अनुभव होने लगेगा। जैसे इस साकार सृष्टि में छोटे बच्चों को लोरी देते हैं, वह भी आवाज होता है लेकिन वह आवाज़, आवाज़ से परे ले जाने का साधन होता है। ऐसे ही अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर आवाज़ में आओ तो आवाज़ से परे स्थिति का अनुभव करा सकते हो। एक सेकेण्ड की अव्यक्त स्थिति का अनुभव आत्मा को अविनाशी सम्बन्ध में जोड़ सकता है। ऐसा अटूट सम्बन्ध जुड़ जाता है जो माया भी उस अनुभवी आत्मा को हिला नहीं सकती। सिर्फ आवाज़ द्वारा प्रभावित हुई आत्माएं अनेक आवाज़ सुनने से अवागमन में आ जाती हैं। लेकिन अव्यक्त स्थिति में स्थित हुए आवाज़ द्वारा अनुभवी आत्मायें अवागमन से छूट जाती हैं। ऐसी आत्मा के ऊपर किसी भी रूप का प्रभाव नहीं पड़ सकता। सदैव अपने को कम्बाइन्ड समझ, कम्बाइन्ड रूप की सर्विस करो अर्थात्

अव्यक्त स्थिति और फिर आवाज।

दोनों की कम्बाइन्ड रूप की सर्विस वारिस बनायेगी। सिर्फ आवाज़ द्वारा सर्विस करने से प्रजा बनती जा रही है। तो अब सर्विस में नवीनता लाओ। (इस प्रकार की सर्विस करने का साधन कौन सा है?) जिस समय सर्विस करते हो उस समय मंथन चलता है, लेकिन याद में मगन यह स्टेज मंथन की स्टेज से कम होती है। दूसरे के तरफ ध्यान अधिक रहता है। अपनी अव्यक्त स्थिति की तरफ ध्यान कम रहता है। इस कारण ज्ञान के विस्तार का प्रभाव पड़ता है लेकिन लगन में मगन रहने का प्रभाव कम दिखाई देता है। रिज़ल्ट में यह कहते हैं कि ज्ञान बहुत ऊंचा है। लेकिन मगन रहना है यह हिम्मत नहीं रखते। क्योंकि अव्यक्त स्थिति द्वारा लगन का अर्थात् सम्बन्ध जोड़ने का अनुभव नहीं किया है। बाकी थोड़ा कणा-दाना लेने से प्रजा बन जाती है। अब के सम्बन्ध जुटने से ही भविष्य सम्बन्ध में आयेंगे। नहीं तो प्रजा में। तो नवीनता यही लानी है। जो एक सेकेण्ड में अव्यक्ति अनुभव द्वारा सम्बन्ध जोड़ना है। सम्बन्ध और सम्पर्क दोनों में फर्क है। सम्पर्क में आते हैं, सम्बन्ध में नहीं आते। समझा।

आज के दिन अव्यक्त स्थिति का अनुभव किया है। यही अनुभव सदाकाल कायम रखते रहो तो औरों को भी अनुभव करा सकेंगे। आजकल वाणी व अन्य साधन अनेक प्रकार से अनेकों द्वारा आत्माओं को प्रभावित कर रहे हैं। लेकिन अनुभव सिवाए आप लोगों के अन्य कोई नहीं कर सकते हैं। न करा सकते हैं। इसलिये आज के समय में यह अनुभव कराने की आवश्यकता है। सभी के अन्दर अभिलाषा भी है, थोड़े समय में अनुभव करने के इच्छुक हैं। सुनने की इच्छुक नहीं हैं। अनुभव में स्थित रह अनुभव कराओ। सभी का स्नेह वतन में मिला। सुनाया था तीन प्रकार की याद और स्नेह वतन में पहुँची। वियोगी, योगी और स्नेही। तीनों ही रूप का याद प्यार बापदादा को मिला। रिवाइज कोर्स के वर्ष भी समाप्त होते जा रहे हैं। वर्ष समाप्त होने से स्टूडेंट को अपनी रिजल्ट निकालनी होती है। तो इस वर्ष की रिज़ल्ट में हरेक को अपनी कौन सी रिज़ल्ट निकालनी है? इसकी मुख्य चार बातें ध्यान में रखनी हैं। एक-अपने में सर्व प्रकार की श्रेष्ठता कितनी है? दूसरा-सम्पूर्णता में वा सर्व के सम्बन्ध में समीपता कितनी आई है? तीसरा-अपने में वा दूसरों के सम्बन्ध में सन्तुष्टता कहाँ तक आई है? और चौथा-अपने में शूरवीरता कहाँ तक आई है? यह चार बातें अपने में चेक करनी हैं। आज के दिन अपनी रिज़ल्ट को चेक करने का कर्त्तव्य पहले करना है। आज का दिवस सिर्फ स्मृति दिवस नहीं मनाना लेकिन आज का दिवस समर्थी बढ़ाने का दिवस मनाना। आज का दिवस स्थिति वा स्टेज ट्रान्सफर करने का दिवस समझो। जैसे आजकल ट्रान्सपेरेंट चीजें अच्छी लगती हैं ना। वैसे अपने को भी ऐसी ट्रान्सपेरेंट स्थिति में ट्रान्सफर करना है। आज के दिन का महत्व समझा। ऐसे ट्रान्सपरेंट हो जाओ जो आपके शरीर के अन्दर जो आत्मा विराजमान है वह स्पष्ट सभी को दिखाई दे। आपका आत्मिक स्वरूप उन्हों को अपने आत्मिक स्वरूप का साक्षात्कार कराये। इसको ही कहते हैं अव्यक्ति वा आत्मिक स्थिति का अनुभव कराना।

आज याद के यात्रा की रिजल्ट क्या थी? स्नेह स्वरूप थी या शक्ति स्वरूप थी? यह स्नेह भी शक्ति का वरदान प्राप्त कराता है। तो आज स्नेह का वरदान प्राप्त करने का दिवस है। एक होती है पुरुषार्थ से प्राप्ति दूसरी होती है वरदान से प्राप्ति। तो आज का दिन पुरुषार्थ से शक्ति

प्राप्त करने का नहीं लेकिन स्नेह द्वारा शक्ति का वरदान प्राप्त करने का दिवस है। आज के दिन को विशेष वरदान का दिन समझना। स्नेह द्वारा कोई भी वरदाता से वर प्राप्त हो सकता है। समझा पुरुषार्थ द्वारा नहीं लेकिन स्नेह द्वारा। किसने कितना वरदान लिया है वह हरेक के ऊपर है। लेकिन स्नेह द्वारा सभी समीप आकर वरदान प्राप्त कर सकते हैं। वरदान के दिवस को जितना जो समझ सके उतना ही पा सकता है। कैच करने वाले की कमाल होती है। आज के वरदान दिवस पर जो जितना कैच कर सके उन्होंने उतना ही वरदान प्राप्त किया। जैसे पुरुषार्थ करते हो एक बाप के सिवाए और कोई याद आकर्षित न करे ऐसे आज का दिन सहज याद का अनुभव किया। अच्छा।

18.1.73

समानता और समीपता

सदा निर्मान और निर्माण करने के कार्य में सदा तत्पर रहने वाले और बच्चों को आप-समान स्वमान-धारी बनाने वाले बाबा बोले:—

क्या बापदादा समान स्वमान-धारी, स्वदर्शन-चक्रधारी और निर्माण बने हो? जितना-जितना इन विशेष धारणाओं में समान बनते जाते हो उतना ही समय को समीप लाते हो। समय को जानने के लिये अभी कितना समय पडा है? इसकी परख आपकी धारणाओं में समान स्थिति है। अब बताओ कि समय कितना समीप है? समानता में समीप हो तो समय भी समीप है। इस प्रोग्राम के बीच अपने-आपको परखने व अपने द्वारा समय को जानने का समय मिला है। इस विशेष मास के अन्दर दो मुख्य बातें मुख्य रूप से लक्ष्य के रूप में सामने रखनी हैं। वो कौन-सी? एक तो लव (त्दन) और दूसरा लवलीन।

कर्म में, वाणी में, सम्पर्क में व सम्बन्ध में लव और स्मृति में व स्थिति में लवलीन रहना है। जो जितना लवली त्दनत्) होगा, वह उतना ही लवलीन रह सकता है। इस लवलीन स्थिति को मनुष्यात्माओं ने लीन की अवस्था कह दिया है। बाप में लव खत्म करके सिर्फ लीन शब्द को पकड़ लिया है। तो इस मास के अन्दर इन दोनों ही मुख्य विशेषताओं की धारण कर बापदादा समान बनना है। बापदादा की मुख्य विशेषता, जिसने कि आप सबको विशेष बनाया, सब-कुछ भुलाया और देही अभिमानी बनाया, वह यही थी लव और लवलीन।

लव ने आप सबको भी एक सेकेण्ड में ५००० वर्ष की विस्मृत हुई बातों को स्मृति में लाया है, सर्व सम्बन्ध में लाया है, सर्वस्व त्यागी बनाया है। जबकि बाप ने एक ही विशेषता से एक ही सेकेण्ड में अपना बना लिया तो आप सब भी इस विशेषता को धारण कर बाप-समान बने हो? जबकि साकार बाप में इस विशेषता में परसेन्टेज (जीमर्हूा) नहीं देखी, परफेक्ट (र्जीमू) ही देखा तो आप विशेष आआत्माओं और बाप समान बनी हुई आत्माओं को भी परफेक्ट होना है। इस मुख्य विशेषता में परसेन्टेज नहीं होनी चाहिए। परफेक्ट होना है। क्योंकि इस द्वारा ही सर्व आत्माओं के भाग्य व लक्क को जगा सकते हो। लक्क (luck) के लॉक (lock) की चाबी (key) कौन-सी है?—'लव'। लव की लॉक की 'की' (key) है। यह 'मास्टर-की' (master-key) है। कैसे भी दुर्भाग्यशाली को भाग्यशाली बनाती है। क्या इसके स्वयं अनुभवी हो?

जितना-जितना बापदादा से लव जुटता है, उतना ही बुद्धि का ताला खुलता जाता है। लव कम तो लक्क भी कम। तो सर्व आत्माओं के लक्क के लॉक को खोलने वाली चाबी आपके पास है? कहीं इस लक्क की चाबी को खो तो नहीं देते हो? या माया भिन्न-भिन्न रूपों व रंगों में इस चाबी को चुरा तो नहीं लेती है? माया की भी नजर

इसी चाबी पर है। इसलिये इस चाबी को सदा कायम रखना है। लव अनेक वस्तुओं में होता है। यदि कोई भी वस्तु में लव है तो बाप से लव परसेन्टेज में हो जाता है। अपनी देह में, अपनी कोई भी वस्तु में यदि अपनापन है तो समझो कि लव में परसेन्टेज है। अपनेपन को मिटाना ही बाप की समानता को लाना है। जहाँ अपना-पन है, वहाँ बापदादा सदा साथ नहीं हैं।

परसेन्टेज वाली कभी भी परफेक्ट नहीं बन सकता। परसेन्टेज अर्थात् डिफेक्ट (defect) वाला कभी परफेक्ट नहीं बन सकता, इसलिये इस वर्ष में परसेन्टेज को मिटा कर परफेक्ट बनो। तब यह वर्ष विनाश की वर्षा लायेगा। एक वर्ष का समय दे रहे हैं जो कि फिर यह उलहाना न दें कि ''हमको क्या पता'' एक वर्ष अनेक वर्षो की श्रेष्ठ प्रारब्ध बनाने के निमित्त है। अपने आप ही चेकर (checker) बन अपने आप को चैक (check) करना अगर मुख्य इस बात में अपने को परफेक्ट बनाया तो अनेक प्रकार के डिफेक्ट स्वत: ही समाप्त हो जायेंगे यह तो सहज पुरुषार्थ है ना? अगर स्वयं बाप के साथ लव में लवलीन रहेंगे तो औरों को भी सहज ही आप-समान व बाप-समान बना सकेंगे। तो यह वर्ष बाप-समान बनने का लक्ष्य रख कर चलेंगे, तो बापदादा भी ऐसे बच्चों को ''तत् त्वम्'' का वरदान देने के लिये बच्चों को ड्रामानुसार निमित्त बना हुआ है। इस वर्ष की विशेषता बाप-समान बन समय को समीप लाने का है। समय की विशेषता को स्वयं में लाना है।

ऐसे सदा लवली-लवलीन रहने वाले बाप-समान निर्माण और निर्माण करने के कर्त्तव्य में सदा तत्पर रहने वाले,समय की विशेषता को स्वयं में लाने वाले श्रेष्ठ समान में सदा स्थित रहने वाले श्रेष्ठ और समान आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते। ओम शान्ति।

इस वाणी का सार

1. यदि कोई भी वस्तु में और अपनी देह में अपना-पन है तो ज़रूर बाप से लव में परसेन्टेज है, अपने-पन को मिटाना ही स्वयं में बाप की समानता को लाना है।

2. दो मुख्य बातें लक्ष्य रूप में सामने रखनी हैं। एक तो 'लव दूसरा 'लवलीन'। जो जितना लवली होगा, वह उतना ही लवलीन रह सकता है।

साक्षात्कार मूर्त और फरिश्ता मूर्त बनने का निमन्त्रण

18.1.75

पवित्र भव और योगी भव का अमर वरदान देने वाले, सर्व आत्माओं के स्नेही, परमपिता शिव बोले:–

सर्व-स्नेही आत्माओं को स्नेह का रेसपांस (Responwe; जवाब) स्नेह से दे रहे हैं। नैनों के असुवन मोती, गले की माला जो बच्चों ने बापदादा को पहनाई है, उसके रिटर्न में ज्ञान-रत्नों की माला बाप-दादा दे रहे हैं। आज अमृत वेले हर-एक स्नेही बच्चे का संकल्प बाप-दादा के पास पहुँच गया। हर-एक की रूह-रूहान, हर-एक का शुभ संकल्प, हर-एक का किया हुआ वायदा पहऊँचा। उस सर्व रूह-रूहान के रेसपांस में बाप-दादा स्वयं अव्यक्त में मिलने की तमन्ना (अभिलाषा) कर रहे हैं। बाप को बच्चे व्यक्त में बुलाते हैं और बाप बच्चों को अव्यक्त वतन में बुला रहे हैं। अव्यक्त वतन-वासी बाप-समान बनना – यही बच्चों के प्रति बाप की शुभ इच्छा है। अब बताओ, कितने समय में अव्यक्त वतन पधारेंगे? अव्यक्त वतन का मिलन कितना सुन्दर है – उसको जानते हो?

बाप-दादा भी बच्चों के सिवाय वापिस घर नहीं जा सकते हैं। घर जाने से पहले अव्यक्त फरिश्तों की महफिल अव्यक्त वतन में होती है। उस महफिल में बाप-दादा सब स्नेही बच्चों का आह्वान कर रहे हैं। बच्चे बाप का पुरानी दुनिया में आह्वान करते व बुलाते हैं लेकिन बाप आप बच्चों को फरिश्तों की दुनिया में बुला रहे हैं, जहाँ से साथ-साथ रूहों की दुनिया में चलेंगे। यह अलौकिक अव्यक्त निमन्त्रण भाता है? अगर भाता है तो क्या व्यक्त जन्म, व्यक्त भाव भूलना नहीं आता है? बाप समान निरन्तर फरिश्ता बनना नहीं आता? एक सेकेण्ड का संकल्प निरन्तर दृढ़ करना नहीं आता? बनना ही है, आना ही है – ऐसे सेकेण्ड के संकल्प की टिकटें लेनी नहीं आती? क्या शक्ति रूपी खजाना

होते हुए भी यह टिकट रिजर्व नहीं करा सकते? विश्व की सर्व आत्माओं को नजर से निहाल कर उन्हें भी अपने साथ मुक्ति-जीवनमुक्ति रूपी वर्सा बाप से नहीं दिला सकते हो? बाप के या अपने भक्तों को भटकने से जल्दी-से-जल्दी छुड़ाने का शुभ संकल्प तीव्र रूप से उत्पन्न होता है? रहमदिल बाप के बच्चे हो; दु:ख-अशान्ति में तड़पती हुई आत्माओं को देखते हुए सहन कर सकते हो? क्या रहम नहीं आता? अनेक प्रकार के विनाशी सुख-शान्ति में विचलित हुई आत्माएँ, जो बाप को और अपने आप को भूल चुकी हैं, ऐसी भूली हुई आत्माओं पर कल्याण की भावना द्वारा उन्हें भी यथार्थ मंजिल बता कर अविनाशी प्राप्ति की अंजलि देने का संकल्प उत्पन्न नहीं होता?

अब तो समय-प्रमाण सप्ताह कोर्स के बजाय अपने वरदानों द्वारा, अपनी सर्वशक्तियों के द्वारा सेकेण्ड का कोर्स बताओ; तब ही सर्व आत्माओं को रूहों की दुनिया में बाप के साथ ले जा सकेंगे। अशरीरी भव, निराकारी भव, निरहंकारी और निर्विकारी भव का वरदान, वरदाता द्वारा प्राप्त हो चुका है न? अब ऐसे वरदान को साकार रूप में लाओ! अर्थात् स्वयं को ज्ञान-मूर्त, याद-मूर्त और साक्षात्कार-मूर्त बनाओ। जो भी सामने आये, उसे मस्तक द्वारा मस्तक-मणि दिखाई दे, नैनों द्वारा ज्वाला दिखाई दे और मुख द्वारा वरदान के बोल निकलते हुए दिखाई दें। जैसे अब तक बाप-दादा के महावाक्यों को साकार स्वरूप देने के लिए निमित्त बनते आये हो, अब इस स्वरूप को साकार बनाओ।

बाप-दादा बच्चों के स्नेह, सहयोग और सेवा पर बार-बार सन्तुष्टता के पुष्प चढ़ा रहे हैं। मेहनत पर धन्यवाद दे रहे हैं। साथ-साथ भविष्य के लिये निमन्त्रण भी देते हैं कि अब जल्दी,जल्दी तीव्र गति से हो रही ईश्वरीय सेवा को सम्पन्न करो, अर्थातृ स्वयं को बाप-समान बनाओ। बाप के आह्वान की पसारी हुई बांहों में समा जाओ और समान बन जाओ! स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप है – समान बन जाना!

आज ही बाप-दादा के साथ चलोगे? ऐसे एवर रेडी (Ever-ready) हो या रही हुई सेवा का शुभ सम्बन्ध खींचेगा? सर्व कार्य सम्पन्न कर दिया है या अभी रहा हुआ है? वह फिर वतन से करेंगे? एक सेकेण्ड में सर्व सम्बन्ध के लिए सेवा भुलाने का पुरुषार्थ करते हो। ऐसे ही अपना निजी-स्वरूप व वरदानी

स्वरूप सदा स्मृति में रहना चाहिए। अपवित्रता का और विस्मृति का नाम-निशान भी न रहे। इसको कहा जाता है – वरदान का कोर्स करना। ऐसा कोर्स किया है या करना है?

जैसे आप लोग साप्ताहिक कोर्स समाप्त करने के सिवाय किसी भी आत्मा को क्लास में जाने नहीं देते हो, ऐसे ही ब्राह्मण बच्चे, जो यह प्रैक्टिकल कोर्स समाप्त नहीं करते, तो जानते हो कि बाप-दादा उन्हें कौन-से क्लास में जाने नहीं देतें? वे फर्स्ट-क्लास में दाखिल नहीं हो सकते। फर्स्ट क्लास कौन-सा है? जब आप लोग उन्हों को क्लास में जाने नहीं देते तो ड्रामा भी फर्स्ट-क्लास में जाने का अधिकारी नहीं बना सकता। फर्स्ट क्लास में जाने के लिए यह दो मुख्य वरदान प्रैक्टिकल रूप में चाहिए। विस्मृति व अपवित्रता क्या होती है? – इसकी अविद्या हो जाए। तुम संगम पर उपस्थित हो ना? तो ऐसे अनुभव हो कि यह संस्कार व स्वरूप मेरा नहीं है बल्कि मेरे पूर्व जन्म का था। अब नहीं है। मैं ब्राह्मण हूँ और ये तो शूद्रों के संस्कार व स्वरूप है ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरे के संस्कार हैं – ऐसा अनुभव होना, इसको कहा जाता है – न्यारा और प्यारा। जैसे देह और देही दोनों अलग-अलग दो वस्तुएँ हैं, लेकिन अज्ञान-वश दोनों को मिला दिया गया है; मेरे को मैं समझ लिया गया है और इसी गलती के कारण इतनी परेशानी, दु:ख तथा अशान्ति प्राप्त की है। ऐसे ही यह अपवित्रता और विस्मृति के संस्कार, जो मेरे, अर्थात् ब्राह्मणपन के नहीं हैं; शूद्रपन के हैं, इन को भी मेरे समझने से माया के वश हो जाते हैं और फिर परेशान अर्थात् ब्राह्मणपन की शान से परे (दूर) हो जाते हो। यह छोटी-सी भूल चेक (जाँच) करो कि यह मेरा संस्कार तो नहीं, यह मेरा स्वरूप तो नहीं। समझा? तो इस वरदान – पवित्र भव और योगी भव – को प्रैक्टिकल स्वरूप में लाओ; तब ही बाप-समान और बाप के समीप जाने के अधिकारी बन सकते हो।

आज कल्प पहले वाले, बहुत काल से बिछुड़े हुए बाप की याद में तड़पने वाले व अव्यक्त मिलन मनाने के शुभ संकल्प में रमण करने वाले, अपनी स्नेह की डोर से बाप-दादा को भी बान्धने वाले, अव्यक्त को भी आप-समान व्यक्त में लाने वाले, नये-नये बच्चे व साकारी देश में दूर-देशी बच्चे जो हैं, उन्हों के प्रति विशेष मिलने के लिये बाप-दादा को भी आना पड़ा है तो शक्तिशाली कौन

हुए? बांधने वाले या बन्धने वाले। बाप कहते हैं – वाह बच्चे वाह! शाबाश बच्चे! नयों के प्रति विशेष बापदादा का स्नेह है क्योंकि निश्चय की सदा विजय है। विशेष स्नेह का कारण यह है कि नये बच्चे सदा अव्यक्त मिलन मनाने की मेहनत में रहते हैं। अव्यक्त रूप द्वारा व्यक्त रूप से किये हुए चरित्रों का अनुभव करने के सदा शुभ आशा के दीपक जगाये हुए रहते हैं। ऐसी मेहनत करने वालों को फल देने के लिए बाप-दादा को भी विशेष याद स्वत: ही रहती हैं। इसलिये बाप-दादा आप की याद, आज की गुडमार्निंग व नमस्ते पहले विशेष चारों ओर के नये-नये बच्चों को दे रहे हैं, साथ में सब बच्चे तो हैं ही। अव्यक्त रूप में अव्यक्त मुलाकात तो सदाकाल की है। ऐसे वरदाता बच्चों को याद-प्यार और नमस्ते।

अव्यक्त वाणी का सार

1. स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप है – बाप के समान बन जाना।

2. बाप की वत्सों के प्रति यही शुभ इच्छा है कि वे बाप के समान बनें।

3. घर जाने से पहले अव्यक्त फरिश्तों की महफिल अव्यक्त वतन में होती है। इस महफिल में सर्व-स्नेही बाप-दादा बच्चों का आह्वान कर रहे हैं।

4. अब तो समय-प्रमाण साप्ताहिक कोर्स की बजाय अपने वरदानों द्वारा और अपनी सर्वशक्तियों द्वारा सेकेण्ड का कोर्स कराओ। तब ही आप सर्वआत्माओं को बाप के साथ रूहों की दुनिया में ले जा सकोगे।

5. पवित्र-भव और योगी-भव – ये वरदान प्रैक्टिकल स्वरूप में लाओ। तब ही बाप समान बन सकते हैं और बाप के समीप जाने के अधिकारी बन सकते हो।

6. विस्मृति और अपवित्रता क्या होती है, उसकी भी अविद्या हो जाय – इसको कहा जाता है वरदान का कोर्स करना।

***

परिवर्तन के लिये प्रतिज्ञा

18.1.75

मधुबन रूपी परिवर्तन भूमि पर पवित्रता का वरदान देने वाले शिव बाबा सेवा-केन्द्रों से आये हुए वत्सों से बोले –

मधुबन की क्या महिमा करते हो? कहते हो कि यह परिवर्तन भूमि है। आप सभी परिवर्तन भूमि या वरदान भूमि में आये हुए हो। स्वयं में व अन्य में वरदान का अनुभव करते हो? यहाँ आना अर्थात् वरदान पाना, परिवर्तन करना। अब क्या परिवर्तन करना है? जो विशेष कमजोरी व विशेष संस्कार समय-प्रति-समय विघ्न रूप बनता है, ऐसा संस्कार व ऐसी कमजोरी यहाँ परिवर्तन करके जाना है। तभी कहेगे कि स्वयं में परिवर्तन लाया। विशेष उमंग, उत्साह और लगन से यहाँ तक पहुँचते हो तो यहाँ मधुबन में अपनी लगन को ऐसी अग्नि का रूप बनाओ कि जिस अग्नि में सर्व व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुए पुराने संस्कार भस्म हो जाएँ।

मधुबन को कहा जाता है – अश्वमेघ रुद्र-ज्ञान महायज्ञ। यज्ञ में क्या किया जाता है? स्वाहा किया जाता है। आप बच्चे भी अमृत वेले उठ रोज यज्ञ रचते हो लगन की अग्नि का। जिस लगन रूपी अग्नि में अपनी कमज़ोरी स्वाहा करते हो। लेकिन यह महायज्ञ है। मधुबन में आना माना महायज्ञ में आना। मधुबन को क्यों महायज्ञ कहा है? क्योंकि यहाँ अनेक आत्माओं की लगन की अग्नि का समूह है। तो इसका लाभ उठाना चाहिए न। जैसे कई बार स्वत: प्रतिज्ञा करते हो, संकल्प लेते हो, वैसे ही मधुबन में आप भी ऐसी प्रतिज्ञा करते हो, संकल्प लेते हो? क्या समझते हो? क्या ऐसी आहुति डालते हो जो आगे के लिए समाप्त हो जाये? महायज्ञ में महा आहुति डालनी चाहिए। साधारण आहुति नहीं। अनेक आत्माओं के लगन की अग्नि की सामूहिक आहुति डाली है? यहाँ से जाते हो, डाल कर जाते हो या अब वापिस ली है या सोचते हो कि किस प्रकार के तिल व जौ डालें? यह चेक (जाँच) करते हो कि जितनी बार महायज्ञ में आते हो तो महायज्ञ में आहुति डालते हो।

सम्पूर्ण समर्पण हुए हो या वापिस ले जाते हो? आहुति सम्पूर्ण समर्पण हो जाती है या रह जाती है? क्या ऐसा तो नहीं सोचते कि यह पुरानी दुनिया में

काम आयेगी? ऐसा होता है, कमजोर आदमी हाथ खींच लेते हैं। अगर आहुति डालने वाले कमजोर हों तो सेक (ताओ) होने के कारण, आधी आहुति बाहर, आधी अन्दर रह जाती है। यहाँ भी सोचते हैं कि करें या न करें? होगा या नहीं होगा; कर सकेंगे या नहीं कर सकेंगे? तो बुद्धि रूपी हाथ आगे-पीछे करते रहते हो। इसलिए सम्पूर्ण स्वाहा नहीं होते हो; किनारा रह जाता है, बिखर जाता है। जब सम्पूर्ण स्वाहा नहीं तो सम्पूर्ण सफल नहीं होता। सोचते ज्यादा हो, करते कम हो। तो फल भी कम मिलेगा। पहले हिम्मत कम है, संकल्प पॉवरफुल नहीं है, तो कर्म में बल भी नहीं होगा और इसीलिए फल भी कम ही होगा। फिर क्या करते हो? आधा यहाँ आधा वहाँ बिखेर देते हो। तो सफ़लता नहीं हुई न! अभी आप सब को रिजल्ट क्या हुई? सफ़लता हुई? यज्ञ में सम्पूर्ण आहुति रही या बिखर गई। आप सबकी अब की रिजल्ट बिखरना – माना रह गया है। अभी तो जो सोचना है वह प्रैक्टिकल में भर करके जाना है कि आज से यह कमज़ोरी फिर नहीं आयेगी। सम्पूर्ण समर्पण करने का साहस है या कम है? विनाश न हुआ तो? स्वर्ग न आया फिर? पहुँचेंगे या नहीं? फिर लोग क्या कहेगे? ऐसे होशियार नहीं बनना। सब की यही हालत है! सहज हाथ आगे बढ़ाते हैं। सेक आता है तो हाथ खींच लेते हो। हिम्मत आती है, थोड़ा-सा विघ्न आता है तो कदम पीछे चल पड़ते हैं। ऐसों की गति क्या होगी? गति-सद्गति को भी तो जानते हो न?

नॉलेजफुल होते हुए अगर कोई न करे तो क्या कहेगे? इनको वापिस लिया तो क्या गति होगी? जान-बूझ करके भी अगर न करे तो क्या कहेगे? लाईट रूप और माईट रूप होते हुए भी क्यों नहीं कर पाते हो? कारण क्या है? नॉलेज तुम्हारी बुद्धि तक है; समझ तक है। ठीक है – जानते हो, लेकिन नॉलेज को प्रैक्टिकल में लाना और समाना नहीं आता है। भोजन है, खाते भी हैं। परन्तु खाना अलग बात है, खा कर हजम करना अलग बात है। समाते नहीं हो, हजम नहीं होता, रस नहीं बनता और शक्ति नहीं मिलती। जीभ तक खा लिया तो रस नहीं बनेगा, शक्ति नहीं मिलती। समाने के बाद ही शक्ति का स्वरूप बनता है। समाया नहीं तो जीभ-रस है। समाया तो शक्ति है। सुनने का रस आया, समझ में आया, समझा किन्तु समाया नहीं, प्रैक्टिकल में नहीं लाया। जितना धारणा में

आता है, संस्कार बन जाता है तब ही प्रैक्टिकल सफ़लता का स्वरूप दिखाई पड़ता है। नॉलेजफुल का अर्थ क्या है? नॉलेजफुल का अर्थ है हरेक कर्मेन्द्रियों में नॉलेज समा जाए। क्या करना है और क्या नहीं? तो धोखा खाने की बात रहेगी? ऑखे और वृत्ति धोखा नहीं खायेंगी जब आत्मा में नॉलेज आ जाती है तो सर्व इन्द्रियों में नॉलेज समा जाती है। जैसे भोजन से शक्ति भर जाती है तो शक्ति के आधार से काम होता है। अभी नॉलेज को समाना है। हरेक कर्मेन्द्रियों को नॉलेजफुल बनाओ।

हर वर्ष आते हो, कहते हो कि अभी करूंगा। वायदा करके जाते हो। अभी कब पूरा होगा? क्या कारण है? जो तुम सोचते हो और जो कर्म करते हो, उसमें अन्तर क्यों? कारण क्या? सोचते हो फुल करने की बात, और होती है आधी – इतना अन्तर पड़ने का कारण क्या है? प्लान (Plan) भी खूब रचते हो, उमंग भी खूब लाते हो और समझ कर वायदा करते हो। सब बातें आयेंगी ही, लेकिन प्रैक्टिकल और समझ में अन्तर आ जाता है – इसका कारण क्या है? संस्कारों की आहुति करके जाते हो, फिर सब कहाँ से आया? स्वाहा करके जाते हो फिर क्यों आता है? देह-अभिमान, अलबेलापन वापिस क्यों लौट आता है, कारण क्या है? कारण है कि संकल्प करके जाते हो स्वाहा करने का, लेकिन संकल्प के साथ-साथ (जैसे बीज बोते हो, बाद में सम्भाल करते हो) परन्तु इसमें जो सम्भाल चाहिए वह सम्भाल नहीं रखते हो। समय-प्रमाण उनकी आवश्यकता रखनी चाहिए, आप बीज डाल कर अलबेले हो जाते हो। सोचते हो कि बाबा को दिया, अब बाबा जाने, यह बाबा का काम है। आप उसकी पालना नहीं करते हो। तो वाचा और मन्सा पर अटेन्शन चाहिए। जैसे बीज बो कर पानी डालते हो कि बीज पक्का हो जाये। बीज को रोज-रोज पानी देना होता है, वैसे ही संकल्प रूपी बीज को रिवाइज (Revise) करना है। उसमें कमी रह जाती है और आप निश्चिन्त हो जाते हो – आराम पसंद हो जाते हो। आराम पसन्द के संस्कार नहीं, मगर चिन्तन का संकल्प होना चाहिए, एक-एक संस्कार की चिन्ता लगनी चाहिए। पुरुषार्थ की एक भी कमी का दाग बहुत बड़ा देखने में आता है। फिर हमेशा ख्याल आता है कि छोटा-सा दाग मेरी वैल्यू कम कर देगा। चिन्तन चिन्ता के रूप में होना चाहिए। वह नहीं तो अलबेलापन है। कहते हो, करते नहीं हो।

जो पीछे की युक्ति है उसे प्रैक्टिकल में लाओ, आराम-पसन्दी देवता स्टेज का संस्कार है, वह ज्यादा खींचता है। संगमयुग के ब्राह्मण के संस्कार जो त्याग मूर्त के हैं, वह कम इमर्ज (Emerge) होते हैं। त्याग-बिना भाग्य नहीं बनता अच्छा, कर लेंगे, देखा जायेगा – यह आराम पसन्दी के संस्कार हैं। ''ज़रूर करूंगा'', ये ब्राह्मणपन के संस्कार हैं। लौकिक पढ़ाई में जिसको चिन्ता रहती है, वह पास होता है। उसकी नींद फिट जाती है। जो आराम-पसन्द हैं वे पास क्या होंगे? अभी सोचते हो कि प्रैक्टिकल करना है। चिन्ता लगनी चाहिए, शुभ चिन्तन, सम्पूर्ण बनने की चिन्ता, कमजोरी को दूर करने की चिन्ता और प्रत्यक्ष फल देने की चिन्ता।

इस मुरली के विशेष ज्ञान-बिन्दु

1. मधुबन है अविनाशी रुद्र ज्ञान महायज्ञ। इस महायज्ञ में अपनी लगन को ऐसी अग्नि बनाओ जिस अग्नि में सब व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुये पुराने संस्कार बिल्कुल भस्म हो जायें।

2. बुद्धि में नॉलेज तो है लेकिन नॉलेजफुल नहीं बने हो। नॉलेजफुल का अर्थ है कि हर एक कर्मइन्द्रियों में नॉलेज समा जाये। तो जैसे भोजन खाने से, साथ ही समाने अर्थात् हजम करने से शरीर में शक्ति आती है वैसे ही तुम्हारी आत्मा शक्तिशाली बनती है।

3. जितना ज्ञान धारणा में आता है वह संस्कार बन जाता है तब ही प्रैक्टिकल सफ़लता का स्वरूप दिखाई पड़ता है।

समर्थी दिवस के रूप में स्मृति-दिवस

18.1.76

सर्व आत्माओं के परम स्नेही परमपिता शिव बोले :-

आज बाप-दादा अपने सर्व लवलीन बच्चों को देख बच्चों के स्नेह का रेसपान्स दे रहे हैं। सदा बाप-समान विधाता और वरदाता भव! सदा विश्व-कल्याणकारी, विश्व के राज्य-अधिकारी भव! सदा माया, प्रकृति और सर्व परिस्थितियों के विजयी भव! आज बाप-दादा सर्व विजयी बच्चों के मस्तक के बीच विजय का तिलक चमकता हुआ देख रहे हैं। सर्व बच्चों के हस्तों में यही विजय का झण्डा देख रहे हैं। हर-एक के दिल की आवाज 'विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है' – यह नारा गूंजता हुआ सुन रहे हैं। आज अमृतवेले सर्व बच्चों के स्नेह और आह्वान के मीठे-मीठे आलाप सुन रहे थे। दूर-दूर बिछुड़ी हुई, तड़पती हुई गोपिकायें नदी के समान सागर में समा रही थीं। बाप-दादा भी बच्चों के स्नेह के स्वरूप में समा गये। हर-एक के मीठे-मीठे मोती हृदय का हार बन बाप-दादा के गले में समा गये। हर-एक के भिन्न-भिन्न संकल्प, वैरायटी, मधुर साज़ों के रूप में सुनाई दे रहे थे। अभी-अभी चारों ओर बाप-दादा को याद की मालायें अनेक बच्चे डाल रहे हैं। आज के दिन को 'स्मृति दिवस' के साथ-साथ 'समर्थी-दिवस' भी कहते हैं। आज के इस यादगार दिवस पर बाप-दादा ने जैसे आदि में बच्चों के सिर पर ज्ञान-कलश रखा, साकार द्वारा शक्तियों को तन, मन, धन विल (Will) किया, वैसे ही साकार तन द्वारा साकार पार्ट के अन्तिम समय शक्ति सेना को विश्व-कल्याण के विल-पॉवर की विल की। स्वयं सूक्ष्मवतन निवासी बन साकार में बच्चों को निमित्त बनाया। इसीलिये यह समर्थी-दिवस है।

आज बाप सर्व बच्चों के स्नेह में, आवाज से परे स्वयं में समाने जा रहा है। इस समय चारों ओर सबका फुल-फोर्स से उलाहने और आह्वान के मन का आवाज़ आ रहा है। सब स्वयं में समाने जा रहे हैं। आप सबको सुनाई दे रहा है? नये-नये बच्चों को विशेष रूप से बाप-दादा याद का रिटर्न दे रहे हैं। जैसे पुराने बच्चों को डबल इन्जन की लिफ्ट मिली, वैसे नये बच्चों को गुप्त मदद की प्राप्ति के अनुभव की, खुशी के खजाने की विशेष लिफ्ट, (Lift) बाप-दादा गिफ्ट (Gift) में दे रहे हैं। उनके अनेक उलाहनों को सेवा और सदा साथ के अनुभव द्वारा उलाहने उमंग-उत्साह के रूप में

परिवर्तन कर रहे हैं। जैसे नये बच्चों का विशेष लगाव बाप और सेवा से हैं, वैसे बाप-दादा की भी विशेष सहयोग की नजर नये बच्चों पर है। बाप भी ऐसे बच्चों की कमाल के गुण गा रहे हैं। अच्छा!

सर्व स्नेही, सदा एक बाप के लव में लीन रहने वाले, बाप-दादा को प्रख्यात करने वाले, सर्व आत्माओं द्वारा जय-जयकार की विजय मालायें धारण करने के निमित्त बने हुए, ऐसे विजयी, बाप-समान सर्व गुणों को साकार रूप में प्रत्यक्ष करने वाले, सर्व सिद्धियों को सेवा प्रति लगाने वाले, ऐसे विश्व-कल्याणकारी बाप-दादा के भी दिलतख्त अधिकारी बच्चों को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दीदी जी तथा वत्सों को सामने देख बाप-दादा बोले –

''आज बच्चों का विशेष स्वरूप कौन-सा रहा? स्नेह के स्वरूप के साथ-साथ उलाहने भी दिये। जैसे बाप ज्ञान का सागर है, तो सागर की विशेषता क्या होती है? जितनी लहरें, उतना ही शान्त। लेकिन एक ही समय दोनों विशेषतायें हैं। वैसे ही बाप के समान बनने वालों की भी यह विशेषता है कि बाहर से स्मृति-स्वरूप और अन्दर से समर्थी-स्वरूप। जितना ही साकार स्वरूप में स्मृति-स्वरूप उतना ही अन्दर समर्थी-स्वरूप हो। दोनों का साथ-साथ बैलेन्स हो। ऐसा बैलेन्स रहा? जैसा समय व जैसा दिन वैसा स्वरूप तो होता ही है। लेकिन अलौकिकता यह है कि दोनों के बैलेन्स का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे। पार्ट भी बजा रहे हैं, लेकिन साथ-साथ साक्षीपन की स्टेज भी हो। 'साक्षीपन' की स्टेज होने से पार्ट भी एक्यूरेट (Accurate) बजायेंगे। लेकिन पार्ट का स्वरूप नहीं बन जायेंगे अर्थात् पार्ट के वश नहीं होंगे। विल-पॉवर होगी।

जो चाहें, जिस घड़ी चाहें, वैसा अपना स्वरूप धारण कर सकते हो। इसको कहते हैं विल-पॉवर। प्रेम-स्वरूप में भी शक्तिशाली-स्वरूप साथ-साथ समाया हुआ हो। सिर्फ प्रेम-स्वरूप बन जाना – यह लौकिकता हो गई। अलौकिकता यह है कि जो प्रेम-स्वरूप के साथ-साथ शक्तिशाली स्वरूप भी रहे। इसलिए शक्तिशाली स्वरूप का अन्तिम दृश्य 'नष्टोमोहः स्मृति-स्वरूप' का दिखाया है। जितना ही अति स्नेह, उतना ही अति नष्टोमोहः। तो लास्ट पेपर क्या देखा? स्नेह होते हुए भी नष्टोमोहः स्मृति-स्वरूप। यही लास्ट पेपर यादगार में भी गायन रूप में है, यही प्रैक्टिकल कर्म करके दिखाया। साकार सम्बन्ध सम्मुख होते हुए समाने की भी शक्ति और सहन करने की भी शक्ति। यही दोनों शक्तियों का स्वरूप देखा। एक तरफ स्नेह को समाना, दूसरे तरफ रहा हुआ लास्ट का हिसाब-किताब सहन शक्ति से समाप्त करना। समाना भी और सहन भी

करना–दोनों का स्वरूप कर्म में देखा। क्या बाप का बच्चों में स्नेह नहीं होता? स्नेह का सागर होते हुये भी शान्त! अपने शरीर से भी उपराम! यही लास्ट स्टेज है। यह प्रैक्टिकल में कर्म करके दिखलाया। यही (रात्रि का) समय था ना। लास्ट पेपर को फर्स्ट नम्बर में प्रैक्टिकल में किया। स्वरूप में लाना सहज होता है, लेकिन समाना, इसमें विल-पॉवर चाहिये। सारा पार्ट समाने का देखा। कर्मभोग को भी समाना और स्नेह को भी समाना। यही विल-पॉवर है। यही विल-पॉवर अन्त में बच्चों को 'विल' की। अच्छा!

वाणी का सार

1. बाबा बोले – यह दिवस केवल स्मृति-दिवस नहीं, 'समर्थी दिवस' भी है क्योंकि स्वयं सूक्ष्मवतन निवासी बन बाबा ने साकार में बच्चों को निमित्त बनाया।

2. बाबा कहते हैं कि जैसे पुराने बच्चों को डबल इंजन की लिफ्ट मिली, वैसे नये बच्चों को गुप्त मदद, प्राप्ति के अनुभव की खुशी के खज़ाने की विशेष लिफ्ट बाप-दादा गिफ्ट में देते हैं।

3. जो चाहें जिस घड़ी चाहें, वैसा अपना स्वरूप धारण कर सको, इसको कहते हैं 'विल पॉवर।' प्रेम-स्वरूप में शक्तिशाली-स्वरूप भी साथ-साथ समाया हुआ हो – यही अलौकिकता है। सिर्फ प्रेम-स्वरूप बन जाना तो लौकिकता हो गई।

18-1-1977

18 जनवरी का विशेष महत्व

अटल, अचल, अखंड, सदा हर परिस्थिति में भी अड़ोल, सर्व गुण और सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाने वाले बाबा बोले:–

''सभी स्मृति-स्वरूप आर्थात् समर्थी-स्वरूप स्थिति में स्थित हो? आज का दिन विशेष रूप में स्मृति-स्वरूप बनने का है। बापदादा के स्नेह में समाए हुए अर्थात् बाप समान बनने वाले स्नेह की निशानी है – समानता। तो आज सारा दिन स्मृति-स्वरूप अर्थात् बाप समान स्वयं को अनुभव किया? बापदादा के स्नेह का रेसपान्स (Response) 'बाप समान भव' का वरदान अनुभव किया? आज का विशेष दिवस स्वत: और सहज और थोड़े समय में बाप समान स्थिति अनुभव करने का दिन है। जैसे सभी युगों में से संगमयुग सहज प्राप्ति का युग गाया जाता है, वैसे ब्राह्मण के लिए संगमयुग में भी यह दिन विशेष सर्वशक्तियों के वरदान प्राप्त होने का 'बाप समान' की स्थिति का अनुभव करने का ड्रामा में नूंधा हुआ है। विशेष दिन का विशेष महत्व जान, महान रूप से मनाया? अमृतवेले से बापदादा ने विशेष अनुभवों के गोल्डन चान्स (Golden chance) की लाटरी (Lottery) खोली है। ऐसी लाटरी लेने के अधिकार को अनुभव किया? स्नेहयुक्त रह व योगयुक्त, सर्वशक्तयों के प्रति युक्त, सर्व प्रकार के प्रकृति व माया के आकर्षण से परे रहे? आज बापदादा ने बच्चों के पुरुषार्थ की रिज़ल्ट देखीं। रिज़ल्ट में क्या देखा, जानते हो?

बहुत बच्चे बापदादा के सिर के ताज के रूप में देखे। और कई बच्चे गले के हार के रूप में देखे; और कई बच्चे भुजाओं के श्रृंगार के रूप में देखे। अब हर एक अपने से पूछे कि ''मेरा स्थान कहाँ है?'' (जहां बाबा बिठायेंगे) बाबा बिठाये, लेकिन बैठना तो आपको पड़ेगा ना! बाप की आज्ञा बहुत बड़ी है। उसको जानते हो ना? विदेशी सो स्वदेशी किस में होंगे? सब विदेशी ताज में आयेंगे तो स्वदेशी कहाँ जायेंगे? ताज में तो बहुत थोड़े होते हैं। मेजारिटी (Majority) गले और भुजाओं का श्रृंगार हैं। ताज-धारी आर्थात् बाप के ताज में चमकते हुए रत्न, जिन की विशेष पूजा होती है उनकी निशानी है सदा बाप में समाए हुए और समान। उन के हर बोल और कर्म से सदा और स्वत: बाप प्रत्यक्ष होगा। उनकी सीरत और सूरत को देख हर एक के मुख से यही बोल निकलेंगे कि कमाल है, जो बाप ने ऐसे योग्य बनाया! उनके गुण देखते हुए निरन्तर बापदादा के गुण सब गायेंगे। उन की दृष्टि सभी की वृत्ति को परिवर्तन करेंगे। ऐसी स्थिति वाले सिर के ताज गाए जाते हैं।

गले का श्रृंगार अर्थात् सेकेण्ड नम्बर सदैव अपने गले की आवाज़ अर्थात् मुख के आवाज़ द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करने के प्रयत्न में रहते हैं। सदा बापदादा को अपने सामने रखते हैं; लेकिन समाए हुए नहीं रहते। सदा बापदादा के गुण गाते रहते लेकिन स्वयं सदा गुण मूर्त नहीं रहते। समान बनाने की भावना और श्रेष्ठ कामना रखते हैं लेकिन हर प्रकार की माया के वारों का सामना नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति वाले गले का श्रृंगार हैं।

तीसरी क्वालिटी (Quality;प्रकार) तो सहज ही समझ गए होंगे, भुजा की निशानी है सहयोग की, जो किसी भी प्रकार से, मन से, वाणी से आथवा कर्म से तन-मन वा धन से बाप के कर्तव्य में सहयोगी होते हैं, लेकिन सदा योगी नहीं होते – ऐसे भी अनेक बच्चे हैं। बापदादा ने रिवाईज़ कोर्स (Revise course) के साथ रियलाईज़ेशन कोर्स (Realisation course) भी दिया है। अब बाकी क्या रहा? क्या कमी रह गई है बाकी?

नष्टोमोह: स्मृति-स्वरूप हो गए कि अभी होना है? 1976 तक होना ही था ना? फ़ाईनल विनाश तक रुकी हुई है कया? इन्तजार तो नहीं कर रहे हो ना? विनाश का इन्तजार करना अर्थात् अपनी डैथ (Death;मृत्यु) की डेट की स्मृति रखना, अपनी डेट का आह्वान कर रहे हो? कितने संकल्प कर रहे हो विनाश क्यों नहीं हुआ? कब होग? कैसे होगा? संगमयुग सुहावना लगता है वा सतयुग? तो घबराते क्यों हो कि विनाश क्यों नहीं हुआ? अगर स्वयं इस प्रश्न से प्रसन्न हैं तो दूसरे को भी प्रसन्न कर सकते हैं। स्वयं ही क्वेश्चन में हैं तो दूसरे भी जरूर पूछेंगे। इसलिए घबराओ नहीं। कोई पूछते हैं कि विनाश क्यों नहीं हुआ, तो और ही उसको कहो कि आप के कारण नहीं हुआ। बाप के साथ हम सभी भी विश्व-कल्याणकारी हैं। विश्व के कल्याण में आप जैसी और आत्मओं का कल्याण रहा हुआ है। इसलिए अभी भी चान्स है। होता क्या है कि जब कोई क्वेश्चन करता है तो आप लोग स्वयं ही 'क्यों''क्या' में कनफ्यूज (Confuse) हो जाते हो – हां ''कहा तो है, लिखा हुआ तो है, होना तो चाहता था''। इसलिए दूसरे को संतुष्ट नहीं कर पाते हो। फलक से कहो कि कल्याणकारी बाबा के इस बोल में भी कल्याण समया हुआ है। उसको हम जानते हैं, आप भी आगे चलकर जानेंगे। डरो मत। 'क्या कहेंगे, कैसे कहेंगे' ऐसे सोचकर किनारा न करो। जिन लोगों को कहा है,

उनसे डर के मारे किनारा न करो। क्या करेंगे? अगर उल्टा प्रोपगण्डा (Propaganda) करेंगे तो वो उल्टा बोल अनेकों को सुल्टा बना देगा। प्रत्यक्षता का साधन बन जायेगा। बच्चे भी पूछते रहते हैं तो लोगों ने पूछा तो क्या बड़ी बात हुई! सोचते हैं ''यह करें या ना करें? प्रवृत्ति को कैसे चलायें! व्यवहार को कैसे सैट करें! बच्चों की शादी करें या नहीं करें! मकान बनायें या नहीं?'' वास्तव में इस क्वेश्चन का विनाश की डेट से कोई कनेक्शन (Connection;सम्बन्ध) नहीं है। अगर प्रापर्टी है और बनाने का संकल्प है तो इससे सिद्ध है कि स्वयं प्रति यूज (Use;प्रयोग) करने की भावना है। अगर ईश्वरीय सेवा में लगाना ही है तो मकान बनाना या वैसे ही प्रापर्टी रखना उसको तो क्वेश्चन ही नहीं उठता। लेकिन आवश्यकता है और डायरेक्शन प्रमाण बनाते भी हैं, तो उसका बनाना व्यर्थ नहीं होगा, लेकिन जमा होगा। तो विनाश के कारण घबराने की बात ही नहीं, क्योंकि श्रीमत पर चलना आर्थात् इन्श्योरेन्स (Insurance) करना। उसका उनको फल मिल ही जाता है।

बाकी रहा शादी कराने का वा करने का क्वेश्चन। इसके लिए तो पहले से ही डायरेक्शन (Direction) है जहां तक स्वयं को और अन्य आत्माओं को बचा सकते हो वहां तब तक बचाओ। विनाश अगर 1976 में नहीं हुआ तो क्या विनाश के कारण पवित्र रहते थे क्या? पवित्रता तो ब्राह्मण जन्म का स्वधर्म है। पवित्रता का संकल्प ब्राह्मण जन्म का लक्ष्य और लक्षण है। जिसका निजी लक्षण ही पवित्रता है उसका विनाश की डेट के साथ कोई कनेक्शन नहीं। यह तो स्वयं की कमज़ोरी छिपाने के बहाना है। क्योंकि ब्राह्मण बहानेबाजी बहुत जानते हैं। अच्छा, बाकी रही दूसरों को शादी कराने की बात। उसके लिए जहां तक बचा सको बचाओ। स्वयं कमज़ेर बन उसको उत्साह नहीं दिलाओ। मन में भी यह संकल्प न करो कि अब तो करना ही पड़ेगा। दस वर्ष पहले भी जिन को बचा न सके तो उनका क्या किया! साक्षी होकर संकल्प से वाणी से भी बचाने का प्रयत्न किया वैसे ही अभी भी इसी प्रकार दृढ़ रहो। बाकी जिनको गिरना ही है उनको क्या करेंगे! विनाश के कारण स्वयं हलचल में न आओ। आपकी हलचल अज्ञानियों को भी हलचल में लायेगी। आप अचल रहो। फलक से, निर्भयता से बोला। फिर वो लोग आपे ही चुप हो जायेंगे, कुछ बोल नहीं सकेंगे। आप निश्चय बुद्धि से संकल्प रूप में भी संशय-बुद्धि न बनो। रॉयल रूप का संशय है कि 'ऐसा होना तो चाहिए था' पता नहीं बाबा ने क्यों ऐसा कहा था। पहले से ही बापदादा बता देते थे। अब सामने कैसे जायेंगे? यह रॉयल रूप का संशय, दुनिया वालों को भी संशर-बुद्धि बनाने के निमित्त बनेगा। ''हां! कहा है, अभी भी कहेंगे'' – इसी निश्चय और नशे में रहो तो वो नमस्कार करने आयेंगे कि धन्य है आपका निश्चय। समझा। घबराओ नहीं, क्या जेल में जाने से डरते हो? डरते नहीं, घबराते हैं। सामना करने की शक्ति नहीं है। यही कहो कि जो कुछ कहा था उसमें कल्याण था। अब भी है। हम अभी भी कहते हैं। उनको अगर ईश्वरीय नशे और रमणीकता से सुनाओ तो वो और ही हंसेंगे। लेकिन पहले स्वयं मजबूत हो। समझा।

आज सबके संकल्प पहुंचे, सबको इन्तजार था 18 तारीख को क्या सुनायेंगे। अब सुना? बापदादा साथ हैं; कोई कुछ कर नहीं सकता; कह नहीं सकता, जलती हुई भट्टी में भी पूंगरे सलामत रहे, यह तो कुछ भी नहीं है। बाल भी बांका नहीं कर सकता। साधारण साथ नहीं, सर्वशक्तिवान का साथ है। इसलिए निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

डेट (Date) बताने की जरूरत ही नहीं। कभी भी फ़ाइनल (Final) विनाश की डेट फ़िक्स (Fix) नहीं हो सकती। अगर डेट फ़िक्स हो जाए तो सब सीट्स (Seats) भी फ़िक्स हो जाएं, फिर तो पास विद् ऑनर्स (Pass with honours) की लम्बी लाइन हो जाए। इसलिए डेट से निश्चिन्त रहो। जब सब निश्चिन्त होंगे तो डेट आ ही जायेगी। जब सभी इस संकल्प से निरसं-कल्प होंगे वही डेट विनाश की होगी। अच्छा।

ऐसे अचल, अटल, अखण्ड, सदा हर परिस्थिति में भी श्रेष्ठ स्थिति में अड़ोल, सर्व गुणों और सर्व शक्तियों के स्तम्भ स्वरूप आत्माओं को बापदादा का याद, प्यार और नमस्ते।''

बाप-दादा की सेवा का रिटर्न

18.1.78

सदा अतीन्द्रिय सुख व खुशी के झूले में झूलाने वाले सुख के सागर परमात्मा शिव बोले :–

ज स्मृति दिवस अर्थात् समर्थी दिवस पर सब बच्चों ने अपनी-अपनी लगन अनुसार भिन्न-भिन्न रूप से याद किया। बाप-दादा के पास चारों ओर के स्नेही सहयोगी शक्ति स्वरूप सम्पर्क वाली आत्माओं के सब रूप की याद वतन तक पहुँची। बाप-दादा द्वारा हरेक बच्चे की जैसी याद वैसा रिटर्न उसी समय मिल जाता है। जिस रूप से जो याद करता है उसी रूप से बाप-दादा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हो ही जाता है। जो योगी तू आत्मा है उसे योग की विधि मिल जाती है। कई बच्चे योगी तू आत्मा की बजाय वियोगी आत्माएँ बन जाती हैं। जिस कारण मिलन की बजाए जुदाई का अनुभव करते हैं। योगी तू आत्मा सदा बाप-दादा के दिल तख्तनशीन होती। दिल कभी दूर नहीं होता। वियोगी आत्माएँ वियोग के द्वारा बाप-दादा को सामने लाने का प्रयत्न करती हैं। वर्तमान को भूल बीती को याद करती हैं। इस कारण बाप-दादा कब प्रत्यक्ष दिखाई देते, कब पर्दे के अन्दर छिपा हुआ दिखाई देते। लेकिन बाप-दादा सदा बच्चों के आगे प्रत्यक्ष हैं। बच्चों से छिप नहीं सकता। जबकि बाप है ही बच्चों के प्रति, जब तक बच्चों का स्थापना के कर्त्तव्य का पार्ट है तब तक बाप-दादा बच्चों के हर संकल्प और सेकेण्ड में साथ-साथ हैं। बाप का वायदा है साथ चलेंगे– कब चलेंगे ? जब कार्य समाप्त होगा। तो पहले ही बाप को क्यों भेज देते हैं। बाबा चला गया यह कह अविनाशी सम्बन्धों को विनाशी क्यों बनाते हो। सिर्फ पार्ट परिवर्तन हुआ है। जैसे आप लोग भी सेवा स्थान चेन्ज[1] ([illegible]) करते हो ना। तो ब्रह्मा बाप ने भी सेवा स्थान चेन्ज किया है। रूप वही, सेवा वही है। हज़ार भुजा वाले ब्रह्मा के रूप का वर्तमान समय पार्ट चल रहा है तब तो साकार सृष्टि में इस रूप का गायन और यादगार है। भुजाएं बाप के बिना कर्त्तव्य नहीं कर सकतीं। भुजाएं बाप को प्रत्यक्ष करा रही हैं। कराने वाला है तब तो कर रहे हैं। जैसे आत्मा के बिना भुजा कुछ नहीं कर सकती वैसे बाप-दादा कम्बाइन्ड ([illegible]) रूप की सोल ([illegible]) के बिना भुजाएं रूपी बच्चे क्या कर सकते। हर कर्त्तव्य में अन्त तक पहले कार्य का हिस्सा ब्रह्मा का ही तो है। ब्रह्मा अर्थात् आदि देव। आदि देव अर्थात् हर शुभ कार्य की आदि करने वाला। बाप-दादा के आदि करने के बिना अर्थात् आरम्भ करने के बिना कोई भी कार्य सफल कैसे हो सकता। हर कार्य में पहले बाप का सहयोग है। अनुभव भी करते हो, वर्णन भी करते हो फिर भी कब-कब भूल जाते हो। प्रेम के सागर में प्रेम की लहरों में

क्या बन जाते हो। लहरों से खेलना है, न कि लहरों के वशीभूत हो जाना है। गुणगान करो लेकिन घायल नहीं बनो। बाप देख रहे हैं कि बच्चे मेरे साथी हैं और बच्चे जुदाई का पर्दा डाल देखते रहते हैं। फिर ढूंढने में समय गँवाते हैं। हाज़िर हज़ूर को भी छिपा देते। अगर आँख मिचौनी का खेल अच्छा लगता है तो खेल समझकर भले खेलो लेकिन स्वरूप नहीं बनो। बहलाने की बातें नहीं सुना रहे हैं। और ही सेवा की स्पीड ([illegible]) को अति तीव्र गति देने के लिए सिर्फ स्थान परिवर्तन किया है। इसलिए बच्चों को भी बाप समान सेवा की गति को अति तीव्र बनाने में बिज़ी ([illegible]) रहना चाहिए। यह है स्नेह का रिटर्न ([illegible])। बाप जानते हैं बच्चों को बाप से अति स्नेह है लेकिन बाप का बच्चों के साथ-साथ सेवा से भी स्नेह है। बाप के स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप सेवा से स्नेह है। जैसे पल-पल बाबा-बाबा कहते हो वैसे हर पल बाप और सेवा हो तब ही सेवा कार्य समाप्त होगा और साथ चलेंगे। अब बाप-दादा हरेक बच्चे को लाइट-माइट हाउस ([illegible]) के रूप में देखते हैं। माइक पावरफुल ([illegible]) हो गए हैं। लेकिन लाइट, माइट और माइक तीनों ही पावरफुल ([illegible]) साथ-साथ चाहिएं। आवाज़ में आना सहज लगता है ना। अब ऐसी पावरफुल स्टेज बनाओ जिस स्टेज से हर आत्मा को शान्ति, सुख और पवित्रता की तीनों ही लाइट्स ([illegible]) अपनी माइट ([illegible]) से दे सको। जैसे साकारी सृष्टि में जिस रंग की लाइट ([illegible]) जलाते हो तो चारों ओर वही वातावरण हो जाता है। अगर हरी लाइट ([illegible]) होती है तो चारों ओर वही प्रकाश छा जाता है। एक स्थान पर होते हुए भी एक लाइट ([illegible]) वातावरण को बदल देती है जैसे आप लोग भी जब लाल लाइट ([illegible]) करते हो तो ऑटोमेटिकली याद का वायुमण्डल बन जाता है। ऐसे जब स्थूल लाइट वायुमण्डल को परिवर्तन कर लेती है तो आप लाइट हाउस पवित्रता की लाइट से व सुख की लाइट से वायुमण्डल नहीं बना सकते हो? स्थूल लाइट आँखों से देखते। रूहानी लाइट अनुभव से जानेंगे। वर्तमान समय इस रूहानी लाइट्स द्वारा वायुमण्डल परिवर्तन करने की सेवा है। सुना अब सेवा का क्या रूप होना है। दोनों सेवा अब साथ-साथ हों। माइक और माइट तब सहज सफलतामूर्त्त बन जायेंगे।

पार्टियों के साथ बातचीत

[illegible]. बेहद बाप को भी हद के नम्बर लगाने पड़ते हैं। नहीं तो बाप और बच्चों का मिलना दिन-रात क्या है? आपकी दुनिया में यह सब बातें हैं। वहाँ तो सब बाप के समीप हैं। बिन्दु क्या जगह लेगी, यहाँ तो शरीर को जगह चाहिए, वहाँ समीप हो ही जायेंगे। यहाँ हरेक आत्मा समझती हम समीप आयें। जितना जो बाप के गुणों में, स्थिति में समीप उतना वहाँ स्थान में भी समीप, चाहे घर में, चाहे राज्य में। स्थिति स्थान के समीप लाती है। यही कमाल है जो हरेक समझता है मैं समीप

और समीप का अनुभव भी करता है क्योंकि बेहद का बाप अखुट है, अखण्ड है इसलिए सभी समीप हो सकते हैं। सन्तुष्ट रहना और करना। यही वर्तमान समय का स्लोगन है। असन्तुष्ट अर्थात् अप्राप्ति। सन्तुष्ट अर्थात् प्राप्ति। सर्व प्राप्ति वाले कभी भी असन्तुष्ट नहीं हो सकते।

1. सदा अपने को गॉडली ([illegible]) स्टूडेण्ट ([illegible]) समझते हो ? गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ ([illegible]) सबसे बेस्ट ([illegible]) गाई जाती है। ऐसे सदा बेस्ट ([illegible]) अर्थात् श्रेष्ठ जीवन का अनुभव करते हो। जैसे स्टूडेण्ट ([illegible]) सदा हंसते, खेलते और पढ़ते रहते और कोई बात बुद्धि में विघ्न रूप नहीं बनती ऐसे ही पढ़ना, पढ़ाना निर्विघ्न रहना, बाप के साथ उठना, बैठना, खाना पीना यह है गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ। लौकिक में रहते भी बाप का साथ है ना। चाहे कहाँ भी शरीर रहे लेकिन मन बाप और सेवा में लगे रहे। खाना, पीना, चलना सब बाप के साथ इसकी ही महिमा है। जो प्रिय वस्तु होती उसका साथ छोड़ना मुश्किल होता है साथ रहना, योग लगना मुश्किल नहीं, योग टूटना मुश्किल – ऐसे अनुभवी को कहा जाता है गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ। जिसको छोड़ना मुश्किल है, तोड़ना मुश्किल है लेकिन साथ रहना मुश्किल नहीं, यही बेस्ट लाइफ है। सदा हंसते रहो और गाते रहो और बाप के साथ चलते रहो। ऐसा साथ सारे कल्प में नहीं मिल सकता। संगम पर भी अगर और किसी को ढूँढो तो मिलेगा ? नहीं ना। बाप ने आपको ढूँढा या आपने ? ढूँढते तो आप भी थे, रास्ता रांग लिया। ढूँढना तो था बाप को, ढूँढा भाइयों को इसलिए ढूँढ नहीं सके।

2. स्वयं के पुरुषार्थ में और सेवा में सदा वृद्धि होती रहे उसका सहज साधन कौन सा है ? वृद्धि का सहज साधन है अमृतवेले से लेकर विधिपूर्वक चलना तो जीवन वृद्धि को पायेगा। कोई भी कार्य सफल तब होता जब विधि से करते। ब्राह्मण अर्थात् विधिपूर्वक जीवन। अगर किसी भी बात में स्वयं के पुरुषार्थ व सेवा में वृद्धि नहीं होती तो ज़रूर कोई विधि की कमी है। चैक करो कि अमृतवेले से लेकर रात तक मन्सा-वाचा-कर्मणा व सम्पर्क विधिपूर्वक रहा अर्थात् वृद्धि हुई ? अगर नहीं तो कारण को सोचकर निवारण करो। फिर दिलशिकस्त नहीं होंगे। अगर विधिपूर्वक जीवन होगी तो वृद्धि अवश्य होगी। अच्छा-

18-1-79

18 जनवरी 'स्मृति दिवस'को सदाकाल का समर्थी दिवस मनाने के लिए शिक्षाएं

सर्वसमर्थ शिव बाबा 'सदा अमर भव' का वरदान देते हुए बोले :- आज सभी बच्चे विशेष साकारी याद – प्रेम स्वरूप की स्मृति में ज्यादा रहे। साकारी सो आकारी बाप सभी के नयनों में समाये हुए हैं। अमृतवेले से लेकर देश-विदेश के बच्चों की याद के सन्देश सारे वतन में वायुमण्डल की रीती से फैले हुए थे – प्रेम के आसुँओं की मालायें वतन को सजा रही थीं। हरेक बच्चा ब्रह्मा बाप के लव में लवलीन थे। चारों ओर दिल के दिलरूबा की आवाज बापदादा के पास पहुँच रही थी – हरेक के मन से बाप की महिमा के सुन्दर आलाप साजों के समान वतन में गूँज रहे थे। हरेक के आशाओं के दीपक जगे हुए, वतन को जगमगा रहे थे। बापदादा बच्चों के स्नेह को देख मुस्करा रहे थे। विदेशी वा देशवासी बच्चे अपने बुद्धियोग द्वारा वतन में भी पहुँचे हुए थे। ब्रह्मा बाप भी बच्चों के स्नेह के सागर में बच्चों के लव में लवलीन थे – याद का रिटर्न दे रहे थे।

बच्चे बाप से पूछते हैं हम सबसे पहले अकेले वतनवासी क्यों? मैजारटी बच्चों का यही स्नेह का सवाल था। बाप बोलो – जैसे आदि में स्थापना के कार्य प्रति साकार रूप में निमित्त एक ही बने – अल्फ की तार पहले एक को आई। सेवा अर्थ – सर्वस्व त्यागमूर्त एक अके बने। जिसको देख बच्चों ने फालो फादर किया। त्याग और भाग्य दोनों में नम्बरवन बाप निमित्त बने। अब अन्त में भी बच्चों को ऊंचा उठाने के लिए वा अव्यक्त बनाने के लिए बाप को ही अव्यक्त वतनवासी बनना पड़ा। इस साकारी दुनिया से ऊंचा स्थान अव्यक्त वतन अपनाना पड़ा – अभी बाप कहते हैं बाप समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो। बाप समान अव्यक्त वतनवासी बन जाओ। बापदादा अभी भी आव्हान करते हैं। देर किसकी है? ड्रामा की देर हैं! ड्रामा में भी निमित्त कारण कौन। सिर्फ एक छोटी-सी बात दृढ़ संकल्प रूप से धारण करो तो सदाकाल का मिलन हो जावेगा। जैसे आज के दिन सहजयोगी, निरन्तरयोगी, एक बाप दूसरा न कोई – इसी स्थिति में स्थित रहे, ऐसे ही सदा अमर भव के वरदानी बनो। तो क्या होगा। सदा-काल के लिए जुदाई को विदाई मिल जावेगी और सदा मिलन की बधाई होगी। स्नेह स्वरूप को समान स्वरूप में परिवर्तन करो।

जैसे जिस भी आत्मा से स्नेह होता है तो स्नेह का स्वरूप यही है कि जो स्नेही को पसन्द हो वही स्नेह करने वाले को पसन्द हो – चलना-खाना-पिना-रहना स्नेही के दिलपसन्द हो। ऐसे ही बाप से स्नेह – जानते हो बाप का स्नेह किससे हैं? बाप को सदा क्या पसन्द है? अपने दिल पसन्द नहीं लेकिन स्नेही बाप के दिलपसन्द। तो सदा जो भी संकल्प करो वा कर्म करो पहले यह सोचो कि स्नेही बाप के दिलपसन्द है। अगर बाप को पसन्द नहीं तो लोकपसन्द भी नहीं। तो सिर्फ इतनी सी बात है स्नेही के पसन्दी से चलना है। इतना रिटर्न सदा कर सकते हो ना! सर्व सम्बन्ध के स्नेह से इतना सा रिटर्न क्या मुश्किल लगता है? आज के स्मृति दिवस को सदाकाल के लिए समर्थी दिवस मनाओ। यह संकल्प करो – जो बाप को पसन्दी वही मेरी पसन्दी। सदा बाप पसन्द लोक पसन्द रहना है।

दिलशिकस्त होना, किसी भी संस्कार वा परिस्थितियों के वशीभूत होना, अल्पलकाल की प्राप्ति कराने वाले व्यक्ति वा वैभवों के तरफ आकर्षि होना – इन सब कमजोरियों रूपी कलियुगी पर्वत को आज के समर्थी दिवस पर सब बच्चे दृढ़ संकल्प की अंगुली दे सदाकाल के लिए समाप्त करो अर्थात् सदाकाल के विजयी बनो। विजय आपका तिलक है। विजय आपके गले की माला है। विजय जन्मसिद्ध अधिकार है। सदा इस समर्थी स्वरूप में रहो। यह है स्नेह का रिटर्न। बाप बच्चों से पूछते हैं – जैसे ब्रह्मा बाप ने सारे ज्ञान का सार स्वयं धारण कर बच्चों को फालो फादर करने की हिम्मत दी, साकार रूप द्वारा अन्तिम महावाकय अमूल्य सौगात दी – उस सौगात को स्वरूप में लाया? सौगात की रिटर्न में बाप को स्वरूप बन दिखाया? सिर्फ तीन बोल जो थे उनको साकार में लाया। साकार स्नेह के रिटर्न में साकार रूप है। इन ही तीन बोल से बाप ने कर्मातीत अवस्था को पाया – फालो फादर। साकार बाप ने स्थिति का स्तम्भ बनकर दिखाया – जिसके स्नेह में यह स्मृति स्तम्भ भी बनाया है – ऐसे ही तत्त्वम – सर्व-गुणों के स्तम्भ बनो। जो विश्व के हर धर्म वाली आत्मायें धारणा स्वरूप स्तम्भ आपको माने – विश्व के आगे आदि पिता के समान शक्ति और शान्ति स्तम्भ बनो।

स्नेह के सन्देश जो बच्चों ने भेजे रिटर्न में बापदादा भी सभी स्नेही बच्चों को पदमगुणा स्नेह दे रहे हैं। अब पदमापदम भाग्यशाली सदा रहो। अच्छा – ऐसे सदा बाप के स्मृति सो समर्थी स्वरूप, बाप के सदा दिलपसन्द, सदा दृढ़ संकल्प द्वारा स्वयं का ओर विश्व का सेकेण्ड में परिवर्तन करने वाले, सदा विश्व के आगे शक्ति और शन्ति स्तम्भ समान स्थित रहने वाले – ऐसे बापदादा के समीप सिकीलधे बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दीदी जी से बातचीत :- आज का दिन स्नेह और शक्ति का बैलेन्स रहा? आज के दिन विशेश साकार बाप को याद किया वा दानों का बैलेन्स था – बैलेन्स रखने वाले बच्चे बाप द्वारा ब्लिसफुल के वरदान को प्राप्त करते हैं। आज साकार बाप ने भी बचचों को याद किया – हर बच्चे की विशेषता रूपी रतनों को देखते हर्षाया। लौकिक शरीर के संस्कार भी जवाहरी के थे। अलौकिक जीवन में भी जवाहरी के कार्य में ही रहे। जवाहरी की नज़र कहाँ जाती है? अमूल्य रतनों के तरफ, तो बाप भी अपने रतनों को देख रतनों को ही सजा रहे थे। ब्रह्मा बाप के तीव्र पुरूषार्थ के संस्कार को तो जानती हो – आज भी बाबा बोले अब माला तैयार करो – माला तैयार होना अर्थात् खेल खत्म। फिर क्या हुआ होगा। ब्रह्मा अपने तीव्र पुरूषार्थ के संस्कार प्रमाण माला बनाने लगे और बाप मुस्कराने लगे। माला तैयार भी हुई, लेकिन तैयार होने के बाद जब देखने लगे तो दिलपसन्द नहीं लगी। तो फटाफट बदली करने लगे। संकल्प था कि करके दिखावेंगे – बाप बोले – फुल पावर्स हैं – जो चाहे जैसे चाहे तैयार करके दिखाओ। ब्रह्मा बाप तो रोज आव्हान करते हैं। आप आव्हान करते हो? फिर रिजल्ट क्या हुई। बहुत रमणीक दृश्य हुआ। रूहरुहाण भी चली और एक-दो को देख मुस्कराये। 100 को माला फिर भी 90३ बन गई 8 की माला में बदली बहुत थी – किसको 4 नम्बर दें किसको 5 नम्बर दें – उसकी रूह-रूहाण थी। मतलब तो आज ब्रह्मा को माला तैयार करने का तीव्र संकल्प था।

जैसे बाप विचित्र है, विचित्र बाप की लीला भी विचित्र है – दुनियावाले समझते हैं बाप चले गये और बाप बच्चों से विचित्र रूप में जब चाहें तब मिलन मना सकते। दुनिया वालों की ऑखों के आगे पर्दा आ गया – वैसे भी स्नेही मिलन पर्दे के अन्दर अच्छा होता है – तो दुनिया की ऑखों में पर्दा आ गया – लेकिन बाप बच्चों से अलग हो नहीं सकता। वायदा है साथ चलेंगे, वही वायदा याद है ना। वायदा है साथ चलेंगे, वही वायदा याद है जो आदि से अन्त।

पार्टियों मुलाकात

1. सभी ने बापदादा की आज के वतन की रूह-रूहाण सुनी। उससे अपने को एवररेडी बनाने की प्रेरणा भी ली। सदैव यह अटैन्शन रहे कि हम सभी बाप समान विजयी बने हैं – क्योंकि बहुत समय के विजयी, विजयी माला के मणके बन सकते हैं। अगर अभी-अभी हार होगी तो कभी भी विजय माला के मणके नहीं बन सकते। विजयी बनने के लिए सदैव क्या याद रहे? विजयी बनने के लिए सदा बाप को सामने रखो – जो बाप ने किया वह हमें करना है। हर कदम-कदम के ऊपर जो बाप का संकल्प वही बच्चों संकल्प, जो बाप के बोल वही बच्चों के बोल तब विजयी बन सकते हो। ऐसा अटेन्शन भी सदाकाल का चाहिए, अगर अल्पकाल का राज्य लेना है तो थोड़ समय के लिए याद रखो। जैसा पुरुषार्थ वैसी प्रालब्ध। तो सदा का राज्य और सदा का पुरूषार्थ – ऐसे पुरूषार्थी हो? माया के भी नालेजफुल हो, तो कभी धोखा नहीं खाते। अनजान होते हैं तो धोखा खा लेते हैं। नालेज को लाइट और

माइट कहा जाता है। जो नालेजफुल हैं अर्थात् लाइट और माइट दोनों हैं वह कभी माया से हार नहीं खा सकते। सिर्फ संकल्प में दृढ़ता की कमी होती है। संकल्प करते हो कि यह करेंगे लेकिन दृढ़ता न होने के कारण सोचने-करने में फर्क पड़ जाता है। संकल्प में दृढ़ता हो तो सोचना और करना दोनों समान हो जाएं। तो सुना बहुत है लेकिन अब जो सुना वह साकार स्वरूप में लाओ।

2. संगमयुग के महत्व को जानते हुए हर संकल्प और सेकेण्ड जमा करते हो? व्यर्थ तो नहीं जाता है? सेकेण्ड भी व्यर्थ गया तो सेकेण्ड की वैल्यू बहुत बड़ी है। जैसे एक का लाख गुना बनता है वैसे एक सेकेण्ड भी व्यर्थ जाता तो लाख गुना व्यर्थ गया। इतना अटेन्शन रहता है। अलबेलापन तो नहीं आता। अभी वह समय नहीं है। अभी तो चल जाता है, कोई हिसाब लेने वाला ही नहीं है लेकिन थोड़े समय के बाद अपने आपको ही पश्चाताप होगा। समय की वैल्यू है समय के वरदान से ही अमूल्य रतन बनते हो। अमूल्य रतन समय भी अमूल्य रीति से व्यतीत करते हैं। अमूल्य रतन समझने से सेकेण्ड और संकल्प भी अमूल्य हो जायेंगे।

3. सभी अपने को सदा सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ आत्मा समझ श्रेष्ठ कर्म करते हो? जैसा आक्यूपेशन होता है वैसे कर्म होता है। अगर कोई बड़ा पोजीशन वाला होगा तो उसकी एक्टिविटी भी उसी प्रमाण होगी। आपका आक्यूपेशन क्या है? सर्व आत्माओं से श्रेष्ठ आत्मा। तो श्रेष्ठ आत्मा का हर संकल्प हर सेकेण्ड भी ऐसा ही होगा। आप जैसा विशेष पार्ट बाप को पा लेना, ऐसा पार्ट और किसका हो नहीं सकता। जब ब्रह्माकुमार कहलाते हो, परमात्मा के बच्चे कहलाते हो तो चलन भी तो ऐसी चाहिए। सदा आक्यूपेशन और एक्टिविटी को मिलाओ। बड़ा आदमी कर्म बेसमझी के वा बच्चे जैसे करे तो लोग हसेंगे ना। ऐसे ही जब ब्रह्माकुमार कहलाते हो और साधारण ऐक्ट चलो तो क्या कहेंगे! आधाकल्प बेसमझ रहे अब समझदार बने – तो समझदार का हर संकल्प शक्तिशाली होगा।

4. सदा कल्प पहले माफिक अपने को अंगद के समान अचल समझते हो? अंगद के समान अचल अर्थात् सदा निश्चय बुद्धि विजयन्ती। जरा भी हलचल में आये तो विजयी बन नहीं सकेंगे। माया के विघ्न यह तो ड्रामा में महावीर बनाने के लिए पेपर के रूप में आते हैं। बिना पेपर के कभी क्लास चेन्ज नहीं होता। पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। तो पेपर आने से खुश होना चाहिए न कि हलचल में आना है। माया से भी लेसन सीखो, वह कभी भी हलचल में नहीं आती – अटल रहती, यही लेसन माया से सीख मायाजीत बन जाओ।

5. स्नेह का रेसपान्ड है फालोफादर। जिससे स्नेह होता है उसको आटोमेटिकली फालो करना होता है। सदा याद रहे कि यह कर्म जो कर रहे हैं यह फालो फादर है। अगर नहीं तो स्टाप। फालो फादर है तो करते चलो, कापी ही करनी हैं ना। बाप को कापी करते बाप बन जाओ। कापी करने के लिए जैसे कार्बन पेपर डालते हैं वैसे अटेन्शन का पेपर डालो तो कापी हो जायेगा।

अभी अपने को तीव्र पुरूषार्थी नहीं बनायेंगे तो आगे चलकर यह समय भी खत्म हो जायेगा फिर टू लेट हो जायेंगे, वंचित रह जायेंगे। अभी हर शक्ति से स्वयं को सम्पन्न बनाने का समय है। अगर स्वयं-स्वयं को सम्पन्न नहीं कर सकते हो तो सहयोग लो, छोड़ नहीं दो। सम्पन्नता की निशानी है सन्तुष्टता। इसलिए सदा सन्तुश्ट आत्मा बनो। अच्छा – ओम् शान्ति।

18.1.80

स्मृति दिवस पर बापदादा की बच्चों प्रति शिक्षायें

आज स्मृति दिवस के स्मृति स्वरूप अर्थात् समर्थ स्वरूप बच्चों को देखकर बापदादा भी सदा 'समर्थ भव' का वरदान दे रहे हैं। जैसे आज के इस स्मृति दिवस पर स्वत: स्मृति स्वरूप रहे हो, एक ही लगन में मगन, एक बाप दूसरा न कोई – ऐसे सहजयोगी, निरन्तर योगयुक्त जीवनमुक्त, फरिश्ता स्वरूप सदाभव।

आज के दिन सभी बच्चों का चार्ट बाप-समान अव्यक्त वतन वासी, सदा स्नेही लवलीन अवस्था का रहा। ऐसे ही बाप-समान न्यारे और सदा प्यारे भव। चारों ओर के बचचों का आज के समर्थ दिवस पर बाप को प्रत्यक्ष करने का एक ही दृढ़ संकल्प अभी भी बाप के पास पहुँच रहा है। सब बच्चे अपने एक ही उमंग हुल्लास के संकल्प से देश व विदेश में सेवा की स्टेज पर कोई मन से, कोई तन से उपस्थित हैं। यहाँ होते भी बापदादा के सामने सभी बच्चों की सेवा के उमंग, उत्साह भरे चेहरे सामने हैं। बाप-दादा को वर्ल्ड का चक्कर लगाने में कितना समय लगता है। जितने में आप लोग साइन्स के साधनों टी.वी. वा रेडियों द्वारा स्वीच ऑन कर सुनते हो व देखते हो, इतने समय में बाप-दादा वर्ल्ड का चक्कर लगाते हैं। बाप-दादा देख रहे हैं कि हर स्थान के बच्चे क्या-क्या कर रहे हैं। जैसे आज के दिन सबको एक ही सेवा की धुन लगी हुई है, हरेक की बुद्धि में प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा रहा है कि विश्व में यह झण्डा लहरायें। सबके हृदय में बाप-दादा बस रहा है और ही पुरुषार्थ प्रैक्टिकल में ला रहे हैं कि सभी कैसे दिल चीरकर दिखायें कि बाप हमारे दिल में है। इस समय का सबका रूप यादगार में गाए हुए सेवक हनुमान के मिसल है। कोई संकल्प के तीर लगा रहे हैं जिस श्रेष्ठ संकल्प से वायुमण्डल द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करें। कोई अपने मुख के स्नेही और शक्तिशाली बोल से बाप को प्रत्यक्ष करने में लगे हुए हैं। ऐसा दृश्य याद और सेवा के बैलेन्स का बाप-दादा देख रहे हैं। स्नेह भी आज सम्पूर्ण रूप में इमर्ज है और शक्ति स्वरूप भी आज सेवा अर्थ इमर्ज रूप में है। आज के इस दिन के समान सदा याद और सेवा के बैलेन्स में रहना।

यह ८० का वर्ष विशेष हर आत्मा को यथा योग्य वर्सा देने का वर्ष है। सर्व तड़पती हुई आत्माओं को यथार्योग्य तृप्त आत्मा बनने का वर्ष है। विशेष इस वर्ष में याद और सेवा का बैलेन्स रखना और सदा ब्लिसफल रहता। साथ-साथ सर्व आत्माओं को ब्लैसिंग देते रहना। इस वर्ष का संगठित रूप का विशेष सलोगन है स्व के प्रति और सर्व के प्रति सदा विघ्न-विनाशक बनना। उसका सहज साधन है क्वेश्चन मार्क को सदा के लिए विदाई देना और फुल स्टाप द्वारा सर्व शक्तियों का फुल स्टाक करना। इस वर्ष की विशेष सर्व विघ्न प्रूफ चमकीली फरिश्ता ड्रेस सदा पहनकर रखना। मिटटी की ड्रेंस नहीं पहनना और सदा सर्व गुणों के गहनों से सजे रहना। विशेष ८ शक्तियों के शस्त्रों से सदा अष्ट शक्ति शस्त्रधारी सम्पन्न मूर्ति बनकर रहना। सदा कमल पुष्प के आसन पर अपने श्रेष्ठ जीवन के पांव रखना। और क्या करेंगे?

खुशबूदार बनो, खुशबू फैलाओ

रोज़ अमृतबेले विश्व वरदानी स्वरूप से विश्व-कल्याणकारी बाप के साथ कम्बाइन्ड रूप बन विश्व वरदानी शक्ति आर विश्व कलयाणकारी शिव। शिव और शक्ति कम्बाइन्ड रूप से मन्सा संकल्प वा वृत्ति द्वारा वायब्रेशन की खुशबू फैलाना। जैसे आजकल की स्थूल खुशबू के साधनों से भिन्न-भिनन प्रकार की खुशबू फैलाते हैं। कोई गुलाब की खुशबू, कोई चन्दन की खुशबू। ऐसे आप द्वारा सुख, शान्ति, शक्ति, प्रेम, आनन्द की भिन्न-भिन्न खुशबू फैलती जाए। रोज़ अमृतबेले भिन्न-भिन्न श्रेष्ठ वायब्रेशन के फाउन्टेन के मुआफिक आत्माओं के ऊपर गुलाबबाशी डालना। सिर्फ संकल्प का आटोमिटिक स्वीच ऑन करना। यह तो आता हैं ना। क्योंकि आज के विश्व में अशुद्ध वृत्ति की बदबू बहुत है। उनको खुशबूदार बनाओ। समझा इस वर्ष में क्या करना है।

इस वर्ष में आजकल के गवर्मेन्ट की इलेक्शन हुई है और पाण्डव क्या करेंगे। इस वर्ष में जो भी पुराने और नये सर्विस के भिन्न-भिन्न साधन हैं उनको तन-मनधन, समय आदि जो भी है, सब लगाकर फाइनल सर्व आत्माओं में से सलेक्ट करो कि कौन-सी आत्मायें मुक्ति के वर्से के योग्य हैं और कौन-सी आत्मायें जीवनमुक्ति के योग्य हैं। जो जिसके योग्य है उनको वैसा ही सन्देश दे फाइनल करो। अभी सेवा की फाइल फाइनल करो। जैसे फाइल के हर कागज़ में ऑफीसर अपनी सही करके सम्पन्न करके आगे

बढ़ता है। तो आप सब सेवाधारी हर आत्मा पर मुक्ति व जीवनमुक्ति की साइन करो। फाइनल की स्टैम्प लगाओ। तो फाइल सम्पूर्ण हो जाएगी। समझा, इस वर्ष में क्या करना है? सिलेक्शन की मशीनरी तेज़ करो। देखेंगे कितने में फाइल तैयार करते हो। पहले विदेश फाइल तैयार करता है या देश। जिसको जिस धर्म में जाना है, स्टैम्प लगा दो।

आज बाप-दादा चारों ओर के सर्व स्नेही और सेवाधारी बच्चों को याद प्यार दे रहे हैं। आज के दिन तन से भले भिन्न-भिन्न स्थानों पर हैं लेकिन मन से बाप को प्रत्यक्ष करने की धुन के कारण बाप के तरफ ही मनमनाभव हैं।

ऐसे सदा स्नेह और सेवा में अविनाशी रहने वाले, सदा बाप की सेवा में तत्पर रहने वाले, प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने वाले, सर्व विजयी बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

(आज जानकी दादी विदाई ले लण्डन जा रही थी – तो बापदादा ने सबसे छुटटी लेने के लिए जानकी दादी को तख्त पर अपने बाजू में बिठाया)

बाप-दादा को भी मुरबी बच्चों का रिस्पेक्ट रखना होता है। इसलिए बाप-दादा बधाई देते हैं न कि विदाई। वैसे तो यह मस्त फकीर है। विश्व की परिक्रमा बाप बच्चों के साथ साकार द्वारा भी करते हैं। वैसे तो सेकेण्ड में विश्व परिक्रमा लगाते हैं लेकिन साकार रूप में बच्चों द्वारा सेवा की परिक्रमा लगाते हैं। बाप को विश्व की परिक्रमा अर्थात सेवा की परिक्रमा दिलाने के लिए जा रही हो। इस वर्ष की विशेषता – 'चक्रवर्ती भव' आगे-आगे बाप होंगे पीछे-पीछे आप। आप बाप को परिक्रमा लगवायेंगी व बाप आपको परिक्रमा साथ-साथ दिलायेंगे।

(आज मीठी दीदी बाप-दादा के सम्मुख आकर बैठी हैं) –

आज वतन में सभी बच्चे स्नेह से तो पहुँचे ही थे। लेकिन आज के समर्थी दिवस बनाने के लिए सेवा में गई हुई श्रेष्ठ आत्मायें भी पहुँची। उनकी भी रूह-रूहान बड़ी अच्छी थी। वे अपने विश्व सेवा के वण्डरफुल पार्ट को देखते हुए हर्षित हो रही थीं कि भिन्न शरीर से विश्व सेवा का अलौकिक राज़युक्त पार्ट कौन-सा है – बाप-दादा सुना रहे थे। विश्व की पतित-पावनी सरस्वती नदी का गायन ही है – गुप्त सेवाधारी। गंगा और जमुना प्रसिद्ध हैं साकार में। लेकिन सरस्वती की सेवा गुप्त रूप में भी दिखाई है और प्रख्यात में सितारधारी यादगार रूप में भी है। और गुप्त रूप में गुप्त नदी के रूप में यादगार है। दोनों ही पार्ट वन्डरफुल हैं। जन्म द्वारा सेवा के पार्ट का सम्बन्ध है। जहाँ जीत वहाँ जन्म। कोई राज्य कीद जीत नहीं लेकिन जन्म द्वारा विकारों पर जीत हो जाती है। जहाँ जन्म वहाँ जीत है न कि जहाँ जीत वहाँ जन्म। यह जो थोड़ा बहुत गायन है ही वही प्रैक्टिकल में पार्ट तो चलना ही है। अब यह विशेष सेवाधारी, समय का और साकार सेवाधारियों के सेवा की पार्ट समाप्त हो, तब नये राज्य के लेन-देन के वन्डरफुल पार्ट की आदि हो। तो एडवान्स का ग्रुप, उसमें भी जो विशेष नामीग्रामी आत्मायें हैं उनका संगठन बहुत मज़बूत है। श्रेष्ठ जन्म, फर्स्ट जन्म, दिलाने के लिए धरनी तैयार करने का वन्डरफुल पार्ट इन आत्माओं द्वारा तीव्रगति से चल रहा है। जैसे विनाशकारी बटन दबाने कमे लिए रूके हुए हैं। वैसे दिव्य जन्म द्वारा स्थापना कराने के निमित्त बनी हुई एडवान्स सेवा की पार्टी टचिंग करने के लिए, मैसेज देने के लिए, प्रत्यक्षता करने के लिए रूकी हुई है। वह तो सम्बन्ध के स्नेह से प्रत्यक्ष करेंगे। यह भी विचित्र कहानियों के रूप से स्थापना के जन्म का पार्ट नूँधा हुआ है। पहले कृष्ण पीछे राधे होगी ना। तो जन्म-स्थान और उनकी स्थिति दोनों का सम्पूर्ण कार्य समापत कर पीछे जन्म होगा राधे का। इसलिए वह बड़ा वह छोटी हो जायेगी। जैसे यहाँ भी से के क्षेत्र में पहले जगत अम्बा धरनी बनाने गई और फिर बाप गये। ऐसे जगत अम्बा और मुरबी बच्चा विश्व किशोर साथी, सामना करने वाले थे। मैदान पर आगे सेवा में आने वाले रहे, वैसे ही अभी भी भिन्न रूप में कार्य के संस्कार वही हैं। दोनों स्थापना के जन्म की कहानी में हीरो पार्टधारी हैं। गर्भमहल तैयार करा रहे हैं। यहाँ भी तो कारोबार में निमित्त दोनों मूर्तियाँ रहीं। तो यह महल तैयार करने वाले भी ऐसे पॉवरफुल चाहिएँ। यहाँ स्थापना की तैयारी की और फिर वहाँ आप सबके लिए जो विशेष अष्ट रतन हैं, उनके लिए तैयारी कर रहे हैं, महल तैयार कर रहे हैं। जब तैयारी हो तब तो आत्मायें वहाँ जायेंगी ना। तो अब अपवित्र सृष्टि में पवित्र महल तैयार करना कितना श्रेष्ठ कार्य करना पड़े। ऐसी पॉवरफुल आत्मायें चाहिए जो यह पॉवरफुल कार्य कर सकें। ऐसी वैसी नहीं कर सकतीं। वह भी डेट पूछ रहे हैं किस डेट तक महल तैयार चाहिए, डेट बताओ। वह तो कहते हैं साकार सेवा का पार्ट समाप्त होगा तब हमारे कार्य की आदि होगी। इनकी अन्त हमारी आदि। पहले अन्त होगी तब तो फिर आदि होगी। तो सेवा के पार्ट की समाप्ति की डेट कौन-सी है। वही डेट फिर राज्य के जन्म की होगी। सुना, उनकी रूह-रूहान। वैसे तो सब आत्मायें इमर्ज थीं लेकिन उनके भी ग्रुप्स हैं। सर्विसएबुल बच्चों को देखते हुए बाबा बोले :– सर्विस के प्लैन तो सभी ने बहुत अच्छे-अच्छे बनाये हैं लेकिन सभी सर्विस के प्लैन सफल तभी होंगे जब निमित्त बने हुए विशेष अटेन्शन देंगे। एक तो जिस आत्मी की जो विशेषता है उस विशेषता को मूल्य देते हुए उनको आगे उमंग उत्साह में लाना, उसके लिए निमित्त बने हुए को भी अथक सेवाधारी बनना पड़े।

२. अपने सेवाकेन्द्र का व जो भी सम्पर्क के सेवाकेन्द्र हैं उनका वातावरण रूहानियत का बनाओ जिससे स्वयं की और आने वाली आत्माओं की, जो नये-नये आते हैं उनकी सहज उन्नति हो सके। क्योंकि वातावरण धरती के बनाता है। तो सेवाकेन्द्र का वाताव-

रण रूहानी हो। जो भी सेवाकेन्द्र पर आते हैं वह एक तो अपने गृहस्थ व्यवहार के झंझट से आते हैं, गृहस्थ के वातावरण से थके हुए होते हैं, तो उन्हें एकस्ट्रा सहयोग की आवश्यकता होती है, तो रूहानी वायुमण्डल का उनको सहयोग देकर सहज पुरूषार्थी बना सकते हो। जैसे एयरकन्डीशन होता है तो वातावरण को क्रियेट करते हैं, ठण्डी में अगर गर्म स्थान मिल जाता है तो जाने से ही आराम महससू करते हैं, इसी रीति से रूहानियत के आधार पर सेवाकेन्द्र का ऐसा वायुमण्डल हो जो अनुभव करें कि यह स्थान सहज ही उन्नति प्राप्त करने का है। इसलिए सेवाकेन्द्र पर आते हैं तो आते ही बाहर का और सेवाकेन्द्र का अन्तर महसूस हो, जिससे स्वत: आकर्षित हों।

ब्राह्मण परिवार की विशेषता है – अनेक होते भी एक। तो हर सेवाकेन्द्र का वायब्रेशन ऐसा हो जो सबको महससू हा कि ये अनेक नहीं लेकिन एक हैं। एकता का वायब्रेशन सारे विश्व में एक धर्म, एक राज्य स्थापना करेगा। यह भी विशेष अटेन्शन देकर भिन्नता को मिटाकर एकता लाना।

इस नये वर्ष में विशेष इन तीनों बातों को प्रैक्टिकल में लाना। सुनना और कहना तो ही रहा है लेकिन इस साल में यह तीनों बातें प्रैक्टिकल में लाओ। सेवाधारी स्वयं प्रति नहीं लेकिन सेवा प्रति। स्वयं का सब-कुछ सेवा प्रति स्वाहा करने वाले। जैसे साकार बाप ने हड्डियाँ भी स्वाहा की ना सेवा में। ऐसे हर कर्मेन्द्रिय द्वारा सेवा सदा होती रहे। मुख से भी सेवा, नयनों से भी सेवा, सेवा ही सेवा। तो सभी ऐसे सेवाधारी हो ना।

प्लैन अच्छे बनाये हैं अभी प्रैक्टिकल की लिस्ट आयेगी। जैसे प्लैन फाइल आ गई वैसे प्लैन की रिजल्ट आयेगी। अच्छा – सभी १०८ की माला में आने वाले हो ना। सब एनाउन्स ऑटोमेटिकीली हो जाएगा। अपनी सीट हरेक लेते हुए अपना नम्बर एनाउन्स करेंगे। सेवा की सीट नम्बर एनाउन्स करेगी। सेवा माईक बनेगी, मुख का माइक एनाउन्स नहीं करेगा।

18.1.81

'स्मृति-स्वरूप' का आधार याद और सेवा

आज बापदादा अपनी अमूल्य मणियों को देख रहे हैं। हरेक मणी अपने-अपने स्थिति रूपी स्थान पर चमकती हुई मणियों के स्वरूप में बाप-दादा का श्रृंगार है। आज बाप-दादा अमृतवेले से अपने श्रृंगार (मणियों) को देख रहे हैं। आप सभी साकारी सृष्टि में हर स्थान को सजाते हो, भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्पों से सजाते हो। यह भी बच्चों की मेहनत बाप-दादा ऊपर से देखते रहते हैं। आज के दिन जैसे आप सब बच्चे मधुबन के हर स्थान की परिक्रमा लगाते हो, बाप-दादा भी बच्चों के साथ परिक्रमा पर होते हैं। मधुबन में भी 4 धाम विशेष बनाये हैं। जिसकी परिक्रमा लगाते हो, तो भक्तों ने भी 4 धाम का महत्व रखा है। जैसे आज के दिन आप परिक्रमा लगाते हो, वैसे भक्तों ने फालो किया है। आप लोग भी क्यू बनाकर जाते हो, भक्त भी क्यू लगाए दर्शन के लिए इन्तजार करते हैं। जैसे भक्ति में सत वचन महाराज कहते हैं वैसे संगम पर सत वचन के साथ-साथ आपके सत कर्म महान हो जाते हैं। अर्थात् याद-गार बन जाते हैं। संगमयुग की यह विशेषता है। भक्त, भगवान के आगे परिक्रमा लगाते हैं लेकिन भगवान अब क्या करते हैं? भगवान बच्चों के पीछे परिक्रमा लगाते हैं। आगे बच्चों को करते पीछे खुद चलते हैं। सब कर्म में चलो बच्चे– चलो बच्चे कहते रहते हैं। यह विशेषता है ना। बच्चों को मालिक बनाते, स्वयं बालक बन जाते, इसलिए रोज़ मालेकम् सलाम कहते हैं।

भगवान ने आपको अपना बनाया है या आपने भगवान को अपना बनाया है। क्या कहेंगे? किसने किसको बनाया? बाप-दादा तो समझते हैं बच्चों ने भगवान को अपना बनाया है। बच्चे भी चतुर तो बाप भी चतुर। जिस समय आर्डर करते हो और हाजिर हो जाते हैं।

आज का दिन मिलन का दिन है आज के दिन को वरदान है– 'सदा स्मृति भव''। तो आज स्मृति भव का अनुभव किया?

आज स्मृति भव के रिर्टन में मिलन मनाने आये हैं। याद और सेवा देनों का बैलेन्स स्मृति स्वरूप स्वत: ही बना देता है। बुद्धि में भी बाबा मुख से भी बाबा। हर कदम विश्व कल्याण की सेवा प्रति। संकल्प में याद और कर्म में सेवा हो यही ब्राह्मण जीवन है। याद और सेवा नहीं तो ब्राह्मण जीवन ही नहीं। अच्छा –

सर्व अमूल्यण मणियों को, स्मृति स्वरूप वरदानी बच्चों को हर कर्म सत कर्म करनेव ले महान और महाराजन, सदा बाप के स्नेह और सहयोग में रहने वाले, ऐसी विशेष आत्माओं को बाप-दादा का यादप्यार और नमस्ते।

पर्सनल मुलाकात – बाप-दादा हर बच्चे को सदैव किस नज़र से देखते हैं? बाप-दादा की नज़र हरेक बच्चे की विशेषता पर जाती है। और ऐसा कोई भी नहीं हो सकता जिसमें कोई विशेषता न हो। विशेषता है तब विशेष आत्मा बनकर ब्राह्मण परिवार में आये हैं। आप भी जब किसी के सम्पर्क में आते हो तो विशेषता पर नज़र जानी चाहिए। विशेषता द्वारा उनसे वह कार्य करा सकते हो और लाभ ले सकते हो। जैसे बाप होपलेस को होपवाला बना देते। ऐसा कोई भी हो कैसा भी हो उनसे कार्य निकालना है, यह है संगम-युगी ब्राह्मणों की विशेषता। जैसे जवाहरी की नज़र सदा हीरे पर रहती, आप भी ज्वैलर्स हो आपनी नज़र पत्थर की तरफ न जाए, हीरे को देखो। संगमयुग है भी हीरे तुल्य युग। पार्ट भी हीरो, युग भी हीरे तुल्य, तो हीरा ही देखो। फिर स्टेज कौन-सी होगी? अपनी शुभ भावना की किरणें सब तरफ फैलाते रहेंगे। वर्त्तमान समय इसी बात का विशेष अटेन्शन चाहिए। ऐसे पुरुषार्थी को ही तीव्र पुरु-षार्थी कहा जाता है। ऐसे पुरुषार्थी को मेहनत नहीं करनी पड़ती सब कुछ सहज हो जाता है। सहजयोगी के आगे कितनी भी बड़ी बात ऐसे सहज हो जाती है जैसे कुछ हुआ ही नहीं, सूली से काँटा। तो ऐसे सहजयोगी हो ना? बचपन में जब चलना सीखते हैं तब मेहनत लगती, तो मेहनत का काम भी बचपन की बातें हैं, अब मेहनत सामप्त सब में सहज। जहाँ कोई भी मुश्किल अनुभव होता है वहाँ उसी स्थान पर बाबा को रख दो। बोझ अपने ऊपर रखते हो तो मेहनत लगती। बाप पर रख दो तो बाप बोझ को खत्म कर देंगे। जैसे सागर में किचड़ा ड़ालते हैं तो वह अपने में नहीं रखता किनारे कर देता, ऐसे बाप भी बोझ को खत्म कर देते। जब पण्डे को भूल जाते हो तब मेहनत का रास्ता अनुभव होता। मेहनत में टाइम वेस्ट होता। अब मंसा सेवा करो, शुभचिंतन करो, मनन शक्ति को बढ़ाओ। मेहनत मजदूर करते आप तो अधिकारी हैं।

18 जनवरी जिम्मेवारी के ताजपोशी का दिवस

अव्यक्त बापदादा अपने नूरे रत्न बच्चों के प्रति बोले:-

आज जहान के नूर अपने नूरे रत्नों से मिलने आये हैं। सिकीलधे बच्चे बाप के नूर हैं। जैसे शरीर में, ऑखों में नूर नहीं तो जहान नहीं, ऐसे विश्व में आप रुहानी नूर नहीं तो विश्व में रोश्नी नहीं, अंधकार है। बापदादा के नयनों के नूर अर्थात् विश्व की ज्योति हो। आज के विशेष समृति दिवस पर बापदादा के पास सबके स्नेह के गीत अमृतवेले से वतन में सुनाई दे रहे थे। हरेक बच्चे के गीत एक-दो से ज्यादा प्रिय थे। मीठी-मीठी रुह-रुहान भी बहुत सुनी। बच्चों के प्रेम के मोतियों की मालायें बापदादा के गले में पिरो गई। ऐसे मोतियों की मालायें बापदादा के गले में भी सारे कल्प के अन्दर अभी ही पड़ती हैं। फिर यह अमूल्य स्नेह के मोतियों की माला पिरो नहीं सकती, पड़ नहीं सकती। इस एक-एक मोती के अन्दर क्या समाया हुआ था, हरेक मोती में यही था- ''मेरा बाबा'', ''वाह बाबा''। बताओ कितनी मालायें होंगी? और इन्हीं मालाओं से बापदादा कितने अलौकिक सजे हुए श्रृंगार हुए होंगे। जैसे स्थूल में स्नेह की निशानी मालाओं से सजाया है। तो यहाँ स्थूल सजावट से सजाया है लेकिन वतन में अमृतवेले से बापदादा को सजाना शुरु किया। एक के ऊपर एक माला बापदादा का सुन्दर श्रृंगार बन गई। आप सभी भी वह चित्र देख रहे हो ना?

आज का विशेष दिन सर्व बच्चों के ताजपोशी का दिन है। आज के दिन आदि देव ब्रह्मा बाप ने स्वयं साकारी जिम्मेवारियां अर्थात् साकारी रुप से सेवा का ताज, नयनों की दृष्टि द्वारा हाथ में हाथ मिलाते, मुरब्बी बच्चों को अर्पण किया। तो आज का दिन ब्रह्मा बाप का साकार रुप की जिम्मेवारियों का ताज बच्चों को देने का ताजपोशी दिवस है। (दादी से) आज का दिन याद है ना? आज का दिन ब्रह्मा बाप का बच्चों को ''बाप समान भव'' के वरदान देने का दिन है।

ब्रह्मा बाप के अन्तिम संकल्प के बोल वा नयनों की भाषा सुनी? क्या थी? नयनों के इशारे के बोल यही थे-''बच्चे, सदा बाप के सहयोग की विधि द्वारा वृद्धि को पाते रहेंगे।'' यही अन्तिम बोल, वरदानी बोल प्रत्यक्षफल के रुप में देख रहे हैं। ब्रह्मा बाप के अन्तिम वरदान का साकार स्वरुप आप सब हो। वरदान के बीज से निकले हुए वैरायटी फल हो। आज शिव बाप ब्रह्मा को वरदान के बीज से निकला हुआ सुन्दर विशाल वृक्ष दिखा रहे थे। साइंस के साधनों से तो बहुत प्रयत्न कर रहे हैं कि एक वृक्ष में वैरायटी फल निकलें लेकिन ब्रह्मा बाप वरदान का वृक्ष, सहज योग की पालना से पला हुआ वृक्ष कितना विचित्र और दिलखुश करने वाला वृक्ष है। एक ही वृक्ष में वैरायटी फल हैं। अलग-अलग वृक्ष नहीं हैं। वृक्ष एक है फल अनेक प्रकार के हैं। ऐसा वृक्ष देख रहे हो? हरेक अपने को इस वृक्ष में देख रहे हो? तो आज वतन में ऐसा विचित्र वृक्ष भी इमर्ज हुआ। ऐसा वृक्ष सतयुग में भी नहीं होगा। हाँ, साइंस वाले जो कोशिश कर रहे हैं उसका फल आपको थोड़ा-बहुत मिल जायेगा। एक ही फल में दो-चार फल के रस का अनुभव होगा। मेहनत यह करेंगे और खायेंगे आप। अभी से खा रहे हो क्या?

तो सुना आज का दिन क्या है? आज का दिन जैसे आदि में ब्रह्मा बाप ने स्थूल धन विल किया बच्चों को, ऐसे अपनी अलौकिक प्रापर्टी बच्चों को विल की। तो आज का दिन बच्चों को विल करने का दिवस है। इसी अलौकिक प्रापर्टी के विल के आधार पर कार्य में आगे बढ़ने की विलपावर प्रत्यक्षफल दिखा रही है। बच्चों को निमित्त बनाए विलपावर की विल की। आज का दिन विशेष बाप समान वरदानी बनने का दिवस है। आज का दिन- स्नेह और शक्ति कम्बाईन्ड वरदानी दिन है। प्रैक्टिकल अनुभव किया ना- दोनों का? अति स्नेह और अति शक्ति। (दादी से) याद है ना अनुभव। ताजपोशी हुई ना? अच्छा- आज के दिन के महत्व को जाना। अच्छा-

ऐसे सदा बाप के वरदानों से वृद्धि को पाने वाले, सदा एक बाप दूसरा न कोई, इसी समृति स्वरुप, सदा ब्रह्मा बाप के समान फरिश्ता भव के वरदानी, ऐसे समान और समीप बच्चों को बापदादा का समर्थ दिवस पर यादप्यार और नमस्ते।

(दादी-दीदी से):- साकार बाप के वरदानों की विशेष अधिकारी आत्मायें हो ना? साकार बाप ने आप बच्चों को कौन-सा वरदान

दिया? जैसे ब्रह्मा को आदि में वरदान मिला तत त्वम्। ऐसे ही ब्रह्मा बाप ने भी बच्चों को विशेष तत् त्वम का वरदान दिया। तो विशेष तत् त्वम के वरदान के अधिकारी वारिस हो। इसी वरदान को सदा स्मृति में रखना अर्थात् समर्थ आत्मा होना। इसी वरदान की समृति से जैसे ब्रह्मा बाप के हर कर्म में बाप प्रत्यक्ष अनुभव करते थे ऐसे आपके हर कर्म में ब्रह्मा बाप प्रत्यक्ष होगा। ब्रह्मा बाप को प्रत्यक्ष करने वाले आदि रत्न कितने थोड़े निमित्त बने हुए हैं। आप विशेष आत्माओं की सूरत द्वारा ब्रह्मा की मूर्त अनुभव करें, और करते भी हैं। ब्रह्माकुमारी नहीं। ब्रह्मा बाप के समान, ब्रह्मा बाप की अनुभूति हो। ऐसी सेवा के निमित्त वरदानी विशेष आत्मायें हो। सब क्या कहते हैं? बाबा को देखा, बाबा को पाया। तो अनुभव कराने वाले, प्रत्यक्ष करने वाले कौन? आप ताजधारी विशेष आत्मायें अभी जल्दी फिर से ब्रह्मा बाप और ब्रह्मा वत्स शक्तियों के रुप में, शक्ति में शिव समाया हुआ, शिव शक्ति और साथ में ब्रह्मा बाप, ऐसे साक्षात्कार चारों ओर शुरु हो जायेगा। ब्रह्माकुमारी के बजाए ब्रह्मा बाप दिखाई देगा। साधारण स्वरुप के बजाए शिवशक्ति स्वरुप दिखाई देगा। जैसे आदि में साकार की लीला देखी। ऐसे ही अन्त में भी होगी। सिर्फ अभी एडीसन शिवशक्ति स्वरुप का भी साक्षात्कार होगा। फिर भी साकार पिता तो ब्रह्मा है ना। तो साकार रुप में आये हुए बच्चे बाप को देखेंगे और अनुभव जरुर करेंगे। यह भी समाचार सुनेंगे। ब्रह्मा बाप के सहयोग का, सिर्फ शरीर के बन्धन से बन्धनमुक्त हो और तीव्रगति रुप से सह-योगी बन गये। क्योंकि ड्रामा अनुसार वृद्धि होने की अनादि नूंध थी।

वैसे भी ज्यादा स्थान पर अगर रोशनी फैलानी होती है तो क्या करते हैं? उंची रोशनी करते हैं ना! सूर्य भी विश्व में रोशनी तब दे सकता है जब ऊंचा है। तो साकार सृष्टि को सकाश देने के लिए ब्रह्मा बाप को भी ऊंचे स्थान निवासी बनना ही था। अब तो सेकण्ड में जहाँ चाहें अपना कार्य कर सकते और करा सकते हैं। मुख द्वारा व पत्रों द्वारा कैसे इतना कार्य करते इसलिए तीव्र विधि द्वारा बच्चों के सहयोगी बन कार्य कर रहे हैं। सबसे तीव्रगति की सेवा का साधन है- संकल्प शक्ति। तो ब्रह्मा बाप श्रेष्ठ संकल्प की विधि द्वारा वृद्धि में सदा सहयोगी है। तो वृद्धि की भी गति तीव्र हो रही है ना। विधि तीव्र है तो वृद्धि भी तीव्र है। बगीचे को देख हर्षित होती है ना? अच्छा-

साकार बाबा का लौकिक परिवार

(नारायण तथा उनकी युगल)

सब कार्य ठीक चल रहे हैं? अभी जम्प कभी लगाते हो? इतनी वृद्धि को देख सहज विधि अनुभव में नहीं आती है? क्या सोच रहे हो? संकल्प की ही तो बात है ना? और कुछ करना है क्या? संकल्प किया और हुआ। यह (विदेशी) इतना दूर-दूर से पहुँच गये हैं, किस आधार पर? संकल्प किया जाना ही है, करना ही है, तो पहुंच गये ना। तो दूर से दृढ़ संकल्प के आधार पर अधिकारी बन गये। आप तो बचपन के अधिकारी हो। याद है बचपन? तो क्या बनेंगे? देखेंगे या उड़ती कला में जाकर बाप समान फरिश्ता बनेंगे? देख तो रहे ही हो। देखेंगे कब तक? सोचेंगे भी कब तक? ८३ तक ? कब तक सोचना है? बापदादा उसी स्नेह के पंखों से बच्चों को उड़ाना चाहते हैं। तो पंखों पर बैठने के लिए भी क्या करना पड़े? डबल लाइट तो बनना पड़ेगा ना। सब कुछ करते भी तो डबल लाइट बन सकते हो। सिर्फ कल्पना का खेल है बस। एक सेकण्ड का खेल है। तो सेकण्ड का खेल नहीं आता है? बाप ने क्या किया? सेकण्ड में खेल किया ना? जब दोनों एक दो के सहयोगी होंगे तब कर सकेंगे। एक पहिया भी नहीं चल सकता। दोनों पहिए चाहिए। फिर भी बापदादा के घर में आते हो। बापदादा तो बच्चों को सदा ऊपर देखते हैं। ऊंचा बाप बच्चों को भी ऊंचा देखने चाहते हैं। यह तो कायदा है ना! अभी बच्चे कहाँ सीट लेते हैं वह आपके हाथ में है। सोच लो भले अच्छी तरह से लेकिन है सेकण्ड की बात। सौदा करना तो सेकण्ड में है। अच्छा-

18-1-84

अट्ठारह जनवरी – स्मृति दिवस का महत्वा

दिलबर बापदादा अपने दिलरुबा बच्चो प्रति बोले:-

''आज मधुबन वाले बाप मधुबन में बच्चों से मिलने आये हैं।

१. आज अमृतवेले से स्नेही बच्चों के स्नेह के गीत, समान बच्चों के मिलन मनाने के गीत, सम्पर्क में रहने वाले बच्चों के उमंग में अपने के उत्साह भरे आवाज, बांधेली बच्चियों के स्नेह भरे मीठे उल्हाने, कई बच्चों के स्नेह के पुष्प बापदादा के पास पहुँचे। देश-विदेश के बच्चें के समर्थ संकल्पों की श्रेष्ठ प्रतिज्ञायें सभी बापदादा के पास समीप से पहुँची। बापदादा सभी बच्चों के स्नेह के संकल्प और समर्थ संकल्पों का रेसपान्ड कर रहे हैं। ''सदा बापदादा के स्नेही भव''। ''सदा समर्थ समान भव, सदा उमंग-उत्साह से समीप भव, लगन की अग्नि द्वारा बन्धनमुक्त स्वतन्त्र आत्मा भव''। बच्चों के बन्धनमुक्त होने के दिन आये कि आये। बच्चों के स्नेह के दिल के आवाज, कुम्भकरण आत्माओं को अवश्य जगायेंगे। यही बन्धन में डालने वाले स्वयं प्रभु स्नेह के बन्धन में बंध जायेंगे। बापदादा विशेष बन्धन वाली बच्चियों को शुभ दिन आने की दिल का आथत दे रहे हैं। क्योंकि

२. आज के विशेष्ज्ञ दिन पर विशेष स्नेह के मोती बापदादा के पास पहुँचते हैं। यही स्नेह के मोती श्रेष्ठ हीरा बना देते हैं।

३. आज का दिन समर्थ दिन है।

४. आज का दिन समान बच्चें को तत्त्वम् के वरदान का दिन है।

५. आज के दिन बापदादा शक्ति सेना को सर्व शक्तियों की विल करता है, विल पावर देते हैं। विल की पावर देते हैं।

६. आज का दिल बाप का बैकबोन बन बच्चों को विश्व के मैदान में आगे रखने का दिन है। बाप अननोन है और बच्चे वेलनोन हैं।

७. आज का दिन ब्रह्मा बाप के कर्मातीत होने का दिन है।

८. तीव्रगति से विश्व कल्याण, विश्व परिक्रमा का कार्य आरम्भ होने का दिन है।

९. आज का दिन बच्चें के दर्पण द्वारा बापदादा के प्रख्यात होने का दिन है।

१०. जगत के बच्चों को जगत पिता का परिचय देने का दिन है।

११. सर्व बच्चों को अपनी स्थिति, ज्ञान स्थम्भ, शक्ति स्थम्भ, अर्थात् स्थम्भ के समान अचल अडोल बनने की प्रेरणा देने का दिन है। हर बच्चा बाप का यादगार शान्ति स्थम्भ है। यह तो स्थूल शान्ति स्थम्भ बनाया है। परन्तु बाप की याद में रहने वाले याद का स्थम्भ आप चैतन्य सभी बच्चे हो। बापदादा सभी चैतन्य स्तम्भ बच्चें की परिक्रमा लगाते हैं। जैसे आज शान्ति स्थम्भ पर खड़े होते हो, बापदादा आप सभी याद में रहने वाले स्थम्भों के आगे खड़े होते हैं।

१२. आप आज के दिन विशेष्ज्ञ बाप के कमरे में जाते हो। बापदादा भी हर बच्चे के दिल के कमरे में बच्चों से दिल की बातें करते हैं और

१३. आप झोपड़ी में जाते हो। झोपड़ी है दिलवर और दिलरुबा की यादगार। दिलरुबा बच्चों से दिलवर बाप विशेष्ज्ञ मिलन मनाते हैं। तो बापदादा भी सभी दिलरुबा बच्चों के भिन्न-भिन्न साज सुनते रहते हैं। कोई स्नेह की ताल से साज़ बाजात, कोई शक्ति की ताल से, कोई आनन्द, कोई प्रेम की ताल से। भिन्न-भिन्न ताल के साज़ सुनते रहते हैं। बापदादा भी आप सभी के साथ-साथ चक्र लगाते रहते हैं१ तो आज के दिन का विशेष महत्व समझा!

१४. आज का दिन सिर्फ स्मृति का दिन नहीं लेकिन स्मृति सो समर्थी दिवस है।

१५. आज का दिन वियोग वा वैराग का दिन नहीं है लेकिन सेवा की जिम्मेवारी के ताजपोशी का दिन है।

१६. समर्थी के स्मृति के तिलक का दिन है।

१७. ''आगे बच्चे पीछे बाप'' इसी संकल्प को साकार होने का दिन है।

१८. आज को दिन ब्रह्मा बाप विशेष डबल विदेशी बच्चो को बाप के संकल्प और आह्वान को साकार रुप देने वाले स्नेही बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। कैसे स्नेह द्वारा बाप के सम्मुख पहूँच गये हैं। ब्रह्मा बापदा के आह्वान के प्रत्यक्ष फल स्वरुप, ऐसे सर्व शक्तियों के रस भरे श्रेष्ठ फलों को देख ब्रह्मा बाप बच्चों को विशेष बधाई और वरदान दे रहे हैं। सद सहज विधि द्वारा वृद्धि को पाते रहो। जैसे बच्चे हर कदम में ''बाप की कमाल है'' यही गीत गाते हैं ऐसे बापदादा भी यही कहते हैं कि बच्चों की कमाल है। दूरदेशी, दूर के धर्म वाले दूर हो गये हैं। सागर के तट पर रहने वाले प्यारे रह गये हैं लेकिन डबल विदेशी बच्चें औरों की भी प्यार बुझाने वाले ज्ञान गंगायें बन गये। कमाल है ना बच्चों की। इसलिए ऐसे खुशनशीब बच्चों पर बापदादा सदा खुश हैं। आप सभी भी डबल खुश हो ना। अच्छा–

ऐसे सदा समान बनने के श्रेष्ठ संकल्पधारी, सर्व शक्तियों के विल द्वारा विल पावर में रहने वाले, सदा दिलवर की दिलरुबा बन भिन्न-भिन्न साज़ सुनाने वाले सदा स्थम्भ के समान अचल अडोल रहने वाले, सदा सहज विधि द्वारा वृद्धि को पाऐ वृद्धि को प्राप्त

कराने वाले सदा मुधर मिलन मनाने वाले देश-विदेश के सर्व प्रकार के वैरायटी बच्चों को पुष्प वर्षा सहित बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।''

आज सभी स्नेही विशेष सेवाधारी बच्चों को वतन में बुलाया था। जगत अम्बा को भी बुलाया, दीदी को भी बुलाया। विश्व किशोर आदि जो भी अनन्य गये हैं सेवा अर्थ उन सबको वतन में बुलाया था। विशेष स्मृति दिवस मनाने के लिए सभी अनन्य डबल सेवा के निमित्त बने हुए बच्चे संगम के ईश्वरीय सेवा में भी साथी है और भविष्य राज्य दिलाने की सेवा के भी साथी हैं१ तो डबल सेवा-धारी हो गये ना। ऐसे डबल सेवाधारी बच्चों ने सेवाधारी बच्चों ने विशेष रुप से सभी मधुबन में आये हुए सहयोगी स्नेही आत्माओं को यादप्यार दी है। आज बापदादा उन्हों की तरफ से याद-प्यार का सन्देश दे रहे हैं। समझा। कोई किसको याद करते, कोई किसको याद करते। बाप के साथ-साथ सेवार्थ एडवांस पुरुषार्थी बच्चों को जिन्होंने भी संकल्प में याद किया उन सभी की याद का रिटर्न सभी ने यादप्यार दिया है। पुष्पशान्ता भी स्नेह से याद करती थी। ऐसे तो नाम कितने का लेंवे। सभी की विशेष पार्टी वतन में थी। डबल विदेशियों के लिए विशेष दीदी ने याद दी है। आज दीदी को विशेष बहुतों ने याद किया ना। क्योंकि इन्होंने दीदी को ही देखा है। जगत अम्बा और भाउ (विश्व किशोर) को तो देखा नहीं। इसलिए दीदी की याद विशेष आई। वह लास्ट टाइम बिल्कुल निरसंकल्प और निर्मोही थी। उनको भी याद तो आती है लेकिन वह खींच की याद नहीं है। स्वतंत्र आत्मा है। उन्हों का भी संगठन शक्तिशाली बन रहा है। सब नामीग्रामी है ना। अच्छा–

कुछ विदेशी भाई-बहन सेवा पर जाने के लिए बापदादा से छुट्टी ले रहे हैं

सभी बच्चों को बापदादा यही कहते हैं कि जा नहीं रहे जो लेकिन फिर से आने के लिए, फिर से बाप के आगे सेवा कर गुलदस्ता लाने के लिए जा रहे हो। इसलिए घर नहीं जा रहे हो। सेवा पर जा रहे हो। घर नहीं सेवा का स्थान है यही सदा याद रहे। रहमदिल बाप के बच्चे हो तो दु:खी आत्माओं का भी कल्याण करें। सेवा के बिना चैन से सो नहीं सकते। स्वप्न भी सेवा के आते हैं ना। आंख खुली बाबा से मिले फिर सारा दिन बाप और सेवा। देखो बापदादा को कितना नाज़ है कि एक बच्चा सर्विसएबुल नहीं लेकिन इतने सब सर्विसएबुल हैं। एक-एक बच्चा विश्व कल्याणकारी हैं। अभी देखेंगे कौन बड़ा गुलदस्ता लाता है। तो जा रहे हैं या फिर से आ रहे हैं! तो ज्यादा स्नेह किसका हुआ? बाप का याद आपका! अगर बच्चों का स्नेह ज्यादा रहे तो बच्चे सेफ हैं। महादानी वर-दानी, सम्पन्न् आत्मायें जा रहे हैं, अभी अनेक आत्माओं को धनवान बनाकर, सजाकर बाप के सामने ले आना। जा नहीं रहे हो लेकिन सेवा कर एक से तीन गुना होकर आयेंगे। शरीर से भला कितना भी दूर जा रहे हो लेकिन आत्मा सदा बाप के साथ है। बापदादा सहयोगी बच्चों को सदा ही साथ देखते हैं। सहयोगी बच्चों को सदा ही सहयोग प्राप्त होता है। अच्छा– ओम् शान्ति–

प्रश्न:- किसी भी बाप की उलझन, मन में उलझन पैदा न करे उसका साधन क्या है?

उत्तर:- समर्थ बाप को सादा साथी बनाकर रखो तो कैसी भी उलझन वाली बात में मन उलझन में नहीं आयेगा। बड़ी बात छोटी, पहाड़ भी राई हो जायेगा। बस सदा याद रहे कि मेरा बाबा, मेरी सेवा, जो बाप का सो मेरा, जो बाप का कर्म वह मेरा कर्म, जो बाप के गुण वह मेरे गुण। गुण, संस्कार, श्रेष्ठ कर्म जब सारी प्रापर्टी के मालिक हो गये, जो बाप की वह आपकी हो गई तो सदा खुशी रहेगी, कभी भी कोई उलझन मन को उलझायेगी नहीं। अच्छा ओम् शान्ति।

18.1.85

स्मृति दिवस पर अव्यक्त बापदादा के अनमोल महावाक्य

सर्व समर्थ बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले –

''आज समर्थ दिवस पर समर्थ बाप अपने समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। आज का दिन विशेष ब्रह्मा बाप द्वारा विशेष बच्चों को समर्थी का वरदान अर्पित करने का दिन है। आज के दिन बापदादा अपनी शक्ति सेना को विश्व की स्टेज पर लाते – तो साकार स्वरूप में शिव शक्तियों को प्रत्यक्ष रूप में पार्ट बजाने कादिन है। शक्तियों द्वारा शिव बाप प्रत्यक्ष हो स्वयं गुप्त रूप में पार्ट बजाते रहते हैं। शक्तियों को प्रत्यक्ष रूप मेंविश्व के आगे विजयी प्रत्यक्ष करते हैं। आज कादिन बच्चों को बापदादा द्वारा समान भाव के वरदान कादिन है। आज का दिन विशेष स्नेही बच्चों को नयनों में स्नेह स्वरूप से समाने कादिन है। आज कादिन बापदादा विशेष समर्थ और स्नेही बच्चों को मधुर मिलन द्वारा अविनाशी मिलन का वरदानर देता है। आज के दिन अमृतवेले से चारों ओर के सर्व बच्चों के दिल कापहला संकल्प मधुर मिलन मनाने का, मीठे-मीठे महिमा के दिल के गीत गाने का, विशेष स्नेह की लहर का दिन है। आज के दिन अमृतवेले अनेक बच्चों के स्नेह के मोतियों की मालायें, हर एक मोती के बीच बाबा, मीठे बाबा का बोल चमकता हुआ देख रहे थे। कितनी मालायें होंगी। इस पुरानी दुनिया में ९ रतनों की माला कहते हैं लेकिन बापदादा के पास अनेक अलौकिक अनोखी अमूल्य रतनों की मालायें थीं। ऐसी मालायें सतयुग में भी नहीं पहनेंगे। यह मालायें सिर्फ बापदादा ही इस समय बच्चों द्वारा धारण करते हैं। आज कादिन अनेक बंधन वाली गोपिकाओं के दिल के वियोग और स्नेह से सम्पन्न मीठे गीत सुनने का दिन है। बापदादा ऐसी लगन में मगन रहने वाली स्नेही सिकीलधे आत्माओं को रिर्टन में यही खुशखबरी सुनाते कि अब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजने वाला ही है। इसलिए हे सहज योगी और मिलन के वियोगी बच्चे यह थोड़े से दिन समाप्त हुए कि हुए। साकार स्वीट होम में मधुर मिलन हो ही जायेगा। वह शुभ दिन समीप आ रहा है।

आज का दिन हर बच्चे के दिल से दृढ़ संकल्प करने से सहज सफलता काप्रत्यक्ष फल पाने का दिन है। सुना आज का दिन कितना महान है। ऐसे महान दिवस पर सभी बच्चे जहाँ भी हैं, दूर होते भी दिल के समीप हैं। बापदादा भी हर एक बच्चे को स्नेह और बाप-दादा को प्रत्यक्ष करने कीसेवा के उमंग उत्साह के रिर्टन में स्नेह भरी बधाई देते हैं। क्योंकि मैजारिटी बच्चों की रूह-रूहान में स्नेह और सेवा के उमंग की लहरें विशेष थीं। प्रतिज्ञा और प्रत्यक्षता दोनों बातें विशेष थीं। सुनते-सुनते बापदादा क्या करते। सुनाने वाले कितने होते हैं। लेकिनदिल का आवाज़ दिलाराम बाप एक ही समय में अनेकों का सुन सकते हैं। प्रतिज्ञा करने वालों को बापदादा

बधाई देते। लेकिन सदा इस प्रतिज्ञा को अमृतवेले रिवाइज करते रहना। प्रतिज्ञा कर छोड़ नहीं देना। करना ही है, बनना ही है। इस उमंग उत्साह को सदा साथ रखना। साथ-साथ कर्म करते हुए जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल की विधि द्वारा याद की स्थिति को लगातार बनाने में सफलता को पा रहे हो। ऐसे कर्म करते अपने प्रति अपने आपको चेक करने के लिए समय निश्चित करो। तो निश्चित समय प्रतिज्ञा को सफलता स्वरूप बनाता रहेगा।

प्रत्यक्षता के उमंग उत्साह वाले बच्चों को बापदादा अपने राइट हैंड रूप से स्नेह की हैंडशेक कर रहे हैं। सदा मुरब्बी बच्चे सो बाप समान बन उमंग की हिम्मत से पदमगुणा बाप दादा की मदद के पात्र हैं ही हैं। सुपात्र अर्थात् पात्र हैं।

तीसरे प्रकार के बच्चे – दिन रात स्नेह में समाये हुए हैं। स्नेह की ही सेवा समझते हैं। मैदान पर नहीं आते लेकिन मेरा बाबा, मेरा-बाबा यह गीत जरूर गाते हैं। बाप को भी मीठे रूप से रिझाते रहते हैं। जो हूँ जैसी हूँ आपकी हूँ। ऐसी भी विशेष स्नेही आत्मायें हैं। ऐसे स्नेही बच्चों को बापदादा स्नेह का रिर्टन स्नेह तो जरूर देते हैं लेकिन यह भी हिम्मत दिलाते हैं कि राज्य अधिकारी बनना है। राज्य में आने वाला बनना है – फिर तो स्नेही हो तो भी ठीक है। राज्य अधिकारी बनना है तो स्नेह के साथ पढ़ाई की शक्ति अर्थात् ज्ञान की शक्ति, सेवा की शक्ति, यह भी आवश्यक है। इसलिए हिम्मत करो। बाप मददगार है ही। स्नेह की रिर्टन में सहयोग मिलना ही है। थोड़ी सी हिम्मत से, अटेन्शन से राज्य अधिकारी बन सकते हो। सुना आज की रूहरूहान कर रेसपान्ड? देश विदेश चारों ओर के बच्चों की वतन में रौनक देखी। विदेशी बच्चे भी लास्ट सो फास्ट जाकर फर्स्ट आने के उमंग उत्साह में अच्छे बढ़ते जा रहे हैं। वह समझते हैं जितना विदेश के हिसाब से दूर हैं उतना ही दिल में समीप रहते हैं। तो आज भी अच्छे-अच्छे उमंग उत्साह की रूह-रूहान कर रहे थे। कई बच्चे बड़े स्वीट हैं। बाप को भी मीठी-मीठी बातों से मनाते रहते हैं। कहते बड़ा भोले रूप से हैं लेकिन है चतुर। कहते हैं आप प्रामिस करो। ऐसे मनाते हैं। बाप क्या कहेंगे? खुश रहो, आबाद रहो, बढ़ते रहो। बातेंतो बहुत लम्बी चौड़ी हैं, कितनी सुनाए कितनी सुनावें। लेकिन बातें सभी बजे से बड़ी अच्छी करते हैं। अच्छा –

सदा स्नेह और सेवा के उमंग उत्साह में रहने वाले, सदा सुपात्र बन सर्व प्राप्तियों के पात्र बनने वाले, सदा स्वयं के कर्मों द्वारा बाप-दादा के श्रेष्ठ दिव्य कर्म प्रत्यक्ष करने वाले, अपने दिव्य जीवन द्वारा ब्रह्मा बाप की जीवन कहानी स्पष्ट करने वाले – ऐसे सर्व बाप-दादा के सदा साथी बच्चों को समर्थ बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

दादी जी तथा दादी जानकी जी बापदादा के सामने बैठी हैं।

आज तुम्हारी सखी (दीदी) ने भी खास यादप्यार दी है। आज वह भी वतन में इमर्ज थी। इसलिए उनकी भी सभी को याद। वह भी (एडवांस पार्टी) में अपना संगठन मजबूत बना रहे हैं। उन्हों काकार्य भी आप लोगों के साथ-साथ प्रत्यक्ष होता जायेगा। अभी तो सम्बन्ध और देश के समीप हैं इसलिए छोटे-छोटे ग्रुप उन्हों में भी कारण अकारण आपस में न जानते हुए भी मिलते रहते हैं। यह पूर्ण स्मृति नहीं है लेकिन यह बुद्धि में टचिंग है कि हमें मिलकर कोई नया कार्य करना है। जो दुनिया की हालते हैं, उसी प्रमाण जो कोई नहीं कर सकता है वह हमें मिलके करना है। इस टचिंग से आपस में मिलते जरूर हैं। लेकिन अभी कोई छोटे कोई बड़े, ऐसा ग्रुप है। लेकिन गये सभी प्रकार के हैं। कर्मणा वाले भी गये हैं, राज्य स्थापना करने की प्लैनिंग बुद्धि वाले भी गये हैं। साथ-साथ हिम्मत हुल्लास बढ़ाने वाले भी गये हैं। आज पूरे ग्रुप में इन तीन प्रकार के बच्चे देखे और तीनों ही आवश्यक हैं। कोई प्लैनिंग वाले हैं, कोई कर्म में लाने वाले हैं और कोई हिम्मत बढ़ाने वाले हैं। ग्रुप तो अच्छा बना रहा है। लेकिन दोनों ग्रुप साथ-साथ प्रत्यक्ष होंगे। अभी प्रत्यक्षता की विशेषता बादलों के अन्दर है। बादल बिखर रहे हैं लेकिन हटे नहीं हैं। जितना-जितना शक्तिशाली मास्टर ज्ञान सूर्य की स्टेज पर पहुँच जाते हैं वैसे यह बादल बिखरते जा रहे हैं। मिट जायेंगे तो सेकण्ड में नगाड़ा बज जायेगा। अभी बिखर रहे हैं। वह भी पार्टी अपनी तैयारी खूब कर रही है। जैसे आप लोग यूथ रैली का प्लैन बना रहे होना, तो वह भी यूथ हैं अभी। वह भी आपस में बना रहे हैं। जैसे अभी भारत में अनेक पार्टियों की जो विशेषता थी वह कम हो फिर भी एक पार्टी आगे बढ़ रही है ना। तो बाहर की एकता का भी रहस्य है। अनेकता कमजोर हो रही है और एक शक्तिशाली हो रहे हैं। यह स्थापना के राज़ में सहयोग का पार्ट है। मन से मिले हुए नहीं है, मजबूरी से मिले हैं, लेकिन मजबूरी का मिलन भी रहस्य है। अभी सथापना की गुह्य रीति रसम स्पष्ट होने का समय समीप आ रहा है। फिर आप लोगों को पता पड़ेगा कि एडवांस पार्टी क्या कर रही है और हम क्या कर रहे हैं। अभी आप भी क्वेश्चन करते हो कि वह क्या कर रहे हैं और वह भी क्वेश्चन करते हैं कि यह क्या कर रहे हैं। लेकिन दोनों ही ड्रामा अनुसार बढ़ रहे हैं।

जगदम्बा तो है ही चन्द्रमा। तो चन्द्रमा जगत अम्बा के साथ दीदी का शुरू से विशेष पार्ट रहा है। कार्य में साथ का पार्ट रहा है। वह चन्द्रमा (शीतल) है और वह तीव्र है। दोनों का मेल है। अभी थोड़ा बड़ा होने दो उसको जगदम्बा तो अभी भी शीतलता की सकाश दे रही है लेकिन प्लैनिंग में आगे आने में साथी भी चाहिए ना। पुष्पशान्ता और दीदी इन्हों का भी शुरू में आपस में हिसाब है। यहाँ भी दोनों का हिसाब आपस में समीप का है। भाऊ (विश्वकिशोर) तो बैकबोन है। इसमें भी पाण्डव बैकबोन हैं शक्तियाँ आगे हैं। तो वह भी उमंग उत्सा में लाने वाले ग्रुप हैं। अभी प्लैनिंग करने वाले थोड़ा मैदान पर जायेंगे फिर प्रत्यक्षता होगी। अच्छा –

विदेशी भाई बहिनों से :- सभी लास्ट सो फास्ट जाने वाले और फर्स्ट आने के उमंग उत्साहवाले हो ना। सेकण्ड नम्बर वाला तो कोई नहीं है। लक्ष्य शक्तिशाली है तो लक्षण भी स्वत: शक्तिशाली होंगे। सभी आगे बढ़ने में उमंग उत्साह वाले हैं। बापदादा भी हर बच्चे को यही कहते कि सदा डबल लाइट बन उड़ती कला से नम्बरवन आना ही है। जैसे बाप ऊंचे ते ऊंचा है वैसे हर बच्चा भी ऊंचे ते ऊंचा है।

सदा उमंग उत्साह के पंखों से उड़ने वाले ही उड़ती कला का अनुभव करते हैं। इस स्थिति में स्थित रहने का सहज साधन है – जो भी सेवा करते हो, वह बाप करनकरावहार करा रहा है, मैं निमित्त हूँ कराने वाला करा रहा है, चला रहा है, इस स्मृति से सदा हल्के हो उड़ते रहेंगें। इसी स्थिति को सदा आगे बढ़ाते रहो।

विदाई के समय:- यह समर्थ दिन सदा समर्थ बनाता रहेगा। इस समर्थ दिन पर जो भी आये हो वह विशेष समर्थ भव का वरदान सदा साथ रखना। कोई भी ऐसी बात आये तो यह दिन औरयह वरदान याद करना तो स्मृति समर्थी लायेगी। सेकण्ड में बुद्धि के विमान द्वारा मधुबन में पहुँच जाना। क्या था, कैसा था और क्या वरदान मिला था। सेकण्ड में मधुबन निवासी बनने से समर्थी आ जायेगी। मधुबन में पहुँचना तो आयेगा ना। यह तो सहज है, साकार में देखा है। परमधाम में जाना मुश्किल भी लगता हो, मधुबन में पहुँचना तो मुश्किल नहीं। तो सेकण्ड में बिना टिकट के बिना खर्चे के मधुबन निवासी बन जाना। तो मधुबन सदा ही हिम्मत हुल्लास देता रहेगा। जैसे यहाँ सभी हिम्मत हुल्लास में हो, किसी के पास कमजोरी नहीं है ना। तो यही स्मृति फिर समर्थ बना देगी।

18.1.86

मन्सा शक्ति अपने तथा आदि रत्नों प्रति बोले-

वृक्षपति बाप अपने आदि रत्नों प्रति बोले-

''आज वृक्षपति अपने नये वृक्ष के फाउण्डेशन बच्चों को देख रहे हैं। वृक्षपति अपने वृक्ष के तना को देख रहे हैं। सभी वृक्षपति की पालना के पले हुए श्रेष्ठ फलस्वरुप बच्चों को देख रहे हैं। आदि देव अपने आदि रत्नों को देख रहे हैं। हर एक रत्न की महानता, विशेषता अपनी-अपनी है। लेन हैं सभी नई रचना के निमित्त बने हुए विशेष आत्मायें। क्योंकि बाप को पहचानने में, बाप के कार्य में सहयोगी बनने में निमित्त बने और अनेंको के आगे एक्जैम्पुल बने हैं। दुनिया को न देख, नई दुनिया बनाने वाले को देखा। अटल निश्चय और हिम्मत का प्रमाण दुनिया के आगे बनकर दिखाया। इसलिए सभी विशेष आत्मायें हो। विशेष आत्माओं को विशेष रुप से संगठित रुप में देख बापदादा भी हर्षित होते हैं और ऐसे बच्चों की महिमा के गीत गात हैं। बाप को पहचाना और बाप ने, जो भी हैं, जैसे भी हैं, पसन्द कर लिया। क्योंकि दिलाराम को पसन्द हैं सच्ची दिल वाले। दुनिया का दिमाग न भी हो लेकिन बाप का दुनिया के दिमागी पसन्द नहीं, दिल वाले पसन्द है। दिमाग तो बाप इतना बड़ा दे देता है जिससे रचयिता को जानने से रचना के आदि, मध्य, अन्त की नालेज जान लेते हो। इसलिए बापदादा पसन्द करते हैं- दिल से। नम्बर भी बनते हैं सच्ची साफ दिल के आधार से। सेवा के आधार से नहीं। सेवा में भी सच्ची दिल से सेवा की वा सिर्फ दिमाग के आधार से सेवा की! दिल का आवाज दिल तक पहुँचता है, दिमाग का आवाज दिमाग तक पहुँचता है। आज बापदादा दिल वालों की लिस्ट देख रहे थे। दिमाग वाले नाम कमाते हैं, दिल वाले दुआयें कमाते हैं। तो दो मालायें बन रही थीं। क्योंकि आज वतन में एडवांस में गई हुई आत्मायें इमर्ज थीं। वह विशेष आत्मायें रुह-रुहान कर रही थीं। मुख्य रुह-रुहान क्या होगी? आप सभी ने भी विशेष आत्माओं को इमर्ज किया ना! वतन में भी रुह-रुहान चल रही थी कि समय और सम्पर्णता दोनों में कितना अन्तर रह गया है! नम्बर कितने तैयार हुए हैं! नम्बर तैयार हुए हैं या अभी होने हैं? नम्बरवार सब स्टेज पर आ रहे हैं ना। एडवांस पार्टी पूछ रही थी- कि अभी हम तो एडवांस का कार्य कर रहे हैं लेकिन हमारे साथी हमारे कार्य में विशेष क्या सहयोग दे रहे हैं? वह भी माला बना रहे हैं। कौन-सी माला बना रहे हैं? कहाँ-कहाँ किस-किस का नई दुनिया के आरम्भ करने का जन्म होगा। वह निश्चित हो रहा है। उन्हों को भी अपने कार्य में विशेष सहयोग सूक्ष्म शक्तिशाली मन्सा का चाहिए। जो शक्तिशाली स्थापना के निमित्त बनने वाली आत्मायें हैं वह स्वयं भल पावन हैं लेकिन वायुम-ण्डल व्यक्तियों का, प्रकृति का तमोगुणी है। अति तमोगुणी के बीच अल्प सतोगुणी आत्मायें कमल पुष्प समान हैं। इसलिए आज

रुह-रुहान करते आपकी अति स्नेही श्रेष्ठ आत्मायें मुस्कराते हुए बोल रही थीं कि क्या हमारे साथियों को इतनी बड़ी सेवा की स्मृति है वा सेन्टरों में ही बिजी हो गये हैं वा जोन में बिजी हो गये हैं?

इतना सारा प्रकृति परिवर्तन का कार्य, तमोगुणी संस्कार वाली इतनी आत्माओं का विनाश किसी भी विधि से होगा लेन अचानक के मृत्यु, अकाले मृत्यु, समूह रुप में मृत्यु, उन आत्माओं के वायब्रशेन कितने कितने तमोगुणी होंगे, उसको परिवर्तन करना और स्वयं को भी ऐसे खूनी नाहक वायुमण्डल वायब्रेशन से सेफ रखना और उन आत्माओं को सहयोग देना- क्या इस विशाल कार्य के लिए तैयारी कर रहे हो? या सिर्फ कोई आया, समझाया और खाया, इसी में ही तो समय नहीं जा रहा है? वह पूछ रह थे। आज बाप-दादा उन्हों का सन्देश सुना रहे हैं। इतना बेहद का कार्य करने के निमित्त कौन हैं? जब आदि में निमित्त बने हो तो अन्त में भी परिवर्तन के बेहद के कार्य में निमित्त बनना है ना। वैसे भी कहावत है जिसने अन्त किया उसने सब कुछ किया। गर्भ महल भी तैयार करने हैं। तब तो नई रचना का, योगबल का आरम्भ होगा। योगबल के लिए मन्सा शक्ति की आवश्यकता है। अपनी सेफ्टी के लिए भी मन्सा शक्ति साधन बनेगी। मन्सा शक्ति द्वारा ही स्वयं की अन्त सुहानी बनाने के निमित्त बन सकेंगे। नहीं तो साकार सहयोग समय पर सरकमस्टांस प्रमाण न भी प्राप्त हो सकता है। उस समय मन्सा शक्ति अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प शक्ति, एक के साथ लाइन क्लीयर नहीं होगी तो अपनी कमजोरियां पश्चाताप के रुप में भूतों के मिसल अनुभव होंगी। क्योंकि कमजोरी स्मृति में आने से भय, भूत की तरह अनुभव होगा। अभी भले कैसे भी चला लेते हो लेकिन अन्त में भय अनुभव होगा। इसलिए अभी से बेहद की सेवा के लिए, स्वयं की सेफ्टी के लिए मन्सा शक्ति और निर्भयता की शक्ति जमा करो, तब ही अन्त सुहाना और बेहद के कार्य में सहयोगी बन बेहद के विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। अभी आपके साथी, आपके सहयोग की इन्तजार कर रहे हैं। कार्य चाहे अलग-अलग है लेकिन परिवर्तन के निमित्त दोनों ही हैं। वह अपनी रिजल्ट सुना रहे थे।

एडवांस पार्टी वाले कोई स्वयं श्रेष्ठ आत्माओं का आह्वान करने के लिए तैयार हुए हैं और हो रहे हैं, कोई तैयार कराने में लगे हुए हैं। उन्हों का सेवा का साधन है मित्रता और समीपता के सम्बन्ध। जिससे इमर्ज रुप में ज्ञान चर्चा नहीं करते लेकिन ज्ञानी तू आत्मा के संस्कार होने के कारण एक दो के श्रेष्ठ संस्कार, श्रेष्ठ वायब्रेशन और सदा होली और हैपी चेहरा एक दो को प्रेरणा देने का कार्य कर रहा है। चाह अलग-अलग परिवार में हैं लेकिन किसी न किसी सम्बन्ध वा मित्रता के आधार पर एक दो के सम्पर्क में आने से आत्मा नालेजफुल होने के कारण यह अनुभूति होती रहती है कि यह अपने हैं वा समीप के हैं। अपनेपन के आधार से एक दो को पहचानते हैं। अभी समय समीप आ रहा है इसलिए एडवांस पार्टी का कार्य तीव्रगति से चल रहा है। ऐसी लेन-देन वतन में हो रही थी। विशेष जगत-अम्बा सभी बच्चों के प्रति दो मधुर बोल, बोल रही थी। दो बोल में सभी को स्मति दिलाई- ''सफलता का आधार सदा सहनशक्ति और समाने की शक्ति है, इन विशेषताओं से सफलता सदा सहज और श्रेष्ठ अनुभव होगी।'' औरों का भी सुनायें क्या? आज चिटचैट का दिन विशेष मिलने का रहा तो हर एक अपने अनुभव का वर्णन कर रहे थे। अच्छा और किसका सुनेंगे? (विश्व किशोर भाऊ का) वह वैसे भी कम बोलता है लेकिन जो बोलता है वह शक्तिशाली बोलता है। उसका भी एक ही बोल में सारा अनुभव रहा कि किसी भी कार्य में सफलता का आधार ''निश्चय अटल और नशा सम्पन्न''। अगर निश्चय अटल है तो नशा स्वत: ही औरों को भी अनुभव होता है। इसलिए निश्चय और नशा सफलता का आधार रहा। यह है उसका अनुभव। जैसे साकार बाप को सदा निश्चय और नशा रहा कि मैं भविष्य में विश्व महाराजन बना कि बना। ऐसे विश्वकिशोर को भी यह नशा रहा कि मैं पहले विश्व महाराजन का पहला प्रिन्स हूँ। यह नशा वर्तमान और भाविष्य का अटल रहा। तो समानता हो गई ना। जो साथ में रहे उन्होंने ऐसा देखा ना।

अच्छा- दीदी ने क्या कहा? दीदी रुह-रुहान बहुत अच्छी कर रही थी। वह कहती है कि आपने सभी को बिना सूचना दिये क्यों बुला लिया। छुट्टी लेकर तैयार हो जाती। आप छुट्टी देते थे? बापदादा बच्चों से रुह-रुहान कर रहे थे- देह सहित देह के सम्बन्ध, देह के संस्कार सबके सम्बन्ध, लौकिक नहीं तो अलौकिक तो हैं। अलौकिक सम्बन्ध से, देह से, संस्कार से नष्टोमोहा बनने की विधि, यही ड्रामा में नूंधी हुई है। इसलिए अन्त में सबसे नष्टोमोहा बन अपनी ड्यूटी पर पहुंच गई। चाहे विश्व किशोर का पहले थोड़ा-सा मालूम था लेकिन जिस समय जाने का समय रहा उस समय वह भी भूल गया था। यह भी ड्रामा में नष्टोमोहा बनने की विधि नूँधी हुई थी जो रिपीट हो गई। क्योंकि कुछ अपनी मेहनत और कुछ बाप ड्रामा अनुसार कर्मबन्धन मुक्त बनाने में सहयोग भी देता है। जो बहुत काल के सहयोगी बच्चे रह हैं, एक बाप दूसरा न कोई इस मेन सबजेक्ट में पास रहे हैं, एक बाप करने वालों को बाप विशेष एक ऐसे समय सहयोग जरुर देता है। कई सोचते हैं कि क्या यह सब कर्मातीत हो गये, यही कर्मातीत स्थिति है। लेकिन ऐसे आदि से सहयोगी बच्चों को एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है। इसलिए कुछ अपनी मेहनत कम भी दिखाई देती हो लेकिन बाप की मदद उस समय अन्त में एक्स्ट्रा मार्क्स दे पास विद आनर बना ही देती है। वह गुप्त होता है- इसलिए क्वेश्चन उठते हैं- कि क्या ऐसा हुआ। लेकिन यह सकयोग का रिटर्न है। जैसे कहावत है ना- ''आईवेल में काम आता है''। तो जो दिल से सहयोगी रहे हैं उन्हों को ऐसे समय पर एक्स्ट्रा मार्क्स रिटर्न के रुप में प्राप्त होती है। समझा- इस रहस्य को? इसलिए नष्टोमोहा की विधि से एक्स्ट्रा मार्क्स की गिफ्ट से

सफलता को प्राप्त कर लिया। समझा- पूछते रहे हो ना कि आखिर क्या है। सो आज यह रुह-रुहान सुना रहे हैं। अच्छा- दीदी ने क्या कहा? उसका अनुभव तो सभी जानते भी हो। वह यही बोल, बोल रह थी कि सदा बाप और दादा की अंगुली पकड़ो या अंगुली दो। चाहे बच्चा बना के अंगुली पकड़ो, चाहे बाप बनाकर अंगुली दो। दोनों रुप से हर कदम में अंगुली पकड़ साथ का अनुभव कर चलना, यही मेरे सफलता का आधार है। तो यही विशेष रुह-रुहान चही। आदि रत्नों के संगठन में वह कैसे मिस होगी इसलिए वह भी इमर्ज थी। अच्छा- वह रही एडवांस पार्टी की बातें, आप क्या करेंगे?

एडवांस पार्टी अपना काम कर रही है। आप एडवांस फोर्स भरो। जिससे परिवर्तन करने के कार्य का कोर्स समाप्त हो जाए। क्योंकि फाउन्डेशन है। फाउन्डेशन ही बेहद के सेवाधारी बन बेहद के बाप को प्रत्यक्ष करेंगे। प्रत्यक्षता का नगाड़ा, एक ही साज में बजेगा- ''मिल गया, आ गया।'' अभी तो बहुत काम पड़ा है। आप समझ रहे हो कि पूरा हो रहा है। अभी तो वाणी द्वारा बदलने का कार्य चल रहा है। अभी वृत्ति द्वारा वृत्तियां बदलें, संकल्प द्वारा संकल्प बदल जाएं। अभी यह रिसर्च तो शुरु भी नहीं की है। थोड़ा-थोड़ा किया तो क्या हुआ। यह सूक्ष्म सेवा स्वत: ही कई कमजोरियों से पार कर देगी। जो समझते हैं कि यह कैसे होगा। वह जब इस सेवा में बिजी रहेंगे तो स्वत: ही वायुमण्डल ऐसा बनेगा जो अपनी कमजोरियाँ स्वत: को ही स्पष्ट होंगी अनुभव होंगी और वायुमण्डल के कारण स्वयं ही शर्मशार हो परिवर्तित हो जायेंगे। कहना नहीं पड़ेगा। कहने से तो देख लिया। इसलिए अभी ऐसा प्लैन बनाओ। जिज्ञासु और ज्यादा बढ़ेगे इसकी चिंता नहीं करो। मदोगरी भी बहुत बढ़ेगी। इसकी भी चिंता नहीं करो। मकान भी मिल जायेंगे इसकी भी चिंता नहीं करो। सब सिद्धि हो जायेगी। यह विधि ऐसी है जो सिद्धि स्वरुप बन जायेंगे। अच्छा-

शक्तियाँ बहुत हैं, आदि में निमित्त ज्यादा शक्तियां बनी। गोल्डन जुबली में भी शक्तियाँ ज्यादा रही हैं। पाण्डव थोड़े गितनी के हैं। फिर भी पाण्डव हैं। अच्छा है, हिम्मत रख आदि में सहन करने का सबूत तो यही आदि रतन हैं। विघ्न विनाशक बन निमित्त बन, निमित्त बनाने के कार्य में अमर रहें हैं। इसलिए बापदादा को भी अविनाशी, अमर भव के वरदानी बच्चे सदा प्रिय हैं। और यह आदि रतन स्थापना के, आवश्यकता के समय के सहयोगी हैं। इसलिए ऐसे निमित्त बनने वाली आत्माओं को, आईवेल पर सहयोगी बनने वाली आत्माओं को, ऐसी कोई भी वेला मुश्किल की आती है तो बापदादा भी उन्हें उसका रिटर्न देता है। इसलिए आप सभी जो भी ऐसे समय पर निमित्त बने हो उसकी यह एकस्ट्रा गिफ्ट ड्रामा मे नूधी हुई है। इसलिए एक्स्ट्रा गिफ्ट के अधिकारी हो। समझा- माताओं ने फुरी-फुरी बूंद-बूंद तलाव से स्थापना का कार्य आरम्भ हुआ और अभी सफलता के समीप पहुंचा। माताओं के दिल की कमाई है, धन्धे की कमाई नहीं। दिल की कमाई एक हजारों के बराबर है। स्नेह का बीज डाला है इसलिए स्नेह के बीज का फल फलीभूत हो रहा है। है तो साथ पाण्डव भी। पाण्डवों के बिना भी तो कार्य नहीं चलता लेकिन ज्यादा संख्या शक्तियों की है। इसलिए ५ पाण्डव लिख दिये हैं। फिर भी प्रवृत्ति को निभाते न्यारे और बाप के प्यारे बन हिम्मत और उमंग का सबूत दिया है इसलिए पाण्डव भी कम नहीं हैं। शक्तियों को सर्वशकतिवान गाया हुआ है तो पाण्डव का पाण्डवपति भी गाया है। इसलिए जैसे निमित्त बने हो ऐसे निमित्त बने हो ऐसे निमित्त भाव सदा स्मृति में रख आगे बढ़ते चलो। अच्छा-

सदा पदमापदम भाग्य के अधिकारी, सदा सफलता के अधिकारी, सदा स्वयं को श्रेष्ठ आधारमूर्त समझ सर्व का उद्धार करने वाले, श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।''

दादियों से- घर का गेट कौन खोलेगा? गोल्डन जुबली वाले सा सिल्वर जुबली वाले, ब्रह्मा के साथ गेट तो खोलेंगे ना। या पीछे आयेंगे? साथ जायेंगे तो सजनी बनकर जायेंगे और पीछे जायेंगे तो बराती बनकर जायेंगे। सम्बन्धी भी तो बराती कहे जायेंगे। नजदीक है तो लेकिन कहा जायेगा- बरात आई हैं। तो कौन गेट खोलेगा? गोल्डन जुबली वाले सा सिल्वर जुबिली वाले? जो घर का गेट खोलेंगे वही स्वर्ग का गेट भी खोलेगे। अभी वतन में आने की किसको मना नहीं है। साकार में तो फिर भी बन्धन है समय का सरकमस्टांस का। वतन में आने के लिए तो कोई बन्धन नहीं। कों नहीं रोकेगा, टर्न लगाने की भी जरुरत नहीं। अभ्यास से ऐसा अनुभव करेंगे। जैसे यहाँ शरीर में होते हुए एक सेकेण्ड में चक्कर लगाकर वापस आ गये। जो अन्त: वाहक शरीर से चक्र लगाने का गायन है। यह अन्तर की आत्मा वाहन बन जाती है। तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे बिल्कुल बटन दबाया, विमान उड़ा, चक्र लगाके आ गये और दूसरे भी अनुभव करेंगे कि यह यहाँ होते हुए भी नहीं है। जैसे साकार में देखा ना-बात करते-करते भी सेकेण्ड में है और अभी नहीं है। अभी-अभी है, अभी-अभी नहीं है। यह अनुभव किया ना। ऐसे अनुभव किया ना। इसमें सिर्फ स्थूल विस्तार को समेटने की आवश्यकता है। जैसे साकार में देखा-इतना विस्तार होते हुए भी अन्तिम स्टेज क्या रही? विस्तार को समेटने की, उपराम रहने की। अभी-अभी स्थूल डारेक्शन दे रहें हैं और अभी-अभी अशरीरी स्थिति का अनुभव करा रहें हैं। तो यह समेटने की शक्ति की प्रत्यक्षता देखी। जो आप लोग भी कहते थे कि बाबा यहाँ है या नहीं हैं। सुन रहे हैं या नहीं सुन रहे हैं। लेकिन वह तीव्र-गति ऐसी होती है, जो कार्य मिस नहीं करेंगे। आप बात सुना रहे हो तो बात मिस नहीं करेंगे। लेकिन गति इतनी तीव्र है जो दोनों ही काम एक मिनट में कर सकते है। सार भी कैच कर लेंगे और चक्र भी लगा लेंगे। ऐसे भी अशरीरी नहीं होंगे जो कोई बात कर रहा है आप कहो कि सुना ही नहीं। गति फास्ट हो जाती है। बुद्धि इतनी विशाल हो जाती है जो एक ही समय पर दोनों कार्य करते हैं।

यह तब होता जब समेटने की शक्ति यूज करो। अभी प्रवृति का विस्तार हो गया है। उसमें रहते हुए यही अभ्यास फरिश्ते पन का साक्षात्कार करायेगा! अभी एक-एक छोटी-छोटी बात के पीछे यह छोटी बातें व्यक्त भाव की अनुभव होंगी। ऊंचे जाने से नीचा पन अपने आप छूट जायेगा। मेहनत से बच जायेंगे। समय भी बचेगा, और सेवा भी फास्ट होगी नहीं तो कितना समय देना पड़ता है। अच्छा-

''सिल्वर जुबिली में आई हुई टीचर्स बहनों के प्रति अव्यक्त महावाक्य''

सभी ने सिल्वर जुबली मनाई! बनना तो गोल्डन एजिड है, सिल्वर तो नहीं बनना है ना! गोल्डन एजिड बनने के लिए इस वर्ष क्या प्लैन बनाया है? सेवा का प्लैन तो बनाते ही हो लेकिन स्व परिवर्तन और बेहद का परिवर्तन उसके लिए क्या प्लैन बनाया है? यह तो अपने-अपने स्थान का प्लैन बनाते हो यह करेंगे। लेकिन आदि निमित्त हो तो बेहद के प्लैन वाले हो। इसमें बुद्धि में इमर्ज होता है कि हमें इतने सारे विश्व का कल्याण करना है, यह इमर्ज होता है? या समझते हो कि यह तो जिना काम है वही जानें! कभी बेहद का ख्याल आता है या अपने ही स्थानों का ख्याल रहता है। नाम ही है विश्व कल्याणकारी, फलाने स्थान के कल्याणकारी तो नहीं कहते। लेकिन बेहद के मालिक बनने हैं या ना, स्टेट के मालिक तो नहीं बनना है। सेवाधारी निमित्त आत्माओं में जब यह यह लहर पैदा हो तब वह लहर औरों में भी पैदा होगी। अगर आप लोगों में लहर नहीं होगी। तो दूसरों में आ नहीं सकती। तो सदा बेहद के अधिकारी समझ बेहद का प्लैन बनाओ। पहली मुख्य बात है-किसी भी प्रकार के हद के बन्धन में बंधे हुए तो नहीं हैं ना! बन्धन मुक्त ही बेहद की सेवा में सफल होंगे। यहाँ ही यह प्रत्यक्ष होता जा रहा है और होता रहेगा। तो इस वर्ष में क्या विशेषता दिखा-येंगे? दृढ़ संकल्प तो हर वर्ष करते हो। जब भी कोई ऐसा चांस बनता है उसमें भी दृढ़ संकल्प तो करते भी हो, कराते भी हो। तो दृढ़ संकल्प यह शब्द लेना भी कामन हो गया है। कहने में दृढ़ संकल्प आता है लेकिन होता है संकल्प। अगर दृढ़ होता तो दुबारा नहीं लेना पड़ता। दृढ़ संकल्प यह शब्द कामन हो गया है। अभी कोई भी काम करते है तो कहतें ऐसे ही हैं कि हाँ दृढ़ संकल्प करते हैं लेकिन ऐसा कोई नया साधन निकालो जिससे सोचना और करना समान हो। प्लैन और प्रैक्टिकल दोनों साथ हों। प्लैन तो बहुत हैं लेकिन प्रैक्टिकल में समस्यायें भी आती हैं, मेहनत भी लगती है, सामना करना भी पड़ता है, यह तो होगा और होता ही रहेगा। लेकिन जब लक्ष्य है तो प्रैक्टिकल में सदा आगे बढ़ते रहेंगे। अभी ऐसा प्लैन बनाओ जो कुछ नवीनता दिखाई दे। नहीं तो हर वर्ष इकट्ठे होते हो, कहते हो वैसे का वैसा ही है। एक दो को वैसा को वैसा ही देखते। मनपसन्द नहीं होता। जितना चाहते हैं उतना नहीं होता। वह कैसे हो? इसके लिए ओटे सो अर्जुन। एक भी निमित्त बन जाता है तो औरों में भी उमंग उत्साह तो आता ही है। तो इतने सभी इकट्ठे हुए हो, ऐसा कोई प्लैन प्रैक्टिकल का बनाओ। थ्योरी के भी पेपर्स होते हैं प्रैक्टिकल के भी होते हैं। यह तो है कि जो आदि से निमित्त बने हैं उन्हों का भाग्य तो श्रेष्ठ है ही। अभी नया क्या करेंगे?

इसके लिए विशेष अटेन्शन- हर कर्म करने के पहले यह लक्ष्य रखो कि मुझे स्वयं को सम्पन्न बनाए सैम्पुल बनाना है। होता क्या है कि संगठन का फायदा भी होता है तो नुकसान भी होता है। संगठन में एक दो को देख अलबेलापन भी आता है और संगठन में एक दो को देख करके उमंग उत्साह भी आता है, दोनों होता है। तो संगठन को अलबेलेपन से नहीं देखना है। अभी यह एक रीति हो गई है, यह भी करते हैं, यह भी करते हैं हमने भी किया तो क्या हुआ। ऐसे चलता ही हैं। तो यह संगठन में अलबेलेपन का नुकसान का होता है। संगठन से श्रेष्ठ बनने का सहयोग लेना वह अलग चीज है। अगर यह लक्ष्य रहे- कि मुझे करना है। मुझे करके औरों को करना है। फिर उमंग उत्साह रहेगा करने का भी और कराने का भी। और बार-बार इस लक्ष्य को इमर्ज करें। अगर सिर्फ लक्ष्य रखा तो भी वह मर्ज हो जाता है। इसीलिए प्रैक्टिकल नहीं होता। तो लक्ष्य को समय प्रति समय इमर्ज करो। लक्ष्य और लक्षण भी बार-बार मिलाते चलो। फिर शक्तिशाली हो जायेंगे। नहीं तो साधारण हो जाता है। अभी इस वर्ष हर एक यही समझे कि हमें सिम्पल और सैम्पल बनना है। यह सेवा की प्रवृति वृद्धि को तो पाती रहती है लेकिन यह प्रवृति उन्नति में विघ्न रुप नहीं बननी चाहिए। अगर उन्नति में विघ्न रुप बनती है तो उसे सेवा नहीं कहेंगे। अच्छा- है तो बहुत बड़ा झुण्ड। जब एक इतना छोटा-सा एटम बाम्ब भी कमाल कर दिखाता है तो यह इतने आत्मिक बाम्बस क्या नहीं कर सकते हैं। स्टेज पर तो आने वाले आप लोग हो ना। गोल्डन जुबली वाले तो हो गये बैकबोन लेकिन प्रैक्टिकल में स्टेज पर तो आने वाले आप हो। अभी ऐसा कुछ करके दिखाओ- जैसे गोल्डन जुबली के निमित्त आत्माओं का स्नेह का संगठन दिखाई देता है और उस स्नेह के संगठन ने प्रत्यक्षफल दिखाया- सेवा की व्द्धि, सेवा में सफलता। ऐसे ही ऐसा संगठन बनाओ जो किले के रुप में हो। जैसे गोल्डन जुबली वाली निमित्त दीदियां दादियां जो भी हैं उन्होंने जब स्नेह और संगठन की शक्ति का प्रत्यक्षफल दिखाया तो आप भी प्रत्यक्षफल दिखाओ। तो एक दो के समीप आने के लिए समान बनना पड़ेगा। संस्कार भिन्न-भिन्न तो हैं भी और रहेंगे भी। अभी जगदम्बा को देखो और ब्रह्मा को देखो- संस्कार भिन्न-भिन्न ही रहे। अभी जो भी निमित्त दीदी दादियां हैं, संस्कार एक जैसे तो नहीं लेकिन संस्कार मिलाना यह है स्नेह का सबूत। यह नहीं सोचो- कि संस्कार मिलें तो संगठन हो, यह नहीं। संस्कार मिलाने से संगठन मजबूत बन ही जाता है। अच्छा- यह भी हो ही जायेगा। सेवा एक है लेकिन निमित्त बनना, निमित्त भाव में चलना यही विशेषता है। यही तो हद निकलनी है ना? इसके

लिए सोचा न- तो सबको चेन्ज करें। एक सेन्टर वाले दूसरों सेन्टरों में जाने चाहिए। सभी तैयार हो? आर्डर निकलेगा। आपका तो हैंडसअप हैं ना। बदलने में फायदा भी है। इस वर्ष यह नई बात करें ना। नष्टोमोहा तो होना ही पड़ेगा। जब त्यागी तपस्वी बन गये तो यह क्या है? त्याग ही भाग्य है। तो भाग्य के आगे यह क्या त्याग है। आफर करने वालों का आफरीन मिल जाती है। तो सभी बहादुर हो! बदली माना बदली। कोई को भी कर सकते हैं। हिम्मत है तो क्या बड़ी बात है। अच्छा तो इस वर्ष यह नवीनता करेंगे। पसन्द हैं ना! जिन्होंने एवररेडी का पाठ आदि से पढ़ा हुआ है उनमें यह भी अन्दर ही अन्दर बल भरा हुआ होता है। कोई भी आज्ञा पालन करने का बल स्वत- ही मिलता है तो सदा आज्ञाकारी बनने का बल मिला है अच्छा- सदा श्रेष्ठ भाग्य है और भाग्य के कारण सहयोग प्राप्त होता ही रहेगा। समझा!

(२) सेवा वर्तमान और भविष्य दोनों को ही श्रेष्ठ बनाती है। सेवा का बल कम नहीं है। याद और सेवा दोनों का बैलन्स चाहिए। तो सेवा उन्नति का अनुभव करायेगी। याद में सेवा करना नैचुरल हो। ब्राह्मण जीवन की नेचर क्या है? याद में रहना। ब्राह्मण जन्म लेना अर्थात् याद का बन्धन बांधना। जैसे वह ब्राह्मण जीवन में कोई न कोई निशानी रखते हैं- तो इस ब्राह्मण जीवन की निशानी है याद। याद में रहना नैचुरल हो। इसलिए याद अलग की सेवा अलग की, नहीं। दोनों इकट्ठे हों। इतना टाइम कहॉ है जो याद अलग करो, सेवा अलग करो।। इसलिए याद और सेवा सदा साथ है ही। इसी में ही अनुभवी भी बनते हैं, सफलता भी प्राप्त करते हैं। अच्छा-

सिलवर जुबली में आये हुए भाई बहिनों प्रति अव्यक्त बापदादा का मधुर सनदेश- रजत जयन्ति के शुभ अवसर पर रुहानी बच्चों के प्रति स्नेह के सुनहरे पुष्प

सारे विश्व में ऊंचे से ऊंचे महायुग के महान पार्टधारी युग परिवर्तन बच्चों को श्रेष्ठ सुहावने जीवन की मुबारक हो। सेवा में वृद्धि के निमित्त बनने के विशेष भाग्य की मुबारक हो। आदि से परमात्म स्नेही और सहयोगी बनने की, सैम्पल बनने की मुबारक हो। समय के समस्याओं के तूफान को तोफा समझ सदा विघ्न विनाशक बनने की मुबारक हो।

बापदादा सदा अपने ऐसे अनुभवों के खजानों से सम्पन्न सेवा के फाउण्डेशन बच्चों को देख हर्षित होते हैं और बच्चों के साहस के गुणों की माला सिमरण करते हैं। ऐसे लकी और लवली अवसर पर विशेष सुनहरे वरदाता सदा एक बन एक को प्रत्यक्ष करने के कार्य में सफल भव। रुहानी जीवन में अमर भव। प्रत्यक्ष फल और अमर फल खाने के पदम भाग्यवान भव।

18.1.87

कर्मातीत स्थिति की निशानियां

बन्धनमुक्त बनाने वाले, स्नेह के सागर बापदादा निमित्त गीता-पाठशालाओं के सेवाधारी बच्चों के सम्मुख बोलें:-

आज अव्यक्त बापदादा अपने 'अव्यक्त स्थिति भव' के वरदानी बच्चों वा अव्यक्ति फरिश्तों से मिलने आये हैं। यह अव्यक्त मिलन इस सारे कल्प में अब एक ही बार संगम पर होता है। सतयुग में भी देव मिलन होगा लेकिन फरिश्तों का मिलन, अव्यक्त मिलन इस समय ही होता है। निराकार बाप भी अव्यक्त ब्रह्मा बाप के द्वारा मिलन मनाते हैं। निराकार को भी यह फरिश्तों की मह-फिल अति प्रिय लगती है, इसलिए अपना धाम छोड़ आकारी वा साकारी दुनिया में मिलन मनाने आये हैं। फरिश्ते बच्चों के स्नेह की आकर्षण से बाप को भी रूप बदल, वेष बदल बच्चों के संसार में आना ही पड़ता है। यह संगमयुग बाप और बच्चों का अति प्यारा और न्यारा संसार है। स्नेह सबसे बड़ी आकर्षित करने की शक्ति है जो परम-आत्मा, बन्धनमुक्त को भी, शरीर से मुक्त को भी स्नेह के बन्धन में बांध लेती है, अशरीरी को भी लोन के शरीरधारी बना देती है। यही है बच्चों के स्नेह का प्रत्यक्ष प्रमाण।

आज का दिन अनेक चारों ओर के बच्चों के स्नेह की धारायें, स्नेह के सागर में समाने का दिन है। बच्चे कहते हैं – 'हम बापदादा से मिलने आये हैं'। बच्चे मिलने आये हैं? वा बच्चों से बाप मिलने आये हैं? या दोनों ही मधुबन में मिलने आये हैं? बच्चे स्नेह के सागर में नहाने आये हैं लेकन बाप हजारों गंगाओं में नहाने आते हैं। इसलिए गंगा-सागर का मेला विचित्र मेला है। स्नेह के सागर में समाए सागर समान बन जाते हैं। आज के दिन को बाप समानबनने का स्मृति अर्थात् समर्थी-दिवस कहते हैं। क्यों? आज का दिन ब्रह्मा बाप के सम्पन्न और सम्पूर्ण बाप समान बनने का यादगार दिवस है। ब्रह्मा बच्चा सो बाप, क्योंकि ब्रह्मा बच्चा भी है, बाप भी है। आज के दिन ब्रह्मा ने बच्चे के रूप में सपूत बच्चा बनने का सबूत दिया स्नेह के स्वरूप का, समान बनने का सबूत दिया; अति प्यारे और अति न्यारेपन का सबूत दिया; बाप समान कर्मातीत अर्थात् कर्म के बन्धन से मुक्त, न्यारा बनने का सबूत दिया; सारे कल्प के कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त होने का सबूत दिया। सिवाए सेवा के स्नेह के और कोई बन्धन नहीं। सेवा में भी सेवा के बन्धन में बंधने वाले सेवाधारी नहीं। क्योंकि सेवा में कोई बन्धनमुक्त बन सेवा करते और कोई बन्धनमुक्त बन सेवा करते। सेवा-धारी ब्रह्मा बाप भी है। लेकिन सेवा द्वारा हद की रायल इच्छायें सेवा में हिसाब-किताब से भी मुक्त हैं। इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है। जैसे देह का बन्धन, देह के सम्बन्ध का बन्धन, ऐसे सेवा में स्वार्थ - यह भी बन्धन कर्मातीत बनने में विघ्न डालता है। कर्मातीत बनना अर्थात् इस रायल हिसाब-किताब से भी मुक्त।

मैजारिटी निमित्त गीता-पाठशालाओं के सेवाधारी आये हैं ना। तो सेवा अर्थात् औरों को भी मुक्त बनाना। औरों को मुक्त बनाते स्वयं को बन्धन में बांध तो नहीं देते? नष्टोमोहा बनने के बजाए, लौकिक बच्चों आदि सबसे मोह त्याग कर स्टूडेन्ट से मोह तो नहीं करते? यह बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है, अच्छा-अच्छा समझते मेरेपन की इच्छा के बन्धन में तो नहीं बंध जाते? सोने की जंजीरें तो अच्छी नहीं लगती हैं ना? तो आज का दिन हद के मेरे-मेरे से मुक्त होने का अर्थात् कर्मातीत होने का अव्यक्ति दिव मनाओ। इसी को ही स्ने का सबूत कहा जाता है। कर्मातीत बनना - यह लक्ष्य तो सबका अच्छा है। अब चेक करो - कहाँ तक कर्मों के बन्धन से न्यारे बने हो? पहली बात - लौकिक और अलौकिक, कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त। दूसरी बात - पिछले जन्मों के कर्मों के हिसाब-किताब वा वर्तमान पुरूषार्थ के कमजोरी के कारण किसी भी व्यर्थ स्वभाव-संस्कार के वश होने से मुक्त बने हैं? कभी भी कोई कमजोर स्वभाव-संस्कार वा पिछला संस्कार-स्वभाव वशीभूत बनाता है तो बन्धनयुक्त हैं, बन्धनमुक्त नही। ऐसे नहीं सोचना कि चाहते नहीं हैं लेकिन स्वभाव या संस्कार करा देते हैं। यह भी निशानी बन्धनमुक्त की नहीं लेकिन बन्धनयुक्त की है। और बात - कोई भी सेवा की, संगठन की, प्रकृति की परिस्थिति स्वस्थिति को वा श्रेष्ठ स्थिति को डग-मग करती है - यह भी बन्धनमुक्त स्थिति नहीं है। इस बन्धन से भी मुक्त। और बात - पुरानी दुनिया में पुराने अन्तिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में लाये - इससे भी मुक्त। एक है व्याधि आना, एक है व्याधि हिलाना। तो आना - यह भावी है लेकिन स्थिति हिल जाना - यह बन्धनयुक्त की निशानी है। स्वचिन्तन, ज्ञान चिन्तन, शुभचिन्तक बनने का चिन्तन बदल शरीर की व्याधि का चिन्तन चलना - इससे मुक्त। क्योंकि ज्यादा प्रकृति का चिंतन चिंता के रूप में बदल जाता है। तो इससे मुक्त होना - इसी को ही कर्मातीत स्थिति कहा जाता है। इन सभी बन्धनों को छोड़ना, यही कर्मातीत स्थिति की निशानी है। ब्रह्मा बाप ने इन सभी बन्धनों से मुक्त हो कर्मातीत स्थिति को प्राप्त किया। तो आज का दिवस ब्रह्मा बाप समान कर्मातीत बनने का दिवस है। आज के दिवस का महत्व समझा? अच्छा।

आज की सभा विशेष सेवाधारी अर्थात् पुण्य आत्मा बनने वालों की सभा है। गीता पाठशाला खोलना अर्थात् पुण्य आत्मा बनना। सबसे बड़े ते बड़ा पुण्य हर आत्मा को सदा के लिए अर्थात् अनेक जन्मों के लिए पापों से मुक्त करना - यही पुण्य है। नाम बहुत

अच्छा है - 'गीता पाठशाला'। तो गीता पाठशाला वाले अर्थात् सदा स्वयं गीता का पाठ पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले। गीता-ज्ञान का पहला पाठ - अशरीरी आत्मा बनो और अन्तिम पाठ - नष्टोमोहा, स्मृतिस्वरूप बनो। तो पहला पाठ है विधि और अन्तिम पाठ है विधि से सिद्धि। तो गीता-पाठशाला वाले हर समय यह पाठ पढ़ते हैं कि सिर्फ मुरली सुनाते हैं? क्योंकि सच्ची गीता-पाठशाला की विधि यह है - पहले स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फिर औरों को निमित्त बन पढ़ाना। तो सभी गीता-पाठशाला वाले इस विधि से सेवा करते हो? क्योंकि आप सभी इस विश्व के आगे परमात्म-पढ़ाई का सैम्पल हो। तो सैम्पल का महत्व होता है। सैम्पल अनेक आत्माओं को ऐसा बनने की प्रेरणा देता है। तो गीता-पाठशाला वालों के ऊपर बड़ी जिम्मेवारी है। अगर जरा भी सैम्पल बनने में कमी दिखाई तो अनेक आत्माओं को भाग्य बनाने के बजाए, भाग्य बनाने से वंचित करने के निमित्त भी बन जायेंगे क्योंकि देखने वाले, सुनने वाले साकार रूप में आप निमित्त आत्माओं को देखते हैं। बाप तो गुप्त हैं ना। इसलिए ऐसा श्रेष्ठ कर्म सदा करके दिखाओ जो आपके श्रेष्ठ कर्मों को देख, अनेक आत्माओं के श्रेष्ठ कर्मों के भाग्य की रेखा श्रेष्ठ बना सको। तो एक तो अपने को सदा सैम्पल समझना और दूसरा, सदा अपना सिम्बल याद रखना। गीता-पाठशाला वालों का सिम्बल कौनसा है, जानते हो? कमल पुष्प। बापदादा ने सुनाया है कि कमल बनो और अमल करो। कमल बनने का साधन ही है अमल करना। अगर अमल नहीं करते तो कमल नहीं बन सकते। इसलिए 'सैम्पल हैं' और 'कमलपुष्प' का सिम्बल सदा बुद्धि में रखो। सेवा कितनी भी वृद्धि को प्राप्त हो लेकिन सेवा करते न्यारे बन प्यारे बनना। सिर्फ प्यारे नहीं बनना, न्यारे बन प्यारे बनना। क्योंकि सेवा से प्यार अच्छी बात है लेकिन प्यार लगाव के रूप में बदल नहीं जाये। इसको कहते हैं न्यारे बन प्यारा बनना। सेवा के निमित्त बने, यह तो बहुत अच्छा किया। पुण्य आत्मा का टाईटल (Title) तो मिल ही गया। इसलिए देखो, खास निमन्त्रण दिया है, क्योंकि पुण्य का काम किया है। अब आगे जो सिद्धि का पाठ पढ़ाया, तो सिद्धि की स्थिति से वृद्धि को प्राप्त करते रहना। समझा, आगे क्या करना है? अच्छा।

सभी विशेष एक बात की इन्तजार में हैं, वह कौनसी? (रिजल्ट सुनायें) रिजल्ट आप सुनायेंगे या बाप सुनायेंगे? बापदादा ने क्या कहा था - रिजल्ट लेंगे या देंगे? ड्रामा प्लैन अनुसार जो चला, जैसे चला उसको अच्छा ही कहेंगे। लक्ष्य सबने अच्छा रखा, लक्षण यथा शक्ति कर्म में दिखाया। बहुतकाल का वरदान नम्बरवार धारण किया भी और अभी भी जो वरदान प्राप्त किया, वह वरदानी-मूर्त बन बाप समान वरदान-दाता बनते रहना। अभी बापदादा क्या चाहते हैं? वरदान तो मिला, अब इस वर्ष बहुतकाल बन्धनमुक्त अर्थात् बाप समान कर्मातीत स्थिति का विशेषज्ञ अभ्यास करते दुनिया को न्यारा और प्यारा पन का अनुभव कराओ। कभी-कभी अनुभव करना - अभी इस विधि को बदल बहुतकाल के अनुभूतियों का प्रत्यक्ष बहुतकाल अचल, अडोल, निर्विघ्न, निर्बन्धन, निर्विकल्प, निर्विकर्म अर्थात् निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी - इसी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना। समझा?

रिजल्ट में पहले स्वयं से स्वयं संतुष्ट, वह कितने रहे? क्योंकि एक है स्वयं की सन्तुष्टता, दूसरी है ब्राह्मण परिवार की सन्तुष्टता, तीसरी है बाप की सन्तुष्टता। तीनों की रिजल्ट में अभी और मार्क्स लेनी हैं। तो स्नतुष्ट बनो, सन्तुष्ट करो। बाप की सन्तुष्टमणि बन सदा चमकते रहो। बापदादा बच्चों का रिगार्ड रखते हैं, इसलिए गुप्त रिकार्ड बताते हैं। होवनहार हैं, इसीलिए बाप सदा सम्पन्नता की स्टेज देखते हैं। अच्छा।

सभी सन्तुष्टमणियां हो ना? वृद्धि को देख करके खुश रहो। आप सब तो इन्तजार में हो कि आबू रोड तक क्यू लगे। तो अभी तो सिर्फ हाल भराहै, फिर क्या करेंगे? फिर सोयेंगे या अखण्ड योग करेंगे? यह भी होना है। इसलिए थोड़े में ही राजी रहो। तीन पैर के बजाए एक पैर पृथ्वी भी मिले, तो भी राजी रहो। पहले ऐसे होता था - यह नहीं सोचो। परिवार के वृद्धि की खुशी मनाओ। आकाश और पृथ्वी तो खुटने वाले नहीं हैं ना। पहाड़ तो बहुत है। यह भी होना चाहए, यह भी मिलना चाहिए - यह बड़ी बात बना देते हो। यह दादियां भी सोच में पड़ जाती हैं - क्या करें, कैसे करें? ऐसे भी दिन आयेंगे जो दिन में धूप में सो जायेंगे, रात मे जागेंगे। वो लोग जलाकर आसपास बैठ जाते हैं गर्म हो करके, आप योग की अग्नि जलाकर के बैठ जायेंगे। पसन्द है ना या खटिया चाहिए? बैठने के लिए कुर्सी चाहिए? यह पहाड़ की पीठ कुर्सी बना देना। जब तक साधन हैं तो सुख लो, नहीं हैं तो पहाड़ी को कुर्सी बनाना। पीठ को आराम चाहए ना, और तो कुछ नहीं। पांच हजार आयेंगे तो कुर्सियां तो उठानी पड़ेंगी ना। और जब क्यू लगेगी तो खटिया भी छोड़नी पड़ेगी। एवररेडी रहना। अगर खटिया मिले तो भी 'हाँ-जी', धरनी मिले तो भी 'हाँ-जी'। ऐसे शुरू में बहुत अभ्यास कराये हैं। १५-१५ दिन तक दवाखाना बन्द रहता। दमा के पेशेन्ट भी ढोढा (बाजरे की रोटी) और लस्सी पीते थे। लेकिन बीमार नहीं हुए, सब तन्दरूस्त हो गये। तो यह शुरू में अभ्यास करके दिखाया है, तो अन्त में भी होगा ना। नहीं तो, सोचो, दमाका पेशेन्ट और उसको लस्सी दो तो पहले ही घबरा जायेगा। लेकिन हुआ की दवा साथ में होती है, इसलिए मनोरंजन हो जाता है। पेपर नहीं लगता है। मुश्किल नहीं लगता। त्याग नहीं, एक्सकर्शन (Excursion-आमोद-प्रमोद, मनोरंजन) हो जाती है। तो सभी तैयार हो ना या प्रबन्ध करने वाले के पास टीचर्स लिस्ट ले जायेंगी? इसीलिए नहीं बुलाते हैं ना। समय आने परयह सब साधन से भी परे साधना के सिद्धि रूप में अनुभव करेंगे। रूहानी मिलेट्री (सेना) भी हो ना। मिलेट्री का पार्ट भी तो बजाना है। अभी तो

स्नेही परिवार है, घर है - यह भी अनुभव कर रहे हो। लेकिन समय पर रूहानी मिलेट्री बन जो समय आया उसको उसी स्नेह से पार करना - यह भी मिलेट्री की विशेषता है। अच्छा।

गुजरात को यह विशेष वरदान है जो एवर-रेडी रहते हैं। बहाना नहीं देते हैं - क्या करें, कैसे आयें, रिजर्वेशन नहीं मिलती - पहुँच जाते हैं। नजदीक का फायदा है। गुजरात को आज्ञाकारी बनने का विशेष आशीर्वाद है क्योंकि सेवा में भी 'हाँ-जी' करते हैं ना। मेहनत की सेवा सदा गुजरात को देते हैं ना। रोटी की सेवा कौन करता है? स्थान देने की, भागदौड़ करने की सेवा गुजरात करता है। बापदादा सब देखता है। ऐसे नहीं बापदादा को पता नहीं पड़ता। मेहनत करने वालों का विशेष महबूब की मुहब्बत प्राप्त होती है। नजदीक का भाग्य है और भाग्य को आगे बढ़ाने का तरीका अच्छा रखते हैं। भाग्य को बढ़ाना सबको नहीं आता है। कोई को भाग्य प्राप्त होता है लेकिन उतने तक ही रहता है, बढ़ाना नहीं आता। लेकिन गुजरात को भाग्य है और बढ़ाना भी आता है। इसलिए अपना भाग्य बढ़ा रहे हो - यह देख बापदादा भी खुश है। तो बाप की विशेष आशीर्वाद - यह भी एक भाग्य की निशानी है। समझा?

जो भी चारों ओर के स्नेही बच्चे पहुँचे हैं, बापदादा भी उन सभी देश, विदेश दोनों के स्नेही बच्चों को स्नेह का रिटर्न 'सदा अविनाशी स्नेही भव' का वरदान दे रहे हैं। स्नेह में जैसे दूर-दूर से दौड़कर पहुँचे हो, ऐसे ही जैसे स्थूल में दौड़ लगाई, समीप पहुँचे, सम्मुख पहुँचे, ऐसे पुरूषार्थ में भी विशेष उड़ती कला द्वारा बाप समान बनना अर्थात् सदा बाप के समीप रहना। जैसे यहाँ सामने पहुँचे हो, वैसे सदा उड़ती कला द्वारा बाप के समान समीप ही रहना। समझा, क्या करना है? यह स्नेह, दिल का स्नेह दिलाराम बाप के पास आपके पहुँचने को पहले ही पहुँच जाता है। चाहे सम्मुख हो, चाहे आज के दिन देश-विदेश में शरीर सू दूर हैं लेकिन दूर होते हुए भी सभी बच्चे समीप से समीप दिलतख्तनशीन हैं। तो सबसे समीप का स्थान है दिल। तो विदेश वा देश में नहीं बैठे हैं लेकिन दिलतख्त पर बैठे हैं। तो समीप हो गये ना। सभी बच्चों की यादप्यार, उल्हनें, मीठी-मीठी रूहरिहानें, सौगातें - सब बाप के पास पहुँच गई। बापदादा भी स्नेही बच्चों को 'सदा मेहनत से मुक्त हो मुहब्बत में मग्न रहो' - यह वरदान दे रहे हैं। तो सभी को रिटर्न मिल गया ना। अच्छा।

मधुबन निवासी तो सदा ही भाग्य की महिमा गाते ही रहते हैं। और भी भाग्य की महिमा गाते और स्वयं भी अपने भाग्य की महिमा के गीत गाते रहते। मधुबन निवासी अर्थात् सदा मधुरता द्वारा बाप के समीपता का साक्षात्कार कराने वाले। संकल्प में भी मधुरता, बोल में भी मधुरता, कर्म में भी मधुरता - यही बाप की समीपता है। इसलिए बाप भी रोज क्या कहते हैं और बच्चे भी रेसपान्ड रोज कया करते हैं, जानते हो? बाप भी कहते हैं - 'मीठे-मीठे बच्चो' और बच्चे भी रेसपान्ड करते - 'मीठे-मीठे बाप'। तो यह रोज का मधुरता का बोल मधुर बना देता है। तो सदा मधुरता को प्रत्यक्ष करने वाले मधुबन निवासी श्रेष्ठ आत्मायें हैं। मधुरता ही महानता है। जिसमें मधुरता नहीं तो महानता नहीं अनुभव होती। फिर कभी सुनायेंगे कि संकल्प की मधुरता क्या है। समझा? अब तो सबसे मिल लिये। अच्छा। इसको ही कहते हैं अलौकिक मिलन।

सर्व स्नेही आत्माओं को, सदा समीप रहने वाली आत्माओं को, सदा बन्धनमुक्त, कर्मातीत स्थिति में बहुतकाल अनुभव करने वाली विशेष आत्माओं को, सर्व दिलतख्तनशीन सन्तुष्टमणियों को बापदादा का 'अव्यक्ति स्थिति भव' के वरदान साथ यादप्यार और गुडनाइट और गुडमार्निंग।

दादीयों से

जैसे वृक्ष के पके हुए फल जो होते हैं, उनका बहुत महत्व होता है। जो वृक्ष के पके हुए होते, उनको अलग पकाना नहीं पड़ता। तो वह हुए वृक्ष के पके हुए और आप सभी हो वृक्षपति द्वारा पके हुए फल। जैसे वृक्ष के पके हुए फल का महत्व है, वैसे वृक्षपति द्वारा पके हुए फलों का भी महत्व होता है। उसी नजर से सभी आप सबको देखते हैं। क्योंकि बाप के, ब्रह्मा बाप के साथ-साथ आपका भी जन्म हुआ ना। तो एक ही राशि हो गई ना। राशि का प्रभाव होता है ना। जन्म दिन का राशि पर प्रभाव होता है। तो ब्रह्मा बाप के साथ-साथ जन्म हुआ, ब्रह्मा बाप के साथ सेवा के आरम्भ में निमित्त बने, अभी ब्रह्मा बाप समान कर्मातीत बनने के लिए एवर-रेडी हैं। बाप तो बच्चों को देख खुश होते हैं। मेरे योग्य बच्चे योगी भी हैं और योग्य भी हैं, इसलिए खुशी विशेष है। (बापदादा ने दादी जी को फूल दिया) इसमें आप कौनसा पत्ता हो? सब पत्ते मिल करके एक हो गये ना। ऐसे ही समीप रहने वाले सभी पत्ते बूर के साथ रहते हैं। बूर यह बीज है। तो बीज के साथ रहने वाले पत्तों का भी महत्व है। अच्छा।

आप लोग तो जन्म से ही वरदानी हो। वरदानों से ही पले हो, मेहनत से नहीं। जिसकी पालना ही वरदानों से हुई है, उसके लिए और क्या वरदान रहा! चल रहे हैं। पल रहे हैं वरदानों से, सइलिए मेहनत से बचे हुए हें। जो मेहनत करते हैं, उनकी चाल ही अलग होती है। आप लोगों ने क्या मेहनत की। कुछ सहन भी किया तो एक्सकर्शन (मनोरंजन) मनाया। पिकेटिंग में ठहरे भी, तो भी एक्सकर्शन ही मनाई, मजा ही देखते रहे। गालियां भी खाई तो हंसते-हंसते खाई। अभी वह सब बातें क्या लगती है? चरित्र लगती हैं ना। अच्छा। यह जनक तो विदेही बन गई ना। विदेही जनक। अच्छा। वरदान तो सबको मिले हुए हैं। वरदानी को क्या वरदान देंगे?

जैसे कहते हैं - सूर्य के आगे क्या दीपक जलायेंगे, तो वरदानी आत्माओं को क्या वरदान दें। अच्छा।

पर्सनल मुलाकात

पाण्डव अर्थात् सदा बाप के साथी। पाण्डवों की विजय किसलिए हुई? वह बाप के साथ थे। तो ऐसे पाण्डव हो? या कभी अलग रहते हो, कभी साथ रहते हो? कभी माया के साथ तो नहीं चले जाते? क्योंकि माया के साथ रहेंगे तो बाप नहीं रह सकता; या माया होगी या बाप। सदा बाप के साथ रहने वाले पाण्डव ही विजयी हैं। शक्तियां भी सदा विजयी हैं। शिव और शक्ति कम्बाइन्ड हैं तो सदा विजयी हैं। शक्तियों का झण्डा सदा ऊंचा रहता है। यह झण्डा ही विजय की निशानी है। तो सदा झण्डा ऊंचा रहे। अच्छा।

18.1.88

'स्नेह' और 'शक्ति' की समानता

नष्टोमोहा कर्मातीत भव का पाठ पढ़ाने वाले, वरदाता बापदादा अपने स्नेही बच्चों को 'नथिंग न्यू' की स्मृति से समर्थ बनने की प्रेरणा देते हुए बोले-

आज स्मृतिस्वरूप बनाने वाले समर्थ बाप चारों ओर के स्मृतिस्वरूप समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। आज का दिन बापदादा के स्नेह में समाने के साथ-साथ स्नेह और समर्थ-दोनों के बैलेंस स्थिति के अनुभव का दिन है। स्मृति दिवस अर्थात् स्नेह और समर्थी-दोनों के बैलेंस स्थिति के अनुभव का दिन है। स्मृति दिवस अर्थात् स्नेह और समर्थी-दोनों की समानता के वरदान का दिवस है। क्योंकि

जिस बाप की स्मृति में स्नेह में लवलीन होते हो, वह ब्रह्मा बाप स्नेह और शक्ति की समानता का श्रेष्ठ सिम्बल है। अभी-अभी अति स्नेही, अभी-अभी श्रेष्ठ शक्तिशाली। स्नेह में भी स्नेह द्वारा हर बच्चे को सदा शक्तिशाली बनाया। सिर्फ स्नेह में अपनी तरफ आकर्षित नहीं किया लेकिन स्नेह द्वारा शकति सेना बनाए विश्व के आगे सेवा अर्थ निमित्त बनाया। सदा 'स्नेही भव' के साथ 'नष्टो-मोहा कर्मातीत भव' का पाठ पढ़ाया। अन्त तक बच्चों को सदा न्यारे और सदा प्यारे-यही नयनों की दृष्टि द्वारा वरदान दिया।

आज के दिन चारों ओर के बच्चे भिन्न-भिन्न स्वरूप से, भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से, स्नेह से और बाप के समान बनने की स्थिति के अनुभूति से मिलन मनाने बापदादा के वतन में पहुँचे। कोई बुद्धि द्वारा और कोई दिव्य-दृष्टि द्वारा। बापदादा ने सभी बच्चों के स्नेह का और समान स्थिति का याद और पयार दिल से स्वीकार किया और रिटर्न में सभी बच्चों को 'बापदादा समान भव' का वरदान दिया और दे रहे हैं। बापदादा जानते हैं कि बच्चों का ब्रह्मा बाप से अति स्नेह है। चाहे साकार में पालना ली, चाहे अब अव्यक्त रूप से पालना ले रहे हैं लेकिन बड़ी माँ होने के कारण माँ से बच्चों का प्यार स्वत: ही होता है। इस कारण बाप जानते हैं कि ब्रह्मा माँ को बहुत याद करते हैं। लेकिन स्नेह का प्रत्यक्ष स्वरूप है समान बनना। जितना-जितना दिल का सच्चा प्यार है, बच्चों के मन में उतना ही फालो फादर करने का उमंग-उत्साह दिखाई देता है। यह अलौकिक माँ का अलौकिक प्यार वियोगी बनाने वाला नहीं है, सहजयोगी राजयोगी अर्थात् राजा बनाने वाला है। अलौकिक माँ की बच्चों के प्रति अलौकिक ममता है कि हर एक बच्चा राजा बने। सभी राजा बच्चे बनें, प्रजा नहीं। प्रजा बनाने वाले हो, प्रजा बनने वाले नहीं हो।

आज वतन में मात-पिता की रूहरिहान चल रही थी। बाप ने ब्रह्मा माँ से पूछा कि बच्चों के विशेष स्नेह के दिन क्या याद आता? आप लोगों को भी विशेष याद आती है ना। हर एक को अपनी याद आती है और उन यादों में समा जाते हो। आज के दिन विशेष अलौकिक यादों का संसार होता है। हर कदम में विशेष साकार स्वरूप के चरित्रों की याद स्वत: ही आती है। पालना की याद, प्राप्तियों की याद, वरदानों की याद स्वत: ही आती है। तो बाप ने भी ब्रह्मा माँ से यही पूछा। जानते हो, ब्रह्मा ने क्या बोला होगा? संसार तो बच्चों का ही है। ब्रह्मा बोले-अमृतवेले पहले 'समान बच्चे' याद आये। स्नेही बच्चे और समान बच्चे। स्नेही बच्चों को समान बनने की इच्छा वा संकल्प है लेकिन इच्छा के साथ, संकल्प के साथ सदा समर्थी नहीं रहती, इसलिए समान बनने में नम्बर आगे के बजाये पीछे रह जाता है। स्नेह उमंग-उत्साह में लाता लेकिन समास्याएं स्नेह और शक्ति रूप की समान स्थिति बनने में कहाँ-कहाँ कमजोर बना देती हैं। समस्यायें सदा समान बनने की स्थिति से दूर कर लेती हैं। स्नेह के कारण बाप को भूल भी नहीं सकते। हैं भी पक्के ब्राह्मण। पीछे हटने वाले भी नहीं हैं, अमर भी हैं। सिर्फ समस्या को देख थोड़े समय के लिए उस समय घबरा जाते हैं। इसलिए, निरन्तर स्नेह और शक्ति की समान स्थिति का अनुभव नहीं कर सकते।

इस समय के प्रमाण नॉलेजफुल, पावरफुल, सक्सेसफुल स्थिति के बहुतकाल के अनुभवी बन चुके हो। माया के, प्रकृति के वा आत्माओं द्वारा निमित्त बनी हुई समस्याओं के अनेक बार के अनुभवी आत्माएं हो। नई बात नहीं है। त्रिकालदर्शी हो! समस्याओं के आदि, मध्य, अंत-तीनों को जानते हो। अनेक कल्पों की बात तो छोड़ो लेकिन इस कल्प के ब्राह्मण जीवन में भी बुद्धि द्वारा जान विजयी बनने में वा समस्या को पार कर अनुभवी बनने में नये नहीं हो, पुराने हो गये हो। चाहे एक साल का भी हो लेकिन इस अनुभव में पुराने हैं। 'नथिंग न्यू'-यह पाठ भी पढ़ाया हुआ है। इसलिए वर्तमान समय के प्रमाण अभी समस्या से घबराने में समय नहीं गंवाना है। समय गंवाने से नम्बर पीछे हो जाता है।

तो ब्रह्मा माँ ने बोला-एक विशेष स्नेही बच्चे और दूसरे समान बनने वाले, दो प्रकार के बच्चों को देख यही संकल्प आया कि वर्तमान समय प्रमाण मैजारिटी बच्चों को अब समान स्थिति के समीप देखने चाहते हैं। समान स्थिति वाले भी हैं लेकिन मैजारिटी समानता के समीप पहुँच जाएं-यही अमृतवेले बच्चों को देख-देख समान बनने का दिन याद आ रहा था। आप 'स्मृति-दिन' को याद कर रहे थे और ब्रह्मा माँ 'समान बनने का दिन' याद कर रहे थे। यही श्रेष्ठ संकल्प पूरा करना अर्थात् स्मृति दिवस को समर्थ दिवस बनाना है। यही स्नेह का प्रत्यक्ष फल माँ-बाप देखने चाहते हैं। पालना का वा बाप के वरदानों का यही श्रेष्ठ फल है। मात-पिता को प्रत्यक्ष फल दिखाने वाले श्रेष्ठ बच्चे हो। पहले भी सुनाया था-अति स्नेह की निशानी यह है जो स्नेही, स्नेही की कमी देख नहीं सकते। इसलिए, अभी तीव्र गति से समान स्थिति के समीप आओ। यही माँ का स्नेह है। हर कदम में फालो फादर करते चलो। ब्रह्मा एक ही विशेष आत्मा है जिसका मात-पिता-दोनों पार्ट साकार रूप में नूँधा हुआ है। इसलिए, विचित्र पार्टधारी महान् आत्मा का डबल स्वरूप बच्चों को याद अवश्य आता है। लेकिन जो ब्रह्मा 'मात-पिता' के दिल की श्रेष्ठ आशा है कि सर्व समान बनें, उसको भी याद करना। समझा? आज के स्मृति दिवस का श्रेष्ठ संकल्प ''समान बनना ही है''। चाहे संकल्प में, चाहे बोल में, चाहे सम्बन्ध संपर्क में समान अर्थात् समर्थ बनना है। कितनी भी बड़ी समस्या हो लेकिन 'नथिंग-न्यू'-इस स्मृति से समर्थ बन जायेंगे। इससे अलबेले नहीं बनना, अलबेलेपन में भी नथिंग-न्यू शब्द यूज करते हैं। लेकिन अनेक बार विजयी बनने में नथंग-न्यु। इस विधि से सदा सिद्धि को प्राप्त करते चलो। अच्छा!

सभी बहुत उमंग से स्मृति दिवस मनाने आए हैं। तीन पैर (पग) पृथ्वी देने वाले भी आए हैं। तीन पैर दे और तीन लोकों का मालिक

बन जाएं, तो देना क्या हुआ! फिर भी, सेवा का पुण्य जमा करने में होशियार बने। इसलिए, होशियारी की मुबारक हो। एक दे लाख पाने की विधि को अपनाने की समर्थी रखी। इसलिए, विशेष स्मृति-दिवस पर ऐसी समर्थ आत्माओं को बुलाया है। बाप रमणीक चिटचैट कर रहे थे। विशेष स्थान देने वालों को बुलाया है। बाप ने भी स्थान दिया है ना। बाप का भी लिस्ट में नाम है ना। कौनसा स्थान दिया है? ऐसा स्थान कोई नहीं दे सकता। बाप ने 'दिलतख्त' दिया, कितना बड़ा स्थान है! यह सब स्थान उसमें आ जायेंगे ना। देश-विदेश के सेवा-स्थान सभी इकट्ठे करो तो भी बड़ा स्थान कौनसा है? पुरानी दुनिया में रहने के कारण आपने तो ईटों का मकान दिया और बाप ने तख्त दिया-जहाँ सदा ही बेफिकर बादशाह बन बैठ जाते। फिर भी देखो, किसी भी प्रकार की सेवा का-चाहे स्थान द्वारा सेवा करते, चाहे स्थिति द्वारा करते-सेवा का महत्व स्वत: ही होता है। तो स्थान की सेवा का भी बहुत महत्व है। किसी को 'हाँ जी' कहकर, किसी को 'पहले आप' कहकर सेवा करने का भी महत्व है। सिर्फ भाषण करना सेवा नहीं है लेकिन किसी भी सेवा की विधि से मन्सा, वाचा, कर्मणा, बर्तन माँजना भी सेवा का महत्व है। जितना भाषण करने वाला पद पा लेता है उतना योगयुक्त, युक्तियुक्त स्थिति में स्थित रहने वाला 'बर्तन मांजने वाला' भी श्रेष्ठ पद पा सकता है। वह मुख से करता, वह स्थिति से करता। तो सदा हर समय सेवा की विधि के महत्व को जानकर महान् बनो। कोई भी सेवा का फल न मिले-यह हो नहीं सकता। लेकिन सच्ची दिल पर साहेब राजी होता है। जब दाता, वरदाता राजी हो जाए तो क्या कमी रहेगी! वरदाता वा भाग्यविधाता ज्ञान-दाता भोले बाप को राज़ी करना बहुत सहज है। भगवान राज़ी तो धर्मराज काजी से भी बच जाएंगे, माया से भी बच जाएंगे। अच्छा!

चारों ओर के सर्व स्नेह और शक्ति के समान स्थिति में स्थित रहने वाले, सदा मात-पिता की श्रेष्ठ आशा को पूर्ण करने वाले आशा के दीपकों को, सदा हर विधि से सेवा के महत्व को जानने वाले, सदा हर कदम में फालों फादर करने वाले मात-पिता को सदा स्नेह और शक्ति द्वारा समान बनने का फल दिखाने वाले, ऐसे स्मृतिस्वरूप सर्व समर्थ बच्चों को समर्थ बाप का समर्थ-दिवस पर यादप्यार और नमस्ते।

सेवाकेंद्रों के लिए तीन पैर पृथ्वी देने वाले निमित्त भाई-बहिनों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात:- विशेष सेवा के प्रत्यक्षफल की प्राप्ति देख खुशी हो रही है ना। भविष्य तो जमा है ही लेकिन वर्तमान भी श्रेष्ठ बन गया। वर्तमान समय की प्राप्ति भविष्य से भी श्रेष्ठ है! क्योंकि अप्राप्ति और प्राप्ति के अनुभ्व का ज्ञान इस समय है। वहाँ अप्राप्ति क्या होती है, उसका पता ही नहीं है। तो अन्तर का पता नहीं होता है और यहाँ अन्तर का अनुभव है। इसलिए इस समय की प्राप्ति के अनुभव का महत्व है। जो भी सेवा के निमित्त बनते हैं, तो 'तुरन्त दान महापुण्य' गाया हुआ है। अगर कोई भी बात का कोई निमित्त बनता है अर्थात् तुरन्त दान करता तो उसके रिटर्न में महापुण्य की अनुभूति होती है। वह क्या होती है? किसी भी सेवा का पुण्य एकस्ट्रा 'खुशी', शक्ति की अनुभूति होती है। जब भी कोई सफलता-स्वरूप बनके सेवा करते हो तो उस समय विशेष खुशी की अनुभूति करते हो ना। वर्णन करते हो कि आज बहुत अच्छा अनुभव हुआ! क्यों हुआ? बाप का परिचय सुनकर के सफलता का अनुभव किया। कोई परिचय सुनकर के जाग जाता है या परिचय मिलते परिवर्तन हो जाता है तो उनकी प्राप्ति का प्रभाव आपके ऊपर भी पड़ता है। दिल में खुशी के गीत बजने शुरू हो जाते हैं-यह है प्रत्यक्षफल की प्राप्ति। तो सेवा करने वाला अर्थात् सदा प्राप्ति का मेवा खाने वाला। तो जो मेवा खाता है वह क्या होता? तन्दरूस्त होता है ना। अगर डॉक्टर्स भी किसको कमजोर देखते हैं तो क्या कहते हैं? फल खाओ। क्योंकि आजकल और ताकत की चीज-माखन खाओ, घी खाओ-वह तो हजम नहीं कर सकते। आजकल ताकत के लिए फल देते हैं। तो सेवा का भी प्रत्यक्षफल मिलता है। चाहे कर्मणा भी करो, कर्मणा की भी खुशी होती है। मानो सफाई करते हो, लेकिन जब स्थान सफाई से चमकता है तो सच्चे दिल से करने कारण स्थान को चमकता हुआ देखकर के खुशी होती है ना।

कोई भी सेवा के पुण्य का फल स्वत: ही प्राप्त होता है। पुण्य का फल जमा भी होता है और फिर अभी भी मिलता है। अगर मानो, आप कोई भी काम करते हो, सेवा करते हो तो कोई भी आपको कहेगा-बहुत अच्छी सेवा की, बहुत हड्डी, अथक होकर की। तो ये सुनकर खुशी होती है ना। तो फल मिला ना। चाहे मुख से सेवा करो, चाहे हाथों से करो लेकिन सेवा माना ही मेवा। तो यह भी सेवा के निमित्त बने हो ना। महत्व रखने से महानता प्राप्त कर लेते। तो ऐसे आगे भी सेवा के महत्व को जान सदा कोई न कोई सेवा में बिजी रहो। ऐसे नहीं कि कोई जिज्ञासु नहीं मिला तो सेवा क्या करूँ? कोई प्रदर्शनी नहीं हुई, कोई भाषण नहीं हुआ तो क्या सेवा करूँ? नहीं। सेवा का फील्ड बहुत बड़ा है! कोई कहे, हमको सेवा मिलती नहीं है-कह नहीं सकता। वायुमण्डल को बनाने की कितनी सेवा रही हुई है! प्रकृति को भी परिवर्तन करने वाले हो। तो प्रकृति का परिवर्तन कैसे होगा? भाषण करेंगे क्या? वृत्ति से वायुमण्डल बनेगा। वायुमण्डल बनना अर्थात् प्रकृति का परिवर्तन होना। तो यह कितनी सेवा है! अभी हुई है? अभी तो प्रकृति पेपर ले रही है। तो हर सेकण्ड सेवा का बहुत बड़ा फील्ड रहा हुआ है। कोई कह नहीं सकता कि हमको सेवा का चांस नहीं मिलता। बीमार भी हो, तो भी सेवा का चांस है। कोई भी हो-चाहे अनपढ़ हो, चाहे पढ़ा हुआ हो, किसी भी प्रकार की आत्मा, सबके लिए सेवा का साधन बहुत बड़ा है। तो सेवा का चांस मिले-यह नहीं, मिला हुआ है।

आलराउन्ड सेवाधारी बनना है। कर्मणा सेवा की भी १०० मार्क्स हैं। अगर वाचा और मन्सा ठीक है लेकिन कर्मणा के तरफ रूचि नहीं है तो १०० मार्क्स तो गई। आलराउन्ड सेवाधारी अर्थात् सब प्रकार की सेवा द्वारा फुल मार्क्स लेने वाले। इसको कहेंगे आल-राउन्ड सेवाधारी। तो ऐसे हो? देखो, शुरू में जब बच्चों की भट्ठी बनाई तो कर्मणा का कितना पाठ पक्का कराया! माली भी बनाया तो जूते बनाने वाला भी बनाया। बर्तन मांजने वाले भी बनाया तो भाषण करने वाला भी बनाया। क्योंकि इसकी मार्क्स भी रह नही जायें। वहाँ भी लौकिक पढ़ाई में मानों आप कोई हल्की सबजेक्ट में भी फेल हो जाते हो। विशेष सब्जेक्ट नहीं है, नम्बर थ्री फोर सब्जेक्ट हैं लेकिन उसमें भी अगर फेल हुए तो पास विद् ऑनर नहीं बनेंगे। टोटल में मार्क्स तो कम हो गई ना। ऐसे, सब सब्जेक्ट चेक करो। सब सब्जेक्ट्स में मार्क्स लिया है? जैसे यह (मकान देने के) निमित्त बने, यह सेवा की, इसका पुण्य मिला, मार्क्स मिलेंगी। लेकिन फुल मार्क्स ली हैं या नहीं-यह चेक करो। कोई न कोई कर्मणा सेवा, वह भी जरूरी है क्योंकि कर्मणा की भी १०० मार्क्स हैं, कम नहीं हैं यहाँ सब सब्जेक्ट की १०० मार्क्स हैं। वहाँ तो ड्राइंग में थोड़ी मार्क्स होंगी, हिसाब (Mathematics-गणित) में ज्यादा होंगी। यहाँ सब सब्जेक्ट महत्व वाली हैं। तो ऐसा न हो कि मन्सा, वाचा में तो मार्क्स बना लो और कर्मणा में रह जाए और आप समझो-मैं बहुत महावीर हूँ। सभी में मार्क्स लेनी हैं। इसको कहते हैं सेवाधारी। तो कौनसा ग्रुप है? आलराउन्ड सेवाधारी या स्थान देने के सेवाधारी? यह भी अच्छा किया जो सफल कर लिया। जो जितना सफल करते हैं, उतना मालिक बनते हैं। समय के पहले सफल कर लेना-यह समझदार बनने की निशानी है। तो समझदारी का काम किया है। बापदादा भी खुश होते हैं कि हिम्मत रखने वाले बच्चे हैं। अच्छा!

विदाई के समय मुलाकात

दादियों से:सभी को खुश करने की सेवा नम्बर वन सेवा है। सबके अन्दर खुशी की लहर पैदा करना-यह है बाप समान सेवा। तो समान बनने की सेवा का वरदान मिला हुआ है। 'समान भव' का वरदान डॉयरेक्ट साकार रूप से मिला हुआ है। सबके अन्दर बाप की याद स्वत: ही आ जाती है। जब समान बच्चों को देखते तो बच्चे नहीं देखते लेकिन बाप दिखाई देता। यह सेवा सभी को आगे बढ़ा रही है। बापदादा सभी महारथी बच्चों की, निमित्त बच्चों की सेवा को देख-देख हर्षित हो रहे हैं। निमित्त बनना-यह भी एक भाग्य है। मधुबन में सेवा का चांस मिला है और सभी कर भी अच्छी रहे हैं। पाण्डव भी अच्छी करते हैं। सब दिल से करते हैं। जो दिल से सेवा करते हैं उसका दिलाराम बाप के पास जल्दी पहुँचता है क्योंकि दिल की तार दिल से होती है। दिल की सेवा सेकण्ड में पहुँचती है और पद्मगुणा जमा हो जाती है। जैसे यहाँ कम्प्यूटर चलाते हो, यह तो खराब भी हो जाता लेकिन वहाँ सेकण्ड में जमा होता रहता है। वह कम्पीलीट कम्प्यूटर है, अंगुली चलाने की भी ज़रूरत नहीं। तो निमित्त सेवाधारियों का कमाल है, हरेक अपनी-अपनी ड्यूटी अच्छी बजा रहे हैं। नम्बरवार तो होता है लेकिन अच्छे हैं। मधुबन वालों को सेवा के समर्थ बनने की विशेष याद। वैसे तो एक-एक आत्मा इस ईश्वरीय मशीनरी के लिए आवश्यक है। ५ वर्ष का बच्चा भी आवश्यक है, वह भी शोभा है। जो भी बैठे हो सब वैल्युएबल हो। कहने में तो कुछेक का नाम आता है लेकिन काम सभी का है। सेवाकेन्द्र का श्रृंगार आप सब हो। बाप का इतना आवाज बुलन्द करने वाले, चारों ओर आवाज फैलाने वाले इतनी भुजायें चाहिएं ना। तो आप सब भुजायें हो। अच्छा!

सभी बच्चों के प्रति यादप्यार देते हुए:चारों ओर के दिश-विदेश के दिल में समाये हुए बच्चों की यादप्यार पत्रों द्वारा या संकल्प द्वारा, दिल द्वारा बापदादा के पास पहुँची। सभी बच्चों को स्नेह के रेस्पान्ड में बापदादा पद्मगुणा यादप्यार के साथ ''सदा दिलतख्तनशीन, सदा लाइट के ताजधारी, सदा स्मृति स्वरूप के तिलकधारी भव'' का विशेष वरदान दे रहे हैं। सभी बच्चे अमृतवेले से चलते-फिरते, कर्म करते भी याद की लग्न में अच्छे तीव्रगति से आगे बढ़ रहे हैं। अपने उमंग-उत्साह का समाचार देते रहते हैं और बापदादा देख-देख हर्षित होते हैं। बाकी थोड़ा बहुत माया का खेल भी होता है। खेल नहीं खेलेंगे तो उदास हो जायेंगे, इसलिए खेलो भल लेकिन हार नहीं खाना। अगर माया आती भी है तो दुश्मन के रूप में नहीं देखो, खिलौने के रूप में देखो। तो माया भी बिजी हो जायेगी और आप भी मनोरंजन कर लेंगे। माया का रूप परिवर्तन कर लो, घबराओ नहीं। उसको परिवर्तन कर और ही सदा के लिए आगे बढ़ाने के लिए साथी बना दो। थोड़ा-बहुत खेल तो होता ही रहता है, होता ही रहेगा। यह कोई बड़ी बात नहीं है क्योंकि बापदादा जानते हैं अभी अनुभवी हो चुके हैं, इसलिए बच जाते हैं। बाकी कोई थोड़े कमज़ोर हैं जो कभी थेड़ा-सा वार में आ जाते हैं लेकिन फिर होश में आ जाते हैं। इसलिए यह समाचार भी सुनते रहते हैं। लेकिन अभी अटेन्शन अच्छा है और बहादुर भी बनते जा रहे हैं, इसलिए माया भी अभी गई कि गई, अभी ज्यादा दिन नहीं रहेगी, मुक्त हो जायेंगे। क्योंकि खेल खेलते-खेलते भी थक जाते हैं ना, तो खेल बन्द कर देते हैं तो यह खेल भी बन्द हो जायेगा। बाकी सभी बच्चों में सेवा का उमंग अच्छा है। प्रोग्राम भी अच्छे-अच्छे बना रहे हैं। मेहनत मुहब्बत से कर रहे हैं, इसलिए अथक हैं, थकते नहीं हैं। नाम मुहब्बत है, निमित्त मेहनत कर रहे हैं, इस-लिए सेवा के भी चारों ओर के उमंग-उत्साह में अच्छे चल रहे हैं। विदेश में भी तैयारियां अच्छी कर रहे हैं। और जनक तो है ही जनक, सभी को विदेही बन देह में आने का अभ्यास अच्छा कराती है। इसलिए विदेश को, चारों ओर को सेवा के निमित्त श्रेष्ठ आत्मा अच्छी मिली है। चारों ओर के खुशी और निर्विघ्न बनने की हिम्मत अच्छी दिखाई दे रही है। सभी का नाम नहीं ले रहे हैं,

बीज में समझना सारा झाड़ ही समाया हुआ है। अच्छा! सभी को दिलाराम बाप की पद्मगुणा यादप्यार और गुडमार्निंग। अच्छा!

18-1-1990

स्मृति दिवस पर
अव्यक्त बापदादा के महावाक्य

आज सर्व बच्चों के स्नेही मात-पिता अपने स्नेही बच्चों के स्नेह के दिल की आवाज़ और स्नेह में अनमोल मोतियों की मालायें देखे-देख बच्चों को स्नेह का रिटर्न विशेष वरदान दे रहे हैं – **"सदा समीप भव, समान समर्थ भव, सदा सम्पन्न संतुष्ट भव।"** सबके दिल का स्नेह आपके दिल में संकल्प उठते ही बापदादा के पास अति तीव्रगति से पहुँच जाता है। चारों ओर के देश-विदेश के बच्चे आज प्यार के सागर में लवलीन हैं। बापदादा, उसमें भी विशेष ब्रह्मा माँ बच्चों को स्नेह में लवलीन देख स्वयं भी बच्चों के लव में, स्नेह में समाये हुए हैं। बच्चे जानते हैं कि ब्रह्मा माँ का बच्चों में विशेष स्नेह रहा और अब भी है। पालना करने वाली माँ का स्वत: ही विशेष स्नेह रहता ही है। तो आज ब्रह्मा माँ एक-एक बच्चे को देख हर्षित हो रही है कि बच्चों के मन में, बुद्धि में, दिल में, नयनों में मात-पिता के सिवाए और कोई नहीं है। सब बच्चे 'एक बल एक भरोसे से आगे बढ़ रहे हैं' अगर कहाँ रुकते भी है तो मात-पिता के स्नेह का हाथ फिर से समर्थ बनाए आगे बढ़ा देता है।

आज मात-पिता बच्चों के श्रेष्ठ भागय के गीत गा रहे थे। क्योंकि आज का दिवस विशेष सूर्य, चन्द्रमा का बैकबोन होकर सितारों को विश्व के आकाश में प्रत्यक्ष करने का दिन है। जैसे यज्ञ की स्थापना के आदि में ब्रह्मा बाप ने बच्चों के आगे अपना सब कुछ समर्पित किया अर्थात् 'विल' की। ऐसे आज के दिवस पर ब्रह्मा बाप ने बच्चों को सर्वशक्तियों की विल की अर्थात् विल पावर्स दी। आज के दिवस नयनों द्वारा और संकल्प द्वारा बाप ने बच्चों को विशेष 'सन शोज फ़ादर' की विशेष सौगात दी। आज के दिवस बाप ने प्रत्यक्ष साकार रूप में करावनहार का पार्ट बजाने का प्रत्यक्ष रूप दिखाया। ब्रह्मा बाप भी आज के दिन प्रत्यक्ष रूप में करावनहार बाप के साथी बने, करनहार निमित्त बच्चों को बनाया और करावनहार मात-पिता साथी

बने। आज के दिन ब्रह्मा बाप ने अपनी सेवा की रीति और गति परिवर्तन की। आज के दिवस विशेष ब्रह्मा बाप देह से सूक्ष्म फ़रिश्ता स्वरूप धारण कर ऊँचे वतन, सूक्ष्मवतन निवासी बने, किसलिए? बच्चों को तीव्रगति से ऊँचा उठाने के लिए। बच्चों को फ़रिश्ते रूप से उड़ाने के लिए। इतना श्रेष्ठ महत्व का यह दिवस है! सिर्फ स्नेह का दिवस नहीं लेकिन विश्व की आत्माओं का, ब्राह्मण आत्माओं का और सेवा की गति का परिवर्तन ड्रामा में नूंधा हुआ था, जो बच्चे भी देख रहे हैं। विश्व की आत्माओं के प्रति बुद्धिवानों की बुद्धि बने। बुद्धि का परिवर्तन हुआ, सम्पर्क में आये सहयोगी बने। ब्राह्मण आत्माओं में श्रेष्ठ संकल्प द्वारा तीव्रगति से वृद्धि हुई। सेवा के प्रति 'सन शोज फ़ादर' की गिफ्ट से विहंग-मार्ग की सेवा आरम्भ की। यह गिफ्ट सेवा की लिफ्ट बन गई। परिवर्तन हुआ ना! अब आगे चल सेवा में और परिवर्तन देखेंगे।

अभी तक आप ब्राह्मण-आत्मायें अपने तन-मन की मेहनत से प्रोग्राम्स बनाते हो, स्टेज तैयार करते हो, निमंत्रण कार्ड छपाते हो, कोई वी.आई.पी. को बुलाते हो, रेडियो, टी.वी. वालों को सहयोगी बनाते हो, धन भी लगाते हो। लेकिन आगे चल आप स्वयं वी.आई.पी. हो जायेंगे। आपसे बड़ा कोई दिखाई नहीं देगा। बनी-बनाई स्टेज पर दूसरे लोग आपको निमंत्रण देंगे। अपने तन-मन-धन की सेवाओं की स्वयं ऑफर करेंगे। आपकी मिन्नते (riquest) करेंगे। मेहनत आप नहीं करेंगे, वह रिक्वेस्ट करेंगे कि आप हमारे पास आओ। तब ही प्रत्यक्षता की आवाज़ बुलंद होगी और सबकी अटेन्शन आप बच्चों द्वारा बाप तरफ़ जायेगी। यह ज़्यादा समय नहीं चलेगा। सबकी नज़र बाप तरफ़ जाना अर्थात् प्रत्यक्षता होना और जय-जयकार के चारों ओर घण्टे बजेंगे। यह ड्रामा का सूक्ष्म राज़ बना हुआ है। प्रत्यक्षता के बाद अनेक आत्माएं पश्चाताप करेंगी। और बच्चों का पश्चाताप बाप देख नहीं सकता। इसलिए परिवर्तन हो जायेगा। अभी आप ब्राह्मण-आत्माओं की ऊँची स्टेज सदाकाल की बन रही है। आपकी ऊँची स्टेज सेवा की स्टेज के निमंत्रण दिलायेगी। और बेहद विश्व की स्टेज पर जय-जयकार का पार्ट बजायेंगे। सुना, सेवा का परिवर्तन।

बाप के अव्यक्त बनने के ड्रामा में गुप्त राज़ भरे हुए थे। कई बच्चे सोचते हैं— कम से कम ब्रह्मा बाप छुट्टी तो लेके जाते। तो क्या आप छुट्टी देते? नहीं देते ना। तो बलवान कौन हुआ? अगर छुट्टी लेते तो 'कर्मातीत' नहीं बन सकते। क्योंकि ब्लड-कनेक्शन से पद्मगुणा ज़्यादा आत्मिक-कनेक्शन होता है। ब्रह्मा को तो कर्मातीत होना था। या स्नेह के बंधन में जाना था? ब्रह्मा बाप भी कहते हैं — ड्रामा ने कर्मातीत बनाने के बंधन में बाँधा। और बाँधा कितने टाइम में! समय होता तो और पार्ट हो जाता। इसलिए घड़ी का खेल हो गया। बच्चों को भी अन्जान बना दिया, बाप को भी अन्जान बना दिया। इनको कहते हैं — वाह, ड्रामा वाह! ऐसा है ना। जब 'वाह ड्रामा वाह' है तो कोई संकल्प उठ नहीं सकता। फुलस्टाप लगा दिया ना! नहीं तो कम-से-कम बच्चे पूछ तो सकते थे कि क्या हो रहा है? लेकिन बाप भी चुप, बच्चे भी चुप रहे। इसको कहते हैं — ड्रामा का फुलस्टाप। उस घड़ी तो फुलस्टाप ही लगा ना। पीछे भल क्वेश्चन कितने भी उठे लेकिन उस घड़ी नहीं। तो 'वाह ड्रामा वाह' कहेंगे ना! 'बाबा-बाबा' कह बुलाया भी पीछे, पहले नहीं बुलाया। यह ड्रामा की विचित्र नूँध होनी ही थी और होनी ही है। परिवर्तनशील ड्रामा पार्ट को भी परिवर्तन कर देता है।

यह सब टीचर्स अव्यक्त रचना है — मैजारिटी। साकार की पालना लेने वाली टीचर्स बहुत थोड़ी हैं। फास्ट गति से पैदा हुई हो। क्योंकि संकल्प की गति सबसे फास्ट है। आदि रत्न है मुख-वंशावली, और आप हो संकल्प की वंशावली। इसलिए ब्रह्मा की दो रचना गाई हुई हैं। एक मुख वंशावली, एक संकल्प द्वारा सृष्टि रची। हो तो ब्रह्मा की रचना, तब तो ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। शिवकुमारी तो नहीं कहलाते हो ना। डबल फ़ारेनर्स भी सब संकल्प की रचना हैं। ऐसे तीव्रगति से सब टीचर्स आगे बढ़ रही हो? जब रचना ही तीव्रगति की हो तो पुरुषार्थ भी तीव्रगति से होना चाहिए। सदा चह चेक करो कि सदा तीव्र पुरुषार्थी हूँ वा कभी-कभी हूँ? समझा! अब 'क्या' 'क्यों', का गीत खत्म करो। 'वाह-वाह' के गीत गाओ। अच्छा!

चारों ओर के सर्व स्नेह और शक्ति सम्पन्न श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के साथ-साथ तीव्रगति से परिवर्तन के साथी समीप आत्माओं को, सदा अपनी उड़ती

कला द्वारा अन्य आत्माओं को भी उड़ाने वाले निर्बन्धन उड़ते पंछी आत्माओं को, सदा 'सन शोज फ़ादर' की गिफ्ट द्वारा स्वयं और सेवा में तीव्रगति से परिवर्तन लाने वाले, ऐसे सर्व लवलीन बच्चों को इस महत्त्व दिवस के महत्त्व के साथ मात-पिता का विशेष याद-प्यार और नमस्ते।

हुबली ज़ोन से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

सदा अपने को हर कदम में पद्मों की कमाई करने वाले पद्मपद्म भाग्यवान समझते हो? यह जो गायन है- हर कदम में पद्म... किसके लिए गायन है? सारे दिन में कितने पद्म इकट्ठे करते हो? संगमयुग बड़े-ते-बड़े कमाई के सीजन का युग है। तो सीजन के समय क्या किया जाता है? इतना अटेन्शन रखते हो? हर समय यह याद रहे कि 'अब नहीं तो कब नहीं।' जो घड़ी बीत गई वह फिर से नहीं आयेगी। एक घड़ी व्यर्थ जाना अर्थात् कितने कदम व्यर्थ गये? पद्म व्यर्थ गये! इसलिए हर घड़ी यह स्लोगन याद रहे —'जो समय के महत्त्व को जानते है वह स्वत: ही महान बनते हैं।' स्वयं को भी जानना है और समय को भी जानना है। दोनों ही विशेष हैं। इस स्मृति दिवस पर विशेष सदा समर्थ बनने का श्रेष्ठ संकल्प किया? व्यर्थ संकल्प, बोल, सब रूप से व्यर्थ को समाप्त करने का दिन है। जब नालेज मिल गई कि व्यर्थ क्या है, समर्थ क्या है- तो नालेजफुल आत्मा कभी भी समर्थ को छोड़ व्यर्थ तरफ़ नहीं जा सकती। और जितना स्वयं समर्थ बनेंगे उतना औरों को समर्थ बना सकेंगे। ६३ जन्म गँवाया और समर्थ बनने का यह एक जन्म है। तो इस समय को व्यर्थ तो नहीं करना चाहिए ना! अमृतबेले से लेकर रात तक अपनी दिनचर्या को चेक करो। ऐसे नहीं कि सिर्फ रात्रि को चार्ट चेक करो लेकिन बीच-बीच में चेक करो, बार-बार चेक करने से चेंज कर सकेंगे। अगर रात को चेक करेंगे तो जो व्यर्थ गया वह व्यर्थ के खाते में ही हो जायेगा। इसलिए बापदादा ने बीच-बीच में ट्रैफिक कण्ट्रोल का टाइम फिक्स किया है। ट्रैफिक कण्ट्रोल करते हो या दिन में बिज़ी रहते हो? अपना नियम बना रहना चाहिए। चाहे टाइम कुछ बदली हो जाय लेकिन अगर अटेन्शन रहेगा तो कमाई जमा होगी। उस समय अगर कोई काम है तो आधे घण्टे

के बाद करो लेकिन कर तो सकते हो। घड़ी के आधार पर भी क्यों चलो। अपनी बुद्धि ही घड़ी है, दिव्य बुद्धि की घड़ी को याद करो। जिस बात की आदत पड़ जाती है तो आदत ऐसी चीज़ है जो न चाहते भी अपनी तरफ़ खींचेगी। जब बुरी आदत रहने नहीं देती, अपनी तरफ़ आकर्षित करती है तो अच्छे संस्कार क्यों नहीं अपना बना सकते। तो सदा चेक करो और चेंज करो तो सदा के लिए कमाई जमा होती रहेगी। अच्छा!

18-1-91

विश्व कल्याणकारी बनने के लिए सर्व स्मृतियों से सम्पन्न बन सर्व को सहयोग दो

सदा विश्व कल्याणकारी अव्यक्त बाप दादा अपने बच्चों प्रति बोले :

आज समर्थ बाप अपने स्मृति स्वरूप बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं। विश्व के देश एवं विदेश के सर्व बच्चे स्मृति दिवस मना रहे हैं। आज का स्मृति दिवस बच्चों को अपने ब्राह्मण जीवन अर्थात् समर्थ जीवन की स्मृति दिलाते हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप की जीवन कहानी के साथ ब्राह्मण बच्चों की भी जीवन कहानी है। निराकार बाप ने साकार ब्रह्मा के साथ ब्राह्मण रचे। तब ही ब्राह्मणों द्वारा अविनाशी यज्ञ की रचना हुई। ब्रह्मा बाप आप ब्राह्मणों के साथ-साथ स्थापना के निमित्त बने, तो ब्रह्मा बाप के साथ आदि ब्राह्मणों की भी जीवन कहानी है। आदि देव ब्रह्मा और आदि ब्राह्मण दोनों का महत्व यज्ञ स्थापना में रहा। अनादि बाप ने आदि देव ब्रह्मा द्वारा आदि ब्राह्मणों की रचना की। और आदि ब्राह्मणों ने अनेक ब्राह्मणों की वृद्धि की। यही स्थापना की, ब्रह्मा बाप की कहानी आज के स्मृति दिवस पर वर्णन करते हो। स्मृति दिवस कहते हो तो सिर्फ ब्रह्मा बाप को याद किया वा ब्रह्मा बाप द्वारा जो बाप ने स्मृतियाँ दिलाई हैं वह सर्व स्मृतियाँ स्मृति में आई? आदि से अब तक क्या-क्या और कितनी स्मृतियाँ दिलाई है – याद है? अमृतवेले से लेकर रात तक भी सर्व स्मृतियों को सामने लाओ – एक दिन में पूरी हो जायेगी! लम्बी लिस्ट है ना! स्मृति सप्ताह भी मनाओ तो भी विस्तार ज्यादा है, क्योंकि सिर्फ रिवाइज़ नहीं करना है लेकिन रियलाइज़ करते हो। इसलिए कहते ही हो स्मृति स्वरूप। स्वरूप अर्थात् हर स्मृति की अनुभूति। आप स्मृति स्वरूप बनते हो और भक्त सिर्फ सिमरण करते हैं। तो क्या-क्या स्मृतियाँ अनुभव की हैं – इसका विस्तार तो बहुत बड़ा है। जैसे बाप का परिचय कितना बड़ा है लेकिन आप लोग सार रूप में पांच बातों में परिचय देते हो। ऐसे स्मृतियों के विस्तार को भी 5 बातों में भी सार रूप में लाओ कि आदि से अब तक बापदादा ने कितने नाम स्मृति में दिलाये! कितने नाम होंगे! विस्तार है ना। एक-एक नाम को स्मृति में लाओ और स्वरूप बन अनुभव करो, सिर्फ रिपीट नहीं करना। स्मृति स्वरूप बनने का आनन्द अति न्यारा और प्यारा है। जैसे बाप आप बच्चों को नूरे रत्न नाम की स्मृति दिलाते हैं। बाप के नयनों के नूर। नूर की क्या विशेषता होती है, नूर का कर्त्तव्य क्या होता है, नूर की शक्ति क्या होती हैं? ऐसी अनुभूतियाँ करो अर्थात् स्मृति स्वरूप बनो। इसी प्रकार हर एक नाम की स्मृति अनुभव करते रहो। यह एक दृष्टान्त रूप सुनाया। ऐसे ही श्रेष्ठ स्वरूप की स्मृतियाँ कितनी हैं? आप ब्राह्मणों के कितने रूप हैं जो बाप के रूप वह ब्राह्मणों के रूप हैं। उन सभी रूपों के स्मृति की अनुभूति करो। नाम, रूप, गुण – अनादि, आदि और अब, ब्राह्मण जीवन के सर्वगुण स्मृति स्वरूप बनो।

ऐसे ही कर्त्तव्य। कितने श्रेष्ठ कर्त्तव्य के निमित्त बने हो! उन कत्तव्यों की स्मृति इमर्ज करो। पांचवी बात बापदादा ने अनादि-आदि देश की स्मृति दिलाई। देश की स्मृति से वापस घर जाने की समर्थी आ गई, अपने राज्य में राज्य अधिकारी बनने की हिम्मत आ गई और वर्तमान संगमयुगी ब्राह्मण संसार में खुशियों के जीवन जीने की कला स्मृति में आ गई। जीने की कला अच्छी रीति आ गई है ना? दुनिया मरने की कला में तेज जा रही है और आप ब्राह्मण सुखमय खुशियों के जीवन की कला में उड़ रहे हो। कितना अन्तर है!

तो स्मृति दिवस अर्थात् सर्व स्मृतियों के रूहानी नशे का अनुभव करना। इस स्मृति दिवस पर दुनिया के समान आप सभी यह शब्द नहीं कहते कि ऐसे हमारा ब्रह्मा बाप था। उन्होंने यह कहा था, यह किया था, दुनिया वाले था.. था.. करते हैं और दु:ख की लहर फैलाते हैं लेकिन आप ब्राह्मणों की यह विशेषता है – आप कहेंगे अब भी साथ है। साथ का अनुभव करते हैं। तो आप लोगों में यह विशेषता है। आप ऐसे नहीं कहेंगे कि ब्रह्मा बाप चले गये। जो वायदा किया है – साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। अगर आदि आत्मा भी वायदा नहीं निभाये तो कौन वायदा निभायेगा? सिर्फ रूप और सेवा की विधि परिवर्तन हुई है। आप सभी का लक्ष्य है – 'फरिश्ता सो देवता।' फरिश्ता रूप का सैम्पल ब्रह्मा बाप बना है। सर्व बच्चों की पालना अब भी ब्रह्मा द्वारा ही हो रही है। इसलिए ब्रह्मा कुमार और ब्रह्मा कुमारियाँ कहलाते हो। समझा? स्मृति दिवस का महत्व क्या है? इन स्मृतियों में सदा ही लवलीन रहो। इसको ही कहते हैं – बाप समान बनने की अनुभूति। आप आत्माओं ने बाप समान अनुभव किया। इसी 'समान' शब्द को लोगों ने 'समाना' शब्द कह दिया है। आत्मा परमात्मा में समा नहीं जाती, लेकिन बाप समान बनती है। सभी बच्चों ने अपने-अपने नाम से स्मृति दिवस की याद भेजी है। कई सन्देश बनकर यादप्यार ले आये और हर एक कहता है मेरी खास याद देना। तो एक एक को अलग याद पत्र लिखने की बजाए दिल से पत्र लिख रहे हैं। हर एक के दिल का प्यार बापदादा के नयनों में, दिल में समाया हुआ है और अब विशेष समाया है। खास याद करने वालों को बापदादा खास अब भी इमर्ज करके यादप्यार दे रहे हैं। हर एक के दिल के उमंग और दिल की रूहरिहान, दिल के हालचाल, दिलाराम बाप के पास पहुँच गये। बापदादा सभी बच्चों को यही स्मृति दिला रहे हैं कि सदा दिल के साथ हो, सेवा में साथ हो और स्थिति में सदा साक्षी हो। तो सदा ही मायाजीत का झण्डा लहराता रहेगा। सभी बच्चों को नथिंग न्यु का पाठ हर परिस्थिति में सदा स्मृति में रहे। ब्राह्मण जीवन अर्थात् क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की रेखा हो नहीं सकती। कितने बार यह समाचार भी सुना होगा। नया समाचार है क्या? नहीं। ब्राह्मण जीवन अर्थात् हर समाचार सुनते कल्प पहले की स्मृति

में समर्थ रहे – जो होना है वह हो रहा है, इसलिए क्या होगा - यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। त्रिकालदर्शी हो, ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानने वाले हो तो क्या वर्तमान को नहीं जानते हैं? घबराते तो नहीं हो ना! ब्राह्मण जीवन में हर कदम में कल्याण है। घबराने की बात नहीं है। आप सबका कर्त्तव्य है अपने शान्ति की शक्ति से अशान्त आत्माओं को शान्ति की किरणें देना। अपने ही आपके भाई-बहिन हैं, तो अपने ईश्वरीय परिवार के सम्बन्ध से सहयोगी बनो। जितना ही युद्ध में तीव्र गति है, आप योगी आत्माओं का योग उन्होंको शान्ति का सहयोग देगा। इसलिए और विशेष समय निकाल शान्ति का सहयोग दो – यह है आप ब्राह्मण आत्माओं का कर्त्तव्य। अच्छा।

सर्व स्मृति स्वरूप श्रेष्ठ आत्माओं को सदा बाप समान बनने के लक्ष्य और लक्षण धारण करने वाली आत्माओं को, सदा स्वयं को बाप के साथ अनुभव करने वाले समीप आत्माओं को, सदा नथिंग न्यु पाठ को सहज स्वरूप में लाने वाले, सदा विश्व कल्याणकारी बन विश्व की आत्माओं को सहयोग देने वाले – ऐसे सदा विजयी रत्नों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

दादियों से :- आदि ब्राह्मणों की माला ब्रह्मा बाप के साथ आदि ब्राह्मण निमित्त बने ना। आदि ब्राह्मणों का बहुत बड़ा महत्व है। स्थापना पालना और परिवर्तन। विनाश शब्द थोड़ा ऑफिशल लगता है तो स्थापना, पालना और विश्व परिवर्तन करने में आदि ब्राह्मणों का विशेष पार्ट है। शक्तियों की पूजा बहुत धूमधाम से होती है। निराकार बाप व ब्रह्मा बाप की पूजा इतनी धूमधाम से नहीं होती। ब्रह्मा के मन्दिर भी बहुत गुप्त ही हैं। लेकिन शक्ति सेना भक्ति में भी नामीग्रामी है। इसलिए अन्त तक स्टेज पर विशेष बच्चों का पार्ट है। ब्रह्मा का भी गुप्त पार्ट है – अव्यक्त रूप अर्थात् गुप्त। ब्राह्मणों को तैयार किया और ब्रह्मा का पार्ट गुप्त हो गया। सरस्वती को भी गुप्त दिखाते हैं क्योंकि उनका भी ड्रामा में गुप्त पार्ट चल रहा है। आदि ब्राह्मण आत्माएं सभी एक दो के समीप और शक्तिशाली हैं। शरीर भी कमजोर नहीं है, शक्तिशाली है। (दादी जानकी से) यह तो थोड़ा सा बीच में रेस्ट दिलाने का साधन बन गया। बाकी कुछ भी नहीं है। वैसे तो रेस्ट करती नहीं हो। कोई कारण बनता है रेस्ट करने का। सभी दादियों में बहुत प्यार है ना! बाप के साथ-साथ निमित्त आदि ब्राह्मणों से भी प्यार है। तो आप सबके प्यार की दुआएं, शुभ भावनाएं आदि ब्राह्मण आत्माओं को तन्दरुस्त रखती है। अच्छा है – साइलेन्स की सेवा का पार्ट अच्छा मिला है। कितनी आत्माएं अशान्त हैं, कितनी प्रेयर कर रही हैं! उन्हों को कुछ न कुछ अंचली तो देंगे ना? देवियों से जाकर शक्ति मांगते हैं ना! तो शक्ति देना आप विशेष आत्माओं का कर्तव्य है ना? दिन प्रतिदिन यह अनुभव करेंगे कि कहाँ से शान्ति की किरणें आ रही है। फिर ढूँढेगे, सबकी नज़र भारत भूमि पर आयेगी। अच्छा-

ग्रुप नं. 1 :- निश्चय बुद्धि विजयी आत्माएं हैं – ऐसा अनुभव करते हो? सदा निश्चय अटल रहता है? वा कभी डगमग भी होते हो? निश्चयबुद्धि की निशानी है – वो हर कार्य में, चाहे व्यावहारिक हो, चाहे परमार्थी हो, लेकिन हर कार्य में विजय का अनुभव करेगा। कैसा भी साधारण कर्म हो, लेकिन विजय का अधिकार उसको अवश्य प्राप्त होगा, क्योंकि ब्राह्मण जीवन का विशेष जन्म सिद्ध अधिकार विजय है। कोई भी कार्य में स्वयं से दिल शिकस्त नहीं होगा, क्योंकि उसे निश्चय है कि विजय जन्म सिद्ध अधिकार है। तो इतना अधिकार का नशा रहता है। जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी! कल्प पहले का यादगार भी दिखाते हैं कि जहाँ भगवान है वहाँ विजय है। चाहे पांच पाण्डव दिखाते हैं, लेकिन विजय क्यों हुई? भगवान साथ है, तो जब कल्प पहले यादगार में विजयी बने हो तो अभी भी विजयी होंगे ना? कभी भी कोई कार्य में संकल्प नहीं उठना चाहिए कि ये होगा, नहीं होगा, विजय होगी या नहीं, होगी.. – यह क्वेश्चन उठ नहीं सकता। कभी भी बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती। यह कल्प-कल्प की नूंध निश्चित है। इस भावी को कोई टाल नहीं सकता। इतना दृढ़ निश्चय सदा आगे उड़ाता रहेगा। तो सदा विजय की खुशी में नाचते गाते रहो।

(2) सदा अपने को भाग्य विधाता के भाग्यवान बच्चे हैं – ऐसा अनुभव करते हो? पद्मापद्म भाग्यवान हो या सौभाग्यवान हो? जिसका इतना श्रेष्ठ भाग्य है वह सदा हर्षित रहेंगे । क्योंकि भाग्यवान आत्मा को कोई अप्राप्ति है ही नहीं। तो जहाँ सर्व प्राप्तियाँ होंगी, वहाँ सदा हर्षित होंगे। कोई को अल्पकाल की लॉटरी भी मिलती है तो उसका चेहरा भी दिखाता है कि उसको कुछ मिला है। तो जिसको पद्मापद्म भाग्य प्राप्त हो जाए वह क्या रहेगा? सदा हर्षित। ऐसे हर्षित रहो जो कोई भी देखकर पूछे कि क्या मिला है? जितना-जितना पुरुषार्थ में आगे बढ़ते जायेंगे उतना आपको बोलने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। आपका चेहरा बोलेगा कि इनको कुछ मिला है, क्योंकि चेहरा दर्पण होता है। जैसे दर्पण में जो चीज जैसी होती है, वैसी दिखाई देती है। तो आपका चेहरा दर्पण का काम करे। इतनी आत्माओं को जो सन्देश मिला है तो इतना समय कहाँ मिलेगा जो आप लोग बैठकर सुनाओ। समय भी नाजुक होता जायेगा, तो सुनाने का भी समय नहीं मिलेगा। तो फिर सेवा कैसे करेंगे? अपने चेहरे से। जैसे म्युजियम के चित्रों से सेवा करते हो। चित्र देखकर प्रभावित होते हैं ना। तो आपका चैतन्य चित्र सेवा के निमित्त बन जाये – ऐसे तैयार चित्र हो? इतने चैतन्य

चित्र तैयार हो जायें तो आवाज बुलन्द कर देंगे। सदैव चलते-फिरते, उठते-बैठते यह स्मृति रखो कि हम चैतन्य चित्र हैं। सारे विश्व की आत्माओं की हमारे तरफ नज़र है। चैतन्य चित्र में सबके आकर्षण की बात कौन सी होती है? सदा खुशी होगी। तो सदा खुश रहते हो या कभी उलझन आती है? या वहाँ जाकर कहेंगे – यह हो गया इसलिए खुशी कम हो गई। क्या भी हो जाये, खुशी नहीं जानी चाहिए। ऐसे पक्के हो? अगर बड़ा पेपर आये तो भी पास हो जायेंगें? बापदादा सबका फोटो निकाल रहे हैं कि कौन-कौन हाँ कह रहा है। ऐसे नहीं कहना कि उस समय कह दिया। मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे वैसे कोई भी बड़ी बात नहीं है। दूसरी बात आपको निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है। इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है। जिसके पास सर्वशक्तियों का खजाना है तो जिस भी शक्ति को ऑर्डर करेंगे वह शक्ति मददगार बनेगी। सिर्फ आर्डर करने वाला हिम्मत वाला चाहिए। तो आर्डर करना आता है या आर्डर पर चलना आता है? कभी माया के आर्डर पर तो नहीं चलते हो? ऐसे तो नहीं कि कोई बात आती है और समाप्त हो जाती है? पीछे सोचते हो – ऐसे करते थे तो बहुत अच्छा होता। ऐसे तो नहीं? समय पर सर्वशक्तियाँ काम में आती हैं या थोड़ा पीछे से आती हैं? अगर मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट हो तो कोई भी शक्ति आर्डर नहीं माने – यह हो नहीं सकता। अगर सीट से नीचे आते हो और फिर आर्डर करते हो तो वो नहीं मानेंगे। लौकिक रीति से भी कोई कुर्सी से उतरता है तो उसका आर्डर कोई नहीं मानता। अगर कोई शक्ति आर्डर नहीं मानती है तो अवश्य पोज़ीशन की सीट से नीचे आते हो। तो सदा मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट रहो, सदा अचल अडोल रहो, हलचल में आने वाले नहीं। बापदादा कहते हैं शरीर भी चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये। पैसा तो उसके आगे कुछ भी नहीं है। जिसके पास खुशी का खजाना है उसके आगे कोई बड़ी बात नहीं और बापदादा का सदा सहयोगी सेवाधारी बच्चों का साथ है। बच्चा बाप के साथ है तो बड़ी बात क्या है? इसलिए घबराने की कोई बात नहीं। बाप बैठा है, बच्चों को क्या फिकर है। बाप तो है ही मालामाल। किसी भी युक्ति से बच्चों की पालना करनी ही है, इसलिए बेफिकर। दु:खधाम में सुखधाम स्थापन कर रहे हो तो दु:खधाम में हलचल तो होगी ही। गर्मी की सीज़न में गर्मी होगी ना! लेकिन बाप के बच्चे सदा ही सेफ हैं, क्योंकि बाप का साथ है।

सर्व बच्चों प्रति बापदादा का सन्देश

सर्व तपस्वी बच्चों प्रति यादप्यार। देखो बच्चे, समय के समाचार सुनते ऊंचे ते ऊंचे साक्षीपन के आसन और बेफिकर बादशाह के सिंहासन पर बैठ सब खेल देख रहे हो ना? इस ब्राह्मण जीवन में घबराने का तो स्वप्न में भी संकल्प उठ नहीं सकता। यह तो तपस्या वर्ष के निरन्तर लगन की अग्नि में बेहद की वैराग-वृत्ति प्रज्जवलित करने का पंखा लग रहा है। आपने बाप समान सम्पन्न बनने का संकल्प किया अर्थात् विजय का झण्डा लहराने का प्लान बनाया, तो दूसरे तरफ समाप्ति की हलचल भी तो साथ-साथ नूँधी है ना? रिहर्सल ही ड्रामा के रील को समाप्त करने का साधन है, इसलिए नथिंग न्यु।

समय के सरकमस्टांस प्रमाण आने-जाने में व किसी वस्तु के मिलने में कुछ खींचातान हो, मन के संकल्प की खींचातान में नहीं आना। जहाँ जिस परिस्थिति में रहो, दिलखुश मिठाई खाते रहो। खुशहाल रहो, फरिश्तों की चाल में उड़ो। साथ2 इस समय हरेक सेन्टर पर विशेष तपस्या का प्रोग्राम चलता रहे। जो जितना ज्यादा समय निकाल सकते हैं, उतना साइलेन्स का सहयोग दो। अच्छा। ओम् शान्ति।

18.1.92

अव्यक्त दिवस पर अव्यक्त बापदादा अपने बच्चों प्रति बोले :

आज बेहद के मात पिता के सामने सारा बेहद का परिवार है। सिर्फ यह सभा नहीं है लेकिन चारों ओर के स्नेही सहयोगी बच्चों का छोटा सा ब्राह्मण परिवार अति प्यारा और न्यारा परिवार, अलौकिक परिवार ,चित्र में होते विचित्र अनोखा परिवार सामने है। बाप-दादा अमृतवेले से सभी बच्चों के स्नेह की, मिलन मनाने की, वरदान लेने की मीठी-मीठी रुहरिहान सुन रहे थे। सभी के मन में स्नेह की भावना और समान बनने की श्रेष्ठ कामना यही उमंग उत्साह चारों ओर देखा। आज के दिन मैजारिटी बच्चों के सामने नम्बरवन श्रेष्ठ आत्मा ब्रह्मा मात-पिता इमर्ज रुप में था। सभी के दिल में आज विशेष प्यार के सागर बापदादा का प्रेम स्वरुप प्रत्यक्ष रुप में नयनों के सामने रहा। चारों ओर के सर्व बच्चों के स्नेह के, दिल के गीत बापदादा ने सुने। स्नेह के रिटर्न में वरदाता बाप बच्चें को यही वरदान दे रहे हैं -''सदा हर समय, हर एक आत्मा से, हर परिस्थिति में स्नेही मूर्त भव''। कभी भी अपना स्नेही मूर्त, स्नेह की सीरत, स्नेही व्यवहार, स्नेह के सम्पर्क-सम्बन्ध को छोड़ना मत, भूलना मत। चाहे कोई व्यक्ति, चाहे प्रकृति, चाहे माया कैसा भी विकराल रुप, ज्वाला रुप धारण कर सामने आये लेकिन विकराल ज्वाला रुप को सदा स्नेह के शीतलता द्वारा परिवर्तन करते रहना। इस नये वर्ष में विशेष स्नेह लेना है, स्नेह देना है। सदा स्नेह की दृष्टि, स्नेह की वृत्ति, स्नेहमयी कृति द्वारा स्नेही सृष्टि बनानी है। कोई स्नेह नहीं भी दे लेकिन आप मास्टर स्नेह स्वरुप आत्मायें दाता बन रुहानी स्नेह देते चलो। आज की जीव आत्मायें स्नेह अर्थात सच्चे प्यार की प्यासी हैं। स्नेह की एक घड़ी अर्थात एक बूँद की प्यासी है। सिवाए सच्चे स्नेह के कारण परेशान हो भटक रहे हैं। सच्चे रुहानी स्नेह को ढूँढ रहे हैं। ऐसी प्यासी आत्माओं को सहारा देने वाले आप मास्टर ज्ञान सागर हो। अपने आप से पूछो आप सभी आत्माओं को ब्राह्मण परिवार में परिवर्तन करने का, आकर्षित करने का विशेष आधार क्या रहा? यही सच्चा प्यार, मात-पिता का प्यार, रुहानी परिवार का प्यार - इस प्यार की प्राप्ति ने परिवर्तन किया। ज्ञान तो पीछे समझते हो लेकिन पहला आकर्षण सच्चा निस्वार्थ पारिवारिक प्यार। यही फाउन्डेशन रहा ना, इससे ही सभी आये ना। विश्व में अरब खरब पति बहुत हैं लेकिन परमात्म सच्चे प्यार के भिखारी हैं क्यों? अरब खरब से यह प्यार नहीं मिलता। साइन्स वालों ने देखो कितने भी अल्पकाल के सुख के साधन विश्व को दिया है लेकिन जितने बड़े वैज्ञानिक हैं उतना और कुछ खोज करें, और कुछ खोज करें इस खोज में ही खोये हुए हैं। सन्तुष्टता की अनुभूति नहीं है, और कुछ करें, और कुछ करें, इस में ही समय गँवा देते हैं। उन्हों का संसार ही खोज करना हो गया है। आप जैसे स्नेह-सम्पन्न जीवन की अनुभूति नहीं है। नेताएं देखो अपनी कुर्सी सम्भालने में ही लगे हुए हैं। कल क्या होगा- इस चिन्ता में लगे हुए हैं। और आप ब्राह्मण सदा परमात्म-प्यार के झूले में झुलते हो। कल का फिक्र नहीं हैं। न कल का फिक्र है, न काल का फिक्र है। क्यों? क्योंकि जानते हो - जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होना है वह और अच्छा। इस-लिए अच्छा-अच्छा कहते अच्छे बन गये हो।

ब्राह्मण जीवन अर्थात बुराई को विदाई देना और सदा सब अच्छे ते अच्छा है - इसकी बधाइयाँ मनाना। ऐसा किया है या अभी विदाई दे रहे हो? जैसे पुराने वर्ष को विदाई दी नये वर्ष के लिए बधाइयाँ दी ना। बधाइयों के कार्ड बहुत आये हैं ना। बहुत बच्चों के बधा-इयों के कार्ड तथा पत्र आये हैं। बापदादा कहते हैं - जैसे नये वर्ष के कार्ड भेजे वा संकल्प किया, तो संगमयुग पर तो हर सेकेण्ड़ नया है ना। संगमयुग के हर सेकेण्ड की बधाई के कार्ड नहीं भेजना, कार्ड सम्भालना मुश्किल हो जाता है। लेकिन कार्ड की बजाए रिकार्ड रखना कि हर सेकेण्ड़ नया अनुभव किया? हर नये सेकेण्ड़ नया उमंग-उत्साह अनुभव किया? हर सेकेण्ड़ अपने में नवी-नता अर्थात दिव्यता-विशेषता क्या अनुभव की? उसकी बधाइयाँ देते हैं। आप ब्राह्मण आत्माओं की सबसे बड़े ते बड़ी सेरीमनी हर समय कौन सी है? सेरीमनी अर्थात खुशी का समय या खुशी का दिन। सेरीमनी में सबसे बड़ी बात मिलन मनाने की होती है। मिलन मनाना ही खुशी मनाना है। आप सबका परमात्म मिलन, श्रेष्ठ आत्माओं का मिलन हर समय होता है ना! तो हर समय सेरी-मनी हुई ना! नाचो गाओ और खाओ - यही सेरीमनी होती है। ब्रह्मा बाप के भण्ड़ारे से खाते हो इसलिए सदा ब्रह्मा भोजन खाते हो। कोई प्रवृत्ति वाले अपने कमाई से नहीं खाते हैं, सेन्टर वाले सेन्टर के भण्ड़ारी से नहीं खाते हैं लेकिन ब्रह्मा बाप के भण्डारे से, शिव बाप की भण्ड़ारी से खाते हैं। न मेरी प्रवृत्ति है, न मेरा सेन्टर है। प्रवृत्ति में हो तो भी ट्रस्टी हो, बाप की श्रीमत प्रमाण निमित्त बने हुए हो, और सेन्टर पर हो तो भी बाप के सेन्टर हैं न कि मेरे। इसलिए सदा शिव बाप की भण्ड़ारी है, ब्रह्मा बाप का भण्ड़ारा है - इस स्मृति से भण्डारी भी भरपूर रहेगी, तो भण्डारा भी भरपूर रहेगा। मेरापन लाया तो भण्डारा व भण्डारी में बरक्कत नहीं होगी। किसी भी कार्य में अगर कोई प्रकार की खोट अथवा कमी होती है तो इसका कारण बाप की बजाए मेरेपन की खोट है इसीलिए खोट होती है। खोट शब्द कमी को भी कहा जाता है और खोट शब्द अशुद्धि मिक्स को भी कहा जाता है। जैसे सोने में खोट (खाद) पड़ जाती है ना। लेकिन ब्राह्मण जीवन तो हर सेकेण्ड सेरीमनी मनाने की बधाइयों की है। समझा!

वैसे आज के दिन आप सभी आवाज़ से परे जाते हो और बापदादा जो आवाज़ से परे हैं उनको आवाज़ में लाते हो। यह प्रैक्टिस बहुत अच्छी है - अभी-अभी बहुत आवाज़ में हो, चाहे डिस्कस कर रहे हो, ऐसे वातावरण में भी संकल्प किया आवाज़ से परे हो

जाएं तो सेकेण्ड में आवाज़ से न्यारे फरिश्ता स्थिति में टिक जाओ। अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी फरिश्ता अर्थात आवाज़ से परे अव्यक्त स्थिति। यह नहीं कि वातावरण बहुत आवाज़ का है, इसलिए आवाज़ से परे होने में टाइम चाहिए। नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए। क्योंकि लास्ट समय चारों ओर व्यक्तियों का, प्रकृति का जलचल ओर आवाज़ होगा - चिल्लाने का, हिलाने का - यही वायुमण्डल होगा। ऐसे समय पर ही सेकेण्ड में अव्यक्त फरिश्ता सो निराकारी अशरीरी आत्मा हूँ - यह अभ्यास ही विजयी बनयेगा। यह स्मृति सिमरणी अर्थात विजय माला में लायेगी। इसलिए यह अभ्यास अभी से अति आवश्यक है। इसको कहते हैं - प्रकृतिजीत, मायाजीत। मालिक बन चाहे तो मुख का साज़ बजाएं, चाहें तो कानों द्वारा सुनें, अगर नहीं चाहें तो सेकेण्ड में फुलस्टॉप। आधा स्टॉप भी नहीं, फुलस्टॉप। यही है ब्रह्मा बाप के समान बनना। स्नेह की निशानी है समान बनना। हरेक कहते मेरा स्नेह ज्यादा है। कोई से भी पूछेंगे किसका स्नेह ब्रह्मा बाप से ज्यादा है? तो सभी यही कहेंगे कि मेरा। तो जैसे स्नेह में समझते हो - मेरा स्नेह ज्यादा है, ऐसे समान बनने में भी तीव्र पुरुषार्थ करो कि मैं नम्बरवन के साथ, युगल दाने के साथ दाना माला में पिरोया जाऊं। इसको कहते हैं स्नेह का रिटर्न दिया। स्नेह में मणुबन में भागने में तो होशियार हो। सभी जल्दी-जल्दी भाग कर पहुँच गये हो ना। जैसे यह प्रत्यक्ष स्वरुप दिखाया, ऐसे समान बनने का प्रत्यक्ष स्वरुप दिखाओ। स्थान छोटा है और दिल बड़ी है इसलिए उल्हना नहीं देना कि जगह नहीं मिली। जब दिल बड़ी है तो प्यार में कोई भी तकलीफ, तकलीफ नहीं लगती है। बापदादा को बच्चों की तकलीफ भी देखी नहीं जाती। हाँ योग लगाओ तो स्थान तैयार हो जायेगा। अच्छा।

चारों ओर के देश विदेश के स्नेह में समाये हुए श्रेष्ठ आत्माओं के बहुत-बहुत संकल्प द्वारा, पत्रों द्वारा, सन्देशों द्वारा इस स्मृति दिवस वा नव वर्ष की याद प्यार बापदादा को मिली। सबके दिल के मीठे-२ प्यारे-२ बच्चे कह याद प्यार दे रहे हैं। उड़ रहे हो और तीव्र गति से उड़ते रहो। माया के खेल खिलाड़ी बन देखते चलो। प्रकृति की परिस्थितियाँ मास्टर सर्वशक्तिवान बन खेल-खेल में पार करते चलो। बाप का हाथ और दिव्य बुद्धि योग रुपी साथ- सदा अनुभव कर समर्थ बन सदा पास विथ ऑनर बनते चलो। सदा स्नेह-मूर्त भव के वरदान को स्मृति स्वरुप में याद रख, ऐसे सर्व स्नेही मूर्तियों को सदा मास्टर दाता आत्माओं को मात-पिता का शक्ति सम्पन्न याद प्यार और नमस्ते।

दादियों से - बाप के साथ का वर्सा है ही विशेष पावर्स। इस पावर्स द्वारा सर्व कार्य सहज आगे बढ़ते जा रहे हैं। सभी समीप के साथी है ना! साथ रहें और साथ चलेंगे और साथ ही राज्य करेंगे। संगम पर भी समीप, निराकारी दुनिया में भी समीप और राजधानी में भी समीप। जन्मते ही समीपता का वरदान मिला। सभी समीपता के वरदानी हैं - ऐसे अनुभव होता है ना? साथ का अनुभव होना यही समीपता की निशानी है। अलग होना मुश्किल है साथ रहना स्वत: ही है। समीपता के संगठन के समीप है। राज्य सिंहासन लेंगे ना? सिहांसन पर भी जीत प्राप्त करेंगे ना। जैसे अभी दिल पर जीत है, दिल को जीता फिर नम्बरवार विश्व के राज्य सिंहासन पर जीत होगी। ऐसे विजयी है ना? आप लोगों के ऊमंग उत्साह को देख सभी उमंग उत्साह में चल रहे हैं, और सदा चलते रहेंगे। बच्चे बाप की कमाल गाते हैं और बाप बच्चों की कमाल गाते हैं। आप कहते हो वाह बाबा वाह और बाबा कहते हैं? वाह बच्चे वाह। अच्छा।

पार्टियों से अव्यक्त बापदादा की मुलाकात

हम सभी पूज्य और पूर्वज आत्मायें हैं - इतना नशा रहता है? आप सभी इस सृष्टि रुपी वृक्ष की जड़ में बैठे हो ना? आदि पिता के बच्चे आदि रतन हो। तो इस वृक्ष के तना भी आप हो। जो भी डाल-डालियाँ निकलती है वह बीज के बाद तना से ही निकलती हैं। तो सबसे आदि धर्म की आप आत्माएं हो और सभी पीछे निकलते हैं इसलिए पूर्वज हो। तो आप फाउन्डेशन हो। जितना फाउन्डेशन पक्का होता है उतनी रचना भी पक्की होती है। तो इतना अटेन्शन अपने उपर रखना है। पूर्वज अर्थात तना होने के कारण डायरेक्ट बीज से कनेक्शन है। आप फलक से कह सकते हो कि हम डायरेक्ट परमात्मा द्वारा रचे हुए हैं। दुनिया वालों से पूछो कि किसने रचा? तो सुनी-सुनाई कह देंगे कि भगवान ने रचा। लेकिन कहने मात्र हैं और आप डायरेक्ट परम आत्मा की रचना हो। आजकल के ब्राह्मण भी कहते हैं कि हम ब्रह्मा के बच्चे हैं। लेकिन ब्रह्मा के बच्चे प्रैक्टिकल में आप हो। तो यह खुशी है कि हम डायरेक्ट रचना है। कोई महान आत्मा, धर्म आत्मा की रचना नहीं, डायरेक्ट परम आत्मा की रचना हैं। तो डायरेक्ट कितनी शक्ति है! दुनिया वाले ढूँढ़ रहे हैं कि कोई वेष में भगवान आ जायेगा और आप कहते मिल गया। तो कितनी खुशी हैं! तो इतनी खुशी रहती है कि आपको देख करके और भी खुश हो जाएं। क्योंकि खुश रहने वाले का चेहरा सदा ही खुशनुम: होगा ना?

(हॉस्पिटल स्टाफ को देखते हुए)

हॉस्पिटल में कोई दु:खी आता है तो खुश हो जाता है? ऐसा वातावरण खुशी का है जो कोई भी आये, दु:ख भूल जाये। क्योंकि वातावरण बनता है व्यक्ति के वायब्रेशन से। कोई दु:खी आत्माओं का संगठन हो तो वहाँ का वातावरण भी दु:ख का होगा। वहाँ कोई हँसता भी आयेगा तो चुप हो जायेगा और कहीं खुश रहने वाले व्यक्तियों का संगठन हो, खुशी का संगठन हो तो कैसी भी दु:खी आत्मायें आयेंगी तो बदल जायेंगी। प्रभाव जरुर पड़ता है। तो एवरहैप्पी हॉस्पिटल है ना? सिर्फ हेल्दी नहीं, हैप्पी भी। सब

मुस्कराते रहेंगे, हँसते रहेंगे तो आधी दवाई हो जायेगी। आधी दवाई खुशी है। तो दवाइयों का भी खर्चा बच जायेगा ना। पेशेन्ट भी खुश हो जायेंगे कि कम खर्चे में निरोगी बन गये और हॉस्पिटल का खर्चा भी कम हो जायेगा। डॉक्टर्स को टाइम भी कम देना पड़ेगा। जैसे साकार में देखा -ब्रह्मा बाप के आगे आते थे तो क्या अनुभव सुनाते थे? बहुत बातें लेकर आते थे लेकिन बाप के आगे आने से न बातों का हल अन्दर ही अन्दर हो जाता था। यह अनुभव सुने हैं ना। ऐसे आप डॉक्टर्स के सामने कोई भी आये तो आते ही आधी बीमारी वहीं ठीक हो जाये। सभी डॉक्टर्स ऐसे हो ना। जैसे बाप अलौकिक हैं तो बाप के बच्चे जो कार्य के निमित्त हैं वो भी सब अलौकिक होंगे ना। आप सभी की अलौकिक जीवन है या साधारण जीवन है? जितना-जितना तपस्या में आगे बढ़ते जायेंगे उतना आपके वायब्रेशन बहुत तीव्रगति से काम करेंगे। अच्छा। कम खर्चा बाला नशीन वाली हॉस्पिटल होनी चाहिए। टाइम भी कम खर्च हो और स्थूल धन भी कम खर्च और बाला नशीन। नाम बड़ा ओर खर्चा कम। तो ऐसे अलौकिक सेवाधारी हो ना? फाउन्डेशन अच्छा डाला है। हॉस्पिटल लगती है वा योग भवन लगता है? ऐसा आवाज होगा कि यह हॉस्पिटल नहीं है लेकिन योग केन्द्र है, हैप्पी हाउस है। ऐसे लौकिक में भी हैप्पी हाउस बनाते हैं। जो भी अन्दर जायेगा हँसता ही रहेगा। लेकिन ये मन की मुस्क्राहट है। वह होता है थोड़े समय के लिए और यह है सदा काल के लिए। अच्छा। सदा हर्षित मूड में रहो। कुछ भी हो जाए अपनी मूड नहीं ऑफ करना। कोई गाली भी दे, इनसल्ट भी करें लेकिन आप सदा हर्षित रहना। अच्छा। ओमशान्ति।

18.1.93

प्रत्यक्षता का आधार – दृढ़ प्रतिज्ञा

परमात्म-गले का हार बनने वाले विजयी-रत्नों प्रति सदा समर्थ बापदादा बोले –

आज समर्थ बाप अपने समर्थ बच्चों से मिलन मना रहे हैं। समर्थ बाप ने हर एक बच्चे को सर्व समर्थियों का खजाना अर्थात् सर्व शक्तियों का खजाना ब्राह्मण जन्म होते ही जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में दे दिया और हर एक ब्राह्मण आत्मा अपने इस अधिकार को प्राप्त कर स्वयं सम्पन्न बन औरों को भी सम्पन्न बना रही है। यह सर्व समर्थियों का खजाना बापदादा ने हर एक बच्चे को अति सहज और सेकेण्ड में दिया। कैसे दिया? सेकेण्ड में स्मृति दिलाई। तो स्मृति ही सर्व समर्थियों की चाबी बन गई। स्मृति आई–'मेरा बाबा' और बाप ने कहा–'मेरे बच्चे'। यही 'रूहानी स्मृति'–सर्व खजानों की चाबी सेकेण्ड में दी। मेरा माना और सर्व जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त हुआ! तो सहज मिला ना। अभी हर ब्राह्मण आत्मा निश्चय और नशे से कहती है कि–बाप का खजाना सो मेरा खजाना। बाप के खजाने को अपना बना दिया।

आज के दिन को भी विशेष स्मृति-दिवस कहते हो। यह स्मृति-दिवस बच्चों को सर्व समर्थी देने का दिवस है। वैसे तो ब्राह्मण जन्म का दिवस ही समर्थियां प्राप्त करने का दिन है लेकिन आज के स्मृति-दिवस का विशेष महत्व है। वह क्या महत्व है? आज के स्मृति-दिवस पर विशेष ब्रह्मा बाप ने अपने आपको अव्यक्त बनाए व्यक्त साकार रूप में विशेष बच्चों को विश्व के आगे प्रत्यक्ष करने की विशेष विल-पॉवर विल की। जैसे आदि में अपने को, सर्व सम्बन्ध और सम्पत्ति को सेवा अर्थ शक्तियों के आगे विल किया, ऐसे आज के स्मृति दिवस पर ब्रह्मा बाप ने साकार दुनिया में साकार रूप द्वारा विश्व-सेवा के निमित्त शक्ति सेना को अपना साकार रूप का पार्ट बजाने की सर्व विल-पावर्स बच्चों को विल की। स्वयं अव्यक्त गुप्त रूपधारी बने और बच्चों को व्यक्त रूप में विश्व-कल्याण के प्रति निमित्त बनाया अर्थात् साकार रूप में सेवा के विल-पावर्स की विल की। इसलिए इस दिन को स्मृति-दिवस वा समर्थी-दिवस कहते हैं।

बापदादा देख रहे हैं कि उसी स्मृति के आधार परदेश-विदेश में चारों ओर बच्चे निमित्त बन सेवा में सदा आगे बढ़ते रहते हैं और बढ़ते ही रहेंगे क्योंकि विशेष त्रिमूर्ति वरदान बच्चों के साथ हैं। शिवबाबा का तो है ही लेकिन साथ में भाग्यविधाता ब्रह्मा बाप का भी वरदान है, साथ में जगत अम्बा सरस्वती माँ का भी मधुर वाणी का वरदान है। इसलिए त्रिमूर्ति वरदानों से सहज सफलता का अधिकार अनुभव कर रहे हो। आगे चल और भी सहज साधन और श्रेष्ठ सफलता के अनुभव होने ही हैं। बापदादा को प्रत्यक्ष करने का उमंग-उत्साह चारों ओर है कि जल्दी से जल्दी प्रत्यक्षता हो जाए। सभी यही चाहते हैं ना! कब हो जाये? कल हो जाये ताकि यहाँ ही बैठे-बैठे प्रत्यक्षता के नगाड़े सुनो? हुआ ही पड़ा है। सिर्फ क्या करना है? कर भी रहे हो और करना भी है। सम्पूर्ण प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजाने के लिए सिर्फ एक बात करनी है। प्रत्यक्षता का आधार आप बच्चे हैं और बच्चों में विशेष एक बात की अन्डरलाइन करनी है। प्रत्यक्षता और प्रतिज्ञा–दोनों का बैलेन्स सर्व आत्माओं को बापदादा द्वारा ब्लैसिंग प्राप्त होने का आधार है। प्रतिज्ञा तो रोज़ करते हो, फिर प्रत्यक्षता में देरी क्यों? अभी-अभी हो जानी चाहिए ना।

बापदादा ने देखा–प्रतिज्ञा दिल से, प्यार से करते भी हो लेकिन एक होता है 'प्रतिज्ञा', दूसरा होता है 'दृढ़ प्रतिज्ञा'। दृढ़ प्रतिज्ञा की निशानी क्या है? जान चली जाये लेकिन प्रतिज्ञा नहीं जा सकती। जब जान की बाज़ी की बात आ गई, तो छोटी-छोटी समस्यायें वा समय प्रति समय के कितने भी विकराल रूपधारी सर्कमस्टांश (Circumstance; हालात) हों.....–तो जान की बाज़ी के आगे यह क्या हैं! तो दृढ़ प्रतिज्ञा इसको कहा जाता है जो कैसी भी परिस्थितियां हों लेकिन पर-स्थिति, स्व-स्थिति को हिला नहीं सकती। कभी भी किसी भी हालत में हार नहीं खा सकते लेकिन गले का हार बनेंगे, विजयी रत्न बनेंगे, परमात्म-गले का श्रृंगार बनेंगे। इसको कहा जाता है दृढ़ संकल्प अर्थात् दृढ़ प्रतिज्ञा। तो 'दृढ़ता' शब्द को अन्डरलाइन करना है। प्रतिज्ञा करना अर्थात् प्रत्यक्ष सबूत देना। लेकिन कभी-कभी कई बच्चे प्रतिज्ञा भी करते लेकिन साथ में एक खेल भी बहुत अच्छा करते हैं। जब कोई समस्या वा सरकमस्टांश होता जो प्रतिज्ञा को कमजोर बनाने का कारण होता, उस कारण को निवारण करने के बजाए बहाने-बाज़ी का खेल बहुत करते हैं। इसमें बहुत होशियार हैं।

बहानेबाजी की निशानी क्या होती? कहेंगे–ऐसे नहीं था, ऐसे था; ऐसा नहीं होता तो वैसा नहीं होता; इसने ऐसे किया, सरकमस्टांश ही ऐसा था, बात ही ऐसी थी। तो 'ऐसा' और 'वैसा'–यह भाषा बहानेबाज़ी की है और दृढ़ प्रतिज्ञा की भाषा है–'ऐसा' हो वा 'वैसा' हो लेकिन मुझे 'बाप जैसा' बनना है। मुझे बनना है। दूसरों को मेरे को नहीं बनाना है, मुझे बनना है। दूसरे ऐसे करें तो मैं अच्छा रहूँ, दूसरा सहयोग दे तो मैं सम्पन्न वा सम्पूर्ण बनूँ–नहीं। इस लेने के बजाए मास्टर दाता बन सहयोग, स्नेह, सहानुभूति देना ही लेना है। याद रखना–ब्राह्मण जीवन का अर्थ ही है–'देना ही लेना है', 'देने में ही लेना है'। इसलिए दृढ़ प्रतिज्ञा का आधार है–स्व को देखना, स्व को बदलना, स्वमान में रहना। स्वमान है ही मास्टर दातापन का। इस अव्यक्त वर्ष में क्या करेंगे? मधुबन में प्रतिज्ञा करके जायेंगे और वहाँ जाके बहानेबाज़ी का खेल करेंगे?

प्रतिज्ञा दृढ़ होने के बजाए कमजोर होने का वा प्रतिज्ञा में लूज़ होने का एक ही मूल कारण है। जैसे कितनी भी बड़ी मशीनरी हो लेकिन एक छोटा-सा स्क्रू (Screw; पेंच) भी लूज (ढीला) हो जाता तो सारी मशीन को बेकार कर देता है। ऐस प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए प्लैन बहुत अच्छे-अच्छे बनाते हो, पुरुषार्थ भी बहुत करते रहते हो लेकिन पुरुषार्थ वा प्लैन को कमजोर करने का स्क्रू एक ही है–'अलबेलापन'। वह भिन्न-भिन्न रूप में आता है और सदा नये-नये रूप में आता है, पुराने रूप में नहीं आता। तो इस 'अलबेलेपन' के लूज़ स्क्रू को टाइट (Tight; कसना) करो। यह तो होता ही है–नहीं। होना ही है। चलता ही है, होता ही है–यह है अलबेलापन। हो जायेगा–देख लेना, विश्वास करो; दादी-दीदी मेरे ऊपर ऐतबार करो–हो जायेगा। नहीं। बाप जैसा बनना ही है, अभी-अभी बनना है। तीसरी बात–प्रतिज्ञा को दृढ़ से कमजोर बनाने का आधार पहले भी हँसी की बात सुनाई थी कि कई बच्चों की नजदीक की नजर कमजोर है और दूर की नज़र बहुत-बहुत तेज है। नजदीक की नज़र है–स्व को देखना, स्व को बदलना और दूर की नज़र है–दूसरों को देखना, उसमें भी कमजोरियों को देखना, विशेषता को नहीं। इसलिए उमंग-उत्साह में अन्तर पड़ जाता है। बड़े-बड़े भी ऐसे करते हैं, हम तो हैं ही छोटे। तो दूर की कमजोरी देखने की नज़र धोखा दे देती है, इस कारण प्रतिज्ञा को प्रैक्टिकल में ला नहीं सकते। समझा, कारण क्या है? तो अभी स्क्रू टाइट करना आयेगा वा नहीं? 'समझ' का स्क्रू-ड्राइवर (Screw; पेचकश) तो है ना, यन्त्र तो है ना।

इस वर्ष समझना, चाहना और करना–तीनों को समान बनाओ। तीनों को समान करना अर्थात् बाप समान बनना। अगर बापदादा कहेंगे कि सभी लिखकर दो तो सेकेण्ड में लिखेंगे! चिटकी पर लिखना कोई बड़ी बात नहीं। मस्तक पर दृढ़ संकल्प की स्याही से लिख दो। लिखना आता है ना। मस्तक पर लिखना आता है या सिर्फ चिटकी पर लिखना आता है? सभी ने लिखा? पक्का? कच्चा तो नहीं जो दो दिन में मिट जाये? करना ही है, जान चली जाये लेकिन प्रतिज्ञा नहीं जाये–ऐसा दृढ़ संकल्प ही 'बाप समान' सहज बनायेगा। नहीं तो कभी मेहनत, कभी मुहब्बत–इसी खेल में चलते रहेंगे। आज के दिन देश-विदेश के सभी बच्चे तन से वहाँ हैं लेकिन मन से मधुबन में हैं। इसलिए सभी बच्चों के स्मृति-दिवस के अलौकिक अनुभव में बापदादा ने देखा–अच्छे-अच्छे अनुभव किये हैं, सेवा भी की है। अलौकिक अनुभवों की और सेवा की हर एक बच्चे को मुबारक दे रहे हैं। सबके शुद्ध संकल्प, मीठी-मीठी रूहरिहान और प्रेम के मोतियों की मालायें बापदादा के पास पहुँच गई हैं। रिटर्न में बापदादा भी स्नेह की माला सभी बच्चों के गले में डाल रहे हैं। हर एक बच्चा अपने-अपने नाम से विशेष याद, प्यार स्वीकार करना। बापदादा के पास रूहानी वायरलेस-सेट इतना पॉवरफुल है जो एक ही समय पर अनेक बच्चों के दिल का आवाज़ पहुँच जाता है। न सिर्फ आवाज पहुँचता लेकिन सभी की स्नेही मूर्त भी इमर्ज हो जाती है। इसलिए सभी को सम्मुख देख विशेष याद, प्यार दे रहे हैं। अच्छा!

सर्व समर्थ आत्माओं को, सर्व दृढ़ प्रतिज्ञा और प्रत्यक्षता का बैलेन्स रखने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा समझना, चाहना और करना–तीनों को समान बनाने वाले बाप समान बच्चों को, सदा समस्याओं को हार खिलाने वाले, परमात्म-गले का हार बनने वाले विजयी रत्नों को समर्थ बापदादा का याद, प्यार और नमस्ते।

दादियों से मुलाकात

सभी दोनों ही विल के पात्र हो–आदि की विल भी और साकार स्वरूप के अन्त की विल भी। विल-पॉवर आ गई ना! विल-पॉवर की विल विल-पॉवर द्वारा सदा ही स्व के पुरुषार्थ से एक्स्ट्रा कार्य कराती है। ये हिम्मत के प्रत्यक्षफल में पद्मगुणा मदद के पात्र बने। कई सोचते हैं–ये आत्मायें ही निमित्त क्यों बनीं? तो इसका रहस्य है कि विशेष समय पर विशेष हिम्मत रखने का प्रत्यक्षफल सदा का फल बन गया। इसलिए गाया हुआ है–एक कदम हिम्मत का और पद्म कदम बाप की मदद के। इसलिए सदा सब बातों को पार करने की विल-पॉवर विल के रूप में प्राप्त हुई। ऐसे है ना! आप सभी भी साथी हो। अच्छा साथ निभा रही हो। निभाने वालों को बाप भी अपना हर समय सहयोग का वायदा निभाते हैं। तो ये सारा ग्रुप निभाने वालों का है। (सभा से पूछते हुए) आप सभी भी निभाने वाले हो ना। या सिर्फ प्रीत करने वाले हो? करने वाले अनेक होते हैं और निभाने वाले कोई-कोई होते हैं। तो आप सभी किसमें हो? कोटों में कोई हो, कोई में भी कोई हो! देखो, दुनिया में हंगामा हो रहा है और आप क्या कर रहे हो? मौज मना रहे हो। वा मूँझे हुए हो–क्या करना है, क्या होना है? आप कहते हो कि सब अच्छा होना है। तो कितना अन्तर है! दुनिया में हर समय क्वेश्चन-मार्क है कि क्या होगा? और आपके पास क्या है? फुलस्टॉप। जो हुआ सो अच्छा और जो होना है वो हमारे लिए अच्छा है। दुनिया के लिए अकाले मृत्यु है और आपके लिए मौज है। डर लगता है? थोड़ा-थोड़ा खून देखकर के डर लगेगा? आपके सामने ७-८ को गोली लग जाये तो डरेंगे? नींद में दिखाई तो नहीं देंगे ना! शक्ति सेना अर्थात् निर्भय। न माया से भय है, न प्रकृति की हलचल से भय है। ऐसे निर्भय हो या थोड़ा-थोड़ा कमजोरी है? अच्छा!

* अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात *

ग्रुप नं. १

सर्व शक्तियां ऑर्डर में हों तो मायाजीत बन जायेंगे

सभी अपने को सदा मायाजीत, प्रकृतिजीत अनुभव करते हो? मायाजीत बन रहे हैं या अभी बनना है? जितना-जितना सर्व शक्तियों को अपने ऑर्डर पर रखेंगे और समय पर कार्य में लगायेंगे तो सहज मायाजीत हो जायेंगे। अगर सर्व शक्तियां अपने कन्ट्रोल में नहीं हैं तो कहाँ न कहाँ हार खानी पड़ेगी।

मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् कन्ट्रोलिंग पॉवर हो। जिस समय, जिस शक्ति को आह्वान करें वो हाजिर हो जाए, सहयोगी बने। ऐसे ऑर्डर में हैं? सर्व शक्तियां ऑर्डर में हैं या आगे-पीछे होती हैं? ऑर्डर करो अभी और आये घण्टे के बाद–तो उसको मास्टर सर्व-शक्तिवान कहेंगे? जब आप सभी का टाइटल है मास्टर सर्व शक्तिवान, तो जैसा टाइटल है वैसा ही कर्म होना चाहिए ना। है मास्टर और शक्ति समय पर काम में नहीं आये–तो कमजोर कहेंगे या मास्टर कहेंगे? तो सदा चेक करो और फिर चेन्ज (परिवर्तन) करो–कौनसी २ शक्ति समय पर कार्य में लग सकती है और कौनसी शक्ति समय पर धोखा देती है? अगर सर्व शक्तियां अपने ऑर्डर पर नहीं चल सकतीं तो क्या विश्व-राज्य अधिकारी बनेंगे? विश्व-राज्य अधिकारी वही बन सकता है जिसमें कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर हो। पहले स्व पर राज्य, फिर विश्व पर राज्य। स्वराज्य अधिकारी जब चाहें, जैसे चाहें वैसे कन्ट्रोल कर सकते हैं।

इस वर्ष में क्या नवीनता करेंगे? जो कहते हैं वो करके दिखायेंगे। कहना और करना–दोनों समान हों। जैसे–कहते हैं मास्टर सर्व-शक्तिवान और करने में कभी विजयी हैं, कभी कम हैं। तो कहने और करने में फर्क हो गया ना! तो अभी इस फर्क को समाप्त करो। जो कहते हो वो प्रैक्टिकल जीवन में स्वयं भी अनुभव करो और दूसरे भी अनुभव करें। दूसरे भी समझें कि यह आत्मायें कुछ न्यारी हैं। चाहे हजारों लोग हों लेकिन हजारों में भी आप न्यारे दिखाई दो, साधारण नहीं। क्योंकि ब्राह्मण अर्थात् अलौकिक। यह अलौकिक जन्म है ना। तो ब्राह्मण जीवन अर्थात् अलौकिक जीवन, साधारण जीवन नहीं। ऐसे अनुभव करते हो? लोग समझते हैं कि यह न्यारे हैं? या समझते हैं–जैसे हम हैं वैसे यह?

न्यारे बनने की निशानी है–जितना न्यारे बनेंगे उतना सर्व के प्यारे बनेंगे। जैसे–बाप सबसे न्यारा है और सबका प्यारा है। तो न्यारा-पन प्यारा बना देता है। तो ऐसे न्यारे और आत्माओं के प्यारे कहाँ तक बने हैं–यह चेक करो। लौकिक जीवन में भी अलौकिकता का अनुभव कराओ। न्यारे बनने की युक्ति तो आती है ना। जितना अपने देह के भान से न्यारे होते जायेंगे उतना प्यारे लगेंगे। देह-भान से न्यारा। तो अलौकिक हो गया ना! तो सदैव अपने को देखो कि–''देह-भान से न्यारे रहते हैं? बार-बार देह के भान में तो नहीं आते हैं?'' देह-भान में आना अर्थात् लौकिक जीवन। बीच-बीच में प्रैक्टिस करो–देह में प्रवेश होकर कर्म किया और अभी-अभी न्यारे हो जायें। तो न्यारी अवस्था में स्थित रहने से कर्म भी अच्छा होगा और बाप के वा सर्व के प्यारे भी बनेंगे। डबल फायदा है ना। परमात्म-प्यार का अधिकारी बनना–ये कितना बड़ा फायदा है! कभी सोचा था कि ऐसे अधिकारी बनेंगे? स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा लेकिन ऐसे अधिकारी बन गये। तो सदा यह स्मृति में लाओ कि परमात्म-प्यार के पात्र आत्मायें हैं! दुनिया तो ढूँढ़ती रहती है और आप पात्र बन गये। तो सदा ''वाह मेरा श्रेष्ठ भाग्य!''–यह गीत गाते रहो, उड़ते रहो। उड़ती कला सर्व का भला। आप उड़ते हो तो सभी का भला हो जाता है, विश्व का कल्याण हो जाता है। अच्छा! सभी खुश रहते हो? सदा ही खुश रहना और दूसरों को भी खुश करना। कोई कैसा भी हो लेकिन खुश रहना है और खुश करना है। अच्छा!

ग्रुप नं. २

विश्व कल्याणकारी बन सेवा पर रहो तो सेवा का फल और बल मिलता रहेगा

अपने सारे कल्प के श्रेष्ठ भाग्य को जानते हो? आधा कल्प राज्य अधिकारी बनते हो और आधा कल्प पूज्य अधिकारी बनते हो। लेकिन सारे कल्प का भाग्य बनाने का समय कौनसा है? अब है ना! तो भाग्य बनाने का समय कितना है और भाग्य प्राप्त करने का समय कितना है–यह स्मृति में रहता है वा मर्ज रहता है? क्योंकि जितना समय इमर्ज रहेगा उतना समय खुशी रहेगी और मर्ज होगा तो खुशी नहीं रहेगी। पाण्डवों को काम-काज में जाने से याद रहता है या काम करने के समय काम का ही नशा रहता है कि मैं फलाना हूँ? चाहे क्लर्क हो, चाहे बिजनेसमैन हो, चाहे कुछ भी हो–वो याद रहता है या यह याद रहता है कि मैं कल्प-कल्प का भाग्यवान हूँ? क्योंकि आपका असली आक्यूपेशन है–विश्व-कल्याणकारी। यह याद रहता है वा हद का काम याद रहता है? माताओं को खाना बनाते समय क्या याद रहता है? विश्व-कल्याणकारी हूँ–यह याद रहता है या खाना बनाने वाली हूँ–यह याद रहता है?

कुछ भी करो लेकिन अपना आक्यूपेशन नहीं भूलो। जैसे आपके यादगारों में भी दिखाया है कि पाण्डवों ने गुप्त वेष में नौकरी की। लेकिन नशा क्या था? विजय का। तो आप भी गवर्मेन्ट सर्वेन्ट बनते हो ना, नौकरी करते हो। लेकिन नशा रहे–विश्व-कल्याणकारी हूँ। तो इस स्मृति से स्वत: ही समर्थ रहेंगे और सदा सेवा-भाव होने के कारण सेवा का फल और बल मिलता रहेगा। फल भी मिल जाये और बल भी मिल जाए–तो डबल फायदा है ना! ऐसे नहीं कि कपड़ा धुलाई कर रहे हैं तो कपड़े धोने वाले हैं। जब विश्व-कल्याणकारी का संकल्प रखेंगे तब आपकी यह भावना अनेक आत्माओं को फल देगी। गाया हुआ है ना कि भावना का फल

मिलता है। तो आपकी भावना आत्माओं को फल देगी–शान्ति, शक्ति देगी। यह फल मिलेगा। ऐसी सेवा करते हो? या समय नहीं मिलता है? अपनी प्रवृत्ति बहुत बड़ी है? निभाना पड़ता है! बेहद में रहने से हद के भान से सहज निकलते जायेंगे। गृहस्थीपन का भान है हद और ट्रस्टीपन का भान है बेहद। थोड़ा-थोड़ा गृहस्थी, थोड़ा-थोड़ा ट्रस्टी–नहीं। अगर गृहस्थी का बोझ होगा तो कभी उड़ती कला का अनुभव नहीं कर सकते। निमित्त भाव बोझ को खत्म कर देता है। मेरी जिम्मेवारी है, मेरे को ही सम्भालना है, मेरे को ही सोचना है.....–तो बोझ होता है। जिम्मेवारी बाप की है और बाप ने ट्रस्टी अर्थात् निमित्त बनाया है! मेरा है तो बोझ आपका है, तेरा है तो बाप का है! इसमें कई चालाकी भी करते हैं–कहेंगे तेरा लेकिन बनायेंगे मेरा! कभी भी किसी भी कार्य में अगर बोझ महसूस होता है तो यह निशानी है कि तेरे के बजाए मेरा कहते हैं। तो यह गलती कभी नहीं करना। अच्छा!

ग्रुप नं. ३

ब्राह्मण का अर्थ है – असम्भव को सम्भव करने वाले

सदा एक बल एक भरोसा–यह अनुभव करते रहते हो? जितना एक बाप में भरोसा अर्थात् निश्चय है तो बल भी मिलता है। क्योंकि एक बाप पर निश्चय रखने से बुद्धि एकाग्र हो जाती है, भटकने से छूट जाते हैं। एकाग्रता की शक्ति से जो भी कार्य करते हो उसमें सहज सफलता मिलती है। जहाँ एकाग्रता होती है वहाँ निर्णय बहुत सहज होता है। जहाँ हलचल होगी तो निर्णय यथार्थ नहीं होता है। तो 'एक बल, एक भरोसा' अर्थात् हर कार्य में सहज सफलता का अनुभव करना। कितना भी मुश्किल कार्य हो लेकिन 'एक बल, एक भरोसे' वाले को हर कार्य एक खेल लगता है। काम नहीं लगता है, खेल लगता है। तो खेल करने में खुशी होती है ना! चाहे कितनी भी मेहनत करने का खेल हो लेकिन खेल अर्थात् खुशी। देखो, मल्ल-युद्ध करते हैं तो उसमें भी कितनी मेहनत करनी पड़ती! लेकिन खेल समझ के करते हैं तो खुश होते हैं, मेहनत नहीं लगती। खुशी-खुशी से कार्य सहज सफल भी हो जाता है। अगर कोई कार्य भी करते हैं, खुश नहीं, चिंता वा फिक्र में हैं तो मुश्किल लगेगा ना! 'एक बल, एक भरोसा'–इसकी निशानी है कि खुश रहेंगे, मेहनत नहीं लगेगी। 'एक भरोसा, एक बल' द्वारा कितना भी असम्भव काम होगा तो वो सम्भव दिखाई देगा।

ब्राह्मण जीवन में कोई भी–चाहे स्थूल काम, चाहे आत्मिक पुरुषार्थ का, लेकिन कोई भी असम्भव नहीं हो सकता। ब्राह्मण का अर्थ ही है–असम्भव को भी सम्भव करने वाले। ब्राह्मणों की डिक्शनरी में 'असम्भव' शब्द है नहीं, मुश्किल शब्द है नहीं, मेहनत शब्द है नहीं। ऐसे ब्राह्मण हो ना। या कभी-कभी असम्भव लगता है? यह बहुत मुश्किल है, यह बदलता नहीं, गाली ही देता रहता है, यह काम होता ही नहीं, पता नहीं मेरा क्या भाग्य है–ऐसे नहीं समझते हो ना। या कोई काम मुश्किल लगता है? जब बाप का साथ छोड़ देते हो, अकेले करते हो तो बोझ भी लगेगा, मेहनत भी लगेगी, मुश्किल और असम्भव भी लगेगा और बाप को साथ रखा तो पहाड़ भी राई बन जायेगी। इसको कहा जाता है–एक बल, एक भरोसे में रहने वाले। 'एक बल, एक भरोसे' में जो रहता वो कभी भी संकल्प-मात्र भी नहीं सोच सकता कि क्या होगा, कैसे होगा? क्योंकि अगर क्वेश्चन-मार्क है तो बुद्धि ठीक निर्णय नहीं करेगी। क्लीयर नहीं है! अगर कोई भी काम करते क्वेश्चन आता है–''पता नहीं क्या होगा?'' कैसे होगा? तो इसको कहा जाता है युद्ध की स्थिति। तो ब्राह्मण हो या क्षत्रिय? क्योंकि अभी तक समय अनुसार अगर युद्ध के संस्कार हैं तो सूर्यवंशी में पहुँचेंगे या चन्द्रवंशी में? चन्द्रवंशी में तो नहीं जाना है ना! योग में भी बैठते हो तो कुछ समय योग लगता है और कुछ समय युद्ध करते रहते हो! उसी समय अगर शरीर छूट जाए तो कहाँ जायेंगे? 'अन्त मती सो गति'क्या होगी? इसलिए सदा विजयीपन के संस्कार धारण करो। जब सर्वशक्तिवान बाप साथ है, तो जहाँ भगवान् है वहाँ युद्ध है या विजय है? तो ऐसे विजयी रत्न बनो। इसको कहते हैं एक बल एक भरोसा। अच्छा!

ग्रुप नं. ४

अटेन्शन और चेकिंग रूपी पहरेदार ठीक हैं तो खजाना सेफ रहेगा

सदा अपने को बाप के सर्व खजानों के मालिक हैं–ऐसा अनुभव करते हो? मालिक बन गये हो या बन रहे हो? जब सभी बालक सो मालिक बन गये, तो बाप ने सभी को एक जैसा खजाना दिया है। या किसको कम दिया, किसको ज्यादा? एक जैसा दिया है! जब मिला एक जैसा है, फिर नम्बरवार क्यों? खजाना सबको एक जैसा मिला, फिर भी कोई भरपूर, कोई कम। इसका कारण है कि खजाने को सम्भालना नहीं आता है। कोई बच्चे खजाने को बढ़ाते हैं और कोई बच्चे गँवाते हैं। बढ़ाने का तरीका है–बांटना। जितना बांटेंगे उतना बढ़ेगा। जो नहीं बांटते उनका बढ़ता नहीं। अविनाशी खजाना है, इस खजाने को जितना बढ़ाना चाहें उतना बढ़ा सकते हो। सभी खजानों को सम्भालना अर्थात् बार-बार खजानों को चेक करना। जैसे खजाने को सम्भालने के लिए कोई न कोई पहरे वाला रखा जाता है। तो इस खजाने को सदा सेफ रखने के लिए 'अटेन्शन' और 'चेकिंग'–यह पहरे वाले हों। तो जो अटेन्शन और चेकिंग करना जानता है उसका खजाना कभी कोई ले जा नहीं सकता, कोई खो नहीं सकता। तो पहरे वाले होशियार हैं या अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं? पहरेदार भी जब सो जाते हैं तो खजाना गँवा देते हैं। इसलिए 'अटेन्शन' और 'चेकिंग'–दोनों ठीक हों तो कभी खजाने को कोई छू नहीं सकता! तो अनगिनत, अखुट, अखण्ड खजाना जमा है ना! खजानों को

देख सदा हर्षित रहते हो? कभी भी किसी भी परिस्थिति में दु:ख की लहर तो नहीं आती है?

स्वप्न में भी दु:ख की लहर न हो। जब दु:ख की लहर आती है तब खुशी कम होती है। उस समय बाप को सुख के सागर के स्वरूप से याद करो। जब बाप सुख का सागर है तो बच्चों में दु:ख की लहर कैसे आ सकती! आप आत्माओं का अनादि, आदि स्वरूप भी सुख-स्वरूप है। जब परमधाम में हैं तो भी सुख-स्वरूप हैं और जब आदि देवता बने तो भी सुख-स्वरूप थे! तो अपने अनादि और आदि स्वरूप को स्मृति में रखो तो कभी भी दु:ख की लहर नहीं आयेगी। अच्छा! पाण्डवों को कभी दु:ख की लहर आती है? कभी क्रोध करते हो? क्रोध करना अर्थात् दु:ख देना, दु:ख लेना। जिसको कभी क्रोध नहीं आता है वो हाथ उठाओ! घर वालों का भी सर्टीफिकेट चाहिए। कभी कोई गाली दे, इन्सल्ट करे–तब भी क्रोध न आये। सभी का फोटो निकल रहा है। नहीं आता है तो बहुत अच्छा। लेकिन आगे चलकर किसी भी परिस्थिति में भी माया को आने नहीं देना। अगर अभी तक सेफ हैं तो मुबारक, लेकिन आगे भी अविनाशी रहना। अच्छा! माताओं को मोह आता है? पाण्डवों में होता है 'रोब' जो क्रोध का ही अंश है और माताओं में होता है 'मोह'! तो इस वर्ष क्या करेंगे? क्रोध बिल्कुल ही नहीं आये। ऐसे तो नहीं कहेंगे–करना ही पड़ता है, नहीं तो काम नहीं चलता? आजकल के समय के प्रमाण भी क्रोध से काम बिगड़ता है और आत्मिक-प्यार से, शान्ति से बिगड़ा हुआ कार्य भी ठीक हो जाता है। इसलिए यह भी एक बहुत बड़ा विकार है। तो क्रोध-जीत बनना ब्राह्मण जीवन के लिए अति आवश्यक है। माताओं को मोहजीत बनना है। कई बार मोह के कारण क्रोध भी आ जाता होगा! सब ने क्या लक्ष्य रखा है? बाप समान बनना है। तो बाप में क्रोध वा मोह है क्या? तो समान बनना पड़े ना! कैसी भी परिस्थिति आ जाये लेकिन मायाजीत बनना अर्थात् ब्राह्मण जीवन का सुख लेना। तो और अन्डरलाइन करके इस वर्ष में समाप्त करो। अच्छा!

ग्रुप नं. ५

राजयोगी वह जो अपनी कर्मेन्द्रियों को ऑर्डर में चलाये

सभी एक सेकेण्ड में अशरीरी स्थिति का अनुभव कर सकते हो? या टाइम लगेगा? आप राजयोगी हो, राजयोगी का अर्थ क्या है? राजा हो ना। तो शरीर आपका क्या है? कर्मचारी है ना! तो सेकेण्ड में अशरीरी क्यों नहीं हो सकते? ऑर्डर करो–अभी शरीर-भान में नहीं आना है; तो नहीं मानेगा शरीर? राजयोगी अर्थात् मास्टर सर्वशक्तिवान। मास्टर सर्वशक्तिवान कर्मबन्धन को भी नहीं तोड़ सकते तो मास्टर सर्वशक्तिवान कैसे कहला सकते? कहते तो यही हो ना कि हम मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। तो इसी अभ्यास को बढ़ाते चलो। राजयोगी अर्थात् राजा बन इन कर्मेन्द्रियों को अपने ऑर्डर में चलाने वाले। क्योंकि अगर ऐसा अभ्यास नहीं होगा तो लास्ट टाइम 'पास विद् ऑनर' कैसे बनेंगे! धक्के से पास होना है या 'पास विद् ऑनर' बनना है? जैसे शरीर में आना सहज है, सेकेण्ड भी नहीं लगता है! क्योंकि बहुत समय का अभ्यास है। ऐसे शरीर से परे होने का भी अभ्यास चाहिए और बहुत समय का अभ्यास चाहिए। लक्ष्य श्रेष्ठ है तो लक्ष्य के प्रमाण पुरुषार्थ भी श्रेष्ठ करना है।

सारे दिन में यह बार-बार प्रैक्टिस करो–अभी-अभी शरीर में हैं, अभी-अभी शरीर से न्यारे अशरीरी हैं! लास्ट सो फास्ट और फर्स्ट आने के लिए फास्ट पुरुषार्थ करना पड़े। सबसे ज्यादा खुशी किसको रहती है? किस बात की खुशी है? सदैव अपने प्राप्त हुए भाग्य की लिस्ट सामने रखो। कितने भाग्य मिले हैं? इतने भाग्य मिले हैं जो आपके भाग्य की महिमा अभी कल्प के अन्त में भी भक्त लोग कर रहे हैं। जब भी कोई कीर्तन सुनते हो तो क्या लगता है? किसकी महिमा है? डबल फॉरेनर्स का कीर्तन होता है? संगम पर भाग्यवान बने हो और संगम पर ही अब तक अपना भाग्य वर्णन करते हुए सुन भी रहे हो। चैतन्य रूप में अपना ही जड़ चित्र देख हर्षित होते हो? अच्छा!

ग्रुप नं. ६

अलौकिक जीवन बनाने के लिए सब बातों में ''कम खर्च बाला नशीन'' बनो

(मधुबन-निवासियों से मुलाकात) मधुबन की महिमा चारों ओर प्रसिद्ध है ही। मधुबन की महिमा अर्थात् मधुबन-निवासियों की महिमा। मधुबन की महिमा ज्यादा है या मधुबन-निवासियों की ज्यादा है? मधुबन किसे कहा जाता है? क्या इन भवनों को मधुबन कहा जाता है? मधुबन-निवासियों से मधुबन है। जो मधुबन की महिमा वो ही मधुबन-निवासियों की महिमा है। सदैव यही स्मृति में रखो कि मधुबन की महिमा सो हमारी महिमा! महिमा उसकी गाई जाती है जो महान् होता है। साधारण की महिमा नहीं होती है। महानता की महिमा होती है। तो मधुबन निवासी महान् हो गये ना! कि कभी साधारण भी बन जाते हैं? मधुबन निवासी अर्थात् सर्व-श्रेष्ठ, महान्। अलौकिकता ही महानता है। लौकिकता को महानता नहीं कहेंगे। तो मधुबन निवासी अर्थात् हर कर्म, हर बोल, हर संकल्प–अलौकिक। मधुबन निवासी अर्थात् साधारणता से परे। उनकी दृष्टि, उनकी वृत्ति, उनकी स्मृति, कृति–सब अलौकिक अर्थात् महान्। यह है मधुबन निवासियों की महिमा। समझा? तो मधुबन में दीवारों की महिमा नहीं है, आपकी है।

मधुबन निवासी हर कर्म में फर्स्ट आने वाले हो ना। तो अव्यक्त वर्ष में फर्स्ट किस बात में आना है? 'बाप समान' बनने में, अलौ-किकता में फर्स्ट आना है। तो मधुबन में अभी से, साधारण चाल, साधारण बोल का जब नाम-निशान नहीं रहेगा तब मधुबन वालों

को विशेष इनाम मिलेगा। सारा वर्ष हर मास की रिजल्ट निकलेगी। तो हर मास में जरा भी साधारणता नहीं हो, महानता हो। महानता ही तो फर्स्ट है ना। साधारणता को फर्स्ट नहीं कहेंगे। तो मधुबन में देखेंगे–फर्स्ट प्राइज कौन लेता है? तो यह इनाम लेंगे ना? देखेंगे–कौन इनाम लेते हैं! क्योंकि मधुबन निवासियों को विशेष ड्रामा अनुसार वरदानों की प्राप्ति है। जो मधुबन निवासी करेंगे वो चारों ओर स्वत: और सहज होता है। तो मधुबन को इस वरदान की दुआयें मिलेंगी। क्योंकि मधुबन है लाइट-हाउस, माइट-हाउस। लाइट-हाउस की लाइट चारों ओर फैलती है ना। बल्ब की लाइट चारों ओर नहीं फैलेगी, लाइट हाउस की चारों ओर फैलेगी। लाइट-हाउस बन अव्यक्त स्थिति, अव्यक्त चलन की लाइट चारों ओर फैलाओ। पसन्द है ना! अनुभवी हैं मधुबन वाले। मधुबन वालों को क्या मुश्किल है! जो चाहे वह कर सकते हैं। क्योंकि साधना का वायुमण्डल भी है और साधन भी हैं। जितने मधुबन में साधन हैं उतने सेवाकेन्द्रों पर नहीं हैं। जैसा वायुमण्डल साधना का मधुबन में है वैसा सेवाकेन्द्र में बनाना पड़ता है, यहाँ स्वत: है।

पुरुषार्थ हरेक का इन्डीविज्युअल (Individual; व्यक्तिगत) है। चाहे संख्या कितनी भी हो लेकिन पुरुषार्थ हरेक को 'स्व' का करना है। अलौकिकता लाने के लिये एक सलोगन सदा याद रखना, जो ब्रह्मा बाप का सदा प्यारा रहा! वह कौनसा सलोगन है? ''कम खर्चा बाला-नशीन''– यह सलोगन सदा याद रखो। कम खर्चे में भी बाला-नशीन करके दिखाओ। ऐसे नहीं–कम खर्चा करना है तो कमी दिखाई दे। कम खर्चा हो लेकिन उससे जो प्राप्ति हो वह बहुत शानदार हो। कम खर्चे में शानदार रिजल्ट हो–इसको कहते हैं ''कम खर्च बाला नशीन''। तो अलौकिक जीवन बनाने के लिए सब में ''कम खर्च बाला नशीन'' बनना है–बोल में भी, कर्म में भी। कम खर्च अर्थात् एनर्जी-संकल्प ज्यादा खर्च नहीं। कम खर्च में काम ज्यादा। ऐसे नहीं–काम ही कम कर दो। कम समय हो लेकिन काम ज्यादा हो, कम बोल हों लेकिन उस कम बोल में स्पष्टीकरण ज्यादा हो, संकल्प कम हों लेकिन शक्तिशाली हों–इसको कहा जाता है 'कम खर्च बाला-नशीन'। सर्व खजाने कम खर्च में बाला-नशीन करके दिखाओ। मधुबन-निवासी तो भरपूर हैं। सुनाया था ना–मधुबन का भण्डारा भी भरपूर तो भण्डारी भी भरपूर है। तो मधुबन-निवासियों के भी सर्व शक्तियों के खजाने से भण्डारे भरपूर हैं। अच्छा!

(बाबा, एडवान्स पार्टी का इस समय क्या रोल है?) जो आप लोगों का रोल है वही उन लोगों का रोल है। आप शुभ भावना से सेवा कर रहे हो ना। लड़ाई-झगड़े के बीच जाकर के तो नहीं कर रहे हो। तो वो भी अपने वायब्रेशन से सब करते रहते हैं।

कान्फ्रेन्स के लिए सन्देश

कान्फ्रेन्स के पहले इतना शान्ति का वायब्रेशन दो, जो आने वाले आ सकें। अभी तो इसकी आवश्यकता है। और योग लगाओ। यह भी ब्राह्मणों के लिये गोल्डन चान्स हो जाता है! जब भी कोई ऐसी बात होती है तो क्या कहते हैं? योग लगाओ, अखण्ड योग करो। तो दुनिया की अशान्ति और ब्राह्मणों का गोल्डन चान्स। तो यह भी बीच-बीच में चान्स मिलता है बुद्धि को और एकाग्र करने का। (कर्फ्यू के समय क्लास में नहीं आ सकते हैं) लेकिन स्टूडेन्ट माना स्टडी जरूर करेंगे। घर में तो कर सकते हैं ना। टीचर का काम ही है–अपनी योग-शक्ति से अपने एरिया में कर्फ्यू खत्म कराना। यह सीन भी देखने से निर्भयता का अनुभव बढ़ता जाता है। अच्छा!

****

ब्राह्मण जन्म का आदि वरदान – स्नेह की शक्ति

18-1-94

स्नेह की शक्ति के वरदान द्वारा असम्भव को सम्भव बनाने वाले स्नेह के सागर बापदादा बोले–

आज चारों ओर के सर्व बच्चों की स्नेह भरी स्मृति-ाँ समर्थ बापदादा के पास स्नेह के सागर समान पहुँच गई। हर एक बच्चे के दिल में दिलाराम समा-ाा हुआ है और दिलाराम के दिल में सर्व स्नेही बच्चे समा-ो हुए हैं। स्नेह बहुत बड़ी शक्ति है।

* स्नेह की शक्ति मेहनत को सहज कर देती है। जहाँ मोहब्बत है वहाँ मेहनत नहीं होती। मेहनत मनोरंजन बन जाती है। खेल लगता है।
* स्नेह की शक्ति देह और देह की दुनि-ाा सेकण्ड में भूला देती है। स्नेह में जो भुलाना चाहें वह भुला सकते हैं, जो -ाद करना चाहें उसमें समा जाते हैं।
* स्नेह की शक्ति सहज समर्पण करा देती है।
* स्नेह की शक्ति बाप समान बना देती है।
* स्नेह सदा हर सम-ा परमात्म साथ का अनुभव कराता है।
* स्नेह सदा अपने ऊपर बाप की दुआओं का हाथ छत्रछा-ाा समान अनुभव कराता है।
* स्नेह असम्भव को सम्भव इतना सहज कर देता जैसे का-र्ा हुआ ही पड़ा है।
* स्नेह निष्पल (हर सम-ा)निश्चिन्त अनुभव कराता है।
* स्नेह हर कर्म में निश्चित विज-ाी स्थिति का अनुभव कराता है। ऐसे स्नेह की शक्ति अनुभव करते हो ना?

बापदादा जानते हैं कि अनेक जन्म अनेक प्रकार की मेहनत कर थकी हुई आत्मा-ों हैं। भिन्न-भिन्न बन्धनों में बन्धी हुई आत्मा-ों होने के कारण मेहनत करती रही हैं। इसलि-ो बापदादा मेहनत से मुक्त होने के लि-ो सहज विधि 'स्नेह की शक्ति' सभी बच्चों को वरदान में देते हैं। अपने ब्राह्मण जीवन के आदि सम-ा को -ाद करो। तो जन्मते ही सभी को स्नेह की शक्ति ने ही न-ाा जीवन दि-ाा। स्नेह की अनुभूति के लि-ो मेहनत की? मेहनत करनी पड़ी? सहज अनुभव कि-ाा ना।

तो -ाह आदि जन्म की अनुभूति ही वरदान है। प्-ार-प्-ार में ही खो ग-े। सदा इस स्नेह के वरदान को स्मृति में रखो। मेहनत के सम-ा इस वरदान द्वारा मेहनत को परिवर्तन कर सकते हो। बापदादा को बच्चों का मेहनत अनुभव करना अच्छा नहीं लगता। स्नेह की शक्ति की विस्मृति मेहनत अनुभव कराती है।

* कितनी भी बड़ी कैसी भी परिस्थिति हो प्-ार से, स्नेह से परिस्थिति रूपी पहाड़ भी परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन सकता है। पत्थर को पानी बना सकते हो। कैसा भी मा-ा का विकराल रूप वा रॉ-ाल रूप सामना करे तो सेकण्ड में स्नेह के सागर में समा जाओ तो सामना करने की मा-ा की शक्ति समाप्त हो जा-ेगी। आपके समाने की शक्ति छू-मन्त्र नहीं लेकिन शिव-मन्त्र बन जा-ेगी। सबके पास शिव-मन्त्र की शक्ति है ना कि खो जाती है? शिव स्नेह में समा जाओ, सिर्फ डुबकी मारकर नहीं निकल आओ। थोड़ा सम-ा स्मृति में रहते हो–मीठा बाबा, प्-ारा बाबा, तो डुबकी लगाकर फिर निकल आते हो तो मा-ा की नज़र पड़ जाती है। समा जाओ, तो मा-ा की नज़र से दूर हो जा-ेंगे। और कुछ भी नहीं आए तो स्नेह की शक्ति जन्म का वरदान है। उस वरदान में खो जाओ। खो जाना नहीं आता है? स्नेह तो सहज है ना! सबको अनुभव है ना! कोई है जिसको ब्राह्मण जीवन में रूहानी स्नेह का अनुभव नहीं हो, है कोई?

* स्नेह ही सहज -ोग है, स्नेह में समाना ही सम्पूर्ण ज्ञान है।
* आज के दिन का महत्व भी स्नेह है।

अमृतवेले से विशेष किस लहर में लहरा रहे हो? बापदादा के स्नेह में ही लहरा रहे हो। सर्व आत्माओं के अन्दर एक बाप के सिवा-ा और कुछ -ाद रहा? सहज -ाद रही ना कि मेहनत करनी पड़ी? तो सहज कैसे बनी? स्नेह के कारण। तो व-ा सिर्फ आज का दिन स्नेह का है? संगम-ुग है ही परमात्म-स्नेह का -ुग। तो -ुग के महत्व को जान स्नेह की अनुभूति-ों को अनुभव करो। स्नेह का सागर स्नेह के हीरे-मोति-ों की थालि-ाँ भरकर दे रहे हैं। तो अपने को सदा भरपूर करो। थोड़े से अनुभव में खुश नहीं हो जाओ। सम्पन्न बनो। भविष्-ा में तो स्थूल हीरे-मोति-ों से सजेंगे। -ो परमात्म-प्-ार के हीरे-मोती अनमोल हैं, तो इससे सदा सजे सजा-ो रहो।

चारों ओर के बच्चों की -ाद, स्नेह के गीत बापदादा सदा भी सुनते रहते

हैं लेकिन आज विशेष स्नेह स्वरूप बच्चों को स्नेह के रिटर्न में सदा स्नेही भव, सदा स्नेह के वरदान द्वारा सहज उड़ती कला का विशेष फिर से वरदान दे रहे हैं। सदा जैसे छोटे बच्चे होते हैं, कोई भी मुश्किल बात आ-ोगी वा कोई भी परिस्थिति आ-ोगी तो मात-पिता की गोदी में समा जा-ोंगे, ऐसे सेकण्ड में स्नेह की गोदी में समा जाओ तो मेहनत से बच जा-ेंगे। सेकण्ड में उड़ती कला द्वारा बापदादा के पास पहुँच जाओ तो कैसे भी स्वरूप में आई हुई मा-ा दूर से भी आपको छू नहीं सकेगी। क-ोंकि परमात्म-छत्रछा-ा के अन्दर तो क-ा लेकिन दूर से भी मा-ा की छा-ा आ नहीं सकती। तो बच्चा बनना अर्थात् मा-ा से बचना। बच्चा बनना तो अच्छा है ना। बच्चा बनने का अर्थ ही है स्नेह में समा जाना। अच्छा!

चारों ओर के दिलाराम के दिल में समा-ो हुए बच्चों को, सदा मेहनत को मोहब्बत में परिवर्तन करने वाली शक्तिशाली आत्माओं को, सदा परमात्म-स्नेह के संगम-ुग को महान् अनुभव करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा स्नेह की शक्ति से बाप के साथ और दुआओं के हाथ को अनुभव कर औरों को भी कराने वाली विशेष आत्माओं को, सदा स्नेह के सागर में समा-ो हुए समान बच्चों को स्नेह के सागर बापदादा का -ाद-प्-ार और नमस्ते।

दादि-ों से मुलाकात

आज के दिन क-ा-क-ा -ाद आ-ा? विशेष विल पॉवर के हाथ -ाद आ-ो? विल पॉवर सब का-र्ा सहज करा देती है। ब्रह्मा बाप ज्-ादा -ाद आ-ा -ा बाप-दादा दोनों -ाद रहे? फिर भी ब्रह्मा बाप की -ाद के चरित्र सभी को विशेष -ाद आते रहे। ब्रह्मा बाप ब्रह्मा बना ही तब जब बाप-दादा कम्बाइन्ड हुए। परमात्म-प्रवेशता के साथ ही ब्रह्मा का कर्तव्-ा शुरु हुआ। इस अव्-ाक्त स्वरूप के अव्-ाक्त रूप के चरित्र भी न्-ारे और प्-ारे हैं। २५ वर्ष की सेवा की हिस्ट्री आदि से -ाद करो–कितनी तीव्र गति की हिस्ट्री है। अव्-ाक्त होना अर्थात् तीव्र गति से सर्व का-र्ा होना। सम-ा का परिवर्तन भी फ़ास्ट और सेवा की वृद्धि की गति भी फ़ास्ट। फ़ास्ट हुई है ना? इसलि-ो अव्-ाक्त होने से सम-ा को भी तीव्र गति मिली है तो सेवा को भी तीव्र गति मिली है। अव्-ाक्त पार्ट में आने वाली आत्माओं को भी

पुरुषार्थ में तीव्र गति का भाग-ा सहज मिला हुआ है। अव्-ाक्त पार्ट में आई हुई आत्माओं को लास्ट सो फ़ास्ट, फ़ास्ट सो फ़र्स्ट का वरदान प्राप्त है। (सभा से)

वरदान को का-र्ा में लगाओ, सिर्फ स्मृति तक नहीं। सम-ा प्रमाण वरदान को स्वरूप में लाओ। वरदान को स्वरूप में लाने से स्वत: ही फ़ास्ट गति का अनुभव करेंगे। अव्-ाक्त पालना सहज ही शक्तिशाली बनाने वाली है। इसलि-ो जितना आगे बढ़ना चाहो, बढ़ सकते हो। बापदादा और निमित्त आत्माओं की आप सबके ऊपर विशेष सदा आगे उड़ने की दुआएं हैं। ऐसे है ना? दादि-ों की भी दुआएं हैं। सिर्फ फा-ादा ले लो। मिलता बहुत है, -ाूज़ कम करते हो। सिर्फ बुद्धि के किनारे रखते नहीं रहो, खाओ, खर्च करो। आता है -ाूज़ करना, खर्च करना आता है कि सम्भाल कर रखते हो? बहुत अच्छा, बहुत अच्छा--ो सम्भाल कर रखना है। अच्छाई को स्व-ं प्रति और दूसरों के प्रति का-र्ा में लगाओ। -ाहाँ खर्चना अर्थात् बढ़ाना है। जैसे आजकल का फ़ैशन है ना–जो अमूल-ा चीज़ होती है वह कहाँ रखते हैं? (लॉकर में) -ाूज़ नहीं करते, लॉकर में रखते हुए खुश होते हैं। तो कई बार ऐसे करते हैं–पॉइन्ट बड़ी अच्छी है, विधि बड़ी अच्छी है, सिर्फ बुद्धि के लॉकर में देखकर खुश हो जाते हैं। तो आप सभी लॉकर में रखते हो -ाा -ाूज़ करते हो? अच्छा!

पाण्डव सेना का क-ाा हाल है? (अच्छा है) सिर्फ अच्छा-अच्छा कहने वाले तो नहीं ना। ऐसी सेना तै-ाार हो जो सेकण्ड में जो ऑर्डर मिले कर ले। ऐसे तै-ाार हैं? शक्ति सेना तै-ाार है? शक्ति-ों की सेवा अपनी है, पाण्डवों की सेवा अपनी है। पाण्डवों के सह-ोग के बिना भी शक्ति-ां नहीं चल सकती, शक्ति-ों के सह-ोग के बिना भी पाण्डव नहीं चल सकते।

(दादी जी ने मैक्सिको की कानफ्रेन्स का समाचार बापदादा को सुना-ाा)

अच्छा है साइन्स वाले तो काम में लगे ही हैं। प्र-ोग करने में साइन्स वाले होशि-ार होते हैं ना। तो एक भी अच्छी तरह से -ोगी और प्र-ोगी बन ग-ाा तो बड़े से बड़े माइक का काम करेगा।

(लास एंजिलिस में भूकम्प आ-ाा है) -ो सम-ा के तीव्र गति की निशानि-ां सम-ा प्रति सम-ा प्रकृति दिखा रही है। अच्छा!

अव्-ावक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

ग्रुप नं. १

फल की इच्छा छोड़ रहमदिल बन शुभ भावना का बीज डालते चलो

बापदादा द्वारा सर्व बच्चों को इस संगम-ुग पर विशेष कौन-सा खज़ाना मिला हुआ है? खज़ाने तो बहुत हैं लेकिन विशेष खज़ाना खुशी का खज़ाना है। तो खुशी का खज़ाना कितना श्रेष्ठ मिला है। तो -ाह सदा साथ रहता है -ाा कभी किनारे भी हो जाता है? जब अनगिनत मिलता है तो हर सम-ा खज़ाने को का-र्ा में लगाना चाहिए ना। लोग किनारे इसीलिए रखते हैं कि आइवेल में काम में आ-ोगा। लेकिन आपके पास तो अथाह है। इस जन्म की तो बात छोड़ो लेकिन अनेक जन्म -ाह खुशी का खज़ाना साथ रहेगा। अनगिनत है तो -ूज़ करो ना। बापदादा ने पहले भी सुना-ाा है कि प्राण चले जा-ें लेकिन खुशी नहीं जा-ो। इसलि-ो खुशी को कभी भी किनारे नहीं रखो और ही महादानी बनो। क-ोंकि वर्तमान सम-ा और कुछ भी मिल सकता है लेकिन सच्ची खुशी नहीं मिल सकती। अल्पकाल की खुशी प्राप्त करने के लि-ो लोग कितना सम-ा वा धन खर्च करते हैं फिर भी सच्ची खुशी नहीं मिलती। तो ऐसे आवश-ाकता के सम-ा आप आत्माओं को महादानी बनना है। कैसी भी अशान्त आत्मा, दु:खी आत्मा हो अगर उसको खुशी की अनुभूति करा दो तो कितनी दिल से दुआ-ें देगी। आप दाता के बच्चे हो तो फ्राकदिली से बांटो। बांटना तो आता है ना? तो क-ों नहीं बांटते हो? सम-ा को देख रहे हो? दिल से रहम आना चाहि-ो। जो अशान्ति-दु:ख में भटक रहे हैं वो आपका परिवार है ना। परिवार को सह-ोग दि-ाा जाता है ना। तो वर्तमान सम-ा महादानी बनने के लि-ो विशेष रहमदिल के गुण को इमर्ज करो। आपके जड़ चित्र वरदान दे रहे हैं। तो आप भी चैतन-ा में रहम दिल बन बांटते जाओ। क-ोंकि परवश आत्मा-ें हैं। कभी भी -ो नहीं सोचो कि -ो तो सुनने वाले नहीं हैं, -ो तो चलने वाले नहीं हैं। नहीं, आप रहमदिल बनो, देते जाओ। गा-ाा हुआ है कि भावना का फल मिलता है। तो चाहे आत्माओं में ज्ञान के प्रति, -ोग के प्रति शुभ भावना नहीं भी हो लेकिन आपकी शुभ भावना उनको फल दे देती है। ऐसे नहीं सोचो कि इतना कुछ सेवा की लेकिन फल तो मिला ही नहीं। लेकिन फल एक जैसे नहीं होते। कोई सीज़न का फल होता है, कोई सदा का फल होता है। तो सीज़न का फल सीज़न पर ही फल देगा ना। तो आपने शुभ

भावना का बीज डाला, अगर सीज़न का फल होगा तो सीज़न में निकलेगा ही। वैसे भी देखो जो खेती का काम करते हैं, तो जो सीज़न पर चीज़ निकलने वाली होती है तो -े नहीं सोचते हैं कि ६ मास के बाद -े निकलेगा इसलि-े बीज डालो ही नहीं। तो आप भी बीज डालते चलो। सम-ा पर सर्व आत्माओं को जगना ही है। आपकी रहम भावना, शुभ भावना फल अवश-ा देगी। अगर कोई आपोजिशन भी करता है तो भी आपको अपने रहम की भावना छोड़नी नहीं है और ही सोचो कि -े आपोजिशन -ा इन्सल्ट, गालि-ां--े खाद का काम करेंगी। तो खाद पड़ने से अच्छा फल निकलेगा। जितनी गालि-ां देंगे, उतना आपके गुण गा-ेंगे। इसलि-े हर आत्मा को दाता बन देते जाओ। अच्छा माने तो दें, नहीं। -े तो लेवता हो ग-े? लेने की इच्छा नहीं रखो कि वो अच्छा बोले, अच्छा माने तो दें। नहीं। इसको कहा जाता है दाता के बच्चे मास्टर दाता। चाहे वृत्ति द्वारा, चाहे वा-ाब्रेशन्स द्वारा, चाहे वाणी द्वारा देते जाओ। इतने भरपूर हो ना? सब खज़ाने हैं?

डबल विदेशि-ों को देख बापदादा डबल खुश होते हैं क-ों? डबल पुरुषार्थ करते हैं। एक तो अपना रीति-रस्म परिवर्तन करने का भी पुरुषार्थ करते हैं। बापदादा देखते हैं कि उमंग-उत्साह मैजारिटी में अच्छा है। अगर कभी उमंग-उत्साह बीच-बीच में नीचे-ऊपर होता है तो आज विधि सुनाई कि समा जाओ, स्नेह की गोदी में छिप जाओ, फिर मा-ा आ-ोगी ही नहीं। -े तो सहज है ना। बीज रूप होने में मेहनत है, इसमें मेहनत नहीं है। और कुछ भी नहीं आ-े लेकिन स्नेह में समाना तो आता है कि -े मुश्किल है? (नहीं) तो -े करो। अभी मुश्किल शब्द नहीं बोलना। नीचे आते हो तो छोटी-सी चीज़ बड़ी लगती है, ऊपर चले जाओ तो बड़ी चीज़ भी छोटी लगेगी। फ़रिश्ते हो -ा साधारण मानव हो? (फ़रिश्ता) फ़रिश्ता कहाँ रहता है? ऊपर रहता है -ा नीचे? (ऊपर) तो नीचे क-ों ठहरते हो, अच्छा लगता है? कभी-कभी दिल होती है नीचे आने की? नहीं, फिर क-ों आते हो? बाप का साथ छोड़ते हो तब नीचे आते हो।

तो डबल विदेशि-ों को डबल पुरुषार्थ का प्रत-ाक्ष फल डबल चांस है। इसका फ़ा-ादा लो। इस वर्ष में क-ा करेंगे? डबल सर्विस। महादानी-वरदानी बनेंगे -ा खुद बाप के आगे कहेंगे शक्ति दे दो औरों को भी शक्ति-ां दो। अच्छा है, हिम्मत रखने में नम्बर ले लि-ा। अभी फ़ास्ट पुरुषार्थ कर आगे उड़ते चलो।

ग्रुप नं. २

एक बल एक भरोसे द्वारा सदा एकरस स्थिति का अनुभव करो

सभी एक बल एक भरोसे का अनुभव करते हो? एक बल, एक भरोसे वाले की निशानी क-ा होगी? एक बल, एक भरोसे में रहने वाली आत्मा सदा एक रस स्थिति में स्थित होगी। एकरस स्थिति अर्थात् सदा अचल, हलचल नहीं। तो ऐसे रहते हो कि कभी हलचल, कभी अचल? हलचल के सम-ा एक बल, एक भरोसा कहेंगे -ा अनेक बल, अनेक भरोसा कहेंगे? जब एक बाप द्वारा सर्वशक्ति-ाँ प्राप्त हो जाती हैं तो एक बल, एक भरोसा चाहि-े ना। एक को भूलते हो तभी हलचल होती है। तो अचल रहने वाले हो ना?

-हाँ आपका -ादगार कौन-सा है? अचल घर है -ा हलचल घर है? -ा अचल घर कभी हलचल घर हो जाता है! -ादगार आपका ही है ना। फिर हलचल में क-ों आते हो? प्रैक्टिकल का ही -ादगार बना है ना। तो सदा -े -ाद करो कि एक बल एक भरोसे में रहने वाले हैं। क-ोंकि भक्ति में अनेक के ऊपर भरोसा रखकरके अनुभव कर लि-ा ना तो क-ा मिला? सब कुछ गंवा लि-ा ना। सत-ुग का इतना सारा धन कहाँ गंवा-ा? भक्ति में गँवा-ा ना। अच्छी तरह से अनुभव कर लि-ा ना। तो जब भी कोई ऐसे हलचल की परिस्थिति आती है तो अपने -ादगार अचल घर को -ाद करो। जब -ादगार ही अचल घर है तो मैं कैसे हलचल में आ सकती हूँ! -े तो सहज -ाद आ-ेगा ना।

एकरस स्थिति का अर्थ ही है कि एक द्वारा सर्व सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति-ों के रस का अनुभव करना। तो अनुभव होता है कि बीच-बीच में और कोई सम्बन्ध भी खींचता है? जब सर्व सम्बन्ध एक द्वारा अनुभव होता है तो दूसरे सम्बन्ध में आकर्षण होने की तो बात ही नहीं है। सर्व सम्बन्ध का अनुभव है कि कोई-कोई सम्बन्ध का अनुभव है? सर्व सम्बन्ध से बाप को अपना बना-ा है कि कोई सम्बन्ध किनारे रख दि-ा है? सर्व हैं कि एक-दो में अटेन्शन जाता है? कोई का भाई में, कोई का बच्चे में, कोई का पोत्रे में! नहीं? निभाना अलग चीज़ है, आकर्षित होना अलग चीज़ है। तो नष्टोमोहा हो? पाण्डवों को पैसे कमाने में मोह नहीं है? ट्रस्टी होकर कमाना अलग चीज़ है। लगाव से कमाना, मोह से कमाना अलग चीज़ है।

कभी धन में मोह जाता है? थोड़ा-थोड़ा जाता है? क-ा होगा, कैसे होगा, जमा कर लें, कुछ कर लें, पता नहीं कितने वर्ष के बाद विनाश होता है, दस वर्ष लगते हैं -ा ५० वर्ष लगते हैं.. -ो नहीं आता? नष्टोमोहा बनकर, ट्रस्टी बनकरके चलना और मोह से चलना कितना अन्तर है! नष्टोमोहा की निशानी क-ा होगी? कभी कमाने में, धन सम्भालने में दु:ख की लहर नहीं आ-ोगी। कभी कम, कभी ज़-ादा में दु:ख की लहर आती है? पोत्रा-धोत्रा थोड़ा बीमार हो ग-ा तो दु:ख की लहर आती है? नष्टोमोहा हैं? कुछ भी हो जा-ो बेफ़िक्र हो? नष्टोमोहा अर्थात् दु:ख और अशान्ति का नाम-निशान नहीं। ऐसे हो -ा बनना है? तो एक बल, एक भरोसा अर्थात् ज़रा भी दु:ख के लहर की हलचल नहीं हो। सदा -ो स्मृति स्वरूप हो कि सदा एक बल, एक भरोसे वाले हैं और आगे भी सदा रहेंगे। खुशी रहे कि मैं ही था, मैं ही हूँ और मैं ही बनूँगा। अच्छा!

ग्रुप नं. ३

स्थिति का आधार स्मृति है, स्मृति का परिवर्तन कर कर्म में श्रेष्ठता लाओ

सभी अपने को संगम-ुगी पुरुषोत्तम आत्मा-ें अनुभव करते हो? पुरुषोत्तम अर्थात् पुरुषों में उत्तम पुरुष। तो अभी साधारण नहीं हो पुरुषोत्तम हो। क-ोंकि ब्राह्मण अर्थात् श्रेष्ठ। ब्राह्मणों को सदा ऊंचा दिखाते हैं। मुख वंशावली दिखाते हैं ना। तो ब्राह्मण बन ग-ो अर्थात् श्रेष्ठ बन ग-ो। साधारण पुरुष आप पुरुषोत्तम आत्माओं की पूजा करते हैं क-ोंकि ब्राह्मण अर्थात् पवित्र बन ग-ो ना। तो पवित्रता की ही पूजा होती है। साधारण आत्मा भी पवित्रता को धारण करती है तो महान् आत्मा कहलाती है। तो आप सब पवित्र आत्मा-ें हो ना कि मिक्स आत्मा हो? थोड़ी-थोड़ी अपवित्रता, थोड़ी-थोड़ी पवित्रता! नहीं। पवित्र आत्मा बन ग-ो। तो पवित्रता ही श्रेष्ठता है। पवित्रता ही पूज-ा है। तो -ो नशा रहता है कि हम पुजारी से पूज-ा बन ग-ो? ब्राह्मणों की पवित्रता का गा-ान है। कोई भी शुभ का-र्ा होगा तो ब्राह्मणों से करा-ोंगे। अशुभ का-र्ा ब्राह्मणों से नहीं करा-ोंगे। अशुभ का-र्ा ब्राह्मण करें तो कहेंगे -ो नाम का ब्राह्मण है, काम का नहीं। तो आप नामधारी हो -ा कामधारी? नामधारी ब्राह्मण तो बहुत हैं। लेकिन आप जैसा नाम वैसा काम

करने वाले हो। साधारण आत्मा नहीं हो, विशेष आत्मा हो। -ो खुशी है ना। कल साधारण थे और आज विशेष बन ग-ो। तो विशेष आत्मा समझने से जैसी स्मृति होगी वैसी स्थिति होगी और जैसी स्थिति वैसे कर्म होंगे। चेक करो जब स्थिति कमज़ोर होती है तो कर्म कैसे होते हैं। कर्म में भी कमज़ोरी आ जा-ोगी और स्थिति शक्तिशाली तो कर्म भी शक्तिशाली होंगे। तो स्थिति का आधार है स्मृति। स्मृति खुशी की है तो स्थिति भी खुश। कर्म भी खुशी-खुशी से करेंगे। फ़ाउन्डेशन है स्मृति। तो बाप ने स्मृति बदल ली। साधारण से विशेष आत्मा बने तो स्मृति चेंज हो गई। चाहे कर्म साधारण हों लेकिन साधारण कर्म में भी विशेषता हो। मानो खाना बना रहे हो तो -ो तो साधारण कर्म है ना, सब करते हैं लेकिन आपका खाना बनाना और दूसरों के खाना बनाने में फ़र्क होगा ना। आपके -ाद का भोजन और साधारण भोजन में अन्तर है। वो प्रसाद है, वो खाना है। तो विशेषता आ गई ना। -ाद में जो खाना खाते हो -ा बनाते हो तो उसको ब्रह्मा भोजन कहते हैं। तो सदा -ाद रखना कि पुरुषोत्तम विशेष आत्मा-ें बन ग-ो तो साधारण कर्म कर नहीं सकते।

ग्रुप नं. ४

सदा विघ्न विनाशक बनने के लिए अपने मस्तक पर परमात्म हाथ का अनुभव करो

म्बे में सबसे ज-ादा पूजा किसकी होती है? गणेश की। गणेश को विघ्न विनाशक कहते हैं। आप सब विघ्न विनाशक हो? कोई विघ्न के वश तो नहीं होते हो? विघ्न विनाशक कौन बनता है? जिसमें सर्वशक्ति-ाँ हैं वही विघ्न विनाशक है। तो सर्वशक्ति-ां आपका जन्म-सिद्ध अधिकार हैं। सदा -ो नशा रखो कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ और सर्वशक्ति-ों को सम-ा प्रमाण कार्-ा में लगाओ। ऐसे नहीं कि सम-ा पर कार्-ा में नहीं लगाओ, सम-ा बीत जाने के बाद सोचो कि ऐसे करना चाहि-ो था। तो सभी विघ्न विनाशक हो? फ़लक से कहो कि हम मास्टर विघ्न विनाशक हैं। कितने भी रूप से मा-ा आ-ो लेकिन आप नॉलेजफुल बनो। मा-ा की भी नॉलेज है ना। अच्छी तरह से समझ ग-ो हो -ा

कभी घबरा जाते हो, न-ा रूप समझते हो। मा-ा से घबराते हो? कभी हार, कभी वार–ऐसे तो नहीं? मा-ा का जन्म कैसे होता है, पता है? जानते भी हो कि मा-ा का जन्म ऐसे होता है फिर भी जन्म दे देते हो! मा-ा से प्-ार है क-ा? तो नॉलेजफुल आत्मा कभी भी मा-ा से हार नहीं खा सकती। मा-ाजीत का टाइटल है, मा-ा से हार खाने वाले नहीं। बापदादा का सदा हाथ और साथ है तो सदा मा-ाजीत हैं। तो सदा साथ है -ा कभी अकेले भी हो जाते हो? कम्बाइन्ड रहते हो ना। अपने मस्तक पर सदा ही बाप की दुआओं का हाथ अनुभव करो। तो जिसके ऊपर परमात्म हाथ है वो विघ्न विनाशक होगा ना। जिसके ऊपर दुआओं का हाथ है वो सदा निश्चित और निश्चिन्त रहता है। सभी के मस्तक पर विज-ा का तिलक लगा हुआ है। -ाह अविनाशी तिलक है। तो विज-ा के तिलकधारी अर्थात् विघ्न विनाशक। सदा अमृतवेले विज-ा के तिलक को स्मृति में लाओ। भक्त भी रोज़ तै-ार होकर तिलक ज़रूर लगा-ेंगे। आपका तो अविनाशी तिलक है ही।

सभी सदा खुश रहते हो -ा खुशी कभी कम होती है, कभी बढ़ती है? ब्राह्मण जीवन की खुराक खुशी है। तो सदा खुराक खाते हो -ा कभी-कभी खाते हो? खुश नसीब हैं और खुशी की खुराक खाने वाले हैं और खुशी बांटने वाले हैं – -ो -ाद रहता है? दिल से निकलता है कि मेरे जैसा खुशनसीब और कोई हो नहीं सकता? सारे विश्व में और कोई है? लण्डन की महारानी वा अमेरिका का प्रेज़ीडेन्ट है? कोई नहीं? अगर लण्डन की रानी आपको ताज तख्त दे तो लेंगे? नहीं लेंगे? अभी भी ले लो, भविष्-ा में भी ले लेना। तख्त पर बैठेंगे तो ऑर्डर तो करेंगे ना। (बाबा का तख्त मिला है उस तख्त की ज़रूरत नहीं है) वो तख्त आजकल तख्त नहीं है, तख्ता है। इतना फ़िक्र होता है। और आप बेफ़िक्र बादशाह हो। ऐसी बेफ़िक्र जीवन, सारे कल्प में इस सम-ा जो अनुभव करते हो वो और कोई -ाुग में नहीं है। सत-ाुग में बेफ़िक्र होंगे लेकिन अभी आपको ज्ञान है कि फ़िक्र क-ा है, बेफ़िक्र क-ा है? वहाँ ज्ञान नहीं होगा।

बाम्बे वाले डबल बेफ़िक्र हो! क-ोंकि बाम्बे वालों को पता है कि बाम्बे अगर गई तो हम तो ठीक ही रहेंगे। देखो ना हलचल होती है लेकिन ब्राह्मण तो सेफ़ होते हैं। -ोग-ाुक्त आत्मा स्वत: ही सेफ़ हो जाती है। तो बाम्बे वाले डरते

तो नहीं हैं ना कि सागर आ जा-ोगा! पहले से ही नष्टोमोहा हो ग-ो। अच्छा, बाम्बे वालों ने क-ाा न-ाा प्लैन बना-ाा है? (कार -ात्रा का न-ाा बना-ाा है।) इससे माइक निकलेंगे ना? बाम्बे विश्व में बिज़नेस में नम्बरवन है। तो ज्ञान की बिज़नेस में कितना नम्बर है? वन नम्बर है ना। नम्बर टू तो चन्द्रवंश हो जा-ोगा। नम्बरवन सू-र्विंश। तो सू-र्विंशी हैं -ाा चन्द्रवंशी? सबमें नम्बर है तो इसमें पीछे कैसे हो सकता है। बाम्बे वालों ने साकार पालना भी ली है। -ो भी बाम्बे का भाग-ा है। अभी भी निमित्त बनी हुई बाप समान आत्माओं की पालना मिल रही है ना। तो इसमें भी नम्बरवन हो। देखना, फिर कभी टू, कभी वन नहीं बनना। सदा नम्बरवन रहना। बाम्बे वालों में हिम्मत अच्छी है। सेवा के क्षेत्र में, हर का-र्ा में हिम्मत रखते हैं। और जो हिम्मत रखते हैं उसको बाप की गुप्त मदद स्वत: ही मिलती है। और मदद की निशानी है कि हर का-र्ा सहज होता है। तो सहज लगता है -ाा कभी मुश्किल भी लगता है? मुश्किल को सहज बनाने वाले औरों की मुश्किल को मिटाने वाले हो। तो मुश्किल को सहज करने वाले ही विघ्न विनाशक हैं। अच्छा!

ग्रुप नं. ५

-ाद की शक्ति द्वारा सेकण्ड में मन-बुद्धि को एकाग्र करना और सेवा द्वारा ख़ज़ानों को बढ़ाना--ाह बैलेन्स ही ब्लैसिंग प्राप्त करने का साधन है

दा -ाद और सेवा दोनों का बैलेन्स रखने वाले हो? क-ोंकि -ाद से जो शक्ति-ों की वा गुणों की प्राप्ति होती है वो सेवा द्वारा औरों को देना है। तो दोनों ही अच्छी तरह से चेक करते हो? कि कभी सेवा ज-ाादा होती तो -ोग कम, कभी -ोग ज़-ाादा तो सेवा कम–ऐसे तो नहीं होता? सेवा करने से, जो खज़ाने मिले हुए हैं वह बढ़ते हैं, तो बढ़ाने की विधि आती है ना? तो सेवा में होशि-ार हो -ाा -ाद में होशि-ार हो? -ाद की शक्ति का अर्थ है कि जहाँ बुद्धि को लगाना चाहो, वहाँ लग जा-ो। ऐसी शक्ति है? जब चाहो, जहाँ चाहो, अपनी बुद्धि को लगा सकते हो -ाा टाइम लगेगा? कितने टाइम में लगा सकते हो? कोई भी वा-ुमण्डल है लेकिन कैसे भी वा-ुमण्डल के बीच अपने मन को, बुद्धि को कितने सम-ा में एकाग्र कर सकते हो? (सेकण्ड में) कहते हो -ाा करते

हो? कहना तो सहज है लेकिन एकाग्रता की शक्ति है वा नहीं है–वह सम-ा पर मालूम पड़ता है। परिस्थिति हलचल की हो, वा-ुमण्डल तमोगुणी हो, मा-ा अपने हिम्मत से अपना बनाने का प्र-ात्न कर रही हो फिर सेकण्ड में एकाग्र हो सकते हो -ा टाइम लगेगा? -ो अभ-ास सदा करते रहो तो सम-ा पर शक्ति का-र्ा में ला सकते हो। इसको कहा जाता है जब चाहे, जहाँ चाहे वहाँ स्थित हो सकते हैं। कितना भी व्-ार्थ संकल्पों का तूफ़ान हो लेकिन सेकण्ड में तूफ़ान आगे बढ़ने का तोहफ़ा बन जा-ो। ऐसी कन्ट्रोलिंग पॉवर हो तो ऐसी शक्तिशाली आत्मा कभी -ो संकल्प भी नहीं ला-ेगी कि चाहते तो नहीं, लेकिन हो जाता है। जो सोचा वो हुआ। ऐसे नहीं, सोचते हैं नहीं होना चाहि-ो और हो जा-ो। क-ोंकि अगर सम-ा पर कोई भी शक्ति काम में नहीं आई तो प्राप्ति के बजा-ा पश्चाताप करना पड़ता है। तो प्राप्ति स्वरूप बनो। बापदादा ने सभी आत्माओं को सर्वशक्ति-ाँ वर्से में दे दी। तो वर्से वाली चीज़ सदा -ाद रहती है। फ़लक से कहेंगे ना कि -ो शक्ति-ाँ हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार हैं।

सदा 'एक बाप दूसरा न कोई' इसी अनुभव में रहते हो ना? बस एक है, कि दूसरा-तीसरा भी हो जाता है? एक बाप ही संसार बन ग-ा। कोई आकर्षण नहीं, कोई कर्मबन्धन नहीं। अपने कोई कमज़ोर संस्कार का भी बन्धन नहीं? कोई कमज़ोर संस्कार हैं? कोई पुराना संस्कार अभी तक है? कभी थोड़ा रोब आता है? कभी छोटों के ऊपर रोब आता है? (क्रोध आता है) क्रोध तो रोब से भी बड़ा है। क्रोध आता है तो इसका अर्थ है कर्म का बन्धन है। पाण्डवों में क्रोध आता है और माताओं में मोह आता है। अभिमान भी आता है–मैं पुरुष हूँ, कभी बच्चों पर, कभी माताओं पर अभिमान आता है मैं बड़ा हूँ। अधिकार रखते हो कि -ो क-ों कि-ा! मेरी है, -ो समझते हो? सेवा के साथी हैं, न कि मेरे का अधिकार है। मेरा समझने से ही क्रोध, अभिमान -ा मोह आता है। अगर मेरा नहीं तो क्रोध भी नहीं आ-ेगा। माता-ें, बच्चों के ऊपर क्रोध करती हो? जब बहुत चंचलता करते हैं तो क्रोध नहीं करती?

जब बाप संसार है, मेरा बाबा है तो और सब मेरा-मेरा एक मेरे बाप में समा जाता है। तो अभी दिल में क-ा आता है? मेरा -ा तेरा? जैसे भक्ति में कहते हैं तेरा लेकिन मानते हैं मेरा तो ऐसे तो नहीं करते ना। मेरापन ही बोझ है, तो बोझ

को छोड़ना अच्छी बात है ना। तो सदा -ाह -ाद रखो कि हम -ाद और सेवा का बैलेन्स रखने वाले बाप के ब्लैसिंग के अधिकारी आत्मा-ें हैं।

ग्रुप नं. ६

सन्तुष्ट रहने का दृढ़ संकल्प लो तो सफ़लता सदा साथ रहेगी

कभी आवाज़ से परे रहना सहज अनुभव करते हो वा आवाज़ में आना सहज अनुभव करते हो? सहज क-ाा है? आवाज़ में आना -ाा आवाज़ से परे होना? आवाज़ से परे होना अर्थात् अशरीरी स्थिति का अनुभव होना। तो शरीर के भान में आना जितना सहज है, उतना ही अशरीरी होना भी सहज है कि मेहनत करनी पड़ती है? सेकण्ड में आवाज़ में तो आ जाते हो लेकिन सेकण्ड में कितना भी आवाज़ में हो, चाहे स्व-ं हो -ाा वा-ुमण्डल आवाज़ का हो लेकिन सेकण्ड में फुल स्टॉप लगा सकते हो कि कॉमा लगेगी, फुल स्टॉप नहीं? इसको कहा जाता है फ़रिश्ता वा अव्-ाक्त स्थिति की अनुभूति में रहना, व्-ाक्त भाव से सेकण्ड में परे हो जाना। इसके लि-े -े नि-ाम रखा हुआ है कि सारे दिन में ट्रैफ़िक ब्रेक का अभ्-ाास करो। -े क-ों करते हो? कि ऐसा अभ्-ाास पक्का हो जा-े जो चारों ओर कितना भी आवाज़ का वातावरण हो लेकिन एकदम ब्रेक लग जा-े। आत्मा का आदि वा अनादि लक्षण तो शान्त है, तो सेकण्ड में ऑर्डर हो कि अपने अनादि स्वरूप में स्थित हो जाओ तो हो सकते हो कि टाइम लगेगा? सुना-ाा था ना कि लगाना चाहें बिन्दी और लग जा-े क्वेश्चन मार्क तो क-ाा होगा? इसको किस अवस्था का अभ्-ाास कहेंगे? सभी फ़रिश्ते स्थिति का अभ्-ाास करते हो? अभी और अभ्-ाास करना है कि जितना सम-ा चाहे उतना सम-ा उस विधि से स्थित हो जा-ें। अभी देखो कोई भी प्रकृति की आपदा -ाा परिस्थिति की आपदा आती है तो अचानक आती है ना, और दिन प्रतिदिन अचानक -ाह प्रकृति अपनी हलचल बढ़ाती जाती है। -ाह कम नहीं होनी है, बढ़नी ही है। अचानक आपदा आ जाती है। तो ऐसे सम-ा पर समाने वा समेटने की शक्ति की आवश्-ाकता है। और कहाँ भी बुद्धि नहीं जा-े, बस बाप और मैं, बुद्धि को जहाँ लगाना चाहें वहाँ लग जा-े। क-ों-क-ाा में नहीं जा-े, -े क-ाा हुआ, -े कैसे होगा,

होना तो नहीं चाहि-ो, हो कैसे ग-ाा–इसको ब्रेक कहेंगे? तो उड़ती कला के लि-ो ब्रेक बहुत पॉवर फुल चाहि-ो। जब पहाड़ी पर ऊंचे चढ़ते हैं तो बार-बार क-ाा कहते हैं कि ब्रेक चेक करो, ब्रेक चेक करो। तो ऊंची अवस्था में जा रहे हो ना तो बार-बार -ो ब्रेक चेक करो। कोई भी संकल्प वा संस्कार निगेटिव से पॉजिटिव में परिवर्तन कर सकते हैं और कितने सम-ा में कर सकते हैं? सम-ा है एक सेकण्ड का और आप पांच सेकण्ड में करो तो क-ाा होगा? तो अटेन्शन इस परिवर्तन शक्ति का चाहि-ो। पहले स्व-ां को परिवर्तन करो तब विश्व को परिवर्तन कर सकते हो। तो स्व-परिवर्तक बने हो? पहले है स्व-परिवर्तक उसके बाद है विश्व परिवर्तक। क-ोंकि अनुभव होगा कि व्-ार्थ संकल्प की गति बहुत फ़ास्ट होती है। एक सेकण्ड में कितने व्-ार्थ संकल्प चलते हैं, अनुभव है ना। फ़ास्ट चलते हैं ना। तो ऐसे फ़ास्ट गति के सम-ा पॉवरफुल ब्रेक लगाकर परिवर्तन करने का अभ्-ास चाहि-ो। तो आज के दिन फ़रिश्तेपन का अभ्-ास कि-ा? सहज अनुभव हुआ कि मेहनत लगी? अभी सर्व आत्मा-ें आप शान्ति-सुख देने वाली फ़रिश्ते आत्माओं को -ाद करती हैं कि कोई फ़रिश्ते आ-ें और वरदान देकर जा-ें। तो वो फ़रिश्ते कौन हैं? आप हो? नशा रहता है ना कि हम ही कल्प-कल्प की श्रेष्ठ आत्मा-ें हैं। कितने बार -ाह पार्ट बजा-ाा है? -ाद है कि भूल ग-ो? फ़रिश्ता स्वरूप कितना प्-ारा है। क-ोंकि फ़रिश्ता दाता होता है, लेवता नहीं होता है। तो देने वाले दाता हो ना कि लेकर देने वाले हो? बाप से लेना अलग बात है। और आत्मा-ें कुछ दें तो आप दो ऐसे तो नहीं? फ़रिश्ता अर्थात् सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। तो सन्तुष्ट रहते हो कि कोई-कोई बात में असन्तुष्ट भी हो जाते हो? कुछ भी नीचे-ऊपर हो जा-ो, असन्तुष्ट होंगे? कोई इन्सल्ट कर दे तो भी सन्तुष्ट रहेंगे? कोई नीचे-ऊपर करने की कोशिश करे तो सन्तुष्ट रहेंगे? पक्का? कोई कमी हो जा-ो तो भी सन्तुष्ट रहेंगे? देखो, सोच-समझकर जवाब दो। कोई टीचर ने आपको कम पूछा, कम बोला तो सन्तुष्ट होंगे -ाा असन्तुष्ट होंगे? रिकॉर्ड मंगा-ें? कुछ भी हो जा-ो, दाता के बच्चे दाता हैं तो किसी भी बात में असन्तुष्ट नहीं हो सकते। सन्तुष्टता ब्राह्मणों का विशेष लक्षण है। स्व-ां से भी सन्तुष्ट और औरों से भी सन्तुष्ट। जो पार्ट मिला है उसमें सन्तुष्ट रहना ही आगे बढ़ना है। ऐसे सन्तुष्ट हो? माता-ें सन्तुष्ट देवी हो ना? सन्तोषी मां का पूजन होता है, वो कौन

हैं? आप ही हो ना। तो कुछ भी हो जा-ो अपनी विशेषता को सदा साथ रखो। अगर दृढ़ संकल्प है तो जहाँ दृढ़ता है वहाँ सफ़लता है ही। दृढ़ संकल्प रखो कि सन्तुष्टता को कभी छोड़ना नहीं है तो सफ़लता आपके सदा ही साथ रहेगी। संकल्प में भी दृढ़ता, बोल में भी दृढ़ता और कर्म में भी दृढ़ता। ऐसे नहीं कि संकल्प तो दृढ़ कि-ाा था लेकिन कर्म में थोड़ा नीचे-ऊपर हो ग-ाा। नहीं। इस वर्ष सदा सन्तुष्ट रहना अर्थात् सफ़ल रहना, सफ़लता को नहीं छोड़ना है। कितना भी कड़ा पेपर आ जा-ो लेकिन सन्तुष्ट रहना है और सन्तुष्ट करना है। क-ोंकि आपका टाइटल है विश्व कल-ाणकारी।

जैसे आज के दिन को स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस कहते हैं तो सारा वर्ष ही समर्थ दिवस मनाना। व्यर्थ समाप्त। दृढ़ संकल्प अर्थात् बहुत तीव्र पुरुषार्थ के संकल्प वाले। तो पुरुषार्थी नहीं बनना, तीव्र पुरुषार्थी। अच्छा!

कितनी भी बड़ी कैसी भी
परिस्थिति हो प-ाार से, स्नेह से परिस्थिति
रूपी पहाड़ भी परिवर्तन हो पानी समान हल्का बन
सकता है। पत्थर को पानी बना सकते हो। कैसा भी मा-ाा
का विकराल रूप वा रॉ-ाल रूप सामना करे तो सेकण्ड
में स्नेह के सागर में समा जाओ तो सामना करने की
मा-ाा की शक्ति समाप्त हो जा-ोगी। आपके
समाने की शक्ति छू-मन्त्र नहीं लेकिन
शिव-मन्त्र बन जा-ोगी।

18.1.95

ज्ञान सरोवर – उद्घाटन के शुभ मुहूर्त्त पर – अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य प्रात: 11.00 बजे

आज स्नेह सम्पन्न दिवस पर स्नेह के सागर बापदादा अपने अति स्नेही, स्नेह में समाए हुए लवलीन बच्चों से मिलने आए हैं। सबके स्नेह के गीत बापदादा सुनते रहे हैं और सुनते रहेंगे। हर एक बच्चे का स्नेह बापदादा देख, बाप भी गीत गाते हैं वाह मेरे स्नेही बच्चे वाह! बच्चों ने भी आज के समर्थ दिवस को सेवा में साकार किया है और करते रहेंगे। ब्रह्मा बाप भी बच्चों के गुणगान करते हैं। लेकिन साकार रूप से अव्यक्त रूप में और समीप वा साथ का विशेष अनुभव करा रहे हैं। क्या बच्चों को ऐसे लगता है कि बाप साथ नहीं है? लगता है? साथ जन्म लिया है, साथ सेवाधारी साथी रहे हैं और आगे भी साथ-साथ हैं और साथ चलेंगे। ब्रह्मा बाप को भी अकेला अच्छा नहीं लगता। आप लोगों को लगता है अकेले हैं? साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ-साथ राज्य करेंगे। शिव बाप को आराम देंगे और आपके साथ ब्रह्मा बाप भी राज्य करेंगे। अपना राज्य याद है ना? आज सेवाधारी हैं और कल राज्य अधिकारी हैं। अपना राज्य सामने दिखाई दे रहा है ना? अपने राज्य का वो स्वर्ग का स्थान, स्वर्ग का दिव्य शरीर रूपी चोला सबके सामने स्पष्ट है ना। बस धारण किया कि किया। ऐसे अनुभव होता है ना? अपना भविष्य स्पष्ट है ना? आज वर्तमान है और कल भविष्य वर्तमान हो जायेगा–निश्चय है ना? पक्का निश्चय है?

सब पुराने-पुराने पक्के आए हैं ना। बापदादा को भी, विशेष ब्रह्मा बाप को भी खुशी है कि स्थापना के एक हैं आदि साथी रत्न, जो सामने बैठे हैं और दूसरे हैं स्थापना की वृद्धि के श्रेष्ठ रत्न। तो इस संगठन में ब्रह्मा बाप दोनों प्रकार के रत्नों को देख हर्षित हो रहे हैं। और बच्चे भी कितने उमंग-उत्साह से, शरीर का भी, सैलवेशन का भी ख्याल न करते हुए ठण्डी-ठण्डी हवाओं में पहुँच गए। ये ठण्डी हवाएं आप बच्चों से सलाम करने आती हैं। वैसे भी देखो जब राज्य तख्त पर बैठते हैं तो पीछे से क्या होता है? चंवर झुलाते हैं ना, तो उससे ठण्डी-ठण्डी हवाएं तो होती है। तो ये ठण्डी हवाएं भी चंवर झुलाने आती हैं। क्योंकि आप सब भी ऊंचे ते ऊंची विशेष आत्माएं हो। नशा है ना? तो आज ब्रह्मा बाप विशेष अपने जन्म के साथी और सेवा के साथी (सेवा के निमित्त पहले रत्न और जन्म के समय के पहले रत्न) दोनों को देख-देख हर्षित होते हैं।

अच्छा, यह हाल भी राज दरबार माफिक बनाया है। (ज्ञान सरोवर का ऑडोटोरियम हाल) राज दरबार लगती है तो गैलरी में बैठते हैं, तो गैलरी वाले भी अच्छे लग रहे हैं। (हाल में सभी भाई बैठे हैं, मातायें सब बाहर बैठी हैं) अच्छा आज तो माताओं के त्याग का भाग्य उन्हों को अभी मिल ही जाएगा। अच्छी तरह से तपस्या कर ही रही हैं। तपस्या का फल मिल जाएगा। ठण्डी-ठण्डी हवा आ रही है तो धूप भी आ रही है। अच्छा।

ज्ञान सरोवर कहेंगे या स्नेह का सरोवर कहेंगे? ज्ञान सरोवर में स्नेह का सरोवर अच्छा है। ये ज्ञान सरोवर सेवा का विशेष लाइट हाउस और माइट हाउस है। इस धरनी से अनेक आत्माओं के भाग्य का सितारा चमकेगा। अनेक आत्माएं अपने बिछुड़े हुए बाप से मिलन मनायेंगी। अनेक आत्माओं के दु:ख दूर करने वाली धरनी है। सरोवर में आते ही सुख की लहरों में लहराने का अनुभव करते रहेंगे। इस ज्ञान सरोवर द्वारा तीन प्रकार के लोग, तीन प्रकार की प्राप्ति के अधिकारी बनेंगे–कोई वर्से के अधिकारी, कोई वरदानों के अधिकारी और कोई सिर्फ दुआओं के अधिकारी। तो तीन प्रकार के प्राप्ति सम्पन्न। ये श्रेष्ठ सरोवर है। साधारण आत्माएं आयेंगी और फ़रिश्ता जीवन का अनुभव कर जायेंगी। साथ-साथ अनेक ब्राह्मण आत्माएं तपस्या के सूक्ष्म अनुभूतियों द्वारा अव्यक्त पालना और सूक्ष्म योग के सहज अनुभव और प्राप्तियों का लाभ लेंगी। कई ब्राह्मण आत्माओं की श्रेष्ठ आशायें स्व उन्नति की पूर्ण होने का साधन बहुत श्रेष्ठ है। स्थान तो कॉमन है लेकिन स्थिति श्रेष्ठ अनुभव कराने वाला है। विधिपूर्वक ज्ञान के नॉलेज को विश्व में प्रत्यक्ष करने का स्थान है। और सबसे पहला फायदा तो बाप और बच्चों के मिलने का है। देखो, डबल संख्या में मिल तो रहे हैं ना! चाहे बाहर बैठे हैं या कहाँ भी रहे हैं, डबल संख्या तो है ना। तो सबसे प्रत्यक्षफल बच्चों की संख्या डबल मिलन मना रही है। समझा? ऐसे सरोवर में, सरोवर बनाने वालों को, सहयोग देने वालों को, संकल्प से हिम्मत दिलाने वालों को, स्नेह के हाथों से सरोवर को सम्पन्न करने वाले देश विदेश के बच्चों को पद्मगुणा मुबारक हो, मुबारक हो।

यह पहला ही स्थान है जिसमें छोटे बच्चों से लेकर जो भी ब्राह्मण हैं उनके सहयोग का तन-मन-धन लगा है। तन से इंट नहीं भी उठाई है लेकिन तन से अपने-अपने साथियों को साथी बनाया है, उमंग दिलाया है तो ऐसे स्नेह, सहयोग, शक्ति की बूँद-बूँद से सजा हुआ सरोवर श्रेष्ठ सफलता का अनुभव कराता रहेगा। तो सभी सहयोगियों को, कोने-कोने के विदेश, देश वालों को और विशेष जिन्होंने ठण्डी-ठण्डी हवाओं में, बारिश में भी हिम्मत नहीं हारी है, उन्हों को विशेष मुबारक है, मुबारक है। बापदादा जानते हैं बच्चों ने थोड़ी तकलीफ तो उठाई लेकिन प्यार से उठाई है। मोहब्बत में मेहनत का अनुभव नहीं किया है और जहाँ हिम्मत है वहाँ बापदादा की पद्मगुणा मदद भी है ही। इसलिये बापदादा मसाज़ करते रहे हैं, करते रहेंगे। अच्छा, यहाँ के इंजीनियर्स हाथ उठाओ। समय पर सम्पन्न करने की बहुत-बहुत मुबारक हो। आपको बैठने योग्य तो बना कर दे दिया ना! बाप तो आ गए ना! वायदा ही ये था। आप सब भी इन्हों को मुबारक दे रहे हो ना! जिन्होंने हाल को सजाया वो कहाँ है? ये मुन्नी पार्टी है। देखो, स्नेह का सरोवर है ना तो कलकत्ता से यहाँ फूल आ गए। (कलकत्ता से बहुत सुन्दर रंग-बिरंगे फूल आये हैं जिससे सारी स्टेज सजी हुई

है) अच्छा! आप सबको भी पहुँचने की मुबारक है और माताओं को पद्मगुणा मुबारक है।
(जाल मिस्त्री, जिन्होंने हाल में साउण्ड का प्रबन्ध किया है) देखो अगर इनकी हिम्मत नहीं होती तो आप मुरली नहीं सुन सकते थे। सभी मुरली के पीछे तो दीवाने हैं ना। मुरली का साधन सबसे श्रेष्ठ है। कितना अच्छा प्रबन्ध किया है। आराम से सुनने आ रहा है। बाहर भी सुनाई दे रहा है। ये तो बहुत अच्छा प्रबन्ध किया है। जो भी सेवा के निमित्त हैं एक-एक डिपार्टमेन्ट का नाम नहीं लेते हैं लेकिन हर एक समझे मुझे स्नेह और सहयोग की मुबारक। अच्छा, सबसे पहली मुबारक किसको दें? दादी को। (बापदादा को) बापदादा तो देने वाला है ना। बापदादा सदा कहते हैं कि बच्चों का नम्बरवन सर्वेन्ट है तो बाप है। बाप तो सदा सेवाधारी है लेकिन बच्चे भी सेवा में बाप से भी आगे सहयोगी हैं। क्या एक-एक का नाम लें लेकिन दिल में एक-एक बच्चे का नाम ले रहे हैं और याद-प्यार दे रहे हैं। सभी डिपार्टमेन्ट को मुबारक है। लाइट के बिना भी काम नहीं, माइक के बिना भी काम नहीं। लाइट, माइट, माइक सभी को मुबारक।
(टीचर्स से) आप लोग नहीं होते तो सेन्टर्स नहीं खुलते। एक-एक ने देखो कितने सेन्टर्स खोले हैं। यहाँ सेवा की राजधानी और वहाँ राज्य की राजधानी होगी। अच्छा। पाण्डव भी देख रहे हैं। अच्छे-अच्छे पाण्डव भी पहुँच गये हैं। पाण्डव के बिना भी गति नहीं लेकिन पाण्डवों ने शक्तियों को आगे रखा है। आप लोगों ने रखा है कि बाप ने रखा है? फालो फादर किया है। वैसे आप सभी भी बाप के समीप बैठे हो। ऐसे नहीं समझना ये ही हैं समीप। लेकिन जो सामने हैं वो अति समीप हैं।
डबल फारेनर्स भी आए हैं। यह भी कमाल कर रहे हैं। देश-विदेश में प्रत्यक्ष करने की सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं और करते रहेंगे। अच्छा! (फिर बापदादा ने ज्ञान सरोवर की विशाल स्टेज पर खड़े होकर इंजीनियर्स के साथ मोमबत्ती जलाई तथा मुख्य टीचर्स एवं दादियों के साथ केक काटी, फिर मुख्य दादियां बापदादा के साथ हाल के बाहर प्लाज़ा में आई, जहाँ पर बापदादा ने 2 हज़ार से भी अधिक संख्या में बैठी हुई माताओं से हाथ हिलाते हुए मुलाकात की तथा ध्वज़ फहराया, तत्पश्चात् जो महावाक्य उच्चारण किये वह इस प्रकार हैं):-
बापदादा, आप सभी बच्चों के दिल में जो बाप के स्नेह का झण्डा लहरा रहा है, उसको देख हर्षित हो रहे हैं। यह सेवा के लिए है और बाप बच्चों के बीच में दिल में स्नेह का झण्डा है। तो जैसे यह फ्लैग सेरीमनी करते हो तो ऊंचा लहराते हो ना, ऐसे ही सदा स्नेह में ऊंचे ते ऊंचा लहराते रहो। यह झण्डा भी बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा है। यह कपड़े का झण्डा है लेकिन इस कपड़े के झण्डे में आप सबका आवाज़ समाया हुआ है कि ''बाप आ गये हैं।'' यही प्रत्यक्षता का झण्डा अभी कोने-कोने में लहरायेगा। और आप सभी वह लहराया हुआ प्रत्यक्षता का झण्डा देखेंगे, सुनेंगे, हर्षित होंगे। तो आज ज्ञान सरोवर में है, कल विश्व में यह झण्डा लहरायेगा। आप सभी को तपस्या करनी पड़ी उसकी मुबारक लेकिन बहुत आराम से अच्छे बैठे हो और जितना आपको देखने में आ रहा है उतना अन्दर पीछे वालों को नहीं। आप बाहर नहीं थे लेकिन दिल के अन्दर थे। सब बहुत-बहुत खुशनसीब हो इसलिये सदा खुशी बांटते रहना। खुश रहना और खुशी बांटते रहना। (फिर बापदादा ने चारों ओर बने भवनों पर अपनी दृष्टि डाली तथा पुन: हाल में आकर सभी इंजीनियर्स को अपने हस्तों से टोली खिलाई तथा विदाई ली)

''सदा समर्थ रहने की सहज विधि– शुभचिंतन करो और शुभचिंतक बनो''

18.01.96

आज स्नेह सम्पन्न स्मृति दिवस है। चारों ओर के बच्चों के स्नेह का, दिल का आवाज़ बापदादा के पास पहुँच गया है। यह स्नेह सुख स्वरूप स्नेह है। बापदादा इस दिवस को स्मृति दिवस के साथ-साथ समर्थी दिवस कहते हैं। क्योंकि ब्रह्मा बाप ने अपने साकार स्वरूप में सर्व कार्य करने की समर्थियाँ अर्थात् शक्तियाँ साकार रूप में बच्चों को अर्पण किया। इस दिवस को सन शोज़ फादर के वरदान का दिन कहा जाता है। साकार रूप में बच्चों को आगे किया और फरिश्ता रूप में अपने बच्चों की और विश्व की सेवा आरम्भ किया। ये 18 जनवरी का दिवस ब्रह्मा बाप के सम्पूर्ण नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप का रहा। जैसे गीता के 18 अध्याय का सार है – भगवान ने अर्जुन को नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनाया। तो ये 18 का यादगार है कि ब्रह्मा बाप कितना ही बच्चों के प्रति अति स्नेही रहे, जो बच्चे अनुभवी हैं कि सदा सेवा के निमित्त बच्चों को कितना याद करते – अनुभव है ना! मोह नहीं रहा लेकिन दिल का प्यार रहा। क्योंकि मोह उसको कहा जाता है जिसमें अपना स्वार्थ हो। तो ब्रह्मा बाप का अपना स्वार्थ नहीं रहा, लेकिन बच्चों में सेवा अर्थ अति स्नेह रहा। फिर भी साथ रहते, बच्चों को सामने देखते भी कोई देह के रूप में याद सताई नहीं। एकदम न्यारा और प्यारा रहा। इसलिए कहा जाता है स्मृति स्वरूप नष्टोमोहा। कोई मेरापन नहीं रहा, देहभान से भी नष्टोमोहा। तो ये दिवस ऐसे फालो फादर का पाठ पढ़ाने का दिवस रहा।

ये अव्यक्त दिवस दुनिया की अन्ज़ान आत्माओं को परमात्म कार्य की तरफ जगाने का रहा। क्योंकि मैजारिटी लोग ब्रह्मा बाप को देखकर यही सोचते या समझते थे कि इन्हों का परम आत्मा ब्रह्मा है। ये ब्रह्माकुमारियाँ, ब्रह्मा को ही भगवान मानती हैं। और ब्रह्मा ने साकार में पार्ट परिवर्तन किया तो क्या सोचने लगे कि अभी तो ब्रह्माकुमारियों का भगवान चला गया और ये

ब्रह्मावुमारियों का कार्य आज नहीं तो कल समाप्त हो जायेगा। लेकिन आप जानते हैं कि इन्हों का करावनहार ब्रह्मा द्वारा भी परमात्मा था, है और अन्त तक रहेगा। तो ये परमात्म कार्य है, व्यक्ति का कार्य नहीं है। ये पहचान ब्रह्मा बाप के साकार पार्ट परिवर्तन होने के बाद समझते हैं कि इन्हों को कोई शक्ति चला रही है, अभी भी बिचारे परमात्मा को नहीं जानते। लेकिन कोई शक्ति कार्य करा रही है, वो कौन-सी शक्ति है, उसको भी देख रहे हैं, सोच रहे हैं और आख़िर तो समझना ही है। तो किसका कार्य है? ब्रह्मा बाप का या परम आत्मा का ब्रह्मा द्वारा? किसका कार्य है?

जो बच्चे साकार के बाद में आये हैं वो सोचते हैं कि ब्रह्मा बाबा ने अपना साकार पार्ट इतना जल्दी क्यों पूरा किया? हम तो देखते ना! हम तो मिलते ना! सोचते हो ना? लेकिन कल्प पहले का भी गायन है कि कौरव सेना के निमित्त बने हुए महावीर का कल्याण किस द्वारा हुआ? शक्ति द्वारा हुआ ना! तो शक्तियों का पार्ट ड्रामा में साकार रूप में नूँधा हुआ है। और सब मानते भी हैं कि मातृ शक्ति के बिना इस विश्व का कल्याण होना असम्भव है। तो ब्रह्मा बाप फरिश्ता क्यों बना? साकार पार्ट परिवर्तन क्यों हुआ? अगर ब्रह्मा बाप फरिश्ता रूप नहीं धारण करता तो आप इतनी आत्मायें यहाँ पहुँच नहीं पाती। क्योंकि वायुमण्डल की भ्रान्तियाँ इस विश्व क्रान्ति के कार्य को हल्का कर रही थी। तो ब्रह्मा बाप का फरिश्ता बनना आप ज्यादा से ज्यादा बच्चों के भाग्य खुलने का कारण रहा। अभी फरिश्ते रूप में जो सेवा की फास्ट गति है वो देख रहे हो ना! फास्ट गति हुई या कम हुई है? फास्ट हुई है ना! तो फास्ट गति हुई तभी आप यहाँ पहुँचे हो। नहीं तो सोये हुए थे अच्छी तरह से। तो आज का दिवस ऐसा नहीं है जैसे लोग मनाते हैं – चला गया, चला गया। लेकिन उमंग-उत्साह आता है कि फालो फादर, हम भी ऐसे स्मृति स्वरूप नष्टोमोहा बनें। ये प्रैक्टिकल पाठ पढ़ने का दिवस है।

आज आप किसी के भी दिल से दु:ख के आंसू निकले? निकले या अन्दर-अन्दर थोड़ा आया! जिसको दु:ख की थोड़ी भी लहर आई वो हाथ उठाओ। दु:ख हुआ? नहीं हुआ? आज के दिन तो ब्रह्मा बाप को सेवा का साथी बनने का दिन है। आप सब साथी हो कि साक्षी हो? सेवा में साथी और माया के

परिस्थितियों से साक्षी। माया को तो वेलकम किया है ना कि घबराते हो–हाय, क्या हो गया! थोड़ा-थोड़ा घबराते हो? माया के हल्के-हल्के रूपों को तो आप भी जान गये हो और माया भी सोचती है कि ये जान गये हैं लेकिन जब कोई भी विकराल रूप की माया आवे तो सदा साक्षी होकर खेल करो। जैसे वो कुश्ती का खेल होता है ना, देखा है कि दिखायें? यहाँ बच्चे करके दिखाते हैं ना! तो समझो कि ये कुश्ती का खेल, खेल रहे हैं, अच्छी तरह से मारो। घबराओ नहीं, खेल है। तो साक्षी होकर खेल करने में मज़ा आता है और माया आ गई, माया आ गई तो घबरा जाते हैं। कुछ भी ताकत अभी माया में नहीं है। सिर्फ बाहर का शेर का रूप है लेकिन बिल्ली भी नहीं है। सिर्फ आप लोगों को घबराने के लिए बड़ा रूप ले आती है फिर सोचते हो पता नहीं अब क्या होगा! तो यह कभी नहीं कहो – क्या करूँ, कैसे होगा, क्या होगा.., लेकिन बापदादा ने पहले भी यह पाठ पढ़ाया है कि जो हो रहा है वो अच्छा और जो होने वाला है वो और अच्छा। ब्राह्मण बनना अर्थात् अच्छा ही अच्छा है। चाहे बातें ऐसी होती हैं जो कभी आपके स्वप्न में भी नहीं होती और कई बातें ऐसे होती हैं जो अज्ञान काल में नहीं होगी लेकिन ज्ञान के बाद हुई हैं, अज्ञानकाल में कभी बिज़नेस नीचे-ऊपर नहीं हुआ होगा और ज्ञान में आने के बाद हो गया, घबरा जाते हैं – हाय, ज्ञान छोड़ दें! लेकिन कोई भी परिस्थिति आती है उस परिस्थिति को अपना थोड़े समय के लिये शिक्षक समझो। शिक्षक क्या करता है? शिक्षा देता है ना! तो परिस्थिति आपको विशेष दो शक्तियों के अनुभवी बनाती है – एक–सहनशक्ति, न्यारापन, नष्टोमोहा और दूसरा–सामना करने की शक्ति का पाठ पढ़ाती है जिससे आगे के लिए आप सीख लो कि ये परिस्थिति, ये दो पाठ पढ़ाने आई है। और जो कहते रहते हो हम तो ट्रस्टी हैं, मेरा कुछ नहीं है, ठगी से तो नहीं कहते! दिल से कहते हो? ट्रस्टी हो कि थोड़ा गृहस्थी हो? कभी गृहस्थी बन जाते कभी ट्रस्टी बन जाते?

न्यु इयर में बापदादा को दो-चार खिलौने दिये थे, उसमें क्या था कि एक तरफ करो तो भाई है, दूसरे तरफ करो तो फीमेल है, एक ही खिलौना बदल जाता था। एक सेकण्ड में वो हो जाता, एक सेकेण्ड में वो हो जाता। तो आप ऐसे खिलौने तो नहीं हो, अभी-अभी गृहस्थी, अभी-अभी ट्रस्टी। थोड़ा-थोड़ा,

कभी-कभी तो हो जाता है? घबराते हो ना तो माया समझ जाती है कि ये घबरा गया है, मारो अच्छी तरह से। इसलिए घबराओ नहीं। ट्रस्टी हैं अर्थात् पहले से ही सब कुछ छूट गया। ट्रस्टी माना सब बाप के हवाले कर दिया। मेरा क्या होगा! – बस गा गा आता है ना तो गड़बड़ होती है। सब अच्छा है और अच्छा होना ही है, निश्चिन्त है – इसको कहा जाता है समर्थ स्वरूप। तो आज का दिन कौन सा है? समर्थ बनने का, नष्टोमोहा होने का। सिर्फ बाबा बहुत याद आये, गीत गाने का नहीं है। तो ब्रह्मा बाप का फरिश्ता रूप होना ड्रामा में परमात्म कार्य को प्रत्यक्ष करने का निमित्त कारण बना। ब्रह्मा बाबा है या है नहीं? (है) दिखाई तो देता नहीं!

देखो आप जो पीछे आये हो वो बहुत लक्की हो। क्यों? अभी सेवा के बने बनाये साधनों के समय पर आये। मक्खन निकाला 60 वर्ष वालों ने और मक्खन खाने वाले आप आ गये। आज हिस्ट्री सुनी होगी ना, इतनी मेहनत आप करते तो भाग जाते। और वर्तमान समय सेवा का वायुमण्डल बना हुआ है। अभी चाहे प्रेज़ीडेन्ट है, चाहे प्राइम मिनिस्टर है, चाहे कोई भी नेता है, मैजारिटी ये तो मानते हैं ना कि कार्य अच्छा है, हम कर सकते हैं या नहीं, वो बात अलग है। हरेक का पार्ट अपना है। लेकिन अच्छा कार्य है और ये कार्य और आगे बढ़ना चाहिये ये तो कहते हैं ना! पहले क्या कहते थे कि ब्रह्माकुमारियों की शक्ल भी नहीं देखना। अगर शुरू में निमन्त्रण देने जाते भी थे ना तो दरवाजा बन्द कर देते थे। तो आप तो अच्छे टाइम पर आये हो ना! सेवा का चांस बहुत है। जितनी सेवा करने चाहो उतनी कर सकते हो। अभी सभी समझते हैं कि साकार ब्रह्मा के बाद भी ब्रह्माकुमारियों ने सिल्वर जुबली भी मना ली, गोल्डन भी मना ली, अभी डायमण्ड तक पहुँच गये हैं। क्योंकि कोई भी बड़ा गुरु चला जाता है तो गड़बड़ हो जाती है। यहाँ गड़बड़ है क्या? यहाँ तो और ही वृद्धि है, बढ़ता जाता है। तो इससे सिद्ध है कि ये कार्य कराने वाला बाप परम आत्मा है, निमित्त माध्यम ब्रह्मा बाप है। अभी भी माध्यम ब्रह्मा बाप है। ये पार्ट अलग चीज़ है लेकिन माध्यम ड्रामा में पहले साकार ब्रह्मा रहा और अभी फरिश्ता रूप में ब्रह्मा है। ब्रह्मा को पिता कहेंगे, रचता तो ब्रह्मा है ना। ये तो पार्ट बीच-बीच में बच्चों की पालना करने के लिए निमित्त है। बाकी

रचता ब्रह्मा है और रचना के कार्य में अभी भी अन्त तक ब्रह्मा का ही पार्ट है।

तो आज सारे दिन में किसके पास माया आई? कोई पोत्रा-धोत्रा याद नहीं आया? तो सदा ऐसे समर्थ रहो और इसकी सबसे सहज विधि है दो शब्द याद रखो। दो शब्द याद रह सकते हैं ना? सारी मुरली भूल जाये लेकिन दो शब्द याद रखो और प्रैक्टिकल में करते चलो। वो दो शब्द, जानते भी हो, कोई नई बात नहीं है, एक है शुभ चिन्तन, निगेटिव को भी पॉजेटिव करो, इसको कहते हैं शुभ चिन्तन। निगेटिव पॉजेटिव हो सकता है और बदल सकते हो सिर्फ चेक करो कि कर्म करते भी शुभ चिन्तन चला? और दूसरा सभी के प्रति शुभ चिन्तक, तो शुभ चिन्तन और शुभ चिन्तक दोनों का सम्बन्ध है। अगर शुभ चिन्तन नहीं है तो शुभ चिन्तक भी नहीं बन सकते। इसलिए इन दो बातों का अटेन्शन रखना। समझा? क्या करेंगे? यहीं नहीं भूल जाना। क्योंकि अभी देखा गया है कि बहुत ऐसी समस्यायें हैं, लोग हैं जो आपके वाणी से नहीं समझते लेकिन शुभ चिन्तक बन शुभ वायब्रेशन दो तो बदल जाते हैं। और एक बात से मुक्त भी होना है। इस ब्राह्मण जीवन में मुक्त होने वाले हो ना, मुक्त होने की 9 बातें बता दी, अगर इन नौ बातों से मुक्त हो गये तो नौ रत्न बन सकते हैं। तो आज बापदादा एक बात की स्मृति दिला रहे हैं – कभी भी कोई भी शारीरिक बीमारी हो, मन का तूफान हो, तन में हलचल हो, प्रवृत्ति में हलचल हो, सेवा में भी हलचल होती है तो किसी भी प्रकार के हलचल में दिलशिकस्त कभी नहीं होना। बड़ी दिल वाले बनो। बाप की दिल कितनी है, छोटी है क्या! बाप बड़ी दिल वाले हैं और बच्चे छोटी दिल कर देते हैं, बीमार हो गये तो रोना शुरु कर देंगे। दर्द हो गया, दर्द हो गया। तो दिलशिकस्त होना दवाई है? बीमारी चली जायेगी कि बढ़ेगी? जब हिसाब-किताब आ गया, दर्द आ गया तो हिसाब-किताब आ गया ना, लेकिन दिलशिकस्त से बीमारी को बढ़ा देते हो। इसलिए हिम्मत वाले बनो तो बाप भी मददगार बनेंगे। ऐसे नहीं, रो रहे हैं–हाय क्या करूँ, क्या करूँ और फिर सोचो कि बाबा की तो मदद है ही नहीं। मदद उसको मिलती है जो हिम्मत रखते हैं। पहले बच्चे की हिम्मत फिर बाप की मदद है। तो हिम्मत तो हार ली और सोचने लगते हो कि बाप की मदद तो मिली नहीं, बाबा भी टाइम पर तो करता ही नहीं है! तो आधे अक्षर

याद नहीं करो, बाबा मददगार है लेकिन किसका? तो आधा भूल जाते हो और आधा याद करते हो कि बाबा भी पता नहीं महारथियों को ही करता है, हमको तो करता ही नहीं है, हमको तो देता ही नहीं है। पहले आप, महारथी पीछे। लेकिन दिलशिकस्त नहीं बनो और मन में अगर कोई उलझन आ भी जाती है तो ऐसे समय पर निर्णय शक्ति चाहिये और निर्णय शक्ति तब आ सकती है जब आपका मन बाप के तरफ होगा। अगर अपने उलझन में होंगे तो हाँ-ना, हाँ-ना, इसी उलझन में रह जायेंगे। इसलिए मन से भी दिलशिकस्त नहीं बनो। और धन भी नीचे-ऊपर होता है, जब करोड़पतियों का ही नीचे-ऊपर होता है तो आप लोग उसके आगे क्या हो। वो तो होना ही है। लेकिन आप लोगों को निश्चय पक्का है कि जो बाप के साथी हैं, सच्चे हैं तो कैसी भी हालत में बापदादा दाल-रोटी जरूर खिलायेगा। दो-दो सब्जी नहीं खिलायेगा, दाल-रोटी खिलायेगा। लेकिन ऐसे नहीं करना कि काम से थक करके बैठ जाओ और कहो बाबा दाल-रोटी खिलायेगा। ऐसे अलबेले या आलस्य वाले को नहीं मिलेगा। बाकी सच्ची दिल पर साहेब राजी है। और परिवार में भी खिटखिट तो होनी है। जब आप लोग कहते हो कि अति के बाद अन्त होना है, कहते हो! अति में जा रहा है और जाना है तो परिवार में खिटखिट न हो, ये नहीं होना है, होना है! लेकिन आप ट्रस्टी बन, साक्षी बन परिस्थिति को बाप से शक्ति ले हल करो। गृहस्थी बनकर सोचेंगे तो और गड़बड़ होगी। पहले बिल्कुल न्यारे ट्रस्टी बन जाओ। मेरा नहीं। ये मेरापन–मेरा नाम खराब होगा, मेरी ग्लानि होगी, मेरा बच्चा और मुझे...., मेरी सास मेरे को ऐसे करती है.... ये मेरापन आता है ना तो सब बातें आती हैं। मेरा जहाँ भी आया वहाँ बुद्धि का फेरा हो जाता है, बदल जाते हैं। अगर बुद्धि कहाँ भी उलझन में बदलती है तो समझ लो ये मेरापन है, उसको चेक करो और जितना सुलझाने की कोशिश करेंगे उतना उलझेगा। इसलिए सभी बातों में क्या नहीं बनना है? दिलशिकस्त नहीं बनना है। क्या नहीं बनेंगे? (दिलशिकस्त) सिर्फ कहना नहीं, करना है। भगवान के बच्चे हैं ये तो पक्का वायदा है ना, इसको तो माया भी नहीं हिला सकती। जब ये पक्का वायदा है, निश्चय है तो भगवान के बच्चे भी दिलशिकस्त हो जायें, तो बड़ी दिल रखने वाले कौन होंगे? और कोई होंगे? आप ही हो ना! तो क्या

करेंगे? अभी समर्थ बनो और सन शोज़ फादर का पाठ पक्का करो। कच्चा नहीं करो, पक्का करो। सभी हिम्मत वाले हो ना? हिम्मत है? अच्छा।

डायमण्ड जुबली की खुशी है ना? बापदादा समाचार सुनते ही रहते हैं। अच्छा किया पहले दिल्ली में आरम्भ किया, राजधानी में अपना पांव जमा लिया। अभी सभी कर रहे हैं। लेकिन याद रखना कि बापदादा ने इस डायमण्ड जुबली वर्ष में कोई न कोई हर ज़ोन को काम दिया है। यूथ को काम दिया है, कुमारियों को काम दिया है, प्रवृत्ति वालों को काम दिया है तो काम करना नहीं भूल जाना। बापदादा के पास कोई न कोई, चाहे छोटा सा नेकलेस बना के लाओ, चाहे कंगन बना के लाओ, चाहे बड़ा हार बना के लाओ, लेकिन लाना जरूर है। हाथ खाली नहीं आना है। हिम्मत है ना? बनायेंगे ना? बापदादा तो कहेंगे चलो कंगन ही लाओ। क्योंकि बहुत आत्मायें अन्दर टेन्शन से बहुत दु:खी हैं। सिर्फ बिचारों में आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं है। तो आप मास्टर सर्वशक्तिमान् उन्हों को हिम्मत दो, तो आ जायेंगे। जैसे किसको टांग नहीं होती है ना तो लकड़ी की टांग बनाकर देते हैं तो चलता तो है ना! तो आप हिम्मत की टांग दे दो। लकड़ी की नहीं देना, हिम्मत की दो। बहुत दु:खी हैं, रहम दिल बनो। बापदादा तो अज्ञानी बच्चों को भी देखता रहता है ना कि अन्दर क्या हालत है! बाहर का शो तो बहुत अच्छा टिपटॉप है लेकिन अन्दर बहुत-बहुत दु:खी हैं। आप बहुत अच्छे समय पर बच्चा बने अर्थात् बच गये। अच्छा।

चारों ओर के सर्व समर्थ आत्माओं को, सर्व माया जीत, प्रकृति जीत आत्माओं को, सदा सन शोज़ फादर करने वाले बच्चों को, सदा दिल खुश रहने वाले बच्चों को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

आज विदेश वाले बच्चे भी बहुत याद आ रहे हैं। चारों ओर मधुबन से मन की लगन लगी हुई है। बापदादा भी सभी बच्चों को सामने देख विशेष याद और सेवा का याद-प्यार दे रहे हैं।

दादी जी से

नैनों की भाषा से सर्व वरदान मिल गये ना! बाप के स्नेह और हिम्मत के हाथ सदा मस्तक पर है ही है।

दादियों से

ये सभी समर्थ साथी हैं ना! सभी माया को अच्छी तरह से जानने वाले हो। आप निमित्त बने हुए आत्माओं के कारण डायमण्ड जुबली मना रहे हैं। (बापदादा ने दादियों को सामने बिठाया) आप लोगों को भी देखने में मज़ा आता है ना! तो बापदादा आज अमृतवेले डायमण्ड जुबली के एक-एक रत्न को देख रहे थे। तो मिक्स तो हैं लेकिन चाहे छोटा संगठन पुराना है और नया संगठन भी आपके साथी बने हैं, नयों में भी अच्छे-अच्छे हैं, नाम नहीं लेते हैं लेकिन गुलदस्ता हिम्मत वाला निमित्त है तब ये कार्य डायमण्ड जुबली तक पहुँच गया है। डायमण्ड जुबली के लास्ट में कौन-सा झण्डा लहरायेंगे? यही, जो फूल बांध करके करते हो! 'बाप आ गया' – ये झण्डा लहराओ। कि कपड़े वाला, फूलों वाला लहरायेंगे? डायमण्ड जुबली में नवीनता होनी चाहिये ना। बच्चे बाप से वंचित रह जायें तो रहम पड़ता है ना! अनाथ बन गये हैं। उन्हों को बाप का परिचय तो देंगे ना! नहीं तो आप सबके कान पकड़ेंगे। वो लोग ही आपके कान पकड़ेंगे कि क्यों नहीं बताया, क्यों नही बताया। तो बापदादा देख रहे हैं कि ऐसा प्लैन बनायें जिसमें सभी समझें। ढूँढते तो हैं कि कहाँ है, कहाँ है लेकिन कहाँ है? यहाँ है–ये एड्रेस तो देंगे ना! तो ऐसे प्लैन बनाना। मीटिंग करते हो ना, ऐसा प्लैन बनाओ जो सबको एड्रेस मिल जाये।

तामिलनाडु के राज्यपाल महामहिम डॉ.एम.चन्नारेडी प्रति अव्यक्त बापदादा के मधुर महावाक्य

अपने को बालक सो मालिक समझते हैं? जो बालक हैं वो मालिक ज़रूर हैं। तो सदा अपने को बालक सो मालिक – ये समझते रहो। सारा परिवार आपको बालक सो मालिक समझते हैं। तो बाप के जो अविनाशी खज़ाने हैं, शक्तियाँ, गुण, ज्ञान, सब खजानों के मालिक बन गये। इसी खुशी में, इसी नशे में सदा रहो। जो आपकी नेचरल विशेषता है दृढ़ता की, वो दृढ़ता की शक्ति अभी इस ज्ञान मार्ग में भी बहुत कार्य में आयेगी। बापदादा ने देखा है कि कैसी भी परिस्थितियाँ सामने आती हैं लेकिन दिल शिकस्त नहीं होते हो। हिम्मत रखते हो। हिम्मत की विशेषता है इसको सिर्फ अभी अलौकिक कार्य में लगाओ। जो चाहो वो कर सकते हो। विरोधियों को भी शान्त कर सकते हो।

बापदादा ने देखा जब से प्रजा का राज्य शुरू हुआ है तब से गवर्नर या मिनिस्टर तो बहुत बने हैं, आप भी बने हो लेकिन वर्तमान समय आपकी एक भाग्य की लॉटरी है वो कौन-सी? जो इस ईश्वरीय कार्य के प्रत्यक्षता करने में आप निमित्त बने। चाहे थोड़े समय के लिये पद मिला लेकिन जो भी इस ज्ञान सरोवर में बाप को पहचानेंगे तो उसका निमित्त बनने वाले को शेयर मिल जाता है। तो आप बहुत बड़े शेयर होल्डर बन गये। और साथ-साथ देखो दुआएं तो कार्य के कारण औरों को भी मिलती हैं लेकिन आपको इतने ब्राह्मणों की दुआएं मिली। तो एक-एक ब्राह्मण कितना बड़ा है तो ब्राह्मणों की दुआये हैं, क्योंकि ब्राह्मणों को भी चांस मिलता है बापदादा से मिलने का। तो ब्राह्मणों की दुआएं आपको ऑटोमेटिक मिल रही हैं तो आपके भविष्य बैंक में जमा हो रहा है। कारण क्या है? कि बाप और परिवार से प्यार है। दिल का प्यार है, स्वार्थ का प्यार नहीं। तो जो दिल का प्यार होता है उसका प्रत्यक्ष फल मिलता है, जो स्वार्थ का प्यार होता है उसमें सफ़लता नहीं मिलती। और दिल का प्यार सफ़लता दिलाता है।

आपके पास एक गोल्डन चाबी है। पता है कौन सी गोल्डन चाबी आपको मिली है? (आपके वरदान) वो तो है ही लेकिन चाबी है, सबसे बढ़िया चाबी है दृढ़ता। दृढ़ता ही सफ़लता की चाबी है। तो ये चाबी आपके पास है। सेवा की है और करते रहेंगे–ये बाप जानते हैं। तो जहाँ प्यार है ना वहाँ भूल नहीं सकते हैं। और ये मनुष्यात्मा का प्यार नहीं है, ईश्वरीय प्यार है। प्यार सदा नज़दीक लाता है। ठीक है ना! अच्छा, परिवार ठीक है? परिवार को भी याद देना। जहाँ भी जायेंगे, सेवा करेंगे।

नारायण दादा से

कदम आगे बढ़ा रहे हो ना? कदम आगे बढ़ाना अर्थात् फालो फादर। तो बढ़ा है कदम? बीज अविनाशी डायरेक्ट बाप द्वारा पड़ा हुआ है–ये भाग्य कम नहीं है! तो इसी भाग्य को आगे बढ़ाते चलो। देखो सभी दादियों का आपसे कितना प्यार है! तो प्यार का रेसपान्ड है आगे बढ़ाना। बाकी ठीक है सब, परिवार ठीक है? अच्छा!

जगदीश भाई जी से

अच्छा किया दिल्ली ने। दिल्ली ने नम्बर ले लिया। अभी और भी ऐसे माइक तैयार करो जो आपके तरफ से बोलें कि ये परमात्म मार्ग है। और करने के निमित्त तो आप बने हुए हो ही। आदि से वरदान है इसलिए करते चलो। बाकी अच्छा किया दिल्ली ने, अपनी हिम्मत, युनिटी और सफ़लता–तीनों दिखाई। सभी को मुबारक तो है ही लेकिन ये एक कार्य की मुबारक है। अभी आगे भी करना है।

बापदादा ने नौ रत्नों में आने के लिए जिन **9 बातों** से मुक्त बनने का इशारा दिया है वह निम्न लिखित हैं:-

1. क्रोध मुक्त
2. व्यर्थ संकल्प मुक्त।
3. लगाव मुक्त।
4. परमत, परचिंतन और परदर्शन मुक्त।
5. अभिमान व अपमान मुक्त।
6. झमेला मुक्त।
7. व्यर्थ बोल, डिस्टर्ब करने वाले बोल से मुक्त।
8. अप्रसन्नता मुक्त।
9. दिलशिकस्त मुक्त।

18-1-97

अपनी सूरत से बाप की सीरत को प्रत्यक्ष करो तब प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजेगा

आज बापदादा दो विशाल सभायें देख रहे हैं। एक तो साकार रूप में आप सभी सम्मुख हो और दूसरी अव्यक्त रूप की विशाल सभा देख रहे हैं। चारों ओर के अनेक बच्चे इस समय अव्यक्त रूप में बाप को सम्मुख देख रहे हैं, सुन रहे हैं। दोनों ही सभा एक दो से प्रिय हैं। आज विशेष सभी के दिल में ब्रह्मा बाप की याद इमर्ज है क्योंकि ब्रह्मा बाप का इस ड्रामा में विशेष पार्ट है। सभी का ब्रह्मा बाप से दिल का स्नेह है क्योंकि ब्रह्मा बाप का भी एक-एक बच्चे से अति प्यार है। जैसे आप बच्चे यहाँ साकार में ब्रह्मा बाप के गुण और कर्तव्य याद करते हो वैसे ब्रह्मा बाप भी आप बच्चों की विशेषताओं का, सेवा का गुणगान करते हैं। तो ब्रह्मा का अव्यक्त आवाज आप सबको पहुंचता है? आप सब विशेष अमृतवेले से लेकर जो मीठी-मीठी बातें करते हो वा मीठे-मीठे उल्हनें भी देते हो, वह ब्रह्मा बाप सुनकर मुस्कराते रहते हैं और क्या गुण गाते हैं? वाह मेरे सिकीलधे, लाडले बाप को प्रत्यक्ष करने वाले बच्चे वाह! ब्रह्मा बाप अब बच्चों से क्या शुभ आशायें रखते हैं, वह जानते हो?

बाप यही चाहते हैं कि मेरा हर एक बच्चा अपनी मूर्त से बाप की सीरत दिखायें। सूरत भिन्न-भिन्न हो लेकिन सबकी सूरत से बाप की सीरत दिखाई दे। जो भी देखे, जो भी संबंध में आये – वह आपको देखकर आपको भूल जाये, लेकिन आप में बाप दिखाई दे तब ही समय की समाप्ति होगी। सबके दिल से यह आवाज निकले हमारा बाप आ गया है, मेरा बाप है। ब्रह्माकुमारियों का बाप नहीं, मेरा बाप है। जब सभी के दिलों से आवाज निकले कि मेरा बाप है, तब ही यह आवाज चारों ओर नगाड़े के माफिक गूँजेगा। जो भी सांइस के साधन हैं, उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेगा – मेरा बाप आ गया। अभी जो भी कर रहे हो, बहुत अच्छा किया है और कर रहे हो। लेकिन अभी सबका इकट्ठा नगाड़ा बजना है। जहाँ भी सुनेंगे, एक ही आवाज सुनेंगे। आने वाले आ गये – इसको कहा जाता है बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता। अभी नाम प्रसिद्ध हुआ है। पहला

कदम नाम प्रत्यक्ष हुआ है कि ब्रह्माकुमारियां - ब्रह्माकुमार अच्छा काम कर रहे हैं। विद्यालय वा कार्य की, नॉलेज की अभी महिमा करते हैं, खुश होते हैं। यह भी समझते हैं कि ऐसा कार्य और कोई कर नहीं सकता, इतने तक पहुँचे हैं। यह बात स्पष्ट हुई है, चारों ओर इस बात की महिमा है। लेकिन इस बात का अभी स्पष्टीकरण नहीं हुआ है कि बापदादा आ गये हैं। अभी थोड़ा-थोड़ा पर्दा खुलने लगा है लेकिन स्पष्ट नहीं है। जानते भी हैं कि इन्हों का बैकबोन कोई अथॉरिटी है लेकिन वही बापदादा है और हमें भी बाप से वर्सा लेना है, यह दीवार अभी उमंग-उत्साह में आगे आ रही है, वो अभी होना है। एक कदम उठाते हैं, वो एक कदम है – सहयोग का। एक कदम उठने लगा है, सहयोग देने की प्रेरणा अन्दर आने लगी है, अभी दूसरा कदम है – स्वयं वर्सा लेने की उमंग में आये। जब दोनों ही कदम मिल जायेंगे तो चारों ओर बाजे बजेंगे। कौन से बाजे? – मेरा बाबा। तेरा बाबा नहीं, मेरा बाबा। जैसे कार्य की महिमा करते हैं, ऐसे करन-करावनहार बाप की महिमा झूम-झूम कर गायें। होने वाला ही है। आपको भी यह नज़ारा आंखों के समाने दिल में, दिमाग में आ रहा है ना! क्योंकि बाप और दादा आये हैं – सब बच्चों को वर्सा देने के लिए। चाहे मुक्ति का, चाहे जीवनमुक्ति का, लेकिन वर्सा मिलना जरूर है। कोई भी वंचित नहीं रहेगा क्योंकि बाप बेहद का मालिक है, बेहद का बाप है। तो बेहद को वर्सा लेना ही है। भल योगबल से अपने जन्म-जन्म के पाप नहीं भी काट सकें लेकिन सिर्फ इतना भी जान लिया कि बाप आये हैं, तो कुछ न कुछ पहचान से वर्से के अधिकारी बन ही जायेंगे। तो जैसे बाप को बेहद का वर्सा देने का संकल्प है और निश्चित होना ही है। ऐसे आप सबके दिल में ये शुभ भावना, शुभ कामना उत्पन्न होती है कि हमारे सब भाई-बहन बेहद के वर्से के अधिकारी बन जायें? तो ये शुभ भावना और शुभ कामना कब तक प्रत्यक्ष रूप में करेंगे? उसकी डेट पहले से अपने दिल में फिक्स करो, संगठन से पहले दिल में करो फिर संगठन में करो तो विनाश की डेट आपेही स्पष्ट हो जायेगी, उसकी चिन्ता नहीं करो। रहम आता है या इसी मौज में रहते हो कि हम तो अधिकारी बन गये? मौज में रहो, यह तो बहुत अच्छा है लेकिन रहमदिल बाप के बच्चे अभी बेहद पर रहम करो। जब दूसरे पर रहम आयेगा तो अपने ऊपर रहम पहले आयेगा, फिर जो एक ही छोटी सी बात पर आपको पुरूषार्थ करना पड़ता है,

वह करने की आवश्यकता नहीं होगी। मास्टर रहमदिल, मास्टर दयालू, मर्सी-फुल बन जाओ। इस गुण को इमर्ज करो। तो औरों के ऊपर रहम करने से स्वयं पर रहम आपेही आयेगा।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि बाप-दादा को बच्चों की कौन सी बात अच्छी नहीं लगती है, जानते हो? बापदादा को बच्चों का मेहनत करना वा बार-बार युद्ध करना, यह अच्छा नहीं लगता है। बाप कहते भी हैं – हे मेरे योगी बच्चे, योद्धे बच्चे नहीं कहते हैं, योगी बच्चे। तो योगी बच्चों का क्या काम है? युद्ध करना। युद्ध करना अच्छा लगता है? परेशान भी होते हो और फिर युद्ध भी करते हो। आज प्रतिज्ञा करते हो कि युद्ध नहीं करेंगे और कुछ समय के बाद फिर योगी के बजाए योद्धे बन जाते हो। यह क्यों? बापदादा समझते हैं कि बच्चों को योग से प्यार कम है, युद्ध से प्यार ज्यादा है। तो आज से क्या करेंगे? योद्धे बनेंगे वा निरन्तर योगी बनेंगे?

बापदादा ने देखा – कितनी 18 जनवरी भी बीत गई! और विशेष ब्रह्मा बाप आप बच्चों का आह्वान कर रहा है कि मेरे बच्चे समान बन वतन में आ जाओ। वतन अच्छा नहीं लगता? क्या युद्ध करना ही अच्छा लगता है? युद्ध नहीं करो। आज से युद्ध करना बन्द करो। कर सकते हो? बोलो हाँ जी। फिर वहाँ जाकर पत्र नहीं लिखना कि माया आ गई, युद्ध करके भगा दिया। किसी को अपनी माया आती है और कोई-कोई दूसरों की माया को देख खुद माया के असर में आ जाते हैं। यह क्यों, यह क्या..... यह दूसरों की माया अपने अन्दर ले आते हैं। यह भी नहीं करना। माया से छुड़ाना बाप का काम है, आप स्व पुरूषार्थ में तीव्र बनो, तो आपके वायब्रेशन से, वृत्ति से, शुभ भावना से दूसरे की माया सहज भाग जायेगी। अगर क्यों, क्या में जायेंगे, तो न आपकी माया जायेगी न दूसरे की जायेगी। इसलिए जैसे नये वर्ष में पुराने वर्ष को विदाई दी। अभी 96 नहीं कहेंगे, 97 के कहेंगे ना! अगर कोई गलती से कह दे तो आप कहेंगे 96 नहीं है, 97 है। ऐसे आज क्यों-क्या, ऐसे-वैसे, इन शब्दों को विदाई दे दो। क्वेश्चन मार्क नहीं करो। बिन्दी लगाओ, नहीं तो क्वेश्चन मार्क हुआ और व्यर्थ का खाता आरम्भ हुआ। और जब व्यर्थ का खाता आरम्भ हो जाता है तो समर्थी समाप्त हो जाती है। और जहाँ समर्थी समाप्त हुई, वहाँ माया भिन्न-भिन्न रूप से, भिन्न-भिन्न सरकमस्टांश से अपना ग्राहक बना देती है। फिर

क्या बन जाते? योगी या योद्धे? योद्धे नहीं बनना। पक्का प्रामिस किया? या बापदादा कहता है तो हाँ किया? पक्का किया? बाहर जब अपने देश में जायेंगे तो थोड़ा कच्चा होगा? शक्तियां क्या कहती हैं? होगा या नहीं? सब हाँ नहीं करते, माना थोड़ा अपने में शक्य है। (सबने हाँ जी कहा) देखना टी.वी. में फोटो निकल रहा है! फिर बापदादा टी.वी. की कैसेट भेजेंगे क्योंकि बाप का हर बच्चे के साथ – चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं लेकिन जिसने दिल से कहा मेरा बाबा, सिर्फ कहा नहीं लेकिन माना और मानकर चल रहे हैं, उस एक-एक के साथ बाप का दिल का प्यार है, कहने वाला प्यार नहीं।

बापदादा बहुत बच्चों की रंगत देखते हैं – आज कहेंगे बाबा, ओ मेरे बाबा, ओ मीठा बाबा, क्या कहूं, क्या नहीं कहूं ..... आप ही मेरा संसार हो, बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं और दो चार घण्टे के बाद अगर कोई बात आ गई तो भूत आ जाता है। बात नहीं आती, भूत आता है। बापदादा के पास सभी का भूत वाला फोटो भी है। देखो, एक यादगार भी भूतनाथ का है। तो भूतों को भी बापदादा देखते हैं – कहाँ से आया, कैसे आया और कैसे भगा रहे हैं। यह खेल भी देखते रहते हैं। कोई तो घबराकर, दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। फिर बापदादा को यही शुभ संकल्प आता है कि इनको कोई द्वारा संजीवनी बूटी खिलाकर सुरजीत करें लेकिन वे मूर्छा में इतने मस्त होते हैं जो संजीवनी बूटी को देखते ही नहीं हैं। ऐसे नहीं करना। सारा होश नहीं गंवाना, थोड़ा रखना। थोड़ा भी होश होगा ना तो बच जायेंगे।

तो आज विशेष ब्रह्मा बाप हर बच्चे की रिजल्ट को देख रहे थे क्योंकि आज के दिन को आप सभी स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस कहते हैं। तो ब्रह्मा बाप देख रहे थे कि कितने समर्थी दिवस मना चुके हैं, लेकिन समर्थी सदाकाल की कहाँ तक आई है? तो क्या देखा होगा? अभी की रिजल्ट अनुसार बाप की नालेज से नालेजफुल और माया के भी नालेजफुल, ऐसे नालेजफुल कितने निकले होंगे! माया की नालेज से भी नालेजफुल बनना पड़े, जो माया को दूर से ही पहचान लें, कैच कर लें कि आज कुछ पेपर होने वाला है और पहले से ही समर्थ हो जाएं। समाचार में क्या लिखते हैं? माया आई, मैंने भगाया फिर भाग गई। लेकिन आई क्यों? माया को आने की छुट्टी दे दी है क्या कि भले कभी-कभी आया करो? यदि बिना छुट्टी कोई आता है, तो उसको आने दिया

जाता है क्या? माया पर रहम तो नहीं करते हो कि बिचारी आधाकल्प की साथी है! माया पर रहम नहीं करना। इतनी सारी आत्माओं पर तो रहम कर लो। तो रिजल्ट में फर्स्ट और सेकण्ड नम्बर में 50-50 देखा। सिर्फ फर्स्ट नहीं, फर्स्ट और सेकण्ड दोनों मिलाकर 50, लेकिन बापदादा को एक बात की बहुत खुशी है कि बच्चों को बाप के स्नेह से विजयी बन ही जाना है। अभी सभी के मस्तक पर विजय का तिलक ऐसा स्पष्ट दिखाई दे जो दूसरे भी अनुभव करें कि सचमुच यही विजयी रत्न हैं।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि इस फाइनल पढ़ाई में हर एक बच्चे को तीन सर्टीफिकेट लेने हैं – एक स्वयं, स्वयं से सन्तुष्ट - यह सर्टीफिकेट और दूसरा बापदादा द्वारा सर्टीफिकेट और तीसरा परिवार के संबंध-सम्पर्क में आने वालों द्वारा सर्टीफिकेट। यह तीन सर्टीफिकेट जब मिलें तब समझो पढ़ाई पूरी हुई। ऐसे नहीं समझना कि बापदादा तो हमारे से सन्तुष्ट हैं। लेकिन तीनों ही सर्टीफिकेट चाहिए, एक नहीं चलेगा। तो चेक करो तीन सर्टीफिकेट से कितने सर्टीफिकेट मिले हैं? बाप के बिना भी कुछ नहीं मिलता। लेकिन परिवार की सन्तुष्टता का सर्टीफिकेट इससे भी बहुत कुछ मिलता है। परिवार की जितनी आत्माओं से सर्टीफिकेट जिसको मिलता है, जितने ब्राह्मण सन्तुष्ट हैं उतने ही भगत भी आपकी पूजा सन्तुष्टता से करेंगे, काम चलाऊ नहीं, दिल से करेंगे। तो यहाँ ब्राह्मण जीवन में जितने ब्राह्मणों का आपके प्रति स्नेह, सम्मान अर्थात् रिगार्ड होगा, दिल से सन्तुष्ट होंगे, उतना ही पूज्य बनेंगे। पूज्य के लिए स्नेह और सम्मान होता है। तो जब जब जड़ चित्रों की पूजा होगी, तब इतना ही स्नेह और रिगार्ड मिलेगा। सारे कल्प की प्रारब्ध अभी बनानी है। सिर्फ आधाकल्प राज्य की प्रारब्ध नहीं, पूज्य की प्रारब्ध भी अभी बनती है। ऐसे नहीं समझो–हमारा तो बाप से ही काम चल जायेगा। नहीं। बाप का परिवार से कितना प्यार है। तो फालो फादर करो। ब्रह्मा बाप को देखा, कैसा भी बच्चा हो, शिक्षादाता बन शिक्षा भी देते लेकिन शिक्षा के साथ प्यार भी दिल में रखते। और प्यार कोई बाहों का नहीं, लेकिन प्यार की निशानी है – अपनी शुभ भावना से, शुभ कामना से कैसी भी माया के वश आत्मा को परिवर्तन करना। कोई भी है, कैसी भी है, घृणा भाव नहीं आवे, यह तो बदलने वाले ही नहीं हैं, यह तो हैं ही ऐसे। नहीं। अभी आवश्यकता है रहमदिल बनने की क्योंकि कई बच्चे कमजोर होने

के कारण अपनी शक्ति से कोई बड़ी समस्या से पार नहीं हो सकते, तो आप सहयोगी बनो। किससे? सिर्फ शिक्षा से नहीं, आजकल शिक्षा, सिवाए प्यार या शुभ भावना के कोई नहीं सुन सकता। यह तो फाइनल रिजल्ट है, शिक्षा काम नहीं करती लेकिन शिक्षा के साथ शुभ भावना, रहमदिल यह सहज काम करता है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, मालूम भी होता कि आज इस बच्चे ने भूल की है, तो भी उस बच्चे को शिक्षा भी तरीके से, युक्ति से देता और फिर उसको बहुत प्यार भी करता, जिससे वह समझ जाते कि बाबा का प्यार है और प्यार में गलती के महसूसता की शक्ति उसमें आ जाती। तो ब्रह्मा बाप को आज बहुत याद किया ना! तो फालो फादर। बाप समान बनने की हिम्मत है? मुबारक हो हिम्मत की। बापदादा आपके दिल की तालियां पहले ही सुन लेता है आप खुशी से तालियां बजाते हो लेकिन बाप को दिल की तालियां पहले पहुंचती हैं।

बापदादा भी हंसी की बात सुनाते हैं। ब्रह्मा बाबा की रूहरिहान चली! तो ब्रह्मा बाप कहते हैं कि मेरे को एक बात के लिए डेट कान्सेस-नेस है। बच्चों को तो कहते हैं डेडकानसेस नहीं बनो लेकिन ब्रह्मा बाप एक बात में डेट कान्सेस हैं, कौन सी डेट? कि कब मेरा एक-एक बच्चा जीवन मुक्त बन जाए! ऐसे नहीं समझना कि अन्त में जीवनमुक्त बनेंगे, नहीं। बहुतकाल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुतकाल जीवनमुक्त राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा। उसके पहले जब आप अभी जीवनमुक्त बनो तो आप जीवनमुक्त स्थिति वालों का प्रभाव जीवनबंध वाली आत्माओं का बंधन समाप्त करेगा। तो यह सेवा नहीं करनी है क्या? करनी है ना! तो आप ब्रह्मा बाप को डेटकान्सेस का जवाब दो। वह डेट कब होगी जब सब जीवनमुक्त हों? कोई बंधन नहीं। बंधनों की लम्बी लिस्ट वर्णन करते हो, क्लासेज कराते हो तो बंधनों की बड़ी लम्बी लिस्ट निकालते हो लेकिन बाप कहते हैं सब बन्धनों में पहला एक बंधन है–देह भान का बंधन। उससे मुक्त बनो। देह नहीं तो दूसरे बंधन स्वत: ही खत्म हो जायेंगे। अपने को वर्तमान समय मैं टीचर हूँ, मैं स्टूडेंट हूँ, मैं सेवाधारी हूँ, इस समझने के बजाए अमृतवेले से यह अभ्यास करो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा ऊपर से आई हूँ – इस पुरानी दुनिया में, पुराने शरीर में सेवा के लिए। मैं आत्मा हूँ–यह पाठ अभी और पक्का करो। आप आत्मा का भान धारण करो तो यह आत्मिक भान, माया के भान को सदा के लिए समाप्त कर देगा। लेकिन आत्मा का भान – यह

अभी चलते फिरते स्मृति में रहे, वह अभी और होना चाहिए। ब्रह्मा बाप ने आत्मा का पाठ आदि से कितना पक्का किया! दीवारों पर भी मैं आत्मा हूँ, परिवार वाले आत्मा हैं, एक-एक के नाम से दीवारों में भी यह पाठ पक्का किया। डायरियां भर दी–मैं आत्मा हूँ, यह भी आत्मा है, यह भी आत्मा है। आपने आत्मा का पाठ इतना पक्का किया है? मैं सेवाधारी हूँ, यह पाठ कुछ पक्का लगता है लेकिन आत्मा सेवाधारी हूँ, तो जीवनमुक्त बन जायेंगे। रोज़ शरीर में ऊपर से अवतरित हो, मैं अवतार हूँ, इस शरीर में अवतरित आत्मा हूँ, फिर युद्ध नहीं करनी पड़ेगी। आत्मा बिन्दू है ना? तो सब बातों को बिन्दू लग जायेगा। कौन सी आत्मा हूँ? रोज एक नया-नया टाइटल स्मृति में रखो। आपके पास बहुत से टाइटल की लिस्ट तो है ना। रोज़ नया टाइटल स्मृति में रखो कि मैं ऐसी श्रेष्ठ आत्मा हूँ। सहज है या मुश्किल है? आत्मा बिन्दू रूप में रहेगी, तो ड्रामा बिन्दू भी काम में आयेगा और समस्याओं को भी सेकण्ड में बिन्दू लगा सकेंगे और बिन्दू बन परमधाम में बिन्दू जायेगी। जाना है या सीधा स्वर्ग में जायेंगे? कहाँ जायेंगे? पहले घर जायेगे या राज्य में जायेंगे? बाप के साथ घर तक तो चलना है ना कि सीधा राज्य में चले जायेंगे, बाप को पूछेंगे नहीं! तो बिन्दू बाप के साथ बिन्दू बन पहले घर जाना है। वैसे राज्य का पासपोर्ट नहीं मिलेगा। परमधाम से राजधानी में जाने का पासपोर्ट आटोमेटिक मिल जायेगा, किसको देने की आवश्यकता नहीं। जितना नजदीक होंगे, उतना नम्बरवार परमधाम से राज्य में आयेंगे, परमधाम से पहली आत्मा कौन सी जायेगी? किसके साथ जायेंगे? ब्रह्मा बाप के साथ जायेंगे! सभी राज्य में भी साथ में जायेंगे या दूसरे तीसरे जन्म में आयेंगे? जाना है ना? प्यार है ना? ब्रह्मा बाप को छोड़ेंगे तो नहीं, साथ जायेंगे? तो बापदादा को डेट बतायेंगे या नहीं? (बापदादा बतायें) बापदादा तो कहते हैं अभी बनो। तो बाप भी डेट कानसेस से बदल जायेगा। देखो, ब्रह्मा बाप ने कल को देखा? तुरत दान महादान किया। तीव्र पुरूषार्थ, पहला पुरूषार्थ किया। कल को नहीं देखा। कल क्या होगा! परिवार कैसे चलेगा! सोचा? जो आज हो रहा है वह अच्छा और जो कल होगा वह भी अच्छा। तभी तो तुरत दान महापुण्य और पहला नम्बर का महान बना। अभी बच्चों को तुरत दानी बनना चाहिए। संकल्प किया और तुरत दान महाबलि बनें। जब हाथ उठवाते हैं कि पहले डिवीजन में कौन आयेगा? तो सभी हाथ

उठाते हैं। अभी भी उठवायेगे तो सब उठायेगे। बापदादा जानते हैं कि कोई भी हाथ नीचे नहीं करेंगे। जब पहले डिवीजन में आना है तो पहले नम्बर को फालो तो करो। फालो करना सहज है – बस ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो। कापी करो। कापी करना आता है कि नहीं आता है! फालो करना आता है? तो फालो करो और क्या करना है!

विशाल सभा को देख खुशी हो रही है ना! (सभी ने जोर से तालियां बजाई) सभी को एक हाथ की ताली सिखाओ (सभी ने एक हाथ हिलाया) यह अच्छी है। अच्छा।

इस बारी सभी ज़ोन के आये हैं ना! मैजॉरिटी सभी तरफ से आये हैं।

महाराष्ट्र और बाम्बे :- हाथ उठाओ। महाराष्ट्र सेवा के निमित्त हैं ना। अच्छी सेवा का सबूत दे रहे हैं। सभी खुशी से सेवा कर रहे हैं। नींद आती है कि रात भी सेवा में गुज़र जाती है? रात दिन सेवा यह महा पुण्य बन रहा है। रात भी हो तो सेवाधारी सेवा के लिए हाजिर हैं। ऐसे है ना महाराष्ट्र? अच्छी रिजल्ट है। पहले गुजरात ने किया, अभी महाराष्ट्र कर रहा है। हर सेवाधारी ग्रुप की अपनी-अपनी विशेषता है। गुजरात को भी टर्न मिला ना। अच्छा है। देखो सेवा के कारण आपको डबल चांस मिला है। अपने टर्न में भी आ सकते हो और सेवाधारी बनकर भी आये तो सेवाधारियों को डबल चांस है। अच्छा।

दिल्ली– दिल्ली वाले डायमण्ड जुबली की समाप्ति का समारोह मना रहे हैं, अच्छा है। देहली से आवाज चारों ओर सहज फैलता है। इसलिए अच्छी हिम्मत से कार्य कर रहे हैं और डायमण्ड जुबली की सम्पन्न समाप्ति धूमधाम से होनी ही है। अच्छा।

गुजरात – गुजरात तो पड़ोसी है ताली बजाओ तो हाजिर हो जाए।

(कनार्टक, आन्ध्रा, पंजाब, इस्टर्न, नेपाल, आसाम, उड़ीसा, इन्दौर, यू.पी., बनारस, भोपाल, तामिलनाडु, राजस्थान, आगरा, मधुबन, डबल विदेशी आदि सभी ज़ोन से बापदादा हाथ उठवाकर मिल रहे हैं)

डबल विदेशी तो मधुबन की सभा का श्रृंगार हैं। डबल विदेशी यादप्यार देने और लेने में बहुत होशियार हैं। भारत, भारत है लेकिन विदेश भी कम नहीं है। हर समय अपनी भिन्न-भिन्न रूप में याद भेजते रहते हैं। अभी भी नये वर्ष की याद बहुत ही बच्चों ने भेजी है और विशेष इस दिन बहुत बच्चे विधिपूर्वक

याद करते हैं। दिल से भी याद भेजते तो कार्ड और पत्रों द्वारा भी भेजते हैं। बापदादा के पास विशेष डबल विदेशियों के यादप्यार के पत्र और कार्ड भी मिले हैं। बापदादा सभी को पदमगुणा यादप्यार और मुबारक दे रहे हैं। अभी भी कई स्थानों से फरिश्ते रूप में मधुबन सभा में पहुंचें हुए हैं। बापदादा सामने देख रहे हैं और रिजल्ट में याद और सेवा के उंमग-उत्साह की विशेष मुबारक दे रहे हैं। अभी डबल विदेशी मैजारटी याद और सेवा में अनुभवी हो गये हैं और आगे भी होते रहेंगे। अभी पहला नटखट का बचपन मैजारिटी का समाप्त हुआ है और आगे भी हो रहा है। इसलिए डबल विदेशियों को तीव्र पुरूषार्थ की बापदादा मुबारक के साथ यह स्लोगन भी सुना रहे हैं –कि माया की नज़र से सदा बचे रहने वाले अपने नज़रों में सदा बाप को समाने वाले, जब बाप नज़रों में है तो माया की नज़र लग नहीं सकती है। इसलिए सदा बच्चे बचे रहें, रहना ही है। अच्छा।

अभी-अभी सभी जो भी बैठे हैं एक सेकण्ड में अशरीरी आत्मिक स्थिति में स्थित हो जाओ। शरीर भान में नहीं आओ। आत्मा, परम आत्मा से मिलन मना रही है। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

ऐसा अभ्यास बार-बार कर्म करते, करते रहो। स्विच आन किया और सेकण्ड में अशरीरी बनें। यह अभ्यास कर्मातीत स्थिति का अनुभव करायेगा।

चारों ओर के सदा समर्थ आत्माओं को, सदा बापदादा को फालो करने वाले सहज पुरूषार्थी बच्चों को, सदा एक बाप, एकाग्र बुद्धि, एकरस स्थिति में स्थित रहने वाले, बिन्दू बन बिन्दू बाप के साथ चलने वाले ऐसे सर्व बाप के स्नेही, सहयोगी, सेवाधारी बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से - निर्विघ्न मेले की समाप्ति हुई ना!

(सायं 7.30 बजे, ग्लोबल हस्पताल में लण्डन की शैली बहन ने अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली, यह समाचार बापदादा को सुनाया गया) कोई न कोई का यादगार रहता है। जिसका जो पार्ट है वह कहाँ भी कैसे भी हो, उसको निभाना ही है। डबल फारेनर्स भी तो एडवांस पार्टी में चाहिए ना। एडवांस पार्टी के गुलदस्ते में भिन्न-भिन्न फूल जमा हो रहे हैं। (पूरी सरेन्डर थी, दो मास से यहाँ थी, लास्ट के तीन-चार दिन साइलेन्स में थी, अचानक तबियत

खराब हुई और 2-3 दिन हास्पिटल में ट्रीटमेंट चली) ऐसे अच्छे-अच्छे ही चाहिए ना, जो वायब्रेशन से कार्य कर सकें। तो यह जाना नहीं कहेंगे, सेवा में आना कहेंगे। यह भी कई आत्माओं को बेहद का वैराग्य दिलाने के लिए निमित्त बनी है। इतने बड़े विशाल मेले से जाना यह भी बेहद मेले में बेहद का पार्ट बजाना है। तो आप कहेंगे क्या चली गई? नहीं, चली नहीं गई लेकिन भिन्न-भिन्न ड्रेस से भिन्न पार्ट बजाने आई। (लण्डन में खास सभी ने उसके प्रति योग किया) इन सभी को भी सुनाओ, सभी उसे याद का सहयोग देवें, वायब्रेशन देवें। (निर्वैर भाई ने उसी समय सभी को समाचार सुनाया तथा एक मिनट के लिए सभी ने उस आत्मा को योगदान दिया)

विदाई के समय – सभी को यह शान्तिवन का विशाल हाल पसन्द है? (हाँ जी) तो किसने बनाया? आप सभी के सहयोग के अंगुली से यह विशाल हाल तैयार हुआ है। बाप तो है लेकिन बच्चों के सहयोग की अंगुली भी जरूरी है। तो पसन्द है ना? अच्छा इससे बड़ा बनायें? अच्छा है, सभी बच्चों के सहयोग से बना है और आगे भी जो कार्य रहा हुआ है, वह होना ही है। तो आप सभी को यह मेला, पट में सोना, खाना पसन्द है? तकलीफ नहीं है! तकलीफ हुई? देखो भक्ति के मेले तो बहुत किये हैं, उसमें तो खाने के साथ मिट्टी भी खाते हैं, मिट्टी में सोते हैं, मिट्टी में खाते हैं। आपको तो ब्रह्माभोजन अच्छा मिला ना। ब्रह्माभोजन ठीक मिला? कोई को ब्रह्मा भोजन में तकलीफ हुई? तबियत खराब तो नहीं हुई! अच्छा बीमार भी ठीक हो गये? तो यह शान्तिवन का मेला विशेष ब्राह्मणों के लिए हुआ और होता रहेगा लेकिन इस शान्तिवन को सेवा में भी लगाओ। ब्राह्मण माना सेवाधारी। तो जो आपके सम्बन्ध, सम्पर्क में हैं और चाहते हैं कि हमें भी कोई चांस मिले, लेकिन स्थान के कारण आप उन्हों की सेवा नहीं कर सके हैं, अभी बड़ी दिल से इतने ही हजारों में सेवा कर सकते हो क्योंकि ऊपर आपको हद मिलती है, यहाँ एक ही हाल में दो तीन ग्रुप बनाकर योगशिविर करा सकते हो, कोर्स करा सकते हो और साथ में वारिस बना सकते हो। यहाँ की पालना से वारिस बनना बहुत सहज होगा क्योंकि यहाँ का वायुमण्डल और अनुभवी दादियों की दृष्टि, पालना सहज परिवर्तन कर सकती है। एक प्रोग्राम ब्राह्मणों के रिफ्रेशमेंट का और एक प्रोग्राम सेवा का भिन्न-भिन्न रूप से एक ही समय पर ग्रुप-ग्रुप बनाकर एक ही हाल में और जो

रहने के अच्छे बड़े हाल हैं, उसमें भी रख सकते हो। तो आप जैसे खुद आये हैं ना, वैसे फिर अपने सम्पर्क वालों का प्रोग्राम बनाते रहना। ऐसे नहीं है कि यह बड़ा हाल कैसे काम में आयेगा, यह बड़े से छोटा भी हो सकता है, छोटे से बड़ा भी हो सकता है। तो इतनी संख्या तैयार करेंगे? इस हाल द्वारा 9 लाख तैयार करो। कर सकते हो? (इच वन टीच वन करें) यह अच्छी आइडिया है, जितने आप बैठे हो एक, एक को लायेगा तो कितने हो जायेंगे? अभी समय के प्रमाण सेवा भी बेहद बड़ी करो, छोटे-छोटे ग्रुप तो ऊपर भी होते हैं लेकिन यहाँ ज्यादा संख्या में प्रजा बना सकते हो, रॉयल प्रजा बना सकते हो, वारिस बना सकते हो। पसन्द है? तो दूसरी बारी क्या करेंगे? जितने बैठे हो ना–उतने लाना। ज्यादा भले लाना, कम नहीं लाना।

आप लोगों को रिफ्रेशमेंट चाहिए! आपकी भट्ठियां रखें? लेकिन यहाँ भट्ठी करो और वहाँ बैठ जाओ, ऐसे नहीं करना। भट्ठी माना सदा का परिवर्तन। तो ऐसा प्लैन बनाओ जो सब खुश हो जाएं। मिनिस्टर जो हैं, प्राइममिनिस्टर, प्रेजीडेंट सब आपके अनुभव से प्रभावित हों। कम से कम गवनर्मेन्ट भी यह तो कहे कि अगर भारत का कल्याण होना है तो यहाँ से ही होना है। तो अभी फास्ट सेवा करो। समझा। अभी बाकी जो भी रहा हुआ है उसको ठीक कराते रहो, करने वाले सभी मिलकर पहाड़ उठाने चाहें तो यह क्या है! बापदादा को भी विशाल मेला अच्छा लगता है। हिम्मत बच्चों की मदद बाप की। अच्छा।

ओम् शान्ति।

18-1-98

सकाश देने की सेवा करने के लिए लगाव मुक्त बन बेहद के वैरागी बनो

आज का दिन विशेष स्नेह का दिन है। अमृतवेले से लेकर चारों ओर के बच्चे अपने दिल के स्नेह को बापदादा के अर्थ अर्पित कर रहे थे। सर्व बच्चों के स्नेह के मोतियों की मालायें बापदादा के गले में पड़ती जा रही थी। आज के दिन एक तरफ स्नेह के मोतियों की मालायें, दूसरे तरफ मीठे-मीठे उल्हनों की मालायें भी थी। लेकिन इस वर्ष उल्हनों में अन्तर देखा। पहले उल्हनें होते थे हमें भी साथ ले जाते, हमने साकार पालना नहीं ली.....। इस वर्ष मैजारिटी का उल्हना यह रहा कि अब बाप समान बन आपके पास पहुँच जाएं। समान बनने का उमंग-उत्साह मैजारिटी में अच्छा रहा। समान बनने की इच्छा बहुत तीव्र है, बन जायें और आ जायें, यह संकल्प रूहरिहान में बहुत बच्चों का रहा। बापदादा भी यही बच्चों को कहते हैं - समान भव, सम्पन्न भव, सम्पूर्ण भव। इसका साधन सदा के लिए बहुत सहज है, सबसे सहज साधन है – सदा स्नेह के सागर में समा जाओ। जैसे आज का दिन स्नेह में समाये हुए थे और कुछ याद था? सिवाए बापदादा के और कुछ याद रहा? उठते, बैठते स्नेह में समाये रहे। चलते-फिरते क्या याद रहा? ब्रह्मा बाप के चरित्र और चित्र, चित्र भी सामने रहा और चरित्र भी स्मृति में रहे। सभी ने स्नेह का अनुभव आज विशेष किया ना? मेहनत लगी? सहज हो गया ना! स्नेह ऐसी शक्ति है जो सब कुछ भुला देती है। न देह याद आती, न देह की दुनिया याद आती। स्नेह मेहनत से छुड़ा देता है। जहाँ मोहब्बत होती है वहाँ मेहनत नहीं होती है। स्नेह सदा सहज बापदादा का हाथ अपने ऊपर अनुभव कराता है। स्नेह छत्रछाया बन मायाजीत बना देता है। कितनी भी बड़ी समस्या रूपी पहाड़ हो, स्नेह पहाड़ को भी पानी जैसा हल्का बना देता है। तो स्नेह में रहना आता है ना? आज रहकर देखा ना! कुछ याद रहा? नहीं रहा ना! बाबा, बाबा और बाबा.... एक ही याद में लवलीन रहे। तो बापदादा कहते हैं और कोई पुरुषार्थ नहीं करो, स्नेह के सागर में समा जाओ। समाना आता है? कभी-कभी बच्चे स्नेह के सागर में समाते हैं लेकिन थोड़ा सा समय समाया, फिर बाहर निकल आते हैं। अभी-अभी कहेंगे बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा और अभी-अभी बाहर निकलते और बातों में लग जाते

हैं। बस सिर्फ थोड़ी-सी जैसे कोई डुबकी लगाके निकल आता है ना, ऐसे स्नेह में समाया, डुबकी लगाई, निकल आये। समाये रहो, तो स्नेह की शक्ति सबसे सहज मुक्त कर देगी।

सभी बच्चों को ब्राह्मण जन्म के आदि का अनुभव, स्नेह ने ब्राह्मण बनाया। स्नेह ने परिवर्तन किया। अपने जन्म के आदि समय का अनुभव याद है ना? ज्ञान और योग तो मिला लेकिन स्नेह ने आकर्षित कर बाप का बनाया। अगर सदा स्नेह की शक्ति में रहो तो सदा के लिए मेहनत से मुक्त हो जायेंगे। वैसे भी मुक्ति वर्ष मना रहे हैं ना। तो मेहनत से भी मुक्त, उसका साधन है - स्नेह में समाये हुए रहो। स्नेह का अनुभव सभी को है ना? या नहीं है? अगर किसी से भी पूछेंगे कि बापदादा से सबसे ज्यादा स्नेह किसका है? तो सभी हाथ उठायेंगे मेरा है। (सबने हाथ हिलाया) साइलेन्स का हाथ उठाओ, आवाज वाला नहीं। तो बापदादा आज यही कहते हैं कि स्नेह की शक्ति सदा कार्य में लगाओ। सहज है ना! योग लगाते हो - देह भूल जाए, देह की दुनिया भूल जाए, मायाजीत बनें। जब स्नेह की छत्रछाया में रहेंगे, तो स्नेह की छत्रछाया के अन्दर माया नहीं आ सकती है। स्नेह के सागर के बाहर आते हो ना तो माया देख लेती है और अपना बना लेती है, निकलो ही नहीं। समाये रहो। स्नेही कोई भी कार्य करते हुए स्नेही को नहीं भूल सकता। स्नेह में खोया हुआ हर कार्य करता। तो जैसे आज के दिन खोये रहे, ऐसे सदा स्नेह में नहीं रह सकते हो क्या? स्नेह सहज ही समान बना देगा क्योंकि जिसके साथ स्नेह है उस जैसा बनना, यह मुश्किल नहीं होता है।

ब्रह्मा बाप से दिल का प्यार है, ब्रह्मा बाप का भी बच्चों से अति स्नेह है। सदा एक-एक बच्चे को इमर्ज कर विशेष समान बनने की सकाश देते रहते हैं। जैसे पास्ट जीवन में एक-एक रत्न को देखते, हर एक रत्न के मूल्य को जानते विशेष कार्य में लगाते, ऐसे अभी भी एक-एक रत्न को विशेष रूप से विशेषता को कार्य में लगाने का सदा संकल्प देते रहते। और हर एक के विशेषता की वाह-वाह गाते रहते। वाह मेरा अमूल्य रत्न। कई बच्चे सोचते हैं कि ब्रह्मा बाप वतन में क्या करते हैं? हम तो यहाँ सेवा करते रहते और ब्रह्मा बाप वहाँ वतन में क्या करते? लेकिन बाप कहते हैं जैसे साकार रूप में सदा बच्चों के साथ रहे, ऐसे वतन में भी रहते हैं। बच्चों के साथ ही रहते हैं, अकेले नहीं रहते हैं। बच्चों

के बिना बाप को भी मजा नहीं आता। जैसे बच्चों को बाप के बिना कुछ सूझता नहीं, ऐसे बाप को भी बच्चों के बिना और कुछ नहीं सूझता। अकेले नहीं रहते हैं, साथ में रहते हैं। साकार में तो साथ का अनुभव साकार रूप में थोड़े बच्चे कर सकते थे, अब तो अव्यक्त रूप में, हर बच्चे के साथ जिस समय चाहे, जब चाहे साथ निभाते रहते हैं। जैसे चित्रों में दिखाते हैं ना - उन्होंने एक-एक गोपी के साथ कृष्ण को दिखा दिया लेकिन यह इस समय का गायन है। अब अव्यक्त रूप में हर बच्चे के साथ जब चाहे, चाहे रात को दो बजे, अढ़ाई बजे हैं, किसी भी टाइम साथ निभाते रहते हैं। साकार में तो सेन्टर्स पर चक्कर लगाना कभी-कभी होता लेकिन अब अव्यक्त रूप में तो पवित्र प्रवृत्ति में भी चक्कर लगाते हैं। बाप को काम ही क्या है, बच्चों को समान बनाके साथ ले जाना, यही तो काम है ना और क्या है? तो इसी में ही बिजी रहते हैं।

तो आज के दिन बापदादा बच्चों को विशेष मेहनत से मुक्त भव का वरदान देते हैं। कोई भी कार्य करो तो डबल लाइट बनके कार्य करो, तो मेहनत मनोरंजन अनुभव करेंगे क्योंकि बापदादा को बच्चों की मेहनत करना, युद्ध करना, हार और जीत का खेल करना - यह अच्छा नहीं लगता। तो मुक्त वर्ष मना रहे हो ना! मना रहे हो या मेहनत में लगे हुए हो? आज के दिन विशेष यह वरदान याद रखना - मेहनत से मुक्त भव। यह संगमयुग मेहनत से मुक्त होने का युग है। मौज में रहने का है। अगर मेहनत है तो मौज नहीं हो सकती है। एक ही युग परम आत्मा और आत्माओं का मौज मनाने का युग है। आत्मा, परमात्मा के स्नेह का युग है। मिलन का युग है। तो दृढ़ संकल्प करो कि आज से मेहनत से मुक्त हो जायेंगे। होंगे ना? फिर ऐसे नहीं यहाँ तो हाथ उठाओ और वहाँ जाकर कहो क्या करें, कैसे करें? क्योंकि बापदादा के पास हर एक बच्चे के दृढ़ संकल्प करने का पूरा फाइल है। बापदादा कभी बच्चों का फाइल देखते हैं। बार-बार दृढ़ संकल्प किया है ना। जब से जन्म लिया और अब तक कितने बार संकल्प किया है, यह करेंगे, यह करेंगे... लेकिन उसको पूरा नहीं किया है। रूहरिहान बहुत अच्छी करते हैं, बापदादा को भी खुश कर देते हैं। जैसे जिज्ञासुओं को प्रभावित कर देते हो ना, तो बापदादा को भी प्रभावित तो कर देते हैं लेकिन दृढ़ संकल्प का प्रभाव थोड़ा समय रहता है, सदा नहीं रहता। तो बापदादा का फाइल तो बढ़ता जाता है। जब भी कोई फंक्शन होता है तो

बापदादा की फाइल में एक प्रतिज्ञा पत्र तो जमा हो ही जाता है, इसलिए बापदादा लिखाते नहीं हैं।

आज भी सभी संकल्प तो कर रहे हैं, अभी कब तक चलता है, फाइल में कागज कब तक रहता है, बाप भी देखते रहते हैं। बच्चों का बाप समान बनना और फाइल खत्म होके फाइनल हो जायेंगे। अभी तो ढेर के ढेर फाइल हैं। तो सिर्फ स्नेह में डूबे रहो, स्नेह के सागर से बाहर नहीं निकलो। ब्रह्मा बाप से दिल का स्नेह है ना? तो स्नेही को फालो करना मुश्किल नहीं होता है। स्नेह के लिए कहते भी हो कि जहाँ स्नेह है, वहाँ जान भी कुर्बान हो जाती है। बापदादा तो जान को कुर्बान करने के लिए नहीं कहते, पुराना जहान कुर्बान कर दो। इसकी फाइनल डेट फिक्स करो। और फंक्शन की डेट तो फिक्स करते हो, 20 तारीख है, 24 तारीख है। इसकी डेट कब फिक्स करेंगे? (इसकी डेट बापदादा फिक्स करें) बापदादा कब शब्द कहते ही नहीं हैं, अब कहते हैं। बापदादा कब पर छोड़ता है क्या? अब कहता है। जो करना है वो अब करो। लेकिन बापदादा तो समर्थ है ना, तो समर्थ के हिसाब से तो अब कहेंगे। बच्चे कब, कब की आदत में हिरे हुए हैं। इसीलिए बापदादा बच्चों को कहते हैं कि यह डेट कब फिक्स करेंगे? आप भी कब, कब कहते हैं तो बाप भी कब कहते हैं।

अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन बापदादा समझते हैं कि बच्चों का समय शिक्षक नहीं बनें, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है। उसमें मार्क्स कम हो जाती हैं। अभी भी कई बच्चे कहते हैं - समय सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का इन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ। ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेहद का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा नेचुरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है। मेरा शरीर है, नहीं। बाबा का रथ है। बाबा के रथ को खिलाता हूँ, मैं खाता हूँ, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि

मेरा धन लग रहा है। कभी वर्णन नहीं किया कि मेरा धन लग रहा है या मैंने धन लगाया है। बाबा का भण्डारा है, भोलेनाथ का भण्डारा है। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रूपये की चीज़ भी यूज नहीं की। कन्याओं, माताओं की जिम्मेवारी है, कन्याओं-माताओं को विल किया, मेरापन नहीं। समय, श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज़ नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज़ अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं यूज़ नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे। सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए है। तो इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकड़ा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबूत देखा। एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा..... और सभी बातों से उपराम। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। फालो फादर करो। साकार में ब्रह्मा बाप रहा, निराकार की तो बात छोड़ो। साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना! पास विद ऑनर का सर्टीफिकेट ले लिया। विशेष कारण बेहद की वैराग्य वृत्ति। अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं। कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है। समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। मुक्त होना है, नहीं। लेकिन ऐसे तो चलता ही है। अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं। चाहना है बनें, संकल्प भी करते हैं - बनना ही है। लेकिन चाहना और करना दोनों का बैलेन्स नहीं है। चाहना ज्यादा है, करना कम है। करना ही है - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज नहीं है। बीच-बीच में इमर्ज होती है, फिर मर्ज हो जाती है। समय तो करेगा ही लेकिन पास विद ऑनर नहीं बन सकते। पास होंगे लेकिन पास विद ऑनर नहीं। समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। मोटा-मोटा

पुरुषार्थ तो है लेकिन सूक्ष्म लगाव में बंध जाते हैं।

बापदादा जब बच्चों के गीत सुनते हैं – उड़ आयें, उड़ आयें... तो सोचते हैं उड़ा तो लें लेकिन लगाव उड़ने देंगे या न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे? अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो। प्रोग्राम प्रमाण वैराग्य जो आता है वह अल्पकाल का होता है। चेक करो - अपने सूक्ष्म लगाव को। मोटी-मोटी बातें अभी खत्म हुई हैं, कुछ बच्चे मोटे-मोटे लगाव से मुक्त हैं भी लेकिन सूक्ष्म लगाव बहुत सूक्ष्म हैं, जो स्वयं को भी चेक नहीं होते हैं। (मालूम नहीं पड़ते है)। चेक करो, अच्छी तरह से चेक करो। सम्पूर्णता के दर्पण से लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के स्मृति दिवस की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो। प्यार है ना, तो प्यार में क्या किया जाता है? गिफ्ट देते हैं ना? तो यह गिफ्ट दो। छोड़ो, सब किनारे छोड़ो। मुक्त हो जाओ। बापदादा खुश भी होते हैं कि बच्चों में उमंग-उत्साह उठता है, बहुत अच्छे-अच्छे स्व-उन्नति के संकल्प भी करते हैं। अभी उन संकल्पों को करके दिखाओ। अच्छा।

आज विशेष टीचर्स का संगठन इक्ट्ठा हुआ है। सेवा का रिटर्न यह उत्सव रखा जाता है। बापदादा खुश होते हैं कि बच्चों को सेवा का फल मिल रहा है वा मना रहे हैं, खा रहे हैं। सेवा में नम्बरवार सफल रहे हैं और रहते रहेंगे। बापदादा बच्चों के 40 साल की सेवा देख हर्षित होते हैं। हाथ उठाओ जो फंक्शन के लिए आये हैं। बड़ा ग्रुप है। 40 वर्ष भी सेवा में अमर भव के वरदानी रहे हैं इसकी मुबारक हो। आपके संगठन को देख सब बहुत खुश होंगे कि 40 वर्ष सेवा में अमर रहना - यह भी कमाल है। डायमण्ड जुबली हुई, सिल्वर जुबली हुई और यह कौन सी जुबली है? यह विशेष जुबली है। ज्यादा मेहनत इस ग्रुप ने ही की है। यह ग्रुप जैसे बॉर्डर में मिलेट्री जाती है ना और कमान्डर तो पीछे रहते हैं लेकिन बॉर्डर पर महारथी ही जाते हैं। तो सेवा के बॉर्डर में यह ग्रुप रहा है। बापदादा समान सेवाधारी ग्रुप को देख खुश होते हैं। बॉर्डर पर जाने वाले पक्के होते हैं। बहुत अनुभव होते हैं ना। सामना करने की शक्ति ज्यादा होती है। हर ग्रुप की विशेषता अपनी-अपनी है। तो डायमण्ड जुबली वाले स्थापना के निमित्त बनें, गोल्डन जुबली वाले सेवा में आदि रत्न निमित्त बनें। सिल्वर जुबली वाले राइट हैण्ड बन आगे बढ़े और बढ़ाया। और यह विशेष ग्रुप सेवा के सर्व प्रकारों के अनुभवी मूर्त हैं। ज्यादा अनुभव इस ग्रुप

को है। मेहनत भी की है लेकिन मोहब्बत में मेहनत की है। इसलिए बापदादा इस ग्रुप को विशेष सेवाधारी, सफलतामूर्त ग्रुप कहते हैं। जो नये-नये आते हैं उनकी पालना के निमित्त आधारमूर्त यह ग्रुप है। इस ग्रुप को एक बात कहें ? सुनने के लिए तैयार हो? आर्डर करेंगे। आर्डर करें? एवररेडी ग्रुप है ना?

बापदादा को विशेष सेवा में सफलता स्वरूप आत्माओं को देख यह संकल्प आता है कि सेन्टर तो अच्छे जमा दिये हैं। जमा दिये हैं ना या हिलने वाले हैं? अभी इस ग्रुप में से बेहद की सेवा के लिए कोई रत्न निकलने चाहिए। एवररेडी हैं या सेन्टर छोड़ना मुश्किल है? मुश्किल है या सहज है? अभी हाथ उठाओ। आप निकलेंगे तो सेन्टर हिलेंगे क्या? यह भी पक्का हो ना। आप कहो हम तो तैयार हैं सेन्टर हिले या नहीं, हमारा क्या जाता। ऐसा नहीं। बापदादा फिर भी 6 मास का टाइम देते हैं, अपने सेन्टर्स पर ऐसा राइट हैण्ड बनाओ जो आप चक्रवर्ती बन सको; क्योंकि बापदादा देखते हैं - चक्रवर्ती बनकर सेवा करने वालों से एक ही जगह पर बैठकर सेवा करने वालों का नम्बर थोड़ा पीछे हो जाता है। वह चक्रवती नम्बरवन राजा बन सकते हैं। और यह ग्रुप ऐसा है जो नम्बर आगे ले सकते हैं। तो नम्बर लेंगे? फिर दादी आर्डर करेगी, एवररेडी। (दादी से) आर्डर करेंगी ना? आपको हैण्डस चाहिए ना? कभी-कभी दादी रूहरिहान करती है - मददगार चाहिए। तो कौन यह फरमाइस पूरी करेंगे? आप लोग ही कर सकते हैं। बापदादा उम्मींदवार आत्मायें समझते हैं। इसलिए अपने-अपने स्थान ऐसे पक्के करो, मजबूत बनाओ जो आप जैसे ही चलें, अन्तर नहीं पड़े। ब्रह्मा बाप ने देखा क्या कि पीछे क्या होगा? नहीं देखा ना! अच्छा ही है और अच्छा ही होना है। तो सेकण्ड में लगावमुक्त आत्मा उड़ गई। कोई लगाव ने खींचा नहीं। तो ऐसा ग्रुप बनाओ, कोई लगाव नहीं। मेरी यह ड्युटी है, मेरे बिना कोई कर नहीं सकेगा – यह संकल्प नहीं आवे, इससे भी वैराग्य। तो सुना बापदादा की बात? ध्यान से सुनी। अच्छा - अभी 6 मास में सभी ऐसे सेन्टर पक्का करना, फिर आर्डर होगा। पसन्द है ना? विश्व महाराजन बनना है कि स्टेट का राजा बनना है? कौन सा राजा बनना है? एक ही सेन्टर सम्भालना तो स्टेट का राजा बनेंगे। चक्रवर्ती बनेंगे तो विश्व के राजा बनेंगे। जैसे आप अनुभवी बने हो वैसे औरों को अनुभवी बनाओ। मुश्किल काम तो नहीं है? मुश्किल हो तो ना कर दें। अगर मुश्किल लगता हो तो बापदादा कहेंगे जहाँ हैं वहाँ ही रहो।

यह भी छुट्टी है, जिसकी जो इच्छा हो वह करे, लेकिन बापदादा इस ग्रुप को आगे बढ़ने के उम्मींदवार समझते हैं। ठीक है? पसन्द है?

मनाने के पहले फिक्र तो नहीं हो गया? बेफिक्र बादशाह हैं। जब ब्रह्मा बाप ने कुछ नहीं सोचा, तो फालो फादर। बच्चों ने सोचा क्या होगा, कैसे होगा, सेन्टर चलेंगे नहीं चलेंगे, मुरली कहाँ से आयेगी.... कितने क्वेश्चन सोचे, ब्रह्मा बाप ने सोचा? सेकण्ड में व्यक्त से अव्यक्त हो गये। लेकिन और अच्छे ते अच्छा होना ही है, यह निश्चय रहा। और हो रहा है ना? बाकी बापदादा को हर ग्रुप की विशेषता प्यारी लगती है। अच्छा।

चारों ओर देश विदेश के स्नेह में समाये हुए स्नेही बच्चों को, सदा बाप के स्नेह के सागर में समाये हुए रहने वाले अति समीप आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप की विशेषताओं को स्वयं में धारण करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा मेहनत मुक्त हो, मौज में रहने वाली परमात्म प्यार में उड़ने वाली आत्माओं को, बाप समान बनने के संकल्प को साकार में लाने वाले ऐसे दिलाराम बाप के दिल में समाये हुए बच्चों को, विशेष आज के दिन ब्रह्मा बाप की पदम-पदमगुणा यादप्यार स्वीकार हो। बापदादा तो सदा बच्चों के दिल में रहता है, वतन में रहते भी बच्चों के दिल में रहते हैं, तो ऐसे दिल में समाने वाले बच्चों को बापदादा का स्नेह के मोतियों की थालियां भर-भर कर यादप्यार और नमस्ते।

(गुजरात की सेवा का टर्न है) अच्छा है। गुजरात वाले अनुभवी मूर्त हैं। समीप होने के कारण हर कार्य में एवररेडी हो जाते हैं। हर एक ज़ोन को यह सेवा का चांस भी अच्छा मिला है। सेवा करना अर्थात् सर्व की दुआयें लेना। तो कितनी दुआयें ली हैं? बहुत ली हैं ना? तो गुजरात दुआओं की झोली भर रहे हैं। अच्छा। सभी गुजरात के सेवाधारी हाथ उठाओ। सिर्फ सेवा नहीं कर रहे हो, दुआयें जमा कर रहे हो। अच्छा।

जो भाई-बहिनें कैबिन में बैठे हुए सेवा कर रहे हैं
उन सबके प्रति बापदादा बोले:-

यह भी मेहनत बहुत करते हैं। यह डिपार्टमेंट (साउण्ड डिपार्टमेंट) भी मेहनत अच्छी करता है। जो भी सभी कैबिन में बैठे हैं सभी मेहनत अच्छी करते हो, सभी को सुख देते हो। तो सुख देने की दुआयें बहुत मिलती हैं। पुरुषार्थ

में यह दुआयें एड हो जाती हैं। निर्विघ्न सेवा, यह बहुत पदमगुणा फल देती है। जितनी निर्विघ्न सेवा होती है उतना ऑटोमेटिक मार्क्स बढ़ती जाती हैं। सबको सुख देना, किसी भी बात से, चाहे कर्म से, चाहे वाणी से, चाहे मन्सा से – कोई भी सुख देता है तो उसकी मार्क्स ऑटोमेटिक बढ़ती जाती हैं। मेहनत से इतनी नहीं बढ़ती जितनी यह ऑटोमेटिक मार्क्स बढ़ती हैं। तो सुख स्वरूप बनकर सुख दो। सुख दो और सुख लो। ऐसे है ना। बहुत अच्छा।

मधुबन निवासियों को दुआयें बहुत मिलती हैं। चाहे सफाई करने वाला भी हो, झाड़ू लगाने वाला हो लेकिन सफाई भी अच्छी देखकर सबकी दुआयें मिलती हैं। सबसे सहज पुरुषार्थ है दुआयें लो, दुआयें दो। इसमें कोई मेहनत नहीं है। बहुत जल्दी मायाजीत बन जायेंगे। किसको मर्यादापूर्वक दु:ख नहीं देना है। ऐसे भी नहीं है कि मर्यादा तोड़ करके इसको सुख दो, नहीं। वह सुख के खाते में जमा नहीं होता है, वह ऑटोमेटिक मशीनरी दु:ख के खाते में जमा हो जाती है। इसलिए दिल से सुख दो, मर्यादापूर्वक दिल से। दिखावा-मात्र नहीं, दिल से। सुख कर्ता के बच्चे एक सेकण्ड में अपनी मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा, संबंध-सम्पर्क द्वारा सुख दे सकते हैं। अच्छा।

(यह इस सीजन का सबसे बड़ा ग्रुप है।)

सभी आराम से रहे हैं। टीचर्स को तो आराम मिलता ही है। टीचर्स तो स्पेशल हैं ना। (डबल फारेनर्स भी 150 के लगभग आये हैं) बाप विश्व कल्याणकारी है तो हर ग्रुप में देश-विदेश होना ही चाहिए। विदेश वालों को यह सीजन का पसन्द है? इतनी बड़ी सभा पसन्द है? सभी विदेशियों ने बहुत अच्छे अनुभव के पत्र लिखे हैं। बापदादा के पास पहुंचे हैं। कईयों ने अपना उमंग-उत्साह बहुत अच्छा लिखा है और कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ भी लिखा है लेकिन मैजारिटी रिजल्ट अच्छी है। अभी पहले जैसे जल्दी-जल्दी हिलने वाले नहीं हैं, अचल हो गये हैं। इसलिए डबल विदेशियों को आगे बढ़ने की मुबारक हो। (160 स्थानों पर डायरेक्ट सुन रहे हैं) अच्छा है ब्रह्मा बाप ने पहले से ही कहा है कि एक समय आयेगा जो सारे वर्ल्ड में बाप का सन्देश जायेगा। अभी सुनते हैं फिर देखेंगे भी। आप सबका साक्षात्कार करेंगे। जगह-जगह पर आपको जाना नहीं पड़ेगा। एक जगह से ही बापदादा सहित आप सभी बच्चों का साक्षात्कार हो जायेगा। अच्छा।

१८-१-९९ ओम् शान्ति ''अव्यक्त-बापदादा'' मधुबन

वर्तमान समय के प्रमाण वैराग्य वृत्ति को इमर्ज कर साधना का वायुमण्डल बनाओ

आज स्नेह के सागर बापदादा अपने अति स्नेही बच्चों से मिल रहे हैं। आज का दिन विशेष स्नेह का दिन है। अमृतवेले से लेकर चारों ओर के बच्चे स्नेह की लहरों में लहरा रहे हैं। हर एक बच्चे के दिल का स्नेह दिलाराम बाप के पास पहुँच गया। बापदादा भी सभी बच्चों को स्नेह के रेसपान्स में स्नेह और समर्थ-पन का वरदान दे रहे हैं। आज के दिन को बापदादा यज्ञ की स्थापना में विशेष परिवर्तन का दिन कहते हैं। आज के दिन ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में बैकबोन बन अपने बच्चों को साकार रूप में विश्व के मंच पर प्रत्यक्ष किया। इसलिए इस दिवस को बच्चों के प्रत्यक्षता का दिन कहा जाता है। समर्थ दिवस कहा जाता है। विल पावर देने का दिवस कहा जाता है। ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में कार्य करा रहा है। अलग नहीं है, साथ ही है सिर्फ गुप्त रूप में करा रहा है। यह अव्यक्ति दिवस बच्चों के कार्य को तीव्र गति में लाने का दिवस है। अभी भी हर एक बच्चे की छत्रछाया बन पालना का कर्तव्य कर रहे हैं। जैसे माँ बच्चों के लिए छत्रछाया होती है ऐसे ही अमृतवेले से लेकर ब्रह्मा माँ चारों तरफ के बच्चों की रेख-देख करते रहते हैं। साकार में निमित्त बच्चे हैं लेकिन भाग्य विधाता ब्रह्मा माँ हर बच्चे के भाग्य को देख बच्चों को विशेष शक्ति, हिम्मत, उमंग-उत्साह की पालना करते रहते हैं। शिव बाप तो साथ में है ही लेकिन विशेष ब्रह्मा का पालना का पार्ट है।

आज के दिन भाग्य विधाता ब्रह्मा हर बच्चे को विशेष स्नेह के रिटर्न में वरदान का भण्डार भण्डारी बन बांटते हैं। जो बच्चा जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित हो मिलन मनाते हैं उस हर एक बच्चे को जो वरदान चाहिए वह सहज प्राप्त होता है। वरदानों का खुला भण्डार है, जो चाहिए, जितना चाहिए उतना प्राप्त होने का श्रेष्ठ दिवस है। **स्नेह का रिटर्न होता है - सहज वरदान की**

गिफ्ट। तो गिफ्ट में मेहनत नहीं करनी पड़ती है, सहज प्राप्ति होती है। गिफ्ट मांगी नहीं जाती है, स्वत: ही प्राप्त होती है। पुरुषार्थ से वरदान के अनुभूति की प्राप्ति अलग चीज़ है लेकिन आज के दिन ब्रह्मा माँ स्नेह के रिटर्न में वरदान देते हैं। तो आज के दिन सभी ने सहज वरदान प्राप्त होने की अनुभूति की? अभी भी सच्चे दिल के स्नेह का रिटर्न वरदान प्राप्त कर सकते हो। **वरदान प्राप्त करने का साधन है - दिल का स्नेह।** जहाँ दिल का स्नेह है, वो स्नेह ऐसा खजाना है जिस खजाने द्वारा, बापदादा द्वारा जो चाहे अविनाशी वरदान प्राप्त कर सकते हो। वह स्नेह का खजाना हर बच्चे के पास है? स्नेह का खजाना है तब तो पहुंचे हो ना! स्नेह खींचकर लाया है और स्नेह में रहना बहुत सहज है। पुरुषार्थ की मेहनत नहीं करनी पड़ती क्योंकि स्नेह का अनुभव हर आत्मा को होता ही है। सिर्फ अब जो बिखरा हुआ स्नेह था, कुछ कहाँ, कुछ कहाँ था, वह बिखरा हुआ स्नेह एक के ही साथ जोड़ लिया है क्योंकि पहले अलग-अलग संबंध था, अब एक में सर्व संबंध हैं। तो सहज सर्व स्नेह एक से हो गया। इसलिए हर एक कहता है मेरा बाबा। तो स्नेह किससे होता है? मेरे से। सभी कहते हैं ना मेरा बाबा, या दादियों का बाबा है? महारथियों का बाबा है? सबका बाबा है ना! आज के दिन कितने बार हर एक बच्चे ने दिल से कहा - मेरा बाबा, मेरा बाबा। सभी ने मेरा-बाबा, मेरा-बाबा कह रूहरिहान की ना! सारा दिन क्या किया? स्नेह के पुष्प बापदादा को अर्पित किया। बापदादा के पास स्नेह के पुष्प बहुत बढ़िया से बढ़िया पहुंच रहे थे। स्नेह तो बहुत अच्छा रहा, अब बाप कहते हैं स्नेह का स्वरूप साकार में इमर्ज करो। वह है समान बनना। अभी यह समान बनने का लक्ष्य तो सभी के पास है, अभी साकार में लक्षण दिखाई दें। जिस भी बच्चे को देखें, जो भी मिले, संबंध-सम्पर्क में आये, उन्हों को यह लक्षण दिखाई दें कि यह जैसे परमात्मा बाप, ब्रह्मा बाप के गुण हैं, वह बच्चों के सूरत और मूरत से दिखाई दें। अनुभव करें कि इनके नयन, इनके बोल, इन्हों की वृत्ति वा वायब्रेशन न्यारे हैं। मधुबन में आते हैं तो बाप ब्रह्मा के कर्म साकार में होने के कारण भूमि में तपस्या, कर्म और त्याग के वायब्रेशन समाये हुए होने के कारण यहाँ सहज

अनुभव करते हैं कि यह संसार न्यारा है क्योंकि ब्रह्मा बाप और विशेष बच्चों के वायब्रेशन से वायुमण्डल अलौकिक बना हुआ है। ऐसे ही जो बच्चा जहाँ भी रहता है, जो भी कर्मक्षेत्र है, हर एक बच्चे से बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल अनुभव में आये, इसको बापदादा कहते हैं - बाप समान बनना। जो अभी तक संकल्प है बाप समान बनना ही है, वह संकल्प अभी चेहरे और चलन से दिखाई दे। जो भी संबंध-सम्पर्क में आये उनके दिल से यह आवाज निकले कि यह आत्मायें बाप समान हैं। (बीच-बीच में खांसी आ रही है) आज माइक खराब है, मिलना तो है ना। यह भी तो माइक है ना, यह माइक नहीं चलता तो यह माइक भी काम का नहीं। कोई हर्जा नहीं यह भी मौसम का फल है।

तो बापदादा अभी सभी बच्चों से यह प्रत्यक्षता चाहते हैं। जैसे वाणी द्वारा प्रत्यक्षता करते हो तो वाणी का प्रभाव पड़ता है, उससे भी ज्यादा प्रभाव गुण और कर्म का पड़ता है। हर एक बच्चे के नयनों से यह अनुभव हो कि इन्हों के नयनों में कोई विशेषता है। साधारण नहीं अनुभव करें। अलौकिक हैं। उन्हों के मन में क्वेश्चन उठे कि यह कैसे बनें, कहाँ से बनें। स्वयं ही सोचें और पूछें कि बनाने वाला कौन? जैसे आजकल के समय में भी कोई बढ़िया चीज़ देखते हो तो दिल में उठता है कि यह बनाने वाला कौन है! ऐसे अपने बाप समान बनने की स्थिति द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो। आजकल मैजारिटी आत्मायें सोचती हैं कि क्या इस साकार सृष्टि में, इस वातावरण में रहते हुए ऐसे भी कोई आत्मायें बन सकती हैं! तो आप उन्हों को यह प्रत्यक्ष में दिखाओ कि बन सकता है और हम बने हैं। आजकल प्रत्यक्ष प्रमाण को ज्यादा मानते हैं। सुनने से भी ज्यादा देखने चाहते हैं तो चारों ओर कितने बच्चे हैं, हर एक बच्चा बाप समान प्रत्यक्ष प्रमाण बन जाए तो मानने और जानने में मेहनत नहीं लगेगी। फिर आपकी प्रजा बहुत जल्दी-जल्दी तैयार हो जायेगी। मेहनत, समय कम और प्रत्यक्ष प्रमाण अनुभव करने से जैसे प्रजा का स्टैम्प लगता जायेगा। राजे रानी तो आप बनने वाले हैं ना!

बापदादा एक बात का फिर से अटेन्शन दिला रहे हैं कि **वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो।** बापदादा ने हर बच्चे को चाहे प्रवृत्ति में है, चाहे सेवाकेन्द्र पर है, चाहे कहाँ भी रहते हैं, स्थूल साधन हर एक को दिये हैं, ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसके पास खाना, पीना, रहना इसके साधन नहीं हो। जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। अगर कोई को कमी है तो वह उसके अपने अलबेलेपन या आलस्य के कारण है। बाकी ड्रामानुसार बापदादा जानते हैं कि आवश्यक साधन सबके पास हैं। जो आवश्यक साधन हैं वह तो चलने ही हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ आवश्यकता से भी ज्यादा साधन हैं। साधना कम है और साधन का प्रयोग करना या कराना ज्यादा है। इसलिए बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अन्डरलाइन करा रहे हैं - **कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना।** ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग से दूर रहे। होते हुए दूर रहना - उसे कहेंगे वैराग्य। लेकिन कुछ है ही नहीं और कहे कि हमको तो वैराग्य है, हम तो हैं ही वैरागी, तो वह कैसे होगा। वह तो बात ही अलग है। सब कुछ होते हुए नॉलेज और विश्व कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति हो। जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्ठी में पड़े हुए थे। यह ८४ वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। विश्व की आत्माओं के कल्याण के प्रति भी इस समय इस विधि की आवश्यकता है क्योंकि चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पदमपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी का विशेष कारण यह हद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की

वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। आप वृक्ष की जड़ हैं, ब्राह्मणों का स्थान वृक्ष में कहाँ दिखाया है? जड़ में दिखाया है ना! तो आप फाउण्डेशन हैं, आपकी लहर विश्व में फैलेगी इसलिए बापदादा विशेष साकार में ब्रह्मा बाप समान बनने की विधि, वैराग्य वृत्ति की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहा है। हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। होते हुए वैराग्य वृत्ति हो। आवश्यक साधन यूज़ करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। **अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ।** समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। सेवा का विस्तार इस वर्ष में बहुत किया। इस वर्ष चारों ओर बड़े-बड़े प्रोग्राम किये और सेवा से सहयोगी आत्मायें भी बहुत बने हैं, समीप आये हैं, सम्पर्क में आये हैं, लेकिन क्या सिर्फ सहयोगी बनाना है? यहाँ तक रखना है क्या? सहयोगी आत्मायें अच्छी-अच्छी हैं, अब उन सहयोगी क्वालिटी वाली आत्माओं को और संबंध में लाओ। अनुभव कराओ, जिससे सहयोगी से सहज योगी बन जाएं। इसके लिए एक तो साधना का वायुमण्डल और दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो इससे सहज सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे। उन्हों की सेवा भले करते रहो लेकिन साथ में साधना, तपस्या का वायुमण्डल आवश्यक है।

अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या से करनी है। अभी मन्सा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा सेवा की टचिंग हो, उसकी आवश्यकता है। समय समीप आ रहा है, निरन्तर स्थितियाँ और निरन्तर पॉवरफुल वायुमण्डल की आवश्यकता है। बाप समान बनना है तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो। यही ब्रह्मा बाप की अन्त तक विशेषता देखी। न वैभव में लगाव रहा, न बच्चों में.. सबसे वैराग्य वृत्ति। तो आज के दिन का बाप समान बनने का पाठ पक्का

करना। बस ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ा-येगा।

बाकी सभी बच्चे सोचते होंगे कि आज प्राइज़ मिलना है। अभी देखो चारों ओर के बच्चे तो हैं नहीं, तो सिर्फ आप आये हुए को प्राइज़ दें! प्राइज तो है ही परन्तु बापदादा कहते हैं - हर एक सारे वर्ष में सर्व बन्धनों से मुक्त रहे! लिस्ट निकाली थी ना। कितने बंधन निकाले थे? (०५) अच्छा तो ०५ ही बंधन से स्वप्न तक भी मुक्त, स्वप्न में भी कोई बंधन की रूप-रेखा न आई हो, इसको कहा जाता है मुक्त। तो हाथ तो बहुत सहज उठाते हैं, बाबा को पता है हाथ उठवायेंगे तो बहुत प्रकार के हाथ उठेंगे लेकिन फिर भी बापदादा कहते हैं कि जिस चेकिंग से आप हाथ उठाने के लिए तैयार हैं, बापदादा को पता है कितने तैयार हैं, कौन तैयार हैं। अभी भी और अन्तर्मुखी बन सूक्ष्म चेकिंग करो। अच्छा कोई को दुःख नहीं दिया, लेकिन जितना सुख का खाता जमा होना चाहिए उतना हुआ? नाराज़ नहीं किया, राज़ी किया? व्यर्थ नहीं सोचा लेकिन व्यर्थ के जगह पर श्रेष्ठ संकल्प इतने ही जमा हुए? सबके प्रति शुभ भावना रखी लेकिन शुभ भावना का रेसपान्स मिला? वह चाहे बदले नहीं बदले, लेकिन आप उससे सन्तुष्ट रहे? ऐसी सूक्ष्म चेकिंग फिर भी अपने आपकी करो और अगर ऐसी सूक्ष्म चेकिंग में पास हो तो बहुत अच्छे हो। ऐसी पास आत्मायें अपने-अपने सेवाकेन्द्र पर चारों ओर सेन्टर पर अपना नाम, रिजल्ट सब बातों में कितना परसेन्ट रहा? सुख कितने को दिया? राज़ी कितने रहे? नाराज़ को राजी किया? कि जो राज़ी है उसको ही राज़ी किया? तो यह सब चेकिंग करके पास विद ऑनर हैं, तो अपना नाम, अपने टीचर को लिख करके दो और टीचर जो छोटे-छोटे सेन्टर हैं, उन्हों के ऊपर जो बड़ी बहिनें मुकरर हैं, वह उन्हों से पास करावें फिर ज़ोन के पास सब नाम आवें। ज़ोन के पास सब नाम इक्ट्ठे करो फिर वह ज़ोन वाली ऐसी पास वाली आत्माओं के नाम मधुबन में भेजें, फिर इनाम मिलेगा। फिर ताली बजायेंगे। जो ऐसे पास विद ऑनर होंगे उसको तो प्राइज मिलना ही चाहिए, वह मिलेगी लेकिन सच्ची दिल से, सच्चे बाप को अपना

सच्चा पोतामेल बताना और प्राइज़ लेना क्योंकि बापदादा के पास सबके संकल्प तो पहुंचते हैं ना। तो जो हाथ उठाने वाले हैं ना, उसमें बापदादा ने देखा कि मिक्स बहुत हैं और बिना समझ के हाथ उठा देते हैं। तो कोई मिक्स वाले हाथ उठा दें और बापदादा प्राइज़ नहीं देवे तो अच्छा नहीं है। इसलिए कायदे-प्रमाण अगर पास विद ऑनर हैं तो उसकी तो बहुत-बहुत महिमा है और ऐसे का नाम तो सभी ब्राह्मणों में प्रसिद्ध होना चाहिए ना। अच्छा है, मैजारिटी ने मेहनत अच्छी की है, अटेन्शन रहा है परन्तु सम्पूर्ण की बात है। जिन्होंने मेहनत की है, उन्हों को आज प्राइज़ के बजाए मुबारक दे रहे हैं। फिर प्राइज़ देंगे। ठीक है ना!

अच्छा - दूसरी बात थी कि सभी ज़ोन वालों को मार्च तक माइक लाना है, सभी को याद तो है। तो पहले मार्च में बापदादा ज़ोन वालों से रिजल्ट लेंगे, किसने और किस क्वालिटी का माइक तैयार किया। आप कहेंगे यह माइक है लेकिन होगा छोटा माइक। समझो जिस नगर का माइक निकला, उसी नगर का माइक है, ज़ोन का भी नहीं है, तो उसको छोटा माइक कहेंगे ना। तो ऐसा कौन सा माइक तैयार किया है, वह बापदादा पूछेंगे। अगर कोई ज़ोन वाले लास्ट में नहीं भी आ सके तो अपनी चिटकी लास्ट टर्न में लिखकर भेजें, आवें तो ज़ोन के हेडस् को निमन्त्रण है। अगर नहीं आ सकते हैं, न आने का कोई ऐसा कारण है तो अपनी चिटकी भेज देंगे तो भी चलेगा। फिर बापदादा उन सभी माइक के संगठन का प्रोग्राम रखेंगे, जिसमें सभी तरफ के माइक स्टेज पर आयेंगे। उन्हों का विशेष प्रोग्राम रखेंगे, ऐसे नहीं कि मार्च में माइक भी लेकर आवें। माइक को वहाँ ही रहने दो, आप आना। जो माइक है उन्हों को तो धूमधाम से मंगायेंगे ना। उन्हों की स्वागत भी तो अच्छी करनी है ना। तो उन्हों का स्पेशल प्रोग्राम रखेंगे और फिर प्राइज देंगे नम्बरवन, टू, थ्री। ठीक है। ज़ोन वालों को स्पष्ट हुआ? मार्च में रिजल्ट लानी है। अच्छा।

अभी क्या याद रखा? कौन सी बात को अन्डरलाइन किया? बेहद का वैराग्य। अभी आत्माओं को इच्छाओं से बचाओ। बिचारे बहुत दु:खी हैं। बहुत परेशान हैं। तो अभी रहमदिल बनो। रहम की लहर बेहद के वैराग्य वृत्ति द्वारा

फैलाओ। अभी सभी ऊंचे ते ऊंचे परमधाम में बाप के साथ बैठ सर्व आत्माओं को रहम की दृष्टि दो। वायब्रेशन फैलाओ। फैला सकते हैं ना? तो बस अभी परमधाम में बाप के साथ बैठ जाओ। वहाँ से यह बेहद के रहम का वायुमण्डल फैलाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा।

चारों ओर के सर्व अति स्नेही बच्चों को, सर्व चारों ओर के साधना करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, बापदादा को सारे दिन में बहुत प्यारे-प्यारे, मीठे-मीठे दिल के गीत सुनाने वाले, रूह-रिहान करने वाले शक्तियों के, गुणों के वरदान से झोली भरने वाले, बापदादा को सबके गीत, खुशी के गीत स्नेह के गीत, रूहानी नशे के गीत, मीठी-मीठी बातें बहुत-बहुत दिल को लुभाने वाली सुनाई दी और बापदादा भी सुनने और मिलने में लवलीन थे। तो ऐसे दिल के सच्चे, दिल के आवाज़ सुनाने वाले बच्चे महान हैं और सदा महान रहेंगे, ऐसे मीठे-मीठे बच्चे सदा बेहद के वैराग्य वृत्ति को अपनाने वाले, दृढ़ निश्चय बुद्धि बच्चों को बापदादा एक के बदले पदमगुणा रिटर्न स्नेह दे रहे हैं। दिलाराम के दिल पर रहने वाले सभी बच्चों को बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

जो बाहर भी सुन रहे हैं उन्हों को भी बाबा देख रहे हैं और बापदादा दूर नहीं देखते हैं लेकिन सभी तरफ के बच्चों को सम्मुख देख यादप्यार और मुबारक और याद सौगात वा याद पत्रों का रिटर्न कर रहे हैं कि सदा उड़ती कला में उड़ने वाले बच्चे सदा आबाद हैं, सदा ही आबाद रहेंगे। अच्छा।

दादी जी से:-

आज के दिन को स्मृति दिवस कहते हैं, तो स्मृति में क्या रहा? समर्थ का वरदान याद रहा? आपको तो डायरेक्ट विल कर ली ना? अच्छा पार्ट बजा रही हो। बापदादा देख रहे हैं, वृद्धि भी बहुत हो रही है और यह वृद्धि भी सेवा का सबूत ही है। तो बच्चों की सेवा को देख बापदादा तो खुश होते हैं। बाप गुप्त हो गये, अभी सभी के मुख पर क्या है? अभी तो सभी के मुख पर सामने बच्चे ही हैं। ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं तो अभी बच्चे प्रत्यक्ष हुए। अभी बाप प्रत्यक्ष होना है। बाप ने पहले बच्चों को प्रत्यक्ष किया। अभी बाप प्रत्यक्ष होंगे तो फिर तो समाप्ति हो जायेगी ना। इसलिए पहले बच्चे प्रत्यक्ष हो रहे हैं

फिर बाप होंगे। फिर भी बहुत अच्छा, सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा है, अभी निर्विघ्न बनाने की ज्यादा लहर फैलाओ। यह भी लहर फैल जायेगी तो सहज हो जायेगा।

आज सभी तरफ अच्छा वायुमण्डल था (सभी स्नेह में डूबे हुए थे) दिन का महत्व होता है। इस दिन का भी महत्व है। (दादी जानकी ने खास याद दिया है)

ब्रह्मा बाप समान त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाओ

आज समर्थ बापदादा अपने समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। आज का दिन स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस है। आज का दिन बच्चों को सर्व शक्तियां विल में देने का दिवस है। दुनिया में अनेक प्रकार की विल होती है लेकिन ब्रह्मा बाप ने बाप से प्राप्त हुई सर्व शक्तियों की विल बच्चों को की। ऐसी अलौकिक विल और कोई भी कर नहीं सकते हैं। बाप ने ब्रह्मा बाप को साकार में निमित्त बनाया और ब्रह्मा बाप ने बच्चों को 'निमित्त भव' का वरदान दे विल किया। यह विल बच्चों में सहज पावर्स की (शक्तियों की) अनुभूति कराती रहती है। एक है अपने पुरुषार्थ की पावर्स और यह है परमात्म-विल द्वारा पावर्स की प्राप्ति। यह प्रभु देन है, प्रभु वरदान है। यह प्रभु वरदान चला रहा है। वरदान में पुरुषार्थ की मेहनत नहीं लेकिन सहज और स्वत: निमित्त बनाकर चलाते रहते हैं। सामने थोड़े से रहे लेकिन बापदादा द्वारा, विशेष ब्रह्मा बाप द्वारा विशेष बच्चों को यह विल प्राप्त हुई है और बापदादा ने भी देखा कि जिन बच्चों को बाप ने विल की उन सभी बच्चों ने *(आदि रत्नों ने और सेवा के निमित्त बच्चों ने)* उस प्राप्त विल को अच्छी तरह से कार्य में लगाया। और उस विल के कारण आज यह ब्राह्मण परिवार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। बच्चों की विशेषता के कारण यह वृद्धि होनी थी और हो रही है।

बापदादा ने देखा कि निमित्त बने हुए और साथ देने वाले दोनों प्रकार के बच्चों की दो विशेषतायें बहुत अच्छी रही। पहली विशेषता – चाहे स्थापना के आदि रत्न, चाहे सेवा के रत्न दोनों में **संगठन की युनिटी बहुत-बहुत अच्छी रही।** किसी में भी क्यों, क्या, कैसे... यह संकल्प मात्र भी नहीं रहा।

दूसरी विशेषता – **एक ने कहा दूसरे ने माना।** यह एकस्ट्रा पावर्स के विल के वायुमण्डल में विशेषता रही। इसलिए सर्व निमित्त बनी हुई आत्माओं को बाबा-बाबा ही दिखाई देता रहा।

बापदादा ऐसे समय पर निमित्त बने हुए बच्चों को दिल से प्यार दे रहे हैं। बाप की कमाल तो है ही लेकिन बच्चों की कमाल भी कम नहीं है। और उस समय का संगठन, युनिटी - हम सब एक हैं, वही आज भी सेवा को बढ़ा रही है। क्यों? निमित्त बनी हुई आत्माओं का फाउण्डेशन पक्का रहा। तो बापदादा भी आज के दिन बच्चों की कमाल को गा रहे थे। बच्चों ने चारों ओर से प्यार की मालायें पहनाई और बाप ने बच्चों की कमाल के गुणगान किये। इतना समय चलना है, यह सोचा था? कितना समय हो गया? सभी के मुख से, दिल से यही निकलता, अब चलना है, अब चलना है.... लेकिन बापदादा जानते थे कि अभी अव्यक्त रूप की सेवा होनी है। साकार में इतना बड़ा हाल बनाया था? बाबा के अति लाड़ले डबल विदेशी आये थे? तो विशेष डबल विदेशियों का अव्यक्त पालना द्वारा अलौकिक जन्म होना ही था, इतने सब बच्चों को आना ही था। इसलिए ब्रह्मा बाप को अपना साकार शरीर भी छोड़ना पड़ा। डबल विदेशियों को नशा है कि हम अव्यक्त पालना के पात्र हैं?

ब्रह्मा बाप का त्याग ड्रामा में विशेष नूंधा हुआ है। आदि से ब्रह्मा बाप का त्याग और आप बच्चों का भाग्य नूंधा हुआ है। सबसे नम्बरवन त्याग का एक्ज़ाम्पल ब्रह्मा बाप बना। त्याग उसको कहा जाता है - **जो सब कुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे।** समय अनुसार, समस्याओं के अनुसार त्याग – श्रेष्ठ त्याग नहीं है। शुरू से ही देखो तन, मन, धन, सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति होते हुए त्याग किया। शरीर का भी त्याग किया, सब साधन होते हुए स्वयं पुराने में ही रहे। साधनों का आरम्भ हो गया था। होते हुए भी साधना में अटल रहे। यह ब्रह्मा की तपस्या आप सब बच्चों का भाग्य बनाकर गई। ड्रामानुसार ऐसे त्याग का एक्ज़ाम्पल रूप में ब्रह्मा ही बना और इसी त्याग ने संकल्प शक्ति

की सेवा का विशेष पार्ट बनाया। जो नये-नये बच्चे संकल्प शक्ति से फास्ट वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। तो सुना ब्रह्मा के त्याग की कहानी।

ब्रह्मा की तपस्या का फल आप बच्चों को मिल रहा है। तपस्या का प्रभाव इस मधुबन भूमि में समाया हुआ है। साथ में बच्चे भी हैं, बच्चों की भी तपस्या है लेकिन निमित्त तो ब्रह्मा बाप कहेंगे। जो भी मधुबन तपस्वी भूमि में आते हैं तो ब्राह्मण बच्चे भी अनुभव करते हैं कि यहाँ का वायुमण्डल, यहाँ के वायब्रेशन सहजयोगी बना देते हैं। योग लगाने की मेहनत नहीं, सहज लग जाता है और कैसी भी आत्मायें आती हैं, वह कुछ न कुछ अनुभव करके ही जाती हैं। ज्ञान को नहीं भी समझते लेकिन अलौकिक प्यार और शान्ति का अनुभव करके ही जाते हैं। कुछ न कुछ परिवर्तन करने का संकल्प करके ही जाते हैं। यह है ब्रह्मा और ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव। साथ में सेवा की विधि - भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा बच्चों से प्रैक्टिकल में कराके दिखाई। उसी विधियों को अभी विस्तार में ला रहे हो। तो जैसे ब्रह्मा बाप के त्याग, तपस्या, सेवा का फल आप सब बच्चों को मिल रहा है। **ऐसे हर एक बच्चा अपने त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाये।** जैसे साइन्स का बल अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखा रहा है ऐसे साइन्स की भी रचता साइलेन्स बल है। साइलेन्स बल को अभी प्रत्यक्ष दिखाने का समय है। **साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन है - मन-बुद्धि की एकाग्रता।** यह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ना चाहिए। एकाग्रता की शक्तियों द्वारा ही वायुमण्डल बना सकते हो। हलचल के कारण पावरफुल वायब्रेशन बन नहीं पाता।

बापदादा आज देख रहे थे कि एकाग्रता की शक्ति अभी ज्यादा चाहिए। सभी बच्चों का एक ही दृढ़ संकल्प हो कि अभी अपने भाई-बहनों के दु:ख की घटनायें परिवर्तन हो जाएँ। दिल से रहम इमर्ज हो। क्या जब साइन्स की शक्ति हलचल मचा सकती है तो इतने सभी ब्राह्मणों के साइलेन्स की शक्ति, रहमदिल भावना द्वारा वा संकल्प द्वारा हलचल को परिवर्तन नहीं

कर सकती! जब करना ही है, होना ही है तो इस बात पर विशेष अटेन्शन दो। जब आप ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फ़ादर के बच्चे हैं, आपके ही सभी बिरादरी हैं, शाखायें हैं, परिवार है, आप ही भक्तों के इष्ट देव हो। यह नशा है कि हम ही इष्ट देव हैं? तो भक्त चिल्ला रहे हैं, आप सुन रहे हो! वह पुकार रहे हैं - हे इष्ट देव, आप सिर्फ सुन रहे हो, उन्हों को रेसपाण्ड नहीं करते हो? तो बापदादा कहते हैं हे भक्तों के इष्ट देव अभी पुकार सुनो, रेसपाण्ड दो, सिर्फ सुनो नहीं। क्या रेसपाण्ड देंगे? परिवर्तन का वायुमण्डल बनाओ। आपका रेसपाण्ड उन्हों को नहीं मिलता तो वह भी अलबेले हो जाते हैं। चिल्लाते हैं फिर चुप हो जाते हैं।

ब्रह्मा बाप के हर कार्य के उत्साह को तो देखा ही है। जैसे शुरू में उमंग था – चाबी चाहिए! अभी भी ब्रह्मा बाप यही शिव बाप से कहते - अभी घर के दरवाजे की चाबी दो। लेकिन साथ जाने वाले भी तो तैयार हों। अकेला क्या करेगा! तो अभी साथ जाना है ना या पीछे-पीछे जाना है? साथ जाना है ना? तो ब्रह्मा बाप कहते हैं कि बच्चों से पूछो अगर बाप चाबी दे दे तो आप एवररेडी हो? एवररेडी हो या रेडी हो, सिर्फ रेडी नहीं – एवररेडी। त्याग, तपस्या, सेवा तीनों ही पेपर तैयार हो गये हैं? ब्रह्मा बाप मुस्कराते हैं कि प्यार के आँसू बहुत बहाते हैं और ब्रह्मा बाप वह आँसू मोती समान दिल में समाते भी हैं लेकिन एक संकल्प ज़रूर चलता कि सब एवररेडी कब बनेंगे! डेट दे देवें। आप कहेंगे कि हम तो एवररेडी हैं, लेकिन आपके जो साथी हैं उन्हें भी तो बनाओ या उनको छोड़कर चल पड़ेंगे? आप कहेंगे ब्रह्मा बाप भी तो चला गया ना! लेकिन उनको तो यह रचना रचनी थी। फास्ट वृद्धि की ज़िम्मेवारी थी। तो सभी एवररेडी हैं, एक नहीं? सभी को साथ ले जाना है ना या अकेले-अकेले जायेंगे? तो सभी एवररेडी हैं या हो जायेंगे? बोलो। कम से कम ९ लाख तो साथ जायें। नहीं तो राज्य किस पर करेंगे? अपने ऊपर राज्य करेंगे? तो ब्रह्मा बाप की यही सभी बच्चों के प्रति शुभ-कामना है कि एवररेडी बनो और एवररेडी बनाओ।

आज वतन में भी सभी विशेष आदि रत्न और सेवा के आदि रत्न इमर्ज हुए। एडवांस पार्टी कहती है हम तो तैयार हैं। किस बात के लिए तैयार हैं? वह कहते हैं यह प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजायें तो हम सभी प्रत्यक्ष होकर नई सृष्टि की रचना के निमित्त बनेंगे। हम तो आह्वान कर रहे हैं कि नई सृष्टि की रचना करने वाले आवें। अभी काम सारा आपके ऊपर है। नगाड़ा बजाओ। आ गया, आ गया... का नगाड़ा बजाओ। नगाड़ा बजाने आता है? बजाना तो है ना! अभी ब्रह्मा बाप कहते हैं डेट ले आओ। आप लोग भी कहते हो ना कि डेट के बिना काम नहीं होता है। तो इसकी भी डेट बनाओ। डेट बना सकते हो? बाप तो कहते हैं आप बनाओ। बाप कहते हैं आज ही बनाओ। कान्फ्रेन्स की डेट फिक्स किया है और यह, इसकी भी कान्फ्रेन्स करो ना! विदेशी क्या समझते हैं, डेट फिक्स हो सकती है? डेट फिक्स करेंगे? हाँ या ना! अच्छा - दादी जानकी के साथ राय करके करना। अच्छा।

देश विदेश के चारों ओर के, बापदादा के अति समीप, अति प्यारे और न्यारे, बापदादा देख रहे हैं कि सभी बच्चे लगन में मगन हो लवलीन स्वरूप में बैठे हुए हैं। सुन रहे हैं और मिलन के झूले में झूल रहे हैं। दूर नहीं हैं लेकिन नयनों के सामने भी नहीं, समाये हुए हैं।

तो ऐसे सम्मुख मिलन मनाने वाले और अव्यक्त रूप में लवलीन बच्चे, सदा बाप समान त्याग, तपस्या और सेवा का सबूत दिखाने वाले सपूत बच्चे, सदा एकाग्रता की शक्ति द्वारा विश्व का परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक बच्चे, सदा बाप समान तीव्र पुरुषार्थ द्वारा उड़ने वाले डबल लाइट बच्चों को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

राजस्थान के सेवाधारी – बहुत अच्छा सेवा का चांस राजस्थान को मिला। राजस्थान का जैसे नाम है 'राजस्थान', तो राजस्थान से राजे क्वालिटी वाले निकालो। प्रजा नहीं, राज-घराने के राजे निकालो। तब जैसा नाम है राजस्थान, वैसे ही जैसा नाम वैसे सेवा की क्वालिटी निकलेगी। हैं कोई छिपे हुए राजे लोग या अभी बादलों में हैं? वैसे जो बिज़नेसमैन हैं उन्हों की सेवा पर विशेष अटेन्शन दो। यह मिनिस्टर और सेक्रेटरी तो बदलते ही रहते

हैं लेकिन बिज़नेसमैन बाप से भी बिज़नेस करने में आगे बढ़ सकते हैं। और बिज़नेसमैन की सेवा करने से उनकी परिवार की मातायें भी सहज आ सकती हैं। अकेली मातायें नहीं चल सकती हैं लेकिन अगर घर का स्तम्भ आ जाता है तो परिवार आपेही धीरे-धीरे बढ़ता जाता है इसलिए राजस्थान को राजे क्वालिटी निकालनी है। ऐसे कोई नहीं हैं, ऐसा नहीं कहो। थोड़ा ढूंढना पड़ेगा लेकिन हैं। थोड़ा सा उन्हों के पीछे समय देना पड़ता है। बिज़ी रहते हैं ना! कोई ऐसी विधि बनानी पड़ती जो वह नज़दीक आवें। बाकी अच्छा है, सेवा का चांस लिया, हर एक ज़ोन लेता है यह बहुत अच्छा नजदीक आने और दुआयें लेने का साधन है। चाहे आप लोगों को सब देखें या नहीं देखें, जानें या नहीं जाने, लेकिन जितनी अच्छी सेवा होती है तो दुआयें स्वत: निकलती हैं और वह दुआयें पहुँचती बहुत जल्दी हैं। दिल की दुआयें हैं ना! तो दिल में जल्दी पहुँचती हैं। बापदादा तो कहते हैं सबसे सहज पुरुषार्थ है दुआयें दो और दुआयें लो। दुआओं से जब खाता भर जायेगा तो भरपूर खाते में माया भी डिस्टर्ब नहीं करेगी। जमा का बल मिलता है। राजी रहो और सर्व को राजी करो। हर एक के स्वभाव का राज़ जानकर राजी करो। ऐसे नहीं कहो यह तो है ही नाराज़। आप स्वयं राज़ को जान जाओ, उसकी नब्ज को जान जाओ फिर दुआ की दवा दो। तो सहज हो जायेगा। ठीक है ना राजस्थान! राजस्थान की टीचर्स उठो। सेवा की मुबारक हो। तो सहज पुरुषार्थ करो, दुआयें देते जाओ। लेने का संकल्प नहीं करो, देते जाओ तो मिलता जायेगा। देना ही लेना है। ठीक है ना! ऐसा है ना! दाता के बच्चे हैं ना! कोई दे तो दें। नहीं, दाता बनके देते जाओ तो आपेही मिलेगा। अच्छा।

जो इस कल्प में पहली बार आये हैं वो हाथ उठाओ। आधे पहले वाले आते हैं, आधे नये आते हैं। अच्छा - पीछे वाले, किनारे में बैठे हुए सभी सहजयोगी हो? सहज योगी हो तो एक हाथ उठाओ। अच्छा।

विदाई के समय – *(बापदादा को रथ यात्राओं का समाचार सुनाया)*

चारों तरफ़ का यात्राओं का समाचार समय प्रति समय बापदादा के पास आता रहता है। अच्छा सब उमंग-उत्साह से सेवा का पार्ट बजा रहे हैं। भक्तों को दुआयें मिल रही हैं और जिन भक्तों की भक्ति पूरी हुई, उन्हों को बाप का परिचय मिल जायेगा और परिचय वालों से जो बच्चे बनने होंगे वह भी दिखाई देते रहेंगे। बाकी सेवा अच्छी चल रही है और जो भी साधन बनाया है वह साधन अच्छा सबको आकर्षित कर रहा है। अभी रिज़ल्ट में कौन-कौन किस केटगिरी में निकलता है वह मालूम पड़ जायेगा लेकिन भक्तों को भी आप सबकी नजर-दृष्टि मिली, परिचय मिला – यह भी अच्छा साधन है। अब आगे बढ़कर इन्हों की सेवा कर आगे बढ़ाते रहना। जो भी रथ यात्रा में सेवा कर रहे हैं, अथक बन सेवा कर रहे हैं, उन सभी को यादप्यार। बापदादा सभी को देखते रहते हैं और सफलता तो जन्म-सिद्ध अधिकार है। अच्छा।

मॉरीशियस में अपने ईश्वरीय विश्व-विद्यालय को नेशनल युनिटी एवार्ड प्राइमिनिस्टर द्वारा मिला है

मॉरीशियस में वैसे भी वी.आई.पी. का कनेक्शन अच्छा रहा है और प्रभाव भी अच्छा है इसलिए गुप्त सेवा का फल मिला है तो सभी को खास मुबारक। अच्छा। ओमशान्ति।

साइलेन्स बल को अभी प्रत्यक्ष दिखाने का समय है।
साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन है - मन-बुद्धि की एकाग्रता।
यह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ना चाहिए। एकाग्रता की शक्तियों द्वारा ही वायुमण्डल बना सकते हो। हलचल के कारण पावरफुल वायब्रेशन बन नहीं पाता

यथार्थ स्मृति का प्रमाण - समर्थ स्वरूप बन शक्तियों द्वारा सर्व की पालना करो

आज सभी के दिल में स्मृतियाँ आ रही हैं। बापदादा के पास भी अमृतवेले से स्नेह वा याद की वैरायटी मालायें चारों ओर के बच्चों की तरफ से गले में पड़ रही थी। साथ-साथ याद और प्यार के दिल के गीत भी सुन रहे थे। बापदादा दोनों बच्चों को रिटर्न में भिन्न-भिन्न शक्तियों की, भिन्न-भिन्न वरदानों की मालायें पहना रहे थे। यह स्मृति दिवस साकार दुनिया के मंच पर बच्चों को समर्थी स्वरूप के वरदान द्वारा सन शोज़ फादर का विशेष दिवस है क्योंकि साकार रूप में सेवा के निमित्त बनाने के लिए बच्चों को सेवा के मंच रूपी तख्त पर बिठाने और जिम्मेवारी का ताज पहनाने का दिन है। साकार रूप में सेवा के निमित्त बनने का ताजपोशी वा तिलक का दिवस है। सभी बच्चे बाप के सहयोगी बन निमित्त बने हैं और बनते रहेंगे। बापदादा भी बच्चों को सेवा में उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते हुए देख हर्षित हो रहे हैं। हर एक बच्चा नम्बरवार हिम्मत और उमंग से आगे बढ़ रहा है। मैजॉरिटी बच्चे याद और सेवा में लगे रहते हैं। जैसे आज के दिन बच्चे विशेष चारों ओर ब्रह्मा बाप की याद में लवलीन रहते हैं, ऐसे विशेष ब्रह्मा बाप भी बच्चों के लव में लीन रहते हैं।

आज ब्रह्मा बाप बच्चों की विशेषताओं को देख रहे थे। जैसे-जैसे हर बच्चे की विशेषता सामने आ रही थी तो ब्रह्मा बाप के मुख से यही बोल निकल रहे थे वाह बच्चे, वाह! शाबास बच्चे, शाबास! और क्या हुआ? जैसे ही ब्रह्मा बाप वाह बच्चे, वाह! शाबास बच्चे कह रहे थे ऐसे ही सभी बच्चों के नयनों से प्रेम की गंगा-जमुना निकल रही थी। हर एक बच्चा प्रेम की नदी में लवलीन था। यह था वतन का दृश्य। साकार दुनिया में भी हर एक स्थान का अपना-अपना याद और स्नेह का दृश्य बापदादा ने देखा। अब आगे क्या करना है? स्मृति तो रहती है लेकिन **यथार्थ स्मृति का प्रमाण है स्मृति द्वारा समर्थ स्वरूप बनना।** स्मृति अति श्रेष्ठ है, जब ब्राह्मण बनें तो बापदादा द्वारा जो जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त किया, वह सेकण्ड की स्मृति द्वारा ही प्राप्त किया। दिल ने जाना, दिल में, मन में, बुद्धि में स्मृति आई ''मैं बाबा का और बाबा मेरा'', इस स्मृति द्वारा ही जन्म-सिद्ध अधिकार के अधिकारी बनें। यह

स्मृति सर्व शक्तियों की चाबी बनी। यह स्मृति गोल्डन की (ಉಡಚಜಚು ಏಚಷಿ) है। मैं बाप की अर्थात् मैं आत्मा हूँ, जब निश्चय हुआ मैं आत्मा बाप की बच्ची हूँ, तो निश्चय में कितना टाइम लगा ? कोर्स करने में टाइम लगा लेकिन जब निश्चय हुआ तो कितना टाइम लगा ? सेकण्ड का सौदा हुआ ना ! सेकण्ड में वर्से के अधिकारी बन गये। अधिकारी तो सब बन गये हैं, सभी अधिकारी बने हैं ना या बन रहे हैं ? अधिकारी बन गये हैं ? यह पक्का है ? अच्छा।

डबल फारेनर्स वर्से के अधिकारी बन गये हैं ? पाण्डव अधिकारी बन गये हैं ? पक्का ? पक्का ? पक्का ? बहुत अच्छा, मुबारक हो अधिकारियों को। अधिकार में विशेष बाप द्वारा सर्व शक्तियाँ मिली हैं ? एक हाथ उठाओ मिली हैं ? सर्व शक्तियाँ मिली हैं ना ! या किसको ೮೨ मिली हैं, किसको ೬ मिली हैं ? अपने को कहलाते भी हैं - **मास्टर सर्वशक्तिवान।** शक्तिवान नहीं कहते हैं, सर्वशक्तिवान कहते हो। यह आगे बैठने वाले सर्वशक्तिवान हैं ? बापदादा 'सर्व' शब्द का पूछ रहे हैं ? सभी सर्वशक्तिवान हो या कोई-कोई शक्तिवान भी है ? है कोई ? जो कहे मैं सर्वशक्तिवान तो नहीं हूँ लेकिन शक्तिवान हूँ, ऐसा कोई है ? नहीं है ? कोई हाथ नहीं उठा रहा है। सर्व मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, अच्छा। तो हे मास्टर सर्वशक्तिवान, बापदादा पूछते हैं कि हर प्रकृति के, माया के, स्वभाव-संस्कार के, वायुमण्डल के परिस्थितियों में सर्वशक्तिवान हो ना ? यह प्रकृति, माया, संस्कार, वायुमण्डल या संगदोष इन पाँचों को अपनी शक्ति के आधार से अधीन बनाया है ? यह ঌ शीश वाला साँप है, इस साँप पर, ঌ शीश पर अधिकारी बन डाँस करते हो ? करते हो या कोई एक शीश निकालकर आपके ऊपर डाँस करता है ? साँप भी डाँस तो करता है ना बहुत अच्छी। तो कोई भी एक शीश आपको डाँस दिखाने तो नहीं आते ? कभी उसका खेल देखना अच्छा तो नहीं लगता है ? खेल देखने लग जाओ। ঌ ही साँपों को गले की माला बना दी है ? शेश शय्या बना दी है, डाँस का मंच बना दिया है ? आपके अन्तिम महादेव, तपस्वी देव, अशरीरी स्थिति वाली देव आत्मा, फ़रिश्ता आत्मा इस यादगार में यह सब साँप गले की माला दिखाई है। जब यह माला पहनते तब बाप की माला में नम्बर अच्छे में नजदीक मणके बनते हैं। विजय माला के समीप के मणके बनते हैं।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि वर्तमान समय, समय के अनुसार विशेष सहनशक्ति और समस्या या परिस्थिति को सामना करने की शक्ति कर्म में आवश्यक है। सिर्फ मन और वाणी तक नहीं, कर्म तक आवश्यक है। बापदादा ने रिजल्ट में देखा है कि शक्तियाँ है, शक्तियाँ नहीं हैं - यह नहीं है। हैं, लेकिन फर्क क्या पड़ जाता है? समय पर जो शक्ति जिस विधि से कार्य में लगानी चाहिए, वह समय पर और विधि पूर्वक यूज़ करने में, कार्य में लगाने में अन्तर पड़ जाता है। स्मृति है लेकिन स्मृति को समर्थ स्वरूप में नहीं लाते। स्मृति ज़्यादा है, समर्थी कभी कम, कभी ठीक हो जाती। स्मृति ने वर्से के अधिकारी तो बना दिया है लेकिन हर स्मृति की समर्थी विजयी बनाए विजय माला का समीप मणका बनाती है। समर्थियों को स्वरूप में लाओ। मन में है, बुद्धि में है लेकिन आपके स्वरूप में हर कार्य में, हर समर्थी प्रत्यक्ष रूप में आवे। तो स्मृति दिवस तो बहुत अच्छा मनाया। अब समर्थियों को स्वरूप में लाओ। अगर किसको भी देखते हो तो आपके नयन से समर्थ स्वरूप का अनुभव हो। हर बोल से दूसरा भी समर्थ बन जाए। समर्थी का अनुभव करे। साधारण बोल नहीं। हर बोल में जो समर्थी का वरदान मिला है वह अनुभव कराओ। मन-बुद्धि द्वारा श्रेष्ठ संकल्प और यथार्थ निर्णय शक्ति का वायुमण्डल स्वरूप में लाओ। साधारण चलन में भी फ़रिश्ते पन के समर्थी का स्वरूप दिखाई दे। डबल लाइट का स्वयं को भी और दूसरों को भी अनुभव हो। ऐसे है? तो चलते फिरते समर्थ स्वरूप बनो और दूसरों को समर्थी दिलाओ।

बापदादा ने आज ब्रह्मा बाप को साथ में, (बापदादा दोनों साथ में) एक सैर कराया। क्या सैर कराया? ब्रह्मा बाप के अव्यक्त होने के बाद जो भी देश-विदेश में अव्यक्ति जन्म लेने वाले हैं, वह सभी ब्राह्मण दिखाये। तो कितने होंगे वह? साकार रूप से अव्यक्त रूप की रचना बहुत ज़्यादा थी। हर स्थान के अव्यक्त रचना वाली आत्माओं को वतन में इमर्ज किया। सुना। उसमें आप लोग भी हैं ना! और हर एक को बापदादा ने बहुत स्नेह की, समीप की दृष्टि दी। और अव्यक्त रचना को एक विशेष गिफ्ट भी दी। अभी यहाँ जो बैठे हो वह साकार ब्रह्मा के बाद जो ब्राह्मण आत्मा रचना में आये हो, वह हाथ उठाओ। मैजारिटी हैं, अच्छा नीचे करो। अच्छा जो साकार रूप की रचना है, वह हाथ उठाओ। बहुत थोड़े हैं। आज की सभा में बहुत थोड़े हैं।

तो बापदादा ने हर एक बच्चे को इमर्ज किया, क्योंकि संख्या बहुत थी। यहाँ तो बैठ भी नहीं सकेंगे, वतन में तो सब आ सकते हैं। वहाँ जितना बड़ा स्थान चाहिए उतना स्थान है। तो बापदादा ने सभी को वतन में इमर्ज किया अर्थात् निमन्त्रण देके बुलाया। सभी बड़े खुश हो रहे थे और बापदादा उनसे ज्यादा खुश हो रहे थे। बापदादा ने उन रत्नों को सौगात दी, बहुत सुन्दर बेदाग हीरे का बहुत चमकता हुआ कमल पुष्प था, जिसमें एक-एक कमल के पत्ते में भिन्न-भिन्न शक्तियाँ थीं, जो भिन्न-भिन्न रंग में चमक रही थी। वह बेदाग हीरे का कमल पुष्प आप इमर्ज करो कितना शोभनिक होगा। इमर्ज हुआ ? इमर्ज किया ? डबल फारेनर्स ने इमर्ज किया ? टीचर्स ने इमर्ज किया ? पाण्डवों ने इमर्ज किया ? और मीठी-मीठी माताओं ने इमर्ज किया ? मातायें इस विश्व विद्यालय की विशेषता है। सभी को आश्चर्य किस बात का लगता है ? कि इतनी मातायें और शक्तियाँ बन गई ! इतनी मातायें पवित्रता का व्रत धारण कर देवियों के रूप में परिवर्तन हो गई। मैजारिटी मातायें दिखाई देती हैं। तो बापदादा ने आज अव्यक्त रचना को बहुत-बहुत प्यार दिया और वतन में बगीचा भी इमर्ज किया, पहाड़ भी इमर्ज किया और साथ में सागर भी इमर्ज किया। और सभी को खूब घुमाया। फ्रीडम थी घूमने की। खेल नहीं कराया, बॉल और बैट-बॉल का खेल नहीं कराया। कोई सागर में लहरों में लहरा रहे थे, कोई पहाड़ी पर बैठे हुए थे, कोई बगीचे में घूम रहे थे, तो आज वतन में अव्यक्त रचना की महफिल थी। बापदादा ने सभी को यही वरदान दिया **सदा सर्व शक्तियों में जीते रहो, उड़ते रहो।**

तो बापदादा का आज के स्मृति दिवस का विशेष महामन्त्र है **''स्मृति स्वरूप बन समर्थियों को स्वरूप में लाओ।''** खजाने को गुप्त नहीं रखो, हर कर्म द्वारा बाहर में प्रत्यक्ष करो। जो भी आत्मा चाहे दृष्टि के, चाहे मुख के बोल में, चाहे कर्म में साथ में सम्पर्क में आये, उसको समर्थ बनने का सहयोग दो, समर्थ स्वरूप का स्नेह दो। बापदादा ने यह भी देखा कि जो नये नये बच्चे आते हैं, उन्हों में कई आत्मायें ऐसी भी हैं जिन्हों को बापदादा के सहयोग के साथ-साथ आप ब्राह्मण आत्माओं के द्वारा हिम्मत, उमंग, उत्साह, समाधान मिलने की आवश्यकता है। छोटे-छोटे हैं ना ! फिर भी हैं छोटे लेकिन हिम्मत रख ब्राह्मण बने तो हैं ना ! तो छोटों को शक्तियों द्वारा

पालना की आवश्यकता है। और पालना नहीं, शक्ति देने के पालना की आवश्यकता है। तो जल्दी से स्थापना की ब्राह्मण आत्मायें तैयार हो जाएँ क्योंकि कम से कम ६ लाख तो चाहिए ना! तो शक्तियों का सहयोग दो, शक्तियों से पालना दो, शक्तियाँ बढ़ाओ। ज़्यादा डिसकस करने की शिक्षायें नहीं दो। शक्ति दो। उनकी कमज़ोरी नहीं देखो लेकिन उसमें विशेषता वा जो शक्ति की कमी हो वह भरते जाओ। आजकल जो निमित्त हैं उन्हों को इस पालना के निमित्त बनने की आवश्यकता है। जिज्ञासु बढ़ायें, सेवाकेन्द्र बढ़ायें यह तो कामन है, लेकिन हर एक आत्मा को बाप की मदद से शक्तिशाली बनायें, अभी इसकी आवश्यकता है। सेवा तो सब कर रहे हो और करने के बिना रह भी नहीं सकते। लेकिन सेवा में शक्ति स्वरूप के वायब्रेशन आत्माओं को अनुभव हो, शक्तिशाली सेवा हो। साधारण सेवा तो आजकल की दुनिया में बहुत करते हैं लेकिन आपकी विशेषता है – 'शक्तिशाली सेवा'। ब्राह्मण आत्माओं को भी शक्ति की पालना आवश्यक है। अच्छा।

बापदादा के सामने देश-विदेश सब तरफ के बच्चे दूर होते हुए भी सामने हैं। बापदादा जानते हैं, सभी एक ही शब्द बोलते हैं - हमारी भी याद देना, हमारी भी याद देना। बापदादा के पास सभी की याद पहुँचती ही है। चाहे पत्र द्वारा, चाहे मुख द्वारा, चाहे कार्ड द्वारा, चाहे आजकल ई-मेल द्वारा भेजते हैं। साइंस के साधन बहुत हो गये हैं। बापदादा के पास साधनों से भी याद पहुँचती है और दिल के आवाज़ से भी याद पहुँचती है। सबसे जल्दी दिल का आवाज़ पहुँचता है। तो आज के दिन जिन्होंने भी दिल से, भिन्न-भिन्न साधनों से यादप्यार भेजा है उन सभी को बापदादा यादप्यार दे रहे हैं। बच्चों ने एक बार याद दी, बाप पद्मगुणा रिटर्न में यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा।

चारों ओर के दिल के समीप समर्थ आत्माओं को, सदा समय पर हर शक्ति को स्वरूप द्वारा प्रत्यक्ष करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा शक्तियों द्वारा आत्माओं की पालना के निमित्त बनने वाले बाप के सहयोगी आत्माओं को, सदा हर एक में हिम्मत, उमंग और उत्साह देने वाले उड़ती कला वाली आत्माओं को, सदा समस्या को समाधान में परिवर्तन करने वाले विश्व-परिवर्तक आत्माओं को स्मृति स्वरूप सो समर्थ स्वरूप आत्माओं को, बापदादा का पदमगुणा यादप्यार और नमस्ते।

सेवा का टर्न छतीसगढ़-इन्दौर ज़ोन का है – सभी ने बहुत दिल से सेवा की, सबको सन्तुष्ट किया और स्वयं भी सन्तुष्ट रहे इसकी मुबारक हो। नई स्टेट बनी है इसलिए नई स्टेट वालों को बापदादा सदा याद और सेवा में आगे उड़ने की मुबारक दे रहे हैं। अच्छा किया।

कन्याओं से – आगे कुमारियाँ हैं, पीछे मातायें हैं। बहुत अच्छा। जैसे अभी खड़ी हो गई ना ऐसे याद और सेवा में सदा खड़े रहना। हॉस्टल की कुमारियाँ तो अच्छी पालना में पल रही हैं। ऐसी पालना जो वायुमण्डल के प्रभाव से बचे हुए हो। तो सदा आगे बढ़ रही हो और बढ़ते ही रहेंगे। अच्छा मुबारक हो।

जो नई स्टेट बनी है ना छतीसगढ़, (छतीसगढ़ में [illegible] ज़िले हैं, राजधानी रायपुर है) उसकी राजधानी को मुबारक हो। अच्छा सेवा का फल भी मिला, बल भी मिला। फल है खुशी और बल है सदा ऐसे निर्विघ्न रहने का। तो यह सदा ही साथ रखना। अच्छा। टीचर्स को भी बहुत-बहुत मुबारक है। अभी जो बापदादा ने कहा शक्ति देने की पालना बढ़ाते रहना। मधुबन निवासी भी आये हैं।

अच्छा - आज खास यह संगम भवन है ना, संगम भवन वाले आये हैं, उन्हों की भी सेवा कम नहीं है। आज खास उन्हों की याद बापदादा को मिली थी। रिसीव करने की सेवा भी कम नहीं है। वैसे तो जो भी शान्तिवन के सेवाधारी हैं उन सबकी सेवा एक दो से आगे है, अच्छी है। जागना भी पड़ता है, चलना भी पड़ता है, दौड़ना भी पड़ता है। सन्तुष्ट करना भी पड़ता है। मुबारक हो। पाण्डव भवन वाले, मधुबन की चार भुजाओं वाले सभी को मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

डबल फारेनर्स देख रहे हैं, हमको बापदादा ने नहीं कहा। डबल फारेनर्स से सभी बापदादा सहित दादियों का, सभी ब्राह्मणों का डबल ट्रिपल प्यार है, क्यों? बापदादा सदैव विशेषता सुनाते हैं कि कई प्रकार के कल्चर की दीवारों को तोड़कर ब्राह्मण जीवन में पहुँच गये हैं। ब्राह्मण कल्चर वाले बन गये हैं और लगता ही नहीं है कि यह कोई दूसरे देश के हैं। अपने भारत के हैं और सदा रहेंगे। इसीलिए डबल विदशियों को भी बहुत-बहुत अरब-खरब बार मुबारक हो। बहुत अच्छा।

देखो हिम्मत करके पहुँच तो गये हैं ना! चाहे टिकेट मिले न मिले लेकिन लेकर

पहुँच तो गये हैं। हिम्मत अच्छी है। अच्छा। अभी क्या करना है!

दादी जी से – साधनों को अपनाना पड़ता है। वृद्धि बहुत फास्ट हो रही है ना! अच्छा है। वृद्धि भी हो रही है और सभी को सन्तुष्टता भी मिल रही है। अच्छा पार्ट बजा रही हो। (बाबा करा रहा है) फिर भी निमित्त तो हैं। बापदादा रोज़ अमृतवेले वरदान के साथ-साथ मसाज़ भी करते हैं। बापदादा देखते हैं तो निमित्त बनने वालों को मेहनत भी करनी पड़ती है। (बाबा, कोई भी मेहनत नही है) चलो खेल ही कहो, खेल करते हैं, मेहनत नहीं करते। इस समय जनक बेटी भी याद कर रही है। वह सोच रही है मैं स्टेज पर हूँ। बापदादा भी मुबारक दे रहे हैं। अच्छा है जो पार्ट जिसको मिला है, वह विधिपूर्वक कर रहे हैं। हर एक पाण्डव भी अपना-अपना पार्ट बजा रहे हैं।

नारायण दादा और उनके बेटे से – ठीक है ना। दोनों ही ठीक हो ? इसको बापदादा ने फ्री रखा है, जब मन करे जैसे मन करे, मर्यादापूर्वक वैसे करो। ब्राह्मण जीवन की, लौकिक परिवार की दोनों की मर्यादा जानते हैं। दोनों ही जानते हो ना कि एक जानते हो ? दोनों ही जानते हो। तो दोनों को निभाना है। अच्छा है। बस अभी थोड़ा सा मधुबन से कनेक्शन बढ़ाओ। लेन-देन करो। मन में बातें नहीं करो, मुख से भी करो। यह बीज विनाश तो होना नहीं है। अच्छा है फिर भी जीते हैं। अच्छा।

सिकीलधा तो है! बहुत अच्छा। दोनों ही ठीक हैं। आपका घर है जब चाहो तब आओ। ठीक है ना!

जगदीश भाई से – जगदम्बा माँ का स्लोगन याद है ना - **हुक्मी हुक्म चलाए रहा।** तो आपका भी अभी यही अनुभव है ना। करावनहार कराए रहा है। चलाने वाला चला रहा है, बाकी अच्छा है यह सभी आदि रत्नों ने, आप हो सेवा के आदि रत्न, यह (दादियाँ) हैं स्थापना के आदि रत्न। यह पाण्डव भी सेवा के आदि रत्न हैं। (आज बाबा के कमरे में गया तो वह यादें आ गई, यहाँ होते भी नहीं था, आँसू भर आये) इस याद से और ही प्रत्यक्ष रूप में एक तो प्यार बढ़ता है, दिल का प्यार बाहर निकलता है और दूसरा याद में बाप के समानता की हिम्मत भी आती है। अच्छा हुआ। लेकिन बापदादा कह रहे थे कि जो भी सेवा में आदि रत्न हैं वा स्थापना के आदि रत्न हैं दोनों ने सेवा बहुत अच्छी की है, निमित्त बने हैं। सहन भी

किया और प्यार भी मिला। अच्छा किया क्योंकि उस समय हिम्मत रखने वाले थोड़े थे लेकिन हिम्मत रखके सहयोगी बनें, वह सहयोग की जो मार्क्स हैं वह जमा हैं। जमा खाता अच्छा है। एक का पद्मगुणा जमा होता है ना। तो जिन्होंने भी जो कुछ दिल से और शक्तिशाली होके किया है, उन्हों का एक का लाख गुणा नहीं लेकिन पद्मगुणा जमा है। आप सबका भी जमा है, इन्हों का भी जमा है।

रतन मोहनी दादी से – अच्छा सहयोगी हो। नीचे ऊपर होना तो पड़ता है लेकिन सहयोगी तो बनना ही है। बापदादा की भुजायें हो ना तो भुजाओं का काम क्या है? सहयोग देना। अच्छा दे रही हो। अच्छा सहयोगी हैं ना। अच्छा - ओम् शान्ति।

18-01-2002

स्नेह की शक्ति द्वारा समर्थ बनो, सर्व आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो

आज समर्थ बाप अपने स्मृति स्वरूप, समर्थ स्वरूप बच्चों से मिलने के लिए आये हैं। आज विशेष चारों ओर के बच्चों में स्नेह की लहर लहरा रही है। विशेष ब्रह्मा बाप के स्नेह की यादों में समाये हुए हैं। यह स्नेह हर बच्चे के इस जीवन का वरदान है। परमात्म स्नेह ने ही आप सबको नई जीवन दी है। हर एक बच्चे को स्नेह की शक्ति ने ही बाप का बनाया। यह स्नेह की शक्ति सब सहज कर देती है। जब स्नेह में समा जाते हो तो कोई भी परिस्थिति सहज अनुभव करते हो। बापदादा भी कहते हैं कि सदा स्नेह के सागर में समाये रहो। स्नेह छत्रछाया है, जिस छत्रछाया के अन्दर कोई माया की परछाई भी नहीं पड़ सकती। सहज मायाजीत बन जाते हो। जो निरन्तर स्नेह में रहता है उसको किसी भी बात की मेहनत नहीं करनी पड़ती है। स्नेह सहज बाप समान बना देता है। स्नेह के पीछे कुछ भी समर्पित करना सहज होता है।

तो आज भी अमृतवेले से हर एक बच्चे ने स्नेह की माला बाप को डाली और बाप ने भी स्नेही बच्चों को स्नेह की माला डाली। जैसे इस विशेष स्मृति दिवस में अर्थात् स्नेह के दिन में स्नेह में समाये रहे ऐसे ही सदा समाये रहो, तो मेहनत का पुरुषार्थ करना नहीं पड़ेगा। एक है स्नेह के सागर में समाना और दूसरा है स्नेह के सागर में थोड़े समय के लिए डुबकी लगाना। तो कई बच्चे समाये हुए नहीं रहते हैं, जल्दी से बाहर निकल आते हैं। इसलिए सहज मुश्किल हो जाता है। तो समाना आता है? समाने में ही मज़ा है। ब्रह्मा बाप ने सदा बाप का स्नेह दिल में समाया, इसका यादगार कलकत्ता में दिखाया है।

अब बापदादा सभी बच्चों से यही चाहते हैं कि बाप के प्यार का सबूत समान बनने का दिखाओ। सदा संकल्प में समर्थ हो, अब व्यर्थ के समाप्ति समारोह मनाओ क्योंकि व्यर्थ समर्थ बनने नहीं देंगे और जब तक आप

निमित्त बने हुए बच्चे सदा समर्थ नहीं बने हैं तो विश्व की आत्माओं को समर्थी कैसे दिलायेंगे! सर्व आत्मायें शक्तियों से बिल्कुल खाली हो, शक्तियों की भिखारी बन चुकी हैं। ऐसे भिखारी आत्माओं को हे समर्थ आत्मायें, इस भिखारीपन से मुक्त करो। आत्मायें आप समर्थ आत्माओं को पुकार रही हैं - हे मुक्तिदाता के बच्चे मास्टर मुक्तिदाता, हमें मुक्ति दो। क्या यह आवाज आपके कानों में नहीं पड़ता? सुनने नहीं आता? अब तक अपने को ही मुक्त करने में बिजी हैं क्या? विश्व की आत्माओं को बेहद स्वरूप से मास्टर मुक्तिदाता बनने से स्वयं की छोटी-छोटी बातों से स्वत: ही मुक्त हो जायेंगे। अब समय है कि आत्माओं की पुकार सुनो। पुकार सुनने आती है या नहीं आती है? परेशान आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो। यही है ब्रह्मा बाप को फ़ालो करना।

आज विशेष ब्रह्मा बाप को याद ज़्यादा किया ना! ब्रह्मा बाप ने भी सभी बच्चों को स्मृति और समर्थी स्वरूप से याद किया। कई बच्चों ने ब्रह्मा बाप से रूहरूहान करते मीठा-मीठा उलहना भी दिया कि आप इतना जल्दी क्यों चले गये? और दूसरा उलहना दिया कि हम सब बच्चों से छुट्टी लेकर क्यों नहीं गये? तो ब्रह्मा बाप ने बोला कि मैंने भी शिव बाप से पूछा कि हमें अचानक क्यों बुला लिया? तो बाप ने बोला - अगर आपको कहते कि छुट्टी लेके आओ तो क्या आप बच्चों को छोड़ सकते थे, या बच्चे आपको छोड़ सकते थे? आप अर्जुन का तो यही यादगार है कि अन्त में नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप ही रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप मुस्कराये और बोले कि यह तो कमाल थी जो बच्चों ने भी नहीं समझा कि जा रहे हैं और ब्रह्मा ने भी नहीं समझा जा रहा हूँ। सामने होते भी दोनों तरफ चुप रहे क्योंकि समय प्रमाण सन शोज़ फादर का पार्ट ड्रामा की नूंध थी, इसको कहते हैं वाह ड्रामा वाह! सेवा का परिवर्तन नूंधा हुआ था। ब्रह्मा बाप को बच्चों का बैकबोन बनना था। तो अव्यक्त रूप में फास्ट सेवा का पार्ट बजाना ही था।

विशेष आज डबल विदेशियों ने बहुत मीठे-मीठे उलहने दिये हैं। डबल

फारेनर्स ने उलहने दिये ? डबल फारेनर्स ने ब्रह्मा बाप को बोला सिर्फ दो तीन साल आप रुक जाते तो हम देख तो लेते। तो ब्रह्मा बाप ने हंसी में बोला, हंसी की - तो ड्रामा से बात करो, ड्रामा ने ऐसा क्यों किया ? लेकिन यह लास्ट सो फास्ट का एक्जैम्पुल बनना ही था - चाहे भारत में, चाहे विदेश में। इसलिए अभी लास्ट सो फास्ट का प्रत्यक्ष सबूत दिखाओ। जैसे आज समर्थ दिवस मनाया, ऐसे ही अब हर दिन समर्थ दिवस हो। किसी भी प्रकार की हलचल न हो। जो ब्रह्मा बाप ने आज के दिन तीन शब्दों में शिक्षा दी, **(निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी)** इन तीन शब्दों के शिक्षा स्वरूप बनो। मनसा में निराकारी, वाचा में निरहंकारी, कर्मणा में निर्विकारी। सेकण्ड में साकार स्वरूप में आओ, सेकण्ड में निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ। यह अभ्यास सारे दिन में बार-बार करो। ऐसे नहीं सिर्फ याद में बैठने के टाइम निराकारी स्टेज में स्थित रहो लेकिन बीच-बीच में समय निकाल इस देहभान से न्यारे निराकारी आत्मा स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो। कोई भी कार्य करो, कार्य करते भी यह अभ्यास करो कि मैं निराकार आत्मा इस साकार कर्मेन्द्रियों के आधार से कर्म करा रही हूँ। निराकारी स्थिति करावनहार स्थिति है। कर्मेन्द्रियां करनहार हैं, आत्मा करावनहार है। तो निराकारी आत्म स्थिति से निराकारी बाप स्वत: ही याद आता है। जैसे बाप करावनहार है ऐसे मैं आत्मा भी करावनहार हूँ। इसलिए कर्म के बन्धन में बंधेंगे नहीं, न्यारे रहेंगे क्योंकि कर्म के बन्धन में फंसने से ही समस्यायें आती हैं। सारे दिन में चेक करो - करावनहार आत्मा बन कर्म करा रही हूँ? अच्छा! अभी मुक्ति दिलाने की मशीनरी तीव्र करो।

अच्छा - इस बारी जो इस कल्प में इस बार आये हैं, वह हाथ उठाओ। तो नये-नये आने वाले बच्चों को बापदादा विशेष याद-प्यार दे रहे हैं कि समय पर बाप को पहचान बाप से वर्से के अधिकारी बन गये हैं। सदा अपने इस भाग्य को याद रखना कि हमने बाप को पहचान लिया।

अच्छा - डबल फारेनर्स हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। डबल फारेनर्स को बापदादा कहते हैं कि ब्रह्मा के संकल्प की पैदाइस हैं। एक हैं डायरेक्ट मुख द्वारा वंशावली और दूसरे हैं संकल्प द्वारा वंशावली। तो संकल्प शक्ति बड़ी

महान होती है। जैसे संकल्प शक्ति फास्ट है, ऐसे ही आपकी रचना डबल फारेनर्स फास्ट पुरुषार्थ और फास्ट प्रालब्ध अनुभव करने वाले हैं इसलिए सारे ब्राह्मण परिवार में डबल फारेनर्स डबल सिकीलधे हो। भारत के भाई-बहनें आपको देख करके खुश होते हैं, वाह डबल फारेनर्स वाह! डबल फारेनर्स को खुशी होती है ना? कितनी खुशी है? बहुत है? कोई ऐसी चीज़ ही नहीं है जिससे तुलना कर सकें। डबल फारेन में भी सुन रहे हैं, देख भी रहे हैं। अच्छा है, यह साइंस के साधन आपको बेहद की सेवा करने में बहुत साथ देंगे और सहज सेवा करायेंगे। आपकी स्थापना के कनेक्शन से ही यह साइंस की भी तीव्रगति हुई है।

अच्छा - सभी पाण्डव समर्थ हैं ना? कमजोर तो नहीं, सब समर्थ हैं? और शक्तियां, समान बाप? शक्ति सेना हो। शक्तियों की शक्ति मायाजीत बनाने वाली है। अच्छा।

आज विशेष श्रृंगार करने वाले भी आये हैं (कलकत्ता के भाई-बहनें फूल लेकर आये हैं, सब जगह फूलों से बहुत अच्छा श्रृंगार किया है) यह भी स्नेह की निशानी है। अच्छा है अपना स्नेह का सबूत दिया। अच्छा। टीचर्स हाथ उठाओ। हर ग्रुप में टीचर्स बहुत आती हैं। टीचर्स को चांस अच्छा मिल जाता है। सेवा का प्रत्यक्ष फल मिल जाता है। अच्छा है अभी अपने फीचर्स द्वारा सभी को फ्यूचर का साक्षात्कार कराओ। सुना, क्या करना है? अच्छा।

मधुबन वाले हाथ उठाओ – बहुत अच्छा। मधुबन वालों को चांस बहुत मिलते हैं। इसीलिए बापदादा कहते हैं मधुबन वाले हैं रूहानी चांसलर्स। चांसलर हो ना? सेवा करनी पड़ेगी। फिर भी सबको मधुबन निवासी राज़ी तो कर लेते हैं ना! इसीलिए बापदादा मधुबन वालों को कभी भूलते नहीं हैं। मधुबन निवासियों को खास याद करते हैं। मधुबन वालों को क्यों याद करते हैं? क्योंकि मधुबन वाले बाप के प्यार में मैजारिटी पास हैं। मैजारिटी, बाप से प्यार अटूट है। कम नहीं हैं मधुबन वाले, बहुत अच्छे हैं।

इन्दौर ज़ोन के सेवाधारी आये हैं - इन्दौर ज़ोन वाले हाथ उठाओ। बहुत

हैं, अच्छा है। सेवा करना अर्थात् समीप आने का फल खाना। सेवा का चांस लेना अर्थात् पुण्य जमा करना। दुआयें जमा करना। तो सभी सेवाधारियों ने अपना पुण्य का खाता जमा किया। यह दुआयें वा पुण्य एकस्ट्रा लिफ्ट का काम करती हैं।

अच्छा - देश वा विदेश जो दूर बैठे भी समीप हैं, सभी बच्चों को बापदादा स्नेह के दिवस के रिटर्न में पदमगुणा स्नेह का याद-प्यार दे रहे हैं। बापदादा देखते हैं कि कहाँ क्या बजता है, कहाँ क्या टाइम होता है लेकिन जागती ज्योति अथक बन सुन रहे हैं और खुश हो रहे हैं। बापदादा बच्चों की खुशी देख रहे हैं। बोलो, सभी खुशी में नाच रहे हो ना? सभी कांध हिला रहे हैं, हाँ बाबा। जनक बच्ची भी बहुत मीठा-मीठा मुस्करा रही है। वैसे तो सब बाप को याद हैं लेकिन कितनों का नाम लें। अनेक बच्चे हैं इसलिए बापदादा कहते हैं हर एक बच्चा अपने नाम से पर्सनल याद-प्यार स्वीकार कर रहे हैं और करते रहना। अच्छा - अभी एक सेकण्ड में निराकारी स्थिति में स्थित हो जाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई)

लिविंग वैल्यूज़ की ट्रेनिंग चल रही है:- अच्छा सेवा का साधन है। लिविंग वैल्यू कराते-कराते अपनी लवली लिविंग का अभ्यास बढ़ाते रहना।

अच्छा - बापदादा आज एक बात गुल्ज़ार बच्ची को कह रहे थे, विशेष मुबारक दे रहे थे कि ब्रह्मा तन की सेवा जैसा इस रथ ने भी ९९ वर्ष पूरे किये। यह भी ड्रामा में पार्ट है। बाप की मदद और बच्ची की हिम्मत, दोनों मिलकर पार्ट बजाते हैं।

अच्छा - सर्व सदा स्नेह के सागर में समाये हुए, सदा लव में लीन रहने वाले, सदा करावनहार आत्मा स्वरूप में स्थित रहने वाले, सदा तीन शब्दों के ''शिव-मंत्र'' को प्रत्यक्ष जीवन में लाने वाले, सदा बाप के समान मास्टर मुक्तिदाता बन विश्व की आत्माओं को मुक्ति दिलाने वाले ऐसे सर्व श्रेष्ठ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

दादी जी से

आज के दिन बाप ने बच्चों को विशेष विश्व के सामने प्रत्यक्ष किया। बाप करावनहार बने और बच्चों को करनहार बनाया। अच्छा है, यह स्नेह की लहर सभी को समा देती है। अच्छा - शरीर को चलाने की विधि आ गई है ना! चलाते-चलाते बाप समान अव्यक्त बन जायेंगी। सहज पुरुषार्थ है - दुआयें। सारे दिन में कोई भी नाराज़ नहीं हो, दुआयें मिलें - यह है फर्स्ट क्लास पुरुषार्थ। सहज भी है, फर्स्ट भी है। ठीक है ना! शरीर कैसे भी हो लेकिन आत्मा तो शक्तिशाली है ना! तो जो आप सभी बच्चों ने ८४ वर्ष तपस्या की, वह तपस्या का बल सेवा करा रहा है। अभी तो आपके बहुत साथी बन गये हैं। अच्छे-अच्छे सेवा के साथी हैं। बस आपको देखकर खुश होते हैं, यही बहुत है। ठीक है।

(वरिष्ठ बड़े भाइयों से) – ड्रामानुसार जो सेवा के प्लैन बनते हैं, वह अच्छे बन रहे हैं और हर एक सदा संगठन में स्नेह वा दुआयें लेने के लिए बालक सो मालिक का पाठ पक्का कर एक दो को आगे बढ़ाते हुए, एक दो के विचारों को भी सम्मान देते हुए आगे बढ़ते हैं तो सफलता ही सफलता है। सफलता तो होनी ही है। लेकिन अभी जो निमित्त आत्मायें हैं उन्हों को विशेष स्नेह के सम्बन्ध में लाना; यह सबके पुरुषार्थ को तीव्र बनाना है। स्नेह, नि:स्वार्थ स्नेह, जहाँ नि:स्वार्थ स्नेह है वह सम्मान देंगे भी और लेंगे भी। वर्तमान समय स्नेह की माला में सबको पिरोना, यही विशेष आत्माओं का कार्य है और इससे ही, स्नेह संस्कारों को परिवर्तन भी करा सकता है। ज्ञान हर एक के पास है लेकिन स्नेह कैसे भी संस्कार वाले को समीप ला सकता है। सिर्फ स्नेह के दो शब्द सदा के लिए उनके जीवन का सहारा बन सकता है। नि:स्वार्थ स्नेह जल्द से जल्द माला तैयार कर देगा। ब्रह्मा बाप ने क्या किया? स्नेह से अपना बनाया। तो आज इसकी आवश्यकता है। है ना ऐसे!

(सोनीपत के लिए मीटिंग हो रही है, वहाँ अनुभूति कराने के लिए साधनों का उपयोग कैसे करें) वह तो प्लैन बना रहे हैं, हर एक के संकल्प, विचारों को जो विशेष मैजारिटी स्वीकार करें, वह बनाओ। अनुभूति तब

करा सकेंगे जब अनुभूति स्वरूप बनेंगे। अच्छा।

ब्राह्मण जन्म की स्मृतियों द्वारा समर्थ बन सर्व को समर्थ बनाओ

आज चारों ओर के सर्व स्नेही बच्चों के स्नेह के मीठे-मीठे याद के भिन्न-भिन्न बोल, स्नेह के मोती की मालायें बापदादा के पास अमृतवेले से भी पहले पहुंच गई। बच्चों का स्नेह बापदादा को भी स्नेह के सागर में समा लेता है। बापदादा ने देखा हर एक बच्चे में स्नेह की शक्ति अटूट है। यह स्नेह की शक्ति हर बच्चे को सहजयोगी बना रही है। स्नेह के आधार पर सर्व आकर्षणों से उपराम हो आगे से आगे बढ़ रहे हैं। ऐसा एक बच्चा भी नहीं देखा जिसको बापदादा द्वारा या विशेष आत्माओं द्वारा न्यारे और प्यारे स्नेह का अनुभव न हो। हर एक ब्राह्मण आत्मा का ब्राह्मण जीवन का आदिकाल स्नेह की शक्ति द्वारा ही हुआ है। ब्राह्मण जन्म की यह स्नेह की शक्ति वरदान बन आगे बढ़ा रही है। तो आज का दिन विशेष बाप और बच्चों के स्नेह का दिन है। हर एक ने अपने दिल में स्नेह के मोतियों की बहुत-बहुत मालायें बापदादा को पहनाई। और शक्तियां आज के दिन मर्ज हैं लेकिन स्नेह की शक्ति इमर्ज है। बापदादा भी बच्चों के स्नेह के सागर में लवलीन है।

आज के दिन को स्मृति दिवस कहते हो। स्मृति दिवस सिर्फ ब्रह्मा बाप के स्मृति का दिवस नहीं है लेकिन बापदादा कहते हैं आज और सदा यह याद रहे कि बापदादा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही आदि से अब तक क्या-क्या स्मृतियां दिलाई हैं। वह स्मृतियों की माला याद करो, बहुत बड़ी माला बन जायेगी। सबसे पहली स्मृति सबको क्या मिली? पहला पाठ याद है ना! मैं कौन! इस स्मृति ने ही नया जन्म दिया, वृत्ति दृष्टि स्मृति परिवर्तन कर दी है। ऐसी स्मृतियां याद आते ही रूहानी खुशी की झलक नयनों में, मुख में आ ही जाती है। आप स्मृतियां याद करते और भक्त माला सिमरण करते हैं। एक भी स्मृति अमृतवेले से कर्मयोगी बनने समय भी बार-बार याद रहे तो स्मृति समर्थ स्वरूप बना देती है क्योंकि जैसी स्मृति वैसी ही समर्थी स्वत: ही आती है। इसलिए आज के दिन को स्मृति दिन साथ-साथ समर्थ दिन कहते हैं।

ब्रह्मा बाप सामने आते ही, बाप की दृष्टि पड़ते ही आत्माओं में समर्थी आ जाती है। सब अनुभवी हैं। सभी अनुभवी हैं ना! चाहे साकार रूप में देखा, चाहे अव्यक्त रूप की पालना से पलते अव्यक्त स्थिति का अनुभव करते हो, सेकण्ड में दिल से बापदादा कहा और समर्थी स्वत: ही आ जाती है। इसलिए ओ समर्थ आत्मायें अब अन्य आत्माओं को अपनी समर्थी से समर्थ बनाओ। उमंग है ना! है उमंग, असमर्थ को समर्थ बनाना है ना! बापदादा ने देखा कि चारों ओर कमजोर आत्माओं को समर्थ बनाने का उमंग अच्छा है।

शिव रात्रि के प्रोग्राम धूमधाम से बना रहे हैं। सबको उमंग है ना! जिसको उमंग है बस इस शिवरात्रि में कमाल करेंगे, वह हाथ उठाओ। ऐसी कमाल जो धमाल खत्म हो जाए। जय-जयकार हो जाये वाह! वाह समर्थ आत्मायें वाह! सभी ज़ोन ने प्रोग्राम बनाया है ना! पंजाब ने भी बनाया है ना! अच्छा है। भटकती हुई आत्मायें, प्यासी आत्मायें, अशान्त आत्मायें, ऐसी आत्माओं को अंचली तो दे दो। फिर भी आपके भाई-बहने हैं। तो अपने भाईयों के ऊपर, अपनी बहनों के ऊपर रहम आता है ना! देखो, आजकल परमात्मा को आपदा के समय याद करते लेकिन शक्तियों को, देवताओं में भी गणेश है, हनुमान है और भी देवताओं को ज्यादा याद करते हैं, तो वह कौन हैं? आप ही हो ना! आपको रोज़ याद करते हैं। पुकार रहे हैं - हे कृपालु, दयालु रहम करो, कृपा करो। जरा सी एक सुख शान्ति की बूंद दे दो। आप द्वारा एक बूंद के प्यासी हैं। तो दु:खियों का, प्यासी आत्माओं का आवाज हे शक्तियां, हे देव नहीं पहुंच रहा है! पहुंच रहा है ना? बापदादा जब पुकार सुनते हैं तो शक्तियों को और देवों को याद करते हैं। तो अच्छा प्रोग्राम दादी ने बनाया है, बाबा को पसन्द है। स्मृति दिवस तो सदा ही है लेकिन फिर भी आज का दिन स्मृति द्वारा सर्व समर्थियां विशेष प्राप्त की, अब कल से शिवरात्रि तक बापदादा चारों ओर के बच्चों को कहते कि यह विशेष दिन यही लक्ष्य रखो कि ज्यादा से ज्यादा आत्माओं को मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा वा सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा किसी भी विधि से सन्देश रूपी अंचली

ज़रूर देना है। अपना उल्हना उतार दो। बच्चे सोचते हैं अभी विनाश की डेट तो दिखाई नहीं देती है, तो कभी भी उल्हना पूरा कर लेंगे लेकिन नहीं अगर अभी से उल्हना पूरा नहीं करेंगे तो यह भी उल्हना मिलेगा कि आपने पहले क्यों नहीं बताया। हम भी कुछ तो बना देते, फिर तो सिर्फ अहो प्रभू कहेंगे। इसलिए उन्हें भी कुछ-कुछ तो वर्से की अंचली लेने दो। उन्हों को भी कुछ समय दो। एक बूंद से भी प्यास तो बुझाओ, प्यासे के लिए एक बूंद भी बहुत महत्त्व वाली होती है। तो यही प्रोग्राम है ना कि कल से लेके बापदादा भी हरी झण्डी नहीं, नगाड़ा बजा रहे हैं कि आत्माओं को, हे तृप्त आत्मायें सन्देश दो, सन्देश दो। कम से कम शिवरात्रि पर बाप के बर्थ डे का मुख तो मीठा करें कि हाँ हमें सन्देश मिल गया। यह दिलखुश मिठाई सभी को सुनाओ, खिलाओ। साधारण शिवरात्रि नहीं मनाना, कुछ कमाल करके दिखाना। उमंग है? पहली लाइन को है? बहुत धूम मचाओ। कम से कम यह तो समझें कि शिवरात्रि का इतना बड़ा महत्त्व है। हमारे बाप का जन्म दिन है, सुनके खुशी तो मनायें।

अच्छा - जितने भी यहाँ बैठे हैं, चारों ओर तो जाना ही है लेकिन जितने भी बैठे हैं, कितनी संख्या है? (12-13 हज़ार बैठे हैं) अच्छा, जो भी बैठे हैं, मधुबन वाले कहेंगे हम कहाँ सन्देश देंगे? आजकल तो मधुबन के आस-पास भी गांव बहुत हैं। चाहे ऊपर, चाहे नीचे बहुत लोग हैं। कम से कम एक आत्मा को तो अपना बनाओ, सन्देश तो बहुतों को देना लेकिन एक आत्मा तो अपना वर्सा लेने के लायक बनाओ।

सभी एक एक को तैयार करे तो 9 लाख तो पूरे हो जायेंगे। मजूंर है, करेंगे कि सिर्फ बोलेंगे। सिर्फ हाथ नहीं उठाना लेकिन दिल से करना है। करना है? (नारायण से पूछते हैं) करना है? तो जो बापदादा ने कहा है 9 लाख की लिस्ट होनी चाहिए, वह तो हो ही जायेगी ना। तो अगली सीजन में बापदादा यह खुशखबरी सुनने चाहते हैं कि 6 लाख नहीं, 9 लाख तो हो गये हैं, उससे ज्यादा ही हो गये हैं। ठीक है, शक्तियां, टीचर्स ठीक है! टीचर्स को

तो कंगन तैयार करना चाहिए। पंजाब और राजस्थान की टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स तो बहुत ही बना सकती है, लेकिन औरों को भी बनाने की प्रेरणा देना। अच्छा है टीचर्स कितनी हैं? एक एक भी 9 को तैयार करें तो 9 लाख तो हो जायेंगे। क्या समझते हो अगले सीजन तक यह खुशखबरी मिलेगी? हाँ निर्वैर बोलो, मिलेगी? होगा? यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। 6 लाख हैं, 3 लाख चाहिए बस। हो जायेगा, सब सिर्फ हिम्मत रखो करना ही है। क्या बोलेंगे? कहो करना ही है। संकल्प शक्ति बहुत बड़ी शक्ति है। आप ब्राह्मण आत्माओं का संकल्प क्या नहीं कर सकता है। हर एक को अपने श्रेष्ठ संकल्प का महत्त्व स्मृति में रखना है।

बापदादा ने देखा कि अमृतवेले मैजारिटी का याद और ईश्वरीय प्राप्तियों का नशा बहुत अच्छा रहता है। लेकिन कर्म योगी की स्टेज में जो अमृतवेले का नशा है उससे अन्तर पड़ जाता है। कारण क्या है? कर्म करते, सोल कान्सेस और कर्म कान्सेस दोनों रहता है। इसकी विधि है कर्म करते मैं आत्मा, कौन सी आत्मा, वह तो जानते ही हो, जो भिन्न-भिन्न आत्मा के स्वमान मिले हुए हैं, ऐसी आत्मा करावनहार होकर इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराने वाली हूँ, यह कर्मेन्द्रियां कर्मचारी हैं लेकिन कर्मचारियों से कर्म कराने वाली मैं करावनहार हूँ, न्यारी हूँ। क्या लौकिक में भी डायरेक्टर अपने साथियों से, निमित्त सेवा करने वालों से सेवा कराते, डायरेक्शन देते, ड्युटी बजाते भूल जाता है कि मैं डायरेक्टर हूँ? तो अपने को करावनहार शक्तिशाली आत्मा हूँ, यह समझकर कार्य कराओ। यह आत्मा और शरीर, वह करनहार है वह करावनहार है, यह स्मृति मर्ज हो जाती है। आप सबको, पुराने बच्चों को मालूम है कि ब्रह्मा बाप ने शुरू शुरू में क्या अभ्यास किया? एक डायरी देखी थी ना। सारी डायरी में एक ही शब्द - मैं भी आत्मा, जसोदा भी आत्मा, यह बच्चे भी आत्मा हैं, आत्मा है, आत्मा है.... यह फाउण्डेशन सदा का अभ्यास किया। तो यह पहला पाठ मैं कौन? इसका बार-बार अभ्यास चाहिए। चेकिंग चाहिए, ऐसे नहीं मैं तो हूँ ही

आत्मा। अनुभव करे कि मैं आत्मा करावनहार बन कर्म करा रही हूँ। करनहार अलग है, करावनहार अलग है। ब्रह्मा बाप का दूसरा अनुभव भी सुना है कि यह कर्मेन्द्रियां, कर्मचारी हैं। तो रोज़ रात की कचहरी सुनी है ना! तो मालिक बन इन कर्मेन्द्रियों रूपी कर्मचारियों से हालचाल पूछा है ना! तो जैसे ब्रह्मा बाप ने यह अभ्यास फाउण्डेशन बहुत पक्का किया, इसलिए जो बच्चे लास्ट में भी साथ रहे उन्होंने क्या अनुभव किया? कि बाप कार्य करते भी शरीर में होते हुए भी अशरीरी स्थिति में चलते फिरते अनुभव होता रहा। चाहे कर्म का हिसाब भी चुक्तू करना पड़ा लेकिन साक्षी हो, न स्वयं कर्म के हिसाब के वश रहे, न औरों को कर्म के हिसाब-किताब चुक्तू होने का अनुभव कराया। आपको मालूम पड़ा कि ब्रह्मा बाप अव्यक्त हो रहा है, नहीं मालूम पड़ा ना! तो इतना न्यारा, साक्षी, अशरीरी अर्थात् कर्मातीत स्टेज बहुतकाल से अभ्यास की तब अन्त में भी वही स्वरूप अनुभव हुआ। यह बहुतकाल का अभ्यास काम में आता है। ऐसे नहीं सोचो कि अन्त में देहभान छोड़ देंगे, नहीं। बहुतकाल का अशरीरीपन का, देह से न्यारा करावनहार स्थिति का अनुभव चाहिए। अन्तकाल चाहे जवान है, चाहे बूढ़ा है, चाहे तन्दरूस्त है, चाहे बीमार है, किसका भी कभी भी आ सकता है। इसलिए बहुतकाल साक्षीपन के अभ्यास पर अटेन्शन दो। चाहे कितनी भी प्राकृतिक आपदायें आयेंगी लेकिन यह अशरीरीपन की स्टेज आपको सहज न्यारा और बाप का प्यारा बना देगी। इसलिए बहुतकाल शब्द को बापदादा अण्डरलाइन करा रहे हैं। क्या भी हो, सारे दिन में साक्षीपन की स्टेज का, करावनहार की स्टेज का, अशरीरीपन की स्टेज का अनुभव बार-बार करो, तब अन्त मते फ़रिश्ता सो देवता निश्चित है। बाप समान बनना है तो बाप निराकार और फ़रिश्ता है, ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात् फ़रिश्ता स्टेज में रहना। जैसे फ़रिश्ता रूप साकार रूप में देखा, बात सुनते, बात करते, कारोबार करते अनुभव किया कि जैसे बाप शरीर में होते न्यारे हैं। कार्य को छोड़कर अशरीरी बनना, यह तो थोड़ा समय हो सकता है लेकिन कार्य

करते, समय निकाल अशरीरी, पॉवरफुल स्टेज का अनुभव करते रहो। आप सब फरिश्ते हो, बाप द्वारा इस ब्राह्मण जीवन का आधार ले सन्देश देने के लिए साकार में कार्य कर रहे हो। फ़रिश्ता अर्थात् देह में रहते देह से न्यारा और यह एक्जैम्पुल ब्रह्मा बाप को देखा है, असम्भव नहीं है। देखा अनुभव किया। जो भी निमित्त हैं, चाहे अभी विस्तार ज्यादा है लेकिन जितनी ब्रह्मा बाप की नई नॉलेज, नई जीवन, नई दुनिया बनाने की जिम्मेवारी थी, उतनी अभी किसकी भी नहीं है। तो सबका लक्ष्य है ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात् फ़रिश्ता बनना। शिव बाप समान बनना अर्थात् निराकार स्थिति में स्थित होना। मुश्किल है क्या? बाप और दादा से प्यार है ना! तो जिससे प्यार है उस जैसा बनना, जब संकल्प भी है - बाप समान बनना ही है, तो कोई मुश्किल नहीं। सिर्फ बार-बार अटेन्शन। साधारण जीवन नहीं। साधारण जीवन जीने वाले बहुत हैं। बड़े-बड़े कार्य करने वाले बहुत हैं। लेकिन आप जैसा कार्य, आप ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए और कोई नहीं कर सकता है।

तो आज स्मृति दिवस पर बापदादा समानता में समीप आओ, समीप आओ, समीप आओ का वरदान दे रहे हैं। सभी हद के किनारे, चाहे संकल्प, चाहे बोल, चाहे कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क कोई भी हद का किनारा, अपने मन की नईया को इन हद के किनारों से मुक्त कर दो। अभी से जीवन में रहते मुक्त ऐसे जीवनमुक्ति का अलौकिक अनुभव बहुतकाल से करो। अच्छा।

चारों ओर के बच्चों के पत्र बहुत मिले हैं और मधुबन वालों की क्रोधमुक्त की रिपोर्ट, समाचार भी बापदादा के पास पहुंचा है। बापदादा हिम्मत पर खुश है, और आगे के लिए सदा मुक्त रहने के लिए सहनशक्ति का कवच पहने रखना, तो कितना भी कोई प्रयत्न करेगा लेकिन आप सदा सेफ रहेंगे।

ऐसे सर्व दृढ़ संकल्पधारी, सदा स्मृति स्वरूप आत्माओं को, सदा सर्व समर्थियों को समय पर कार्य में लाने वाले विशेष आत्माओं को, सदा सर्व आत्माओं के रहमदिल आत्माओं को, सदा बापदादा समान बनने के संकल्प

को साकार रूप में लाने वाले ऐसे बहुत-बहुत-बहुत प्यारे और न्यारे बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

पंजाब के सेवाधारियों से

पंजाब वालों ने भी अपना बेहद सेवा का पार्ट अच्छा बजाया है, बापदादा खुश होते हैं कि हर एक ज़ोन बड़े उमंग-उत्साह से सेवा का गोल्डन चांस प्रैक्टिकल में ला रहे हैं। पंजाब नाम ही नदियों के आधार पर पड़ा है। आजकल नदियों को ही पावन बनाने वाली मानते हैं। तो पंजाब वाले सबको सन्देश देने में नम्बरवन हैं ना! नदियां तो बहती रहती हैं, तो पंजाब भी सन्देश देते आगे बढ़ता रहता है। बहुत प्रोग्राम अच्छे बनाये हैं ना। बापदादा ने सुना है, सबका अच्छा उमंग है। आदि स्थापना का स्थान है इसलिए शक्ति ज्यादा है, इसीलिए आपके निमित्त चन्द्रमणि बच्ची को टाइटल ही दिया - पंजाब की शेरनी। तो सब शेरणियां हो ना! कमजोर तो नहीं हैं। पाण्डव कमजोर तो नहीं, शक्तिशाली हो ना? कहो हाँ जी। बापदादा जानते हैं एक एक पंजाब का शेर या शेरनी शिकार करने में होशियार है। शेर तो शिकार करने में होशियार होता है ना। तो आप कितने होशियार हो। अगली सीजन में सबसे ज्यादा संख्या पंजाब लायेगा। तो इनएडवांस मुबारक है। अच्छा है। एक एक को देख बापदादा खुश होते हैं, वाह मेरे सर्विसएबुल बच्चे वाह! पाण्डव भी वाह वाह हैं। शक्तियां भी वाह वाह हैं। अभी वाह बाबा वाह का नगाड़ा बजाओ। सब लोग कहें - वाह हमारा बाबा वाह! ठीक है ना! हिम्मत है? हिम्मत भी है और बापदादा की पद्मगुणा मदद भी है। ठीक है। देखो, नाम ही अचल है और प्रेम है। जहाँ प्रेम है, अचल है तो सब कुछ आ गया ना। चाहिए ही क्या, प्रेम चाहिए और अचल स्थिति चाहिए और क्या चाहिए। ऐसे निमित्त का नाम ले रहे हैं। सभी का नाम बहुत अर्थ वाला है। सामने खड़े हैं तो दो का नाम ले रहे हैं बाकी हैं सभी एक एक रत्न, बापदादा के दिलतख्तनशीन। तो ठीक है ना।

डबल फारेनर्स – डबल फारेनर्स को डबल नशा है। क्यों डबल नशा है? क्योंकि समझते हैं कि हम भी जैसे बाप दूरदेश के हैं ना, तो हम भी दूरदेश से आये हैं। बापदादा ने डबल विदेशी बच्चों की एक विशेषता देखी है कि दीप से दीप जगाते हुए अनेक देशों में बापदादा के जगे हुए दीपकों की दीवाली मना दी है। अभी भी सुना कितने देश के आये हैं? (35) इस टर्न में 35 देशों के आये हैं और बाहर कितने होंगे? तो डबल विदेशियों को सन्देश देने का शौक अच्छा है। हर ग्रुप में बापदादा ने देखा 35-40 देशों के होते हैं। मुबारक हो। सदा स्वयं भी उड़ते रहो और फरिश्ते बनकरके उड़ते-उड़ते सन्देश देते रहो। अच्छा है, आप 35 देश वालों को बापदादा नहीं देख रहा है और भी देश वालों को आपके साथ देख रहे हैं। तो नम्बरवन बाप समान बनने वाले हो ना! नम्बरवन कि नम्बरवार बनने वाले हो? नम्बरवन? नम्बरवार नहीं? नम्बरवन बनना अर्थात् हर समय विन करने वाले। जो विन करते हैं वह वन होते हैं। तो ऐसे हो ना? बहुत अच्छा। विजयी हैं और सदा विजयी रहने वाले। अच्छा और सभी को, जहाँ जहाँ जाओ वहाँ यह स्मृति दिलाना कि सभी डबल फारेनर्स को वन नम्बर बनना है। अच्छा - सभी को याद देना। और शिव रात्रि यहाँ मनाते हैं लेकिन आप सन्देश तो दे सकते हो ना! तो जितनी संख्या है उससे डबल संख्या दूसरे सीजन में होनी ही है। होगी ना! होनी है।

अच्छा - बापदादा सभी माताओं को गऊपाल की प्यारी माताओं को बहुत-बहुत दिल से यादप्यार दे रहे हैं और पाण्डव चाहे यूथ हो, चाहे प्रवृत्ति वाले हो, पाण्डव सदा पाण्डवपति के साथी रहे हैं, ऐसे साथी पाण्डवों को भी बापदादा बहुत-बहुत यादप्यार दे रहे हैं। टीचर्स सोच रही हैं हमको तो देखा नहीं, देख रहे हैं।

टीचर्स से – टीचर्स तो अपने फीचर्स से ही बापदादा का साक्षात्कार कराने वाली हैं। बापदादा का भी और अपने फ्युचर का भी फीचर्स द्वारा प्रत्यक्ष करने की सेवा विशेष टीचर्स की है। हर एक का फीचर्स सदा ही जैसे

प्रदर्शनी हो। प्रदर्शनी के चित्र स्वत: ही अपना परिचय देते हैं तो आपके फीचर्स चलता फिरता प्रदर्शनी हो और हर एक को स्वत: ही स्मृति दिलाते रहो। समझा। 100 ब्राह्मणों से उत्तम कुमारियों को भी बहुत-बहुत यादप्यार। अच्छा।

बच्चों से – बच्चों के बिना तो रौनक ही नहीं है। घर का शृंगार, बापदादा का शृंगार बच्चे हैं। बच्चों को तो बापदादा राजा बच्चा के रूप में देखते हैं। एक-एक बच्चा राजा बच्चा है। ऐसे है ना! ऐसे हैं बच्चे, राजा बच्चे हो या प्रजा बच्चे हो? बहुत अच्छा। बच्चों को देखकर सब खुश होते हैं। अभी बच्चे कमाल करके दिखाना। बच्चे भी अपने हमजिन्स बच्चों को तैयार करना। करेंगे ना! अच्छा।

आज के दिन क्या याद आता है? विल पावर्स मिली ना! विल पावर्स का वरदान है। बहुत अच्छा पार्ट बजाया है, इसकी मुबारक है। सभी की दुआयें आपको बहुत हैं। आपको देख करके ही सभी खुश हो जाते हैं, बोलो या नहीं बोलो। आपको कुछ होता है ना तो सब ऐसे समझते हैं हमको हो रहा है। इतना प्यार है। सभी का है। (हमारा भी सबसे बहुत प्यार है) प्यार तो है बहुत सभी से। यह प्यार ही सभी को चला रहा है। धारणा कम हो ज्यादा हो, लेकिन प्यार चला रहा है। बहुत अच्छा।

ईशू दादी से – इसने भी हिसाब चुक्तू कर लिया। कोई बात नहीं। इसका सहज पुरुषार्थ, सहज हिसाब चुक्तू। सहज ही हो गया, सोते सोते। आराम मिला विष्णु के मुआफिक। अच्छा। फिर भी साकार से अभी तक यज्ञ रक्षक बने हैं। तो यज्ञ रक्षक बनने की दुआयें बहुत होती हैं।

सभी दादियां बापदादा के बहुत-बहुत समीप हैं। समीप रत्न हैं और सबको दादियों का मूल्य है। संगठन भी अच्छा है। आप दादियों के संगठन ने इतने वर्ष यज्ञ की रक्षा की है और करते रहेंगे। यह एकता सभी सफलता का आधार है। (बाबा बीच में है) बाप को बीच में रखा है, यह अटेन्शन बहुत अच्छा दिया है। अच्छा। सभी ठीक हैं।

मोहिनी बहन से – तबियत ठीक है, आपमें भी हिम्मत अच्छी है, चला लेती हो। आता है और चला जाता है, यह भी शक्ति है।

मनोहर दादी से – प्रकृति को चलाने आ गया है। पुरानी मोटर को धक्का बीच-बीच में देना होता है। इसलिए चला रहे हो, बहुत अच्छा चला रहे हो। आप लोगों का हाजिर रहना, यही सब कुछ सफलता है। अच्छा है। सभी स्मृति दिवस देखने वाली हो। अच्छा। ओम शान्ति।

18-01-2004

''वर्ल्ड अथॉरिटी के डायरेक्ट बच्चे हैं - इस स्मृति को इमर्ज रख सर्व शक्तियों को ऑर्डर से चलाओ''

आज चारों ओर स्नेह की लहरों में सभी बच्चे समाये हुए हैं। सभी के दिल में विशेष ब्रह्मा बाप की स्मृति इमर्ज है। अमृतवेले से लेके साकार पालना वाले रत्न और साथ में अलौकिक पालना वाले रत्न दोनों के दिल के यादों की मालायें बापदादा के पास पहुंच गई हैं। सभी के दिल में बापदादा के स्मृति की तस्वीर दिखाई दे रही है। और बाप के दिल में सर्व बच्चों की स्नेह भरी दिल समाई हुई है। सभी के दिल से एक ही स्नेह भरा गीत बज रहा है - ''मेरा बाबा'' और बाप की दिल से यही गीत बज रहा है -''मेरे मीठे-मीठे बच्चे''। यह आटोमेटिक गीत, अनहद गीत कितना प्यारा है। बापदादा चारों ओर के बच्चों को स्नेह भरी स्मृति के रिटर्न में दिल के स्नेह भरी दुआयें पदमगुणा दे रहे हैं।

बापदादा देख रहे हैं अभी भी देश वा विदेश में बच्चे स्नेह के सागर में लवलीन हैं। यह स्मृति दिवस विशेष सभी बच्चों के प्रति समर्थ बनाने का दिवस है। आज का दिन ब्रह्मा बाप द्वारा बच्चों की ताजपोशी का दिन है। ब्रह्मा बाप ने निमित्त बच्चों को विश्व सेवा की जिम्मेवारी का ताज पहनाया। स्वयं अननोन बनें और बच्चों को साकार स्वरूप में निमित्त बनाने का, स्मृति का तिलक दिया। स्वयं समान अव्यक्त फरिश्ते स्वरूप का, प्रकाश का ताज पहनाया। स्वयं करावनहार बन करनहार बच्चों को बनाया। इसलिए इस दिवस को स्मृति दिवस सो समर्थी दिवस कहा जाता है। सिर्फ स्मृति नहीं, स्मृति के साथ-साथ सर्व समर्थियाँ बच्चों को वरदान में प्राप्त हैं। बापदादा सभी बच्चों को सर्व स्मृतियों स्वरूप देख रहे हैं। मास्टर सर्व शक्तिवान स्वरूप में देख रहे हैं। शक्तिवान नहीं, सर्व-शक्तिवान। यह सर्व शक्तियां बाप द्वारा हर एक बच्चे को वरदान में मिली हुई हैं। दिव्य जन्म लेते ही बापदादा ने वरदान दिया - सर्वशक्तिवान भव! यह हर जन्म दिवस का वरदान है। इन शक्तियों को प्राप्त वरदान के रूप से कार्य में लगाओ। हर एक बच्चे को मिली हैं लेकिन कार्य में लगाने में नम्बरवार हो जाते हैं। हर शक्ति के वरदान को समय प्रमाण आर्डर कर सकते हो। अगर वरदाता के वरदान के स्मृति स्वरूप बन समय अनुसार किसी भी शक्ति को आर्डर करेंगे तो हर शक्ति हाज़िर होनी ही है। वरदान की प्राप्ति के, मालिकपन के स्मृति स्वरूप में हो आप आर्डर करो और शक्ति समय पर कार्य में नहीं आये, हो नहीं सकता। लेकिन मालिक, मास्टर सर्वशक्तिवान के स्मृति की सीट पर सेट हो, बिना सीट पर सेट के कोई आर्डर नहीं माना जाता है। जब बच्चे कहते हैं कि बाबा हम आपको याद करते तो आप हाज़िर हो जाते हो, हज़ूर हाज़िर हो जाता है। जब हज़ूर हाज़िर हो सकता तो शक्ति क्यों नहीं हाज़िर होगी! सिर्फ विधि पूर्वक मालिकपन के अथॉरिटी से आर्डर करो। यह सर्व शक्तियां संगमयुग की विशेष परमात्म प्रॉपर्टी है। प्रॉपर्टी किसके लिए होती है? बच्चों के लिए प्रॉपर्टी होती है। तो अधिकार से स्मृति स्वरूप की सीट से आर्डर करो, मेहनत क्यों करो, आर्डर करो। वर्ल्ड अथॉरिटी के डायरेक्ट बच्चे हो, यह स्मृति का नशा सदा इमर्ज रहे।

अपने आपको चेक करो - वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी की अधिकारी आत्मा हूँ, यह स्मृति स्वत: ही रहती है? रहती है या कभी-कभी रहती है? आजकल के समय में तो अधिकार लेने के ही झगड़े हैं और आप सबको परमात्म अधिकार, परमात्म अथॉरिटी जन्म से ही प्राप्त है। तो अपने अधिकार की समर्थी में रहो। स्वयं भी समर्थ रहो और सर्व आत्माओं को भी समर्थी दिलाओ। सर्व आत्मायें इस समय समर्थी अर्थात् शक्तियों की भिखारी हैं, आपके जड़ चित्रों के आगे मांगते रहते हैं। तो बाप कहते हैं ''हे समर्थ आत्मायें सर्व आत्माओं को शक्ति दो, समर्थी दो।'' इसके लिए सिर्फ एक बात का अटेन्शन हर बच्चे को रखना आवश्यक है - जो बापदादा ने इशारा भी दिया, बापदादा ने रिजल्ट में देखा कि मैजारिटी बच्चों का संकल्प और समय व्यर्थ जाता है। जैसे बिजली का कनेक्शन अगर थोड़ा भी लूज़ हो वा लीक हो जाए तो लाइट ठीक नहीं आ सकती। तो यह व्यर्थ की लीकेज़ समर्थ स्थिति को सदाकाल की स्मृति बनाने नहीं देती, इसलिए वेस्ट को बेस्ट में चेन्ज करो। बचत की स्कीम बनाओ। परसेन्टेज़ निकालो - सारे दिन में वेस्ट कितना हुआ, बेस्ट कितना हुआ? अगर मानो 40 परसेन्ट वेस्ट है, 20 परसेन्ट वेस्ट है तो उसको बचाओ। ऐसे नहीं समझो थोड़ा सा ही तो वेस्ट जाता है, बाकी तो सारा दिन ठीक रहता है। लेकिन यह वेस्ट की आदत बहुत समय की आदत होने के कारण लास्ट घड़ी में धोखा दे सकती है। नम्बरवार बना देगी, नम्बरवन नहीं बनने देगी। जैसे ब्रह्मा बाप ने आदि में अपनी चेकिंग के कारण रोज़ रात को दरबार लगाई। किसकी दरबार? बच्चों की नहीं, अपनी ही कर्मेन्द्रियों की दरबार लगाई। आर्डर चलाया - हे मन मुख्य मंत्री यह तुम्हारी चलन अच्छी नहीं, आर्डर में चलो। हे संस्कार आर्डर में चलो। क्यों नीचे ऊपर हुआ, कारण बताओ, निवारण करो। हर रोज़ आफीशल दरबार लगाई। ऐसे रोज़ अपनी स्वराज्य दरबार लगाओ। कई बच्चे बापदादा से मीठी-मीठी रूहरिहान करते हैं। पर्सनल रूहरिहान करते हैं, बतायें। कहते हैं हमको अपने भविष्य का चित्र बताओ, हम क्या बनेंगे? जैसे आदि रत्नों को याद होगा कि जगत अम्बा माँ से सभी बच्चे अपना चित्र मांगते थे, मम्मा आप हमको चित्र दो हम कैसे हैं। तो बापदादा से भी रूहरिहान करते अपना चित्र मांगते हैं। आप सबकी भी दिल तो होती होगी कि हमको भी चित्र मिल जाए तो अच्छा है। लेकिन बापदादा कहते हैं - बापदादा ने हर एक बच्चे को एक विचित्र दर्पण दिया है, वह दर्पण कौन सा है? वर्तमान समय आप स्वराज्य अधिकारी हो ना! हो? स्वराज्य अधिकारी हो? हो तो हाथ उठाओ। स्व-राज्य, अधिकारी हो? अच्छा। कोई-कोई नहीं उठा रहे हैं।

थोड़ा-थोड़ा हैं क्या? अच्छा। सभी स्वराज्य अधिकारी हो, मुबारक हो। **तो स्वराज्य अधिकार का चार्ट आपके लिए भविष्य पद की शक्ल दिखाने का दर्पण है।** यह दर्पण सबको मिला हुआ है ना? क्लीयर है ना? कोई ऐसे काले दाग तो नहीं लगे हुए हैं ना! अच्छा, काले दाग तो नहीं होंगे, लेकिन कभी-कभी जैसे गर्म पानी होता है ना, वह कोहरे के मुआफिक आइने पर आ जाता है। जैसे फागी होती है ना, तो आइने पर ऐसा हो जाता है जो आइना क्लीयर नहीं दिखाता है। नहाने के समय तो सबको अनुभव होगा। तो ऐसा अगर कोई एक भी कर्मेन्द्रिय अभी तक भी आपके पूरे कन्ट्रोल में नहीं है, है कन्ट्रोल में लेकिन कभी-कभी नहीं भी है। अगर मानों कोई भी कर्मेन्द्रिय, चाहे ऑख हो, चाहे मुख हो, चाहे कान हो, चाहे पाँव हो, पाँव भी कभी-कभी बुरे संग के तरफ चला जाता है। तो पाँव भी कन्ट्रोल में नहीं हुआ ना। संगठन में बैठ जायेंगे, रामायण और भागवत की उल्टी कथायें सुनेंगे, सुल्टी नहीं। तो कोई भी कर्मेन्द्रिय संकल्प, समय सहित अगर कन्ट्रोल में नहीं है तो इससे ही चेक करो जब स्वराज्य में कन्ट्रोलिंग पावर नहीं है तो विश्व के राज्य में कन्ट्रोल क्या करेंगे! तो राजा कैसे बनेंगे? वहाँ तो सब एक्यूरेट है। कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर सब स्वत: ही संगमयुग के पुरुषार्थ की प्रालब्ध के रूप में है। तो संगमयुग अर्थात् वर्तमान समय अगर कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर कम है, तो पुरुषार्थ कम तो प्रालब्ध क्या होगी? हिसाब करने में तो होशियार हो ना! तो इस आइने में अपना फेस देखो, अपनी शक्ल देखो। राजा की आती है, रॉयल फैमिली की आती है, रॉयल प्रजा की आती है, साधारण प्रजा की आती है, कौन सी शक्ल आती है? तो मिला चित्र? इस चित्र से चेक करना। हर रोज़ चेक करना क्योंकि बहुतकाल के पुरुषार्थ से, बहुतकाल के राज्य भाग्य की प्राप्ति है। अगर आप सोचो कि अन्त के समय बेहद का वैराग्य तो आ ही जायेगा, लेकिन अन्त समय आयेगा तो बहुतकाल हुआ या थोड़ा काल हुआ? बहुतकाल तो नहीं कहेंगे ना! तो 21 जन्म पूरा ही राज्य अधिकारी बनें, तख्त पर भले नहीं बैठें, लेकिन राज्य अधिकारी हों। यह बहुतकाल (पुरुषार्थ का), बहुतकाल की प्रालब्ध का कनेक्शन है। इसीलिए अलबेले नहीं बनना, अभी तो विनाश की डेट फिक्स ही नहीं है, पता ही नहीं। 8 वर्ष होगा, 10 वर्ष होगा, पता तो है ही नहीं। तो आने वाले समय में हो जायेंगे, नहीं। विश्व के अन्तकाल सोचने के पहले अपने जन्म का अन्तकाल सोचो, आपके पास डेट फिक्स है, किसके पास पता है कि इस डेट पर मेरा मृत्यु होना है? है किसके पास? नहीं है ना! विश्व का अन्त तो होना ही है, समय पर होगा ही लेकिन पहले अपनी अन्तकाल सोचो और जगदम्बा का स्लोगन याद करो - क्या स्लोगन था? हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो। अचानक होना है। डेट नहीं बताई जायेगी। ना विश्व की, ना आपके अन्तिम घड़ी की। सब अचानक का खेल है। इसलिए दरबार लगाओ, हे राजे, स्वराज्य अधिकारी राजे अपनी दरबार लगाओ। आर्डर में चलाओ क्योंकि भविष्य का गायन है, लॉ एण्ड आर्डर होगा। स्वत: ही होगा। लव और लॉ दोनों का ही बैलेन्स होगा। नेचरल होगा। राजा कोई लॉ पास नहीं करेगा कि यह लॉ है। जैसे आजकल लॉ बनाते रहते हैं। आजकल तो पुलिस वाला भी लॉ उठा लेता है। लेकिन वहाँ नेचरल लव और लॉ का बैलेन्स होगा।

तो अभी आलमाइटी अथॉरिटी की सीट पर सेट रहो। तो यह कर्मेन्द्रियां, शक्तियां, गुण सब आपके जी हज़ूर, जी हज़ूर करेंगे। धोखा नहीं देंगे। जी हाज़िर। तो अभी क्या करेंगे? दूसरे स्मृति दिवस पर कौन सा समारोह मनायेंगे? यह हर एक ज़ोन तो समारोह मनाते हैं ना। सम्मान समारोह भी बहुत मना लिये। अब सदा हर संकल्प और समय के सफलता की सेरीमनी मनाओ। यह समारोह मनाओ। वेस्ट खत्म क्योंकि आपके सफलतामूर्त बनने से आत्माओं को तृप्ति की सफलता प्राप्त होगी। निराशा से चारों ओर शुभ आशाओं के दीप जगेंगे। कोई भी सफलता होती है तो दीपक तो जगाते हैं ना! अब विश्व में आशाओं के दीप जगाओ। हर आत्मा के अन्दर कोई न कोई निराशा है ही, निराशाओं के कारण परेशान हैं, टेन्शन में हैं। तो हे अविनाशी दीपकों अब आशाओं के दीपकों की दीवाली मनाओ। पहले स्व फिर सर्व। सुना!

बाकी बापदादा बच्चों के स्नेह को देख खुश हैं। स्नेह की सबजेक्ट में परसेन्टेज़ अच्छी है। आप इतनी मेहनत करके यहाँ क्यों पहुंचे हो, आपको कौन लाया? ट्रेन लाई, प्लेन लाया या स्नेह लाया? स्नेह के प्लेन से पहुंच गये हो। तो स्नेह में तो पास हो। अभी आलमाइटी अथॉरिटी में मास्टर हैं, इसमें पास होना, तो यह प्रकृति, यह माया, यह संस्कार, सब आपके दासी बन जायेंगे। हर घड़ी इन्तजार करेंगे मालिक क्या आर्डर है! ब्रह्मा बाप ने भी मालिक बन अन्दर ही अन्दर ऐसा सूक्ष्म पुरुषार्थ किया जो आपको पता पड़ा, सम्पन्न कैसे बन गया? पंछी उड़ गया। पिंजड़ा खुल गया। साकार दुनिया के हिसाब-किताब का, साकार के तन का पिंजड़ा खुल गया, पंछी उड़ गया। अभी ब्रह्मा बाप भी बहुत सिक व प्रेम से बच्चों का जल्दी आओ, जल्दी आओ, अभी आओ, अभी आओ, यह आह्वान कर रहे हैं। तो पंख तो मिल गये हैं ना! बस सभी एक सेकण्ड में अपने दिल में यह ड्रिल करो, अभी-अभी करो। सब संकल्प समाप्त करो, यही ड्रिल करो **''ओ बाबा मीठे बाबा, प्यारे बाबा हम आपके समान अव्यक्त रूपधारी बनें कि बनें।''**

(बापदादा ने ड्रिल कराई)

अच्छा - चारों ओर के स्नेही सो समर्थ बच्चों को, चारों ओर के स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी बच्चों को, चारों ओर के मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी के सीट पर सेट रहने वाले तीव्र पुरुषार्थी बच्चों को, सदा मालिक बन प्रकृति को, संस्कार को, शक्तियों को, गुणों को आर्डर करने वाले विश्व राज्य अधिकारी बच्चों को, बाप समान सम्पूर्णता को, सम्पन्नता को समीप लाने

वाले देश विदेश के हर स्थान के कोने-कोने के बच्चों को समर्थ दिवस का, बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

अभी-अभी बापदादा को विशेष कौन याद आ रहा है? जनक बच्ची। खास सन्देश भेजा था कि मैं सभा में हाजिर अवश्य हूंगी। तो चाहे लण्डन, चाहे अमेरिका, चाहे आस्ट्रेलिया, चाहे अफ्रीका, चाहे एशिया और सर्व भारत के हर देश के बच्चों को एक-एक को नाम और विशेषता सहित यादप्यार। आपको तो सम्मुख यादप्यार मिल रहा है ना! अच्छा।

सेवा का टर्न - महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश का है:-(5000 आये हैं) अच्छा - महाराष्ट्र अर्थात् सर्व से महान। जैसे देश महान है वैसे आत्मायें भी महान हैं। बापदादा हर बच्चे को महान रूप में ही देखते हैं। सेवा का फल भी मिला, पुण्य जमा हुआ और बल भी मिला। इतने ब्राह्मण आत्माओं का साथ मिला। एक दो को देख-देख हर्षित हुए। एक दो के स्नेह का बल कम नहीं है। तो फल भी मिला, बल भी मिला। अच्छा पार्ट बजाया। बापदादा तो सदा अच्छा, अच्छा, अच्छा कहते आगे उड़ाते ही रहते हैं। तो सेवा का चांस अच्छा लगा ना। बहुत अच्छा लगा। समीप आने का चांस है। सेवा का प्रत्यक्ष मेवा मिलता है। अच्छा है। अभी कोई महान कर्तव्य भी करके दिखायेंगे ना! महाराष्ट्र है तो महान कर्तव्य के निमित्त भी बनेंगे। सेवा बहुत अच्छी करो लेकिन सेवा और स्व दोनों कम्बाइन्ड हों। जैसे बापदादा कम्बाइण्ड है ना। आत्मा और शरीर कम्बाइण्ड है ना! ऐसे स्व स्थिति और सेवा दोनों कम्बाइण्ड। परसेन्टेज़ में कोई कमी नहीं हो। कभी सेवा की परसेन्टेज़ ज्यादा, कभी स्व की परसेन्टेज़ ज्यादा, नहीं, सदा बैलेन्स। तो आपके बैलेन्स द्वारा विश्व की आत्माओं को ब्लैसिंग मिलती रहेगी। तो अभी विश्व की आत्माओं को ब्लैसिंग चाहिए। मेहनत नहीं चाहिए, ब्लैसिंग चाहिए। तो आपका बैलेन्स स्वत: ही ब्लैसिंग दिलायेगी। अच्छा।

आज मधुबन वालों को भी याद किया। यह आगे-आगे बैठते हैं ना। हाथ उठाओ मधुबन वाले। मधुबन की सभी भुजायें। मधुबन वालों को विशेष त्याग का भाग्य सूक्ष्म में तो प्राप्त होता है क्योंकि रहते पाण्डव भवन में, मधुबन में, शान्तिवन में हैं लेकिन मिलने वालों को चांस मिलता है, मधुबन साक्षी होके देखता रहता है। लेकिन दिल पर सदा मधुबन वाले याद हैं। आज आपका ग्रुप (गोलक भाई को) टोली लेने आना। मेहनत करते हैं ना! सभी मधुबन वाले सभी भुजाओं सहित मेहनत बहुत अच्छी करते हैं। मेहनत में मार्क्स बहुत अच्छी हैं। अभी नम्बरवन बनने में मार्क्स लेंगे। मधुबन के रहने वालों में एक-एक नम्बरवन महान हैं, यह नारा लगायें। मधुबन से वेस्ट का नाम-निशान समाप्त हो। सेवा में, स्थिति में सबमें महान। ठीक है ना! मधुबन वालों को भूलते नहीं हैं लेकिन मधुबन को त्याग का चांस देते हैं। ऐसे तो सभी, सब ज़ोन वाले बहुत सेवा में आगे बढ़ रहे हैं। सबने प्रोग्राम किये बहुत अच्छे किये, भोपाल ने भी अच्छा किया। हर एक स्थान की विशेषता अपनी-अपनी है। देखो भोपाल वालों को प्रकृति ने कितना सहयोग दिया। एक दिन बारिश, हवा, ठण्डी रूकी रही, आपका कार्य सम्पन्न हुआ और शुरू हो गया। तो प्रकृति ने सहयोग दिया। ऐसे ही प्रकृतिजीत बनना ही है, मायाजीत बनना ही है। आप नहीं बनेंगे तो और कौन बनेगा। तो बनना ही है। अच्छा।

दादी जी से:- बहुत मेहनत करती हैं, थक जाती हैं। अच्छा, बहुत अच्छा। आदि रत्नों से श्रंगार है। आदि रत्नों को देख बापदादा को खुशी होती है। अच्छा।

दादा नारायण से:- सब ठीक है। याद और मन्सा सेवा करते चलो, इसी कार्य में बिजी रहो। बाबा भूल नहीं सकता। खुश रहना। खुशी कभी नहीं गंवाना।

एकाउन्ट ग्रुप से:- सभी जो भी सेवायें कर रहे हो, वह अपनी समझकर बहुत अच्छी कर रहे हो। इसकी मुबारक हो। सिर्फ सेवा करते डबल लाइट रहना। कोई भी बोझ अपने ऊपर नहीं रखना। जैसे ब्रह्मा बाप के पास कितनी जिम्मेवारियां थी, फिर भी डबल लाइट रहा, ऐसे फालो फादर। कोई भी बोझ हो, बाप को देकर हल्के हो जाना, बाप आये ही हैं बोझ लेने के लिए, तो बोझ देना आता है ना। तो बोझ देकर डबल लाइट बन उड़ते रहना। अच्छा। ओम् शान्ति।

18-01-2005

सेकण्ड में देहभान से मुक्त हो जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो और मास्टर मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता बनो

आज बापदादा चारों ओर के लक्की और लवली बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा स्नेह में समाया हुआ है। यह परमात्म स्नेह अलौकिक स्नेह है। इस स्नेह ने ही बच्चों को बाप का बनाया है। स्नेह ने ही सहज विजयी बनाया है। आज अमृतवेले से चारों ओर के हर बच्चे ने अपने स्नेह की माला बाप को पहनाई क्योंकि हर बच्चा जानता है कि यह परमात्म स्नेह क्या से क्या बना देता है। स्नेह की अनुभूति अनेक परमात्म खजाने के मालिक बनाने वाली है और सर्व परमात्म खजानों की गोल्डन चाबी बाप ने सर्व बच्चों को दी है। जानते हो ना! वह गोल्डन चाबी क्या है? वह गोल्डन चाबी है –''मेरा बाबा''। मेरा बाबा कहा और सर्व खजानों के अधिकारी बन गये। सर्व प्राप्तियों के अधिकार से सम्पन्न बन गये, सर्व शक्तियों से समर्थ बन गये, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें बन गये। ऐसे सम्पन्न आत्माओं के दिल से क्या गीत निकलता? अप्राप्त नहीं कोई वस्तु हम ब्राह्मणों के खजाने में।

आज के दिन को स्मृति दिवस कहते हो, आज सभी बच्चों को विशेष आदि देव ब्रह्मा बाप ज्यादा स्मृति में आ रहा है। ब्रह्मा बाप आप ब्राह्मण बच्चों को देख हर्षित होते हैं, क्यों? हर ब्राह्मण बच्चा कोटों में कोई भाग्यवान बच्चा है। अपने भाग्य को जानते हो ना! बापदादा हर बच्चे के मस्तक में चमकता हुआ भाग्य का सितारा देख हर्षित होते हैं। आज का स्मृति दिवस विशेष बापदादा ने विश्व सेवा की जिम्मेवारी का ताज बच्चों को

अर्पण किया। तो यह स्मृति दिवस आप बच्चों के राज्य तिलक का दिवस है। बच्चों के विशेष साकार स्वरूप में विल पावर्स विल करने का दिन है। सन शोज़ फ़ादर इस कहावत को साकार करने का दिवस है। बापदादा बच्चों के निमित्त बन नि:स्वार्थ विश्व सेवा को देख खुश होते हैं। बापदादा करावनहार हो, करनहार बच्चों के हर कदम को देख खुश होते हैं क्योंकि सेवा की सफलता का विशेष आधार ही है – **करावनहार बाप मुझ करनहार आत्मा द्वारा करा रहा है।** मैं आत्मा निमित्त हूँ क्योंकि निमित्त भाव से निर्मान स्थिति स्वत: हो जाती है। मैं पन जो देहभान में लाता है वह स्वत: ही निर्मान भाव से समाप्त हो जाता है। इस ब्राह्मण जीवन में सबसे ज्यादा विघ्न रूप बनता है तो देहभान का मैं-पन। करावनहार करा रहा है, मैं निमित्त करनहार बन कर रहा हूँ, तो सहज देह-अभिमान मुक्त बन जाते हैं और जीवनमुक्ति का मज़ा अनुभव करते हैं। भविष्य में जीवनमुक्ति तो प्राप्त होनी है लेकिन अब संगमयुग पर जीवनमुक्ति का अलौकिक आनंद और ही अलौकिक है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - कर्म करते कर्म के बंधन से न्यारे। जीवन में होते कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे। इतने बड़े परिवार की जिम्मेवारी, जीवन की जिम्मेवारी, योगी बनाने की जिम्मेवारी, फरिश्ता सो देवता बनाने की जिम्मेवारी होते हुए भी बेफिकर बादशाह। इसी को ही जीवनमुक्त स्थिति कहा जाता है। इसीलिए भक्ति मार्ग में भी ब्रह्मा का आसन कमल पुष्प दिखाते हैं। कमल आसनधारी दिखाते हैं। तो आप सभी बच्चों को भी संगम पर ही जीवनमुक्ति का अनुभव करना ही है। बापदादा से मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा इस समय ही प्राप्त होता है। इस समय ही मास्टर मुक्ति जीवनमुक्ति दाता बनना है। बने हैं और बनना है। **मुक्ति जीवनमुक्ति के मास्टर दाता बनने की विधि है - सेकण्ड में देह-भान मुक्त बन जायें।** इस अभ्यास की अभी आवश्यकता है। मन के ऊपर ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर हो, जैसे यह स्थूल कर्मेन्द्रियां हाथ हैं,

पांव हैं, उसको जब चाहो जैसे चाहो वैसे कर सकते हो, टाइम लगता है क्या! अभी सोचो हाथ को ऊपर करना है, टाइम लगेगा? कर सकते हो ना! अभी बापदादा कहे हाथ ऊपर करो, तो कर लेंगे ना! करो नहीं, कर सकते हो। ऐसे मन के ऊपर इतना कन्ट्रोल हो, जहाँ एकाग्र करने चाहो, वहाँ एकाग्र हो जाए। मन चाहे हाथ, पांव से सूक्ष्म है लेकिन है तो आपका ना! मेरा मन कहते हो ना, तेरा मन तो नहीं कहते हो ना! तो जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियां कन्ट्रोल में रहती हैं, ऐसे ही मन-बुद्धि-संस्कार कन्ट्रोल में हों तब कहेंगे नम्बरवन विजयी। साइन्स वाले तो राकेट द्वारा वा अपने साधनों द्वारा इसी लोक तक पहुंचते हैं, ज्यादा में ज्यादा ग्रह तक पहुंचते हैं। लेकिन आप ब्राह्मण आत्मायें तीनों लोक तक पहुंच सकते हो। सेकण्ड में सूक्ष्म लोक, निराकारी लोक और स्थूल में मधुबन तक तो पहुंच सकते हो ना! अगर मन को आर्डर करो मधुबन में पहुंचना है तो सेकण्ड में पहुंच सकते हो? तन से नहीं, मन से। आर्डर करो सूक्ष्मवतन जाना है, निराकारी वतन में जाना है तो तीनों लोकों में जब चाहे मन को पहुंचा सकते हो? है प्रैक्टिस? अभी इस अभ्यास की आवश्यकता ज्यादा है। बापदादा ने देखा है अभ्यास तो करते हो लेकिन जब चाहे, जितना समय चाहे एकाग्र हो जाए, अचल हो जाए, हलचल में नहीं आये, इसके ऊपर और अटेन्शन। जो गायन है मन जीत जगत जीत, अभी कभी-कभी मन धोखा भी दे देता है।

तो बापदादा आज के समर्थ दिवस पर यही समर्थी विशेष अटेन्शन में दे रहे हैं। हे स्वराज्य अधिकारी बच्चे, अभी इस विशेष अभ्यास को चलते-फिरते चेक करो क्योंकि समय प्रमाण अभी अचानक के खेल बहुत देखेंगे। इसके लिए एकाग्रता की शक्ति आवश्यक है। एकाग्रता की शक्ति से दृढ़ता की शक्ति भी सहज आ जाती है और दृढ़ता सफलता स्वत: प्राप्त कराती है। तो विशेष समर्थ दिवस पर इस समर्थी का अभ्यास विशेष

अटेन्शन में रखो। इसीलिए भक्ति मार्ग में भी कहते हैं मन के हारे हार, मन के जीते जीत। तो जब मेरा मन कहते हो, तो मेरे के मालिक बन शक्तियों की लगाम से विजय प्राप्त करो। इस नये वर्ष में इस होमवर्क पर विशेष अटेन्शन! इसी को ही कहा जाता है योगी तो हो लेकिन अभी प्रयोगी बनो।

बाकी आज के दिन की स्नेह की रूहरिहान, स्नेह के उल्हनें और समान बनने के उमंग-उत्साह तीनों प्रकार की रूहरिहान बापदादा के पास पहुंची है। चारों ओर के बच्चों की स्नेह भरी यादें, स्नेह भरा प्यार बापदादा के पास पहुंचा। पत्र भी पहुंचे तो रूहरिहान भी पहुंची, सन्देश भी पहुंचे, बापदादा ने बच्चों का स्नेह स्वीकार किया। दिल से रिटर्न में यादप्यार भी दिया। दिल की दुआयें भी दी। एक-एक का नाम तो नहीं ले सकते हैं ना। बहुत हैं। लेकिन कोने-कोने, गांव-गांव, शहर-शहर सब तरफ के बच्चों का, बांधेलियों का, विलाप करने वालों का सबका यादप्यार पहुंचा, अब बापदादा यही कहते – **स्नेह के रिटर्न में अब अपने आपको टर्न करो, परिवर्तन करो। अब स्टेज पर अपना सम्पन्न स्वरूप प्रत्यक्ष करो।** आपकी सम्पन्नता से दु:ख और अशान्ति की समाप्ति होनी है। अभी अपने भाई-बहिनों को ज्यादा दु:ख देखने नहीं दो। इस दु:ख, अशान्ति से मुक्ति दिलाओ। बहुत भयभीत हैं। क्या करें, क्या होगा..., इस अंधकार में भटक रहे हैं। अब आत्माओं को रोशनी का रास्ता दिखाओ। उमंग आता है? रहम आता है? अभी बेहद को देखो। बेहद में दृष्टि डालो। अच्छा। होमवर्क तो याद रहेगा ना! भूल नहीं जाना। प्राइज़ देंगे। जो एक मास में मन को बिल्कुल कन्ट्रोलिंग पावर से पूरा मास जहाँ चाहे, जब चाहे वहाँ एकाग्र कर सके, इस चार्ट की रिजल्ट में इनाम देंगे। ठीक है? कौन इनाम लेंगे? पाण्डव, पाण्डव पहले। मुबारक हो पाण्डवों को और शक्तियां? ए वन। पाण्डव नम्बरवन तो शक्तियां ए वन। शक्तियां ए वन नहीं होंगी तो

पाण्डव ए वन। अभी थोड़ी रफ्तार तीव्र करो। आराम वाली नहीं। तीव्र गति से ही आत्माओं का दु:ख दर्द समाप्त होगा। रहम की छत्रछाया आत्माओं के ऊपर डालो। अच्छा।

सेवा का टर्न – तामिलनाडु, ईस्टर्न और नेपाल

जिनका टर्न है वह सब उठो। बहुत बड़ा ग्रुप है (5000 हैं) 5 हजार सेवा का गोल्डन चांस लेने वाले। अच्छी चतुराई की है। 15 दिन सेवा करेंगे और 21 जन्म पुण्य का खाता जमा करेंगे। होशियार हो गये ना! अच्छा है। ब्रह्मा बाप के प्रत्यक्षता की भूमि तो कलकत्ता ही है ना! तो कलकत्ता वाले हाथ उठाओ। अच्छा - कलकत्ता वालों की विशेष जिम्मेवारी है, बतायें। अच्छा - ब्रह्मा बाप के प्रत्यक्ष होने की भूमि कलकत्ता है, तो बापदादा के प्रत्यक्ष होने की भूमि कौन सी होगी? कलकत्ता होगी? क्या करेंगे? बड़ा प्रोग्राम तो कर लिया। अभी क्या करेंगे? कोई कमाल करके दिखाओ। जहाँ से आदि हुई, वहाँ समाप्ति भी हो। सभी कलकत्ता की भूमि को प्रणाम करें, वाह! कलकत्ता निवासी वाह! ऐसा कोई कमाल का प्रोग्राम बनाओ। नया कुछ बनाओ। मेगा प्रोग्राम अभी बहुत हो गये। अभी कोई नया प्रोग्राम बनाओ। अच्छा है, बापदादा बच्चों को पुण्य का खाता जमा करने की विधि देख करके खुश होते हैं। यह भी गोल्डन चांस है। अच्छा है। नेपाल और तामिलनाडु भी है, देखो कलकत्ता में जब प्रवेशता हुई तो नेपाल का कनेक्शन तो पहले ही था। इसलिए नेपाल को भी कमाल करनी पड़ेगी। नेपाल वाले उठो। नेपाल वालों को राज्य अधिकारी, राजवंशी आत्माओं का कल्याण ज्यादा करना है। कोई पुराने राज वंशावली से मधुबन तक आये हैं? अभी उन्हों को और ज्यादा नजदीक लाओ। कनेक्शन तो अच्छा है लेकिन अभी रिलेशन में लाओ। अच्छा है। नेपाल भी सेवा तो अच्छी कर रहे हैं। अच्छा। नेपाल वालों को मुबारक है और सेवा

बढ़ायेंगे। राज वंशावली को मधुबन तक लायेंगे। अच्छा। तामिलनाडु वाले उठो – बहुत पीछे बैठे हैं। हाथ हिलाओ। तामिलनाडु क्या करेगा? सेवा का विस्तार तो अच्छा किया है। रोजी बच्ची को याद तो करते हैं ना! फाउण्डेशन अच्छा डाला है। अभी उसको आप सभी निमित्त बन और बढ़ा रहे हैं। बढ़ा रहे हो ना! क्या नहीं कर सकते हो। जो चाहो शुभ संकल्प करो, सब कर सकते हो। हिम्मत आपकी और मदद बाप की। हिम्मत वाले तो हैं। हिम्मत अच्छी है, मदद भी बाप की है और हिम्मत करेंगे तो और मदद मिलती रहेगी। बाकी रोजी बच्ची के बाद अच्छा सम्भाल लिया और आगे भी आपस में मिलकर रोजी बच्ची को रिटर्न देंगे। अच्छा फाउण्डेशन डाला है। सब खुश हैं? जो सदा खुश हैं, वह हाथ उठाओ। खुश नहीं, सदा खुश? अच्छा है। खुश रहना और खुशी बांटना। अच्छा। आसाम है, उड़ीसा है, बिहार भी है, बंगला देश भी है, तो इतने सब इकट्ठे हो। उड़ीसा वाले भी अच्छी सेवा कर रहे हैं, बिहार वाले भी कर रहे हैं तो इस ज़ोन को नम्बरवन जाना है। कितने हैण्ड्स होंगे। 6-7 स्थान के हैण्ड्स, तो कितने हैण्ड्स हो गये। तो बापदादा राइट हैण्ड्स को देख करके खुश हैं। जितना बड़ा ज़ोन है, इतनी बड़ी कमाल करके दिखाना। आप तो 6-7 जगह पर आवाज फैला दो तो आवाज आपेही फैल जायेगा। बंगाल से भी आवाज हो, उड़ीसा से भी आवाज हो, नेपाल से भी आवाज हो, आसाम से भी आवाज हो, तो सब कोने से आवाज आये, तो कितना बड़ा आवाज हो जायेगा। कमाल करो कुछ। सबसे बड़े ते बड़ा ज़ोन, इसमें इतने स्टेट इकट्ठे हैं। महाराष्ट्र, गुजरात में भी हैं, तीनों ही स्थान बड़े हैं, अभी कमाल करके दिखाओ।

एज्युकेशन विंग

एज्युकेशन वालों ने नये प्लैन कोई बनाये हैं? नया कुछ बनाया है?

अच्छा है। एज्युकेशन तो विशेष है। एज्युकेशन में अगर आपने कोई भी स्थान में कोई भी एक क्लास का क्लास परिवर्तन करके दिखाया तो गवर्मेन्ट को कितनी खुशी होगी। जैसे गांव वाले कोई गांव को अपनाते हैं ना, वैसे आप किसी भी युनिवर्सिटी में या कालेज में, स्कूल में क्लास, पूरे क्लास को चेंज करके दिखाओ, मैजारिटी। चलो कुछ थोड़े रह जाएं, वह बात दूसरी है लेकिन कोई क्लास प्रैक्टिकल में परिवर्तन करके दिखाओ तो गवर्मेन्ट तक आवाज जायेगा। बहुत अच्छा किया है, मुबारक हो। (प्लैन सुनाया)

बहुत अच्छा इनएडवांस मुबारक। अच्छा है देखो (साउथ गुजरात के वाइसचांसलर से) यह एक निमित्त बना, अनेक आत्माओं के प्रति तो आपको कितनी दुआयें मिलेंगी। जो स्टूडेन्ट परिवर्तन होंगे उसकी दुआयें आपको शेयर में मिलेंगी। तो आप शेयर होल्डर हो गये। परमात्मा के शेयर होल्डर, वह शेयर नहीं, नीचे ऊपर होने वाले नहीं। अच्छा निमित्त बना है। अभी कमाल करके दिखाओ। कोई क्लास का क्लास मैजारिटी परिवर्तन करके दिखाओ। अच्छा है, आपस में राय करते आगे बढ़ते चलो। जो भी कोई सैलवेशन चाहिए, आपस में मीटिंग करके कर लो। होगा, करना ही है, बढ़ना ही है। अच्छा।

डबल विदेशी

बापदादा कहते हैं डबल विदेशी अर्थात् डबल पुरुषार्थ में आगे बढ़ने वाले। जैसे डबल विदेशी टाइटल है ना, निशानी है ना आपकी। ऐसे ही डबल विदेशी नम्बरवन लेने में भी डबल रफ्तार से आगे बढ़ने वाले। अच्छा है, हर ग्रुप में बापदादा डबल विदेशियों को देख करके खुश होते हैं क्योंकि भारतवासी आप सबको देख करके खुश होते हैं। बापदादा भी विश्व कल्याणकारी टाइटल को देख करके खुश होते हैं। अभी डबल विदेशी

क्या प्लैन बना रहे हो? बापदादा को खुशी हुई, अफ्रीका वाले तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं। तो आप सभी भी आस-पास जो आपके भाई बहन रह गये हैं, उन्हों को सन्देश देने का उमंग-उत्साह रखो। उल्हना नहीं रह जाए। वृद्धि हो रही है और होती भी रहेगी लेकिन अभी उल्हना पूरा करना है। यह विशेषता तो डबल विदेशियों की सुनाते ही हैं कि भोले बाप को राज़ी करने का जो साधन है – सच्ची दिल पर साहेब राजी, वह डबल विदेशियों की विशेषता है। बाप को राज़ी करना बहुत होशियारी से आता है। सच्ची दिल बाप को क्यों प्रिय लगती है? क्योंकि बाप को कहते ही हैं सत्य। गॉड इज ट्रुथ कहते हैं ना! तो बापदादा को साफ दिल, सच्ची दिल वाले बहुत प्रिय हैं। ऐसे है ना! साफ दिल है, सच्ची दिल है। सत्यता ही ब्राह्मण जीवन की महानता है। इसलिए डबल विदेशियों को बापदादा सदा याद करते हैं। भिन्न-भिन्न देश में आत्माओं को सन्देश देने के निमित्त बन गये। देखो कितने देशों के आते हैं? तो इन सभी देशों का कल्याण तो हुआ है ना! तो बापदादा, यहाँ तो आप निमित्त आये हुए हैं लेकिन चारों ओर के डबल विदेशी बच्चों को, निमित्त बने हुए बच्चों को मुबारक दे रहे हैं, बधाई दे रहे हैं, उड़ते रहो और उड़ाते रहो। उड़ती कला सर्व का भला हो ही जाना है। सभी रिफ्रेश हो रहे हैं? रिफ्रेश हुए? सदा अमर रहेगी या मधुबन में ही आधा छोड़कर जायेंगे? साथ रहेगी, सदा रहेगी? अमर भव का वरदान है ना! तो जो परिवर्तन किया है वह सदा बढ़ता रहेगा। अमर रहेगा। अच्छा। बापदादा खुश है और आप भी खुश हैं औरों को भी खुशी देना। अच्छा।

ज्ञान सरोवर को 10 साल हुआ है

अच्छा। अच्छा है, ज्ञान सरोवर ने एक विशेषता आरम्भ की, जबसे ज्ञान सरोवर शुरू हुआ है तो वी.आई.पी., आई.पी. के विशेष विधि पूर्वक प्रोग्राम्स शुरू हुए हैं। हर वर्ग के प्रोग्राम्स एक दो के पीछे चलते रहते हैं।

और देखा गया है कि ज्ञान सरोवर में आने वाली आत्माओं की स्थूल सेवा और अलौकिक सेवा बहुत अच्छी रुचि से करते हैं। इसलिए ज्ञान सरोवर वालों को बापदादा विशेष मुबारक देते हैं कि सेवा की रिजल्ट से सब खुश होकर जाते हैं और खुशी खुशी से और साथियों को साथ ले आते हैं। चारों ओर आवाज फैलाने के निमित्त ज्ञान सरोवर बना है। तो मुबारक है और सदा मुबारक लेते रहना। अच्छा।

अभी एक सेकण्ड में मन को एकाग्र कर सकते हो? सब एक सेकण्ड में बिन्दु रूप में स्थित हो जाओ। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा – ऐसा अभ्यास चलते फिरते करते रहो।

चारों ओर के स्नेही, लवलीन आत्माओं को, सदा रहमदिल बन हर आत्मा को दु:ख अशान्ति से मुक्त करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा अपने मन, बुद्धि, संस्कार को कन्ट्रोलिंग पावर द्वारा कन्ट्रोल में रखने वाले महावीर आत्माओं को, सदा संगमयुग के जीवनमुक्त स्थिति को अनुभव करने वाले बाप समान आत्माओं को बापदादा का पदमगुणा यादप्यार और नमस्ते।

मोहिनी बहन से

यह भी अपने शरीर को चलाना सीख गई है। चलता रहेगा।

शान्तामणि दादी से

यह भी बहुत अच्छा चला रही है।

सभी दादियों को देखते हुए

आप आदि रत्नों की शोभा है। हाज़िर होना ही शोभा है। अगर कोई आप में से हाज़िर नहीं होता तो खाली-खाली लगता है। आदि रत्नों की

यह विशेषता है। जहाँ भी जायेंगे, सबको खुशी हो जाती है। बोलो, नहीं बोलो सिर्फ हाजिर होना ही खुशी है। तबियत को तो चलाना आ गया है। आ गया है ना? सभी की तबियतें तो थोड़ा बहुत खिटखिट करती हैं। फिर भी चलाना आ गया है।

दादी जी से

बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो। बापदादा देखते हैं शरीर का नॉलेज भी आ गया है। कैसा भी शरीर हो लेकिन चलाना आ गया है, यह बापदादा देखते खुश होते हैं। आदि रत्न कम नहीं हैं। आदि रत्न हैं ना तो एक एक आदि रत्न की विशेषता है।

निर्मलशान्ता दादी से

बहुत ही अच्छा पार्ट बजा रही है। दर्द तो नहीं पड़ता ना। (बाबा को मिलकर दर्द होगा तो भी चला जायेगा) आपका नाम सुनकर सभी खुश हो जाते हैं, परदादी। तो परदादी का नाम सुनके खुश हो जाते हैं। बहुत अच्छा। अच्छा ठीक है ना, तबियत अच्छी है। बहुत अच्छा। अभी तो ठण्डी को जीत लिया। विजयी बन गई। बहुत अच्छा। ओम् शान्ति।

''संकल्प, समय और बोल के बचत की स्कीम द्वारा सफलता की सेरीमनी मनाओ, निराश आत्माओं में आशा के दीप जगाओ''

आज स्नेह का दिन है। चारों ओर के सभी बच्चे स्नेह के सागर में समाये हुए हैं। यह स्नेह सहजयोगी बनाने वाला है। स्नेह सर्व अन्य आकर्षण से परे करने वाला है। स्नेह का वरदान आप सभी बच्चों को जन्म का वरदान है। स्नेह में परिवर्तन कराने की शक्ति है। तो आज के दिन दो प्रकार के बच्चे चारों ओर देखे। लवली बच्चे तो सभी हैं लेकिन एक हैं लवली बच्चे दूसरे हैं लवलीन बच्चे। लवलीन बच्चे हर संकल्प, हर श्वांस में, हर बोल, हर कर्म में स्वतः ही बाप समान सहज रहते हैं, क्यों ? बच्चों को बाप ने समर्थ भव का वरदान दिया है। आज के दिन को स्मृति सो समर्थ दिवस कहते हो, क्यों ? बाप ने आज के दिन स्वयं को बैकबोन बनाया और लवलीन बच्चों को विश्व की स्टेज पर प्रत्यक्ष किया। व्यक्त में प्रत्यक्ष बच्चों को किया और स्वयं अव्यक्त रूप में साथी बने।

आज का यह स्मृति सो समर्थ दिवस बच्चों को बालक सो मालिक बनाए सर्व शक्तिवान बाप को मास्टर सर्वशक्तिवान बन प्रत्यक्ष करने का कार्य दिया और बाप देखके खुश है कि यथायोग तथा शक्ति सभी बच्चे बाप को प्रत्यक्ष करना अर्थात् विश्व कल्याण कर विश्व परिवर्तन करने के कार्य में लगे हुए हैं। बाप द्वारा सर्व शक्तियों का वर्सा जो मिला हुआ है वह स्व प्रति और विश्व की आत्माओं के प्रति कार्य में लगा रहे हैं। बापदादा भी ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान बाप समान उमंग-उत्साह में रहने वाले आलराउण्ड सेवाधारी, निःस्वार्थ सेवाधारी, बेहद के सेवाधारी बच्चों को पदम-पदमगुणा दिल से मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो। देश-विदेश, देश के बच्चे भी कम नहीं और विदेश के बच्चे भी कम नहीं हैं। बापदादा ऐसे बच्चों की दिल ही दिल में महिमा भी करते और गीत भी गाते वाह! बच्चे वाह! आप सभी वाह! वाह! बच्चे हो ना! हाथ हिला रहे हैं, बहुत अच्छा। बापदादा को फखुर है, बच्चों के ऊपर फखुर है - सारे कल्प में ऐसा कोई बाप नहीं है जिसका हर बच्चा स्वराज्य अधिकारी राजा हो। आप सभी तो स्वराज्य अधिकारी राजा हो ना ? प्रजा तो नहीं ना! कई बच्चे जब रूहरिहान करते हैं तो कहते हैं हम भविष्य में क्या बनेंगे, उसका चित्र हमको दिखाओ। बापदादा क्या कहते हैं ? पुराने बच्चे तो कहते हैं जगत अम्बा माँ चित्र देती थी हर एक को। तो हमें भी चित्र दो। बापदादा कहते हैं हर एक बच्चे को बाप ने विचित्र दर्पण दिया है, उस दर्पण में अपने भविष्य का चित्र देख सकते हो कि मैं कौन! जानते हो, वह दर्पण आपके पास है ? जानते हो कौन सा दर्पण ? पहली लाइन वाले तो जानते होंगे ना! जानते हैं ? वह दर्पण है वर्तमान समय की स्वराज्य स्थिति का दर्पण। वर्तमान समय जितना स्वराज्य अधिकारी हैं उस अनुसार विश्व के राज्य अधिकारी बनेंगे। अब अपने आपको दर्पण में देखो स्वराज्य अधिकारी सदा हैं ? वा कभी अधीन, कभी अधिकारी ? अगर कभी अधीन, कभी अधिकारी बनते हैं, कभी आंख धोखा देती, कभी मन धोखा देता, कभी मुख धोखा देता, कभी कान भी धोखा दे देता है। व्यर्थ बातें सुनने का शौक हो जाता है। अगर कोई भी कर्मेन्द्रिय धोखा देती है, परवश बना देती है, इससे सिद्ध है कि बाप द्वारा जो सर्व शक्तियाँ वरदान में मिली हैं, वा वर्से में मिली हैं वह कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर नहीं है। तो सोचो जो स्व के ऊपर रूल नहीं कर पाते वह विश्व पर रूल कैसे करेगा ? अपने वर्तमान स्थिति के स्वराज्य अधिकारी के दर्पण में चेक करो। दर्पण तो सभी को मिला है ना ? दर्पण मिला है तो हाथ उठाओ। दर्पण में कोई दाग तो नहीं हो गया है ? स्पष्ट है दर्पण ?

बापदादा ने हर एक बच्चे को स्वराज्य अधिकारी का स्वमान दिया है। मास्टर सर्वशक्तिवान का टाइटिल सभी बच्चों को बाप द्वारा मिला हुआ है। मास्टर शक्तिवान नहीं, सर्वशक्तिवान। कई बच्चे रूहरिहान में यह भी कहते - बाबा आपने तो सर्वशक्तियां दी लेकिन यह शक्तियां कभी-कभी समय पर काम नहीं करती। रिपोर्ट करते हैं - समय पर इमर्ज नहीं होती, समय बीत जाता है पीछे इमर्ज होती हैं।

कारण क्या होता? जिस समय जिस शक्ति को आह्वान करते हो उस समय चेक करो कि मैं मालिक बनके सीट पर सेट हूँ? अगर कोई सीट पर सेट नहीं होता तो बिगर सीट वाले का कोई आर्डर नहीं मानता है। स्वराज्य अधिकारी हूँ, मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, बाप द्वारा वर्सा और वरदान का अधिकारी हूँ, इस सीट पर सेट होकर फिर आर्डर करो। क्या करूं, कैसे करूं, होता नहीं, सीट से नीचे बैठ, सीट से उतरकर आर्डर करते हो तो मानेगा कैसे! आजकल के जमाने में भी अगर कोई प्राइममिनिस्टर है, सीट पर है, और सीट से उतर गया, तो कोई मानेगा? तो चेक करो सीट पर सेट हूँ? अधिकारी होकर आर्डर करता हूँ? बाप ने हर एक बच्चे को अथॉरिटी दी है, परमात्म अथॉरिटी है, कोई आत्मा की अथॉरिटी नहीं मिली है, महात्मा की अथॉरिटी नहीं मिली है, परमात्म अथॉरिटी है तो अथॉरिटी और अधिकार इस स्थिति में स्थित होकर कोई भी शक्ति को आर्डर करो, वह जी हजूर, जी हजूर करेगी। सर्वशक्तियों के आगे यह माया, प्रकृति, संस्कार, स्वभाव सब दासी बन जायेंगे। आप मालिक का इन्तजार करेंगे, मालिक कोई आर्डर करो।

समर्थ दिवस है ना, तो बापदादा क्या-क्या समर्थियां हैं बच्चों में, वह रिवाइज करा रहा है। अण्डरलाइन करा रहा है। शक्तिहीन समय पर क्यों हो जाते? बापदादा ने देखा है, मैजारिटी बच्चों की लीकेज है, शक्तियां लीकेज होने के कारण कम हो जाती हैं और लीकेज विशेष दो बातों की है - वह दो बातें हैं - **संकल्प और समय वेस्ट जाता है।** खराब नहीं होता लेकिन व्यर्थ, समय पर बुरा कार्य नहीं करते हैं लेकिन जमा भी नहीं करते हैं। सिर्फ देखते हैं आज बुरा कुछ नहीं हुआ लेकिन अच्छा क्या जमा किया? गंवाया नहीं लेकिन कमाया? दुःख नहीं दिया लेकिन सुख कितनों को दिया? अशान्त किसको नहीं किया, शान्ति का वायब्रेशन कितना फैलाया? शान्तिदूत बनके शान्ति कितनों को दी - वायुमण्डल द्वारा या मुख द्वारा, वायब्रेशन द्वारा? क्योंकि जानते हो कि यही थोड़ा सा समय है पुरुषोत्तम कल्याणकारी जमा करने का समय है। अब नहीं तो कब नहीं, यह हर घड़ी याद रहे। हो जायेगा, कर लेंगे..... अब नहीं तो कब नहीं। ब्रह्मा बाप का यही तीव्रगति का पुरुषार्थ रहा तब नम्बरवन मंजिल पर पहुंचा। तो जो बाप ने समर्थियां दी हैं, आज समर्थ दिवस पर याद आई ना! बचत की स्कीम बनाओ। संकल्प की बचत, समय की बचत, वाणी की बचत, जो यथार्थ बोल नहीं हैं, अयथार्थ व्यर्थ बोल की बचत।

बापदादा सभी बच्चों का सदा अथॉरिटी की सीट पर सेट हुआ स्वराज्य अधिकारी राजा रूप देखने चाहता है। पसन्द है? यह रूप पसन्द है ना! कभी भी बापदादा किसी भी बच्चे को टी.वी. में देखो, तो इसी रूप में देखे। बापदादा की नेचरल टी.वी. है, स्विच नहीं दबाना पड़ता। एक ही समय पर चारों ओर का देख सकते हैं। हर एक बच्चे को, कोने-कोने वाले को देख सकते हैं। तो हो सकता है? कल से टी.वी. खोलें तो क्या दिखाई देंगे? फरिश्ते की ड्रेस में, फरिश्ते की ड्रेस है चमकीली ड्रेस, चमकीली लाइट की ड्रेस, यह शरीरभान के मिट्टी की ड्रेस नहीं पहनना। चमकीली ड्रेस हो, सफलता का सितारा हो, ऐसी मूर्ति हर एक की बापदादा देखने चाहते हैं। पसन्द है ना! मिट्टी की ड्रेस पहनेंगे तो मिट्टी के हो जायेंगे ना! जैसे बाप अशरीरी है, ब्रह्मा बाप चमकीली ड्रेस में है, फरिश्ता है। फालो फादर। स्थूल में देखो कोई आपके कपड़े में मिट्टी लग जाए, दाग हो जाए तो क्या करते हो? बदल लेते हो ना! ऐसे ही चेक करो कि सदा चमकीली फरिश्ते की ड्रेस है? जो बाप को फखुर है कि हर एक बच्चा राजा बच्चा है, उसी स्वरूप में रहो। राजा बनके रहो। यह माया ऐसे आपकी दासी बन जायेगी और विदाई लेने आयेगी, आधाकल्प के लिए विदाई लेने आयेगी, वार नहीं करेगी। बापदादा सदा कहते हैं - बाप के ऊपर बलिहार जाने वाले कभी हार नहीं खा सकते। अगर हार है तो बलिहार नहीं हैं।

अभी आप सभी की मीटिंग होने वाली है ना, डेट फिक्स होती है ना मीटिंग की। तो इस बारी सिर्फ सर्विस के प्लैन की मीटिंग बापदादा नहीं देखने चाहते, सर्विस के प्लैन बनाओ लेकिन मीटिंग में सफलता की सेरीमनी का प्लैन बनाओ। बहुत सेरीमनी कर ली अब सफलता की सेरीमनी की डेट फिक्स करो। चलो सोचते हैं कि सभी कैसे होंगे! बापदादा कहते हैं कम से कम 108 रत्न तो सफलतामूर्त की सेरीमनी मनायें। एक्जैम्पुल बनें। यह हो सकता है? बोलो। पहली लाइन वाले बोलो, हो सकता है? जवाब देने की

हिम्मत नहीं रखते। सोचते हैं पता नहीं करेंगे, नहीं करेंगे ? हिम्मत से सब कुछ हो सकता है। दादी बतावे। 108 सफलतामूर्त बन सकते हैं ? (हाँ जरूर बन सकते हैं, सफलता की सेरीमनी हो सकती है) देखो, दादी में हिम्मत है। आप सबकी तरफ से हिम्मत रख रही है। तो सहयोगी बनना। तो यह जो मीटिंग होगी ना, उसमें बापदादा रिपोर्ट लेंगे। पाण्डव बताओ ना, क्यों चुप हैं ? चुप क्यों हैं ? यह हिम्मत क्यों नहीं रखते ? करके दिखायेंगे ? ऐसे ? अच्छा है, हिम्मत तो रख सकते हैं ? जो समझते हैं हम तो हिम्मत रख करके दिखायेंगे, वह हाथ उठाओ। करेंगे ? कोई संस्कार नहीं रहेगा ? कोई कमजोरी नहीं रहेगी ? अच्छा, मधुबन वाले भी हाथ उठा रहे हैं। वाह! मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा 108 तो फिर सहज हो जायेगा। इतनों ने हाथ उठाया तो 108 क्या बड़ी बात है। डबल फॉरेनर्स क्या करेंगे ? हाँ, दादी जानकी सुन रही है, उसको उमंग आ रहा है मैं बोलूं। फॉरेन की माला भी देखेंगे, ठीक है ? हाथ उठाओ, ठीक है ? अच्छा आज यह कितने बैठे हैं ? (200) इसमें से 108 तो तैयार हो जायेंगे! ठीक है ना! इसमें करना पहले मैं। इसमें दूसरे को नहीं देखना, पहले मैं। और मैं-मैं नहीं करना, यह मैं जरूर करना। और भी काम बापदादा देता है।

आज समर्थ दिवस है ना तो समर्थी है। बापदादा एक विचित्र दीवाली मनाने चाहते हैं। आपने तो दीवाली कई बार मनाई है लेकिन बापदादा विचित्र दीवाली मनाने चाहता है, सुनायें ? सुनायें ? सुनायें ? अच्छा। वर्तमान समय को तो देख ही रहे हो, दिन प्रतिदिन चारों ओर मनुष्य आत्माओं में निराशा बहुत बढ़ रही है। तो चाहे मन्सा सेवा करो, चाहे वाचा करो, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क की करो, लेकिन बापदादा निराश मनुष्यों के अन्दर आशा का दीप जगाने चाहते हैं। चारों ओर मनुष्य आत्माओं के मन में आशा के दीपक जग जायें। यह दीवाली आशा के दीपकों की बापदादा चाहते हैं। हो सकता है ? वायुमण्डल में कम से कम यह आशा का दीपक जग जाए तो अब विश्व परिवर्तन हुआ कि हुआ। गोल्डन सवेरा आया कि आया। यह निराशा खत्म हो जाए - कुछ होना नहीं है, कुछ होना नहीं है। आशा के दीप जग जाएं। कर सकते हैं ना, यह तो सहज है ना या मुश्किल है ? सहज है ? जो करेगा वह हाथ उठाओ। करेगा ? इतने सभी दीपक जगायेंगे तो दीपमाला तो हो जायेगी ना! वायब्रेशन इतना पावरफुल करो, चलो सामने पहुंच नहीं सकते हैं लेकिन लाइट हाउस, माइट हाउस बन दूर तक वायब्रेशन फैलाओ। जब साइन्स लाइट हाउस द्वारा दूर तक लाइट दे सकती है तो क्या आप वायब्रेशन नहीं फैला सकते! सिर्फ दृढ़ संकल्प करो - करना ही है। बिजी हो जाओ। मन को बिजी रखेंगे तो स्वयं को भी फायदा और आत्माओं को भी फायदा। चलते-फिरते यही वृत्ति में रखो कि विश्व का कल्याण करना ही है। यह वृत्ति वायुमण्डल फैलायेगी क्योंकि समय अचानक होने वाला है। ऐसा न हो कि आपके भाई बहिनें उल्हना देवें कि आपने हमें बताया क्यों नहीं! कई बच्चे सोचते हैं अन्त तक कर लेंगे लेकिन अन्त तक करेंगे तो भी आपको उल्हना देंगे। यही उल्हना देंगे हमको कुछ समय पहले बताते, कुछ तो बना लेते। इसलिए हर संकल्प में बापदादा की याद से लाइट लेते जाओ, लाइट हाउस होके लाइट देते जाओ। टाइम वेस्ट नहीं करो, बापदादा जब देखते हैं बहुत युद्ध करते हैं, तो बापदादा को अच्छा नहीं लगता। मास्टर सर्वशक्तिवान और युद्ध कर रहा है! तो राजा बनो, सफलतामूर्त बनो, निराशा को खत्म कर आशा के दीप जगाओ। अच्छा।

सभी तरफ के बच्चों के स्नेह के याद की मालायें तो बहुत पहुंच गई हैं। बापदादा याद भेजने वालों को सन्मुख देखते हुए याद का रेसपान्ड दिल की दुआयें, दिल का प्यार दे रहे हैं। अच्छा - अभी क्या करना है ?

सेवा का टर्न कर्नाटक का है, कर्नाटक वालों ने 5 मेगा प्रोग्राम किये हैं:– अच्छा, बहुत आये हैं। अच्छा मेगा प्रोग्राम किया, मुबारक हो। लेकिन हर एक मेगा प्रोग्राम से स्टूडेन्ट कितने बनें ? वह रिजल्ट निकाली है ? क्योंकि मेगा प्रोग्राम सन्देश देने के लिए तो अच्छा है, उल्हना नहीं मिलेगा। एक काम तो ठीक हो गया। लेकिन मेगा प्रोग्राम के बाद एड्रेस तो होती है ना! जिन भी आत्माओं की एड्रेस है उनको समय प्रति समय बुलाते रहो। सेवा करते रहो, अपने ही सेन्टर पर क्योंकि ज़ोन में तो नहीं हो सकता है,

वहाँ की वहाँ तो आ सकते हैं। उनमें से निकलेंगे। कर्नाटक की संख्या तो बहुत है। अच्छा है। सेवा की है तभी संख्या बढ़ी है लेकिन अब ऐसा गुलदस्ता बनाओ जो माइक और माइट बन सन्देश देने में साथी बन जाएं। ऐसे कोई ग्रुप तैयार करो। सभी मैजारिटी बड़े बड़े ज़ोन वालों ने मेगा प्रोग्राम किया है लेकिन यह समाचार नहीं आया है कि कौन से ऐसे माइक निकले जो सन्देश देने में मददगार बने हैं। क्योंकि विश्व की आत्मायें अभी भी बहुत रही हुई हैं। तो जितनी संख्या है, कर्नाटक की, हर एक स्थान पर कुछ तो ऐसी लिस्ट होनी चाहिए ना! होनी चाहिए ना! तो वह बापदादा के पास नाम आने चाहिए। रिजल्ट आनी चाहिए। मधुबन में लेकर नहीं आओ, पहले रिपोर्ट लिखकर दो कितने कितने निकले है, किस-किस प्रकार के हैं। चाहे फॉरेन में हों, चाहे देश में हो। अच्छा है। प्रोग्राम किये उसकी मुबारक है। अभी ऐसी लिस्ट भेजना, हर एक सेन्टर ऐसी लिस्ट भेजे। ठीक है ना! अच्छा है, अभी कर्नाटक में कुछ कमाल करके दिखाओ। हर सेन्टर निर्विघ्न स्वराज्य अधिकारी बन सकता है? हो सकता है? तीन मास दिये हैं, तो निर्विघ्न, सिर्फ तीन मास के लिए नहीं, सदाकाल के लिए विघ्न समाप्त। अगर संस्कार संकल्प में इमर्ज भी कब हो, वहाँ ही खत्म कर दो। कर्म में, बोल में नहीं आवे। तो ऐसी रिजल्ट दिखायेंगे - कर्नाटक नम्बरवन निर्विघ्न। करेंगे? करना पड़ेगा। एक दो के सहयोगी बनकर मदद देकर भी बनाना पड़ेगा क्योंकि दो चार भी अगर निर्विघ्न नहीं बनें तो सर्टीफिकेट कैसे मिलेगा। कर्नाटक निर्विघ्न का सर्टीफिकेट तो नहीं मिलेगा ना। इसीलिए सहयोगी बन, एक दो को हिम्मत दिलाके करना पड़ेगा। तैयार हैं? टीचर्स तैयार हैं? करना पड़ेगा? देखो टी.वी. में आ रहा है। सब कर्नाटक की टीचर्स हाथ उठा रही हैं। अच्छा देखेंगे। पहली मुबारक तो दे रहे हैं और आगे देखेंगे। ठीक है ना! पीछे आगे वाले करना पड़ेगा। अपने संस्कार को इमर्ज नहीं करने देना। संकल्प में ही परिवर्तन कर देना। अच्छा है। संख्या जितनी है उतना बहुत कुछ कर सकते हैं। अच्छा है गोल्डन चांस लिया है सेवा का, तो थोड़े दिनों में बहुत अपना पुण्य जमा किया है। यज्ञ सेवा अर्थात् पुण्य का खाता जमा करना। तो अच्छे हिम्मत रख करके आये हैं और आगे भी हिम्मत रखते आगे बढ़ते रहेंगे।

मेडिकल विंग:– कोई नया प्लैन बनाया? नया प्लैन कोई बनाया? (स्वास्थ्य में मूल्यों को कैसे बढ़ायें उसके बारे में सारा वर्ष प्रोग्राम करेंगे) अभी प्लैन बनाया है, अभी प्रैक्टिकल करना है। इससे भी सन्देश पहुंचता है ना! अच्छा हिम्मत वाले हो ना! जो भी आये हैं सिर्फ मीटिंग नहीं की, प्रैक्टिकल करना ही है। और आप लोगों का तो डबल फायदा है। डबल दुआयें मिलती हैं। तन ठीक होता है उसकी भी दुआयें, और मन खुश होता है तो उसकी भी दुआयें। सभी में उमंग है ना! बहुत अच्छा। अच्छा है। मेडिकल में वह हार्ट का भी अच्छा चल रहा है। अब बाम्बे के हॉस्पिटल की भी रिपोर्ट अच्छी है। ऑटोमेटिक वी.आई.पी. आते रहते हैं क्योंकि पहले समझते थे ब्रह्माकुमारियां सोशल वर्क नहीं करती हैं, अभी समझते हैं कि ब्रह्माकुमारियां जो काम करती हैं उसकी रिजल्ट बहुत अच्छी निकलती है। जब से ग्लोबल हॉस्पिटल खुली है आबू में, तब से यह वायुमण्डल में फर्क आया है। आबू वाले भी बदल रहे हैं। तो अच्छा है, आपकी डिपार्टमेंट चाहे कोई स्थूल काम भी करते हो, दवाई देने का, लेकिन यह सेवा फैल रही है कि ब्रह्माकुमारियां डबल काम कर सकती हैं। तो अच्छा कर रहे हैं, करते रहना। कोने कोने में अपने मेडिकल द्वारा भी सबके मन में खुशी, आशा का दीपक जगाते चलो। अच्छा है, मुबारक है।

एज्युकेशन विंग:– यह विधि अच्छी बनाई है, मिलना भी हो जाता है। कान्फ्रेन्स भी हो जाती है। अच्छा है, बापदादा ने समाचार सुना था, धीरे-धीरे एज्युकेशन में भी चांस मिलता रहता है और करते रहते हैं। अभी ऐसा अच्छा कोई प्रूफ लियो, जहाँ भी सेवा करते हो वहाँ का ऐसा एक्जैम्पुल स्पष्ट हो जो और देशों में भी उसकी रिजल्ट देख करके बढ़ाते रहें। एज्युकेशन और मेडीशन दोनों ही बहुत जरूरी होती हैं। बापदादा ने तो देखा है हर वर्ग अपने वर्ग में अच्छी सेवा कर रहे हैं। हिम्मत रख रहे हैं। सहयोगी भी बन रहे हैं लेकिन अभी और थोड़ा तीव्र करो क्योंकि समय समीप आ रहा है। हर वर्ग की अपनी अपनी विशेषता है। कम से कम अभी यह तो उल्हना उतरा कि हमारे वर्ग को आपने सन्देश ही नहीं दिया। अभी विस्तार बढ़ता जायेगा। तो अच्छा एज्युकेशन से गवर्मेन्ट का बोझ तो उतरेगा ना। यूथ ग्रुप अच्छा हो जाए

तो गवर्मेन्ट भी कहेगी कि हमारे साथी तो बने हैं। अच्छा कर रहे हैं, मुबारक हो और आगे करना। अच्छा।

जो पहले बारी आये हैं वह उठो : अच्छा है, हर टर्न में देखा है मैजारिटी नये होते हैं। तो सर्विस बढ़ाई है ना, इतनों को सन्देश दिया है। जैसे आप लोगों को सन्देश मिला ऐसे आप भी और दुगना, दुगना सन्देश दो। योग्य बनाओ। अच्छा है। हर सबजेक्ट में और उमंग-उत्साह से आगे बढ़ो। अच्छा है।

अच्छा - अभी लक्ष्य रखो, चलते-फिरते चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा सेवा के बिना भी नहीं रहना है और याद के बिना भी नहीं रहना है। याद और सेवा सदा ही साथ है ही। इतना अपने को बिजी रखो, याद में भी सेवा में भी। खाली रहते हैं तो माया को आने का चांस मिलता है। इतना बिजी रहो जो दूर से ही माया हिम्मत नहीं रखे आने की। फिर जो लक्ष्य रखा है बाप समान बनने का वह सहज हो जायेगा। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी, स्नेही स्वरूप रहेंगे। अच्छा।

आज के दिन तो स्नेह उड़ाके लाया है। स्नेह का प्लेन कितना फास्ट है? तो स्नेह में उड़के आये हैं और स्नेह में उड़ते रहना और उड़ाते रहना। बापदादा चारों ओर के बच्चों को देख रहे हैं, सभी के मन में इस समय 100 परसेन्ट उमंग-उत्साह है, करके दिखायेंगे। कोई बड़ी बात नहीं है, होना ही है। लेकिन इस समय का उमंग-उत्साह और दृढ़ संकल्प सदा साथ रखना।

बापदादा के नयनों में समाये हुए नूरे रत्न बच्चे, बाप की सर्व प्रापर्टी के अधिकारी श्रेष्ठ आत्मायें बच्चे, सदा उमंग-उत्साह के पंखों से उड़ने वाले और उड़ाने वाले महावीर महावीरनियां बच्चे, एक बाप ही संसार है इस लगन से मगन रहने वाले लवलीन बच्चों को, लवलीन बनना अर्थात् बाप समान सहज बनना। तो लवली और लवलीन दोनों बच्चों को बहुत-बहुत पदम-पदमगुणा यादप्यार और नमस्ते।

अच्छा - फूलों का श्रृंगार करने वाले कौन हैं, आगे आओ।

दादी जी से:- आपकी हिम्मत देखकर बापदादा भी खुश है। शरीर का हिसाब शरीर खत्म कर रहा है। आप हिम्मत में उड़ रही हो। ठीक है। (दादियों से) आप लोग भी बहुत सभी को हिम्मत दिलाने के निमित्त हो। आपको देख करके सभी को यह उमंग आता है तो हम भी कर सकते हैं। तो अच्छा निमित्त बने हुए हो। (मोहिनी बहन से) निमित्त हो ना! (ईशू दादी से) साथ निभाने में नम्बरवन हैं। (मुन्नी बहन) जितना बाप से प्यार है ना उतना यज्ञ से भी बहुत प्यार है। अच्छा सम्भाल रही हो। भरपूर यज्ञ है, सदा भरपूर रहेगा। अच्छा। (निर्मलशान्ता दादी से, कलकत्ता वालों ने फूलों का बहुत अच्छा श्रंगार किया है) गद्दी की मालिक हो ना। अच्छी। शरीर की मालिक बनके चल रही हो। शरीर को चलाना, यह सीख गई हो। आपकी शक्ल सेवा कर रही है। अच्छा है। ग्रुप भी अच्छा है। सेवा का उमंग है, फ्राक दिल है। यज्ञ का श्रृंगार हो जाता है ना। और जो दिल से करता है ना, उसका वायब्रेशन फैलता है। फूलों से भी वायब्रेशन आता है। सबको उमंग उत्साह का वायब्रेशन आता है। तो अच्छा करते हैं और बापदादा ने देखा है हर वर्ष अच्छे से अच्छा करते हैं, उमंग से करते हैं, इसकी मुबारक हो। अच्छा याद से करते हो। रेसपान्ड दिया ना। याद भेजी थी ना। वैसे तो बहुतों ने याद भेजी है, जो भी मिलता है, कहता है हमारी याद देना। सन्देशी को देते रहते हैं हमारी याद देना। तो जिन्होंने याद भेजी, उन्हों को बापदादा नाम से पर्सनल याद का रेसपान्ड दे रहा है। अच्छे हैं और अच्छे रहेंगे और अच्छे ते अच्छा बनाते रहेंगे। जो सभी बैठे हैं सब याद दे रहे हैं और सबको याद मिल रही है। (अमेरिका से अंकल, आंटी ने भी याद भेजी है) आज के दिन तो एक-एक बच्चे की एक-एक शहर से यादप्यार मिली है। कोई भी ऐसा देश नहीं है जिन्होंने यादप्यार नहीं भेजी हो। अच्छा।

''अब स्वयं को मुक्त कर मास्टर मुक्तिदाता बन सबको मुक्ति दिलाने के निमित्त बनो''

आज स्नेह के सागर बापदादा चारों ओर के स्नेही बच्चों को देख रहे हैं। दो प्रकार के बच्चे देख-देख हर्षित हो रहे हैं। एक हैं लवलीन बच्चे और दूसरे हैं लवली बच्चे, दोनों के स्नेह की लहरें बाप के पास अमृतवेले से भी पहले से पहुँच रही हैं। हर एक बच्चे के दिल से ऑटोमेटिक गीत बज रहा है - ``मेरे बाबा''। बापदादा के दिल से भी यही गीत बजता -``मेरे बच्चे, लाडले बच्चे, बापदादा के भी सिरताज बच्चे''।

आज स्मृति दिवस के कारण सबके मन में स्नेह की लहर ज्यादा है। अनेक बच्चों की स्नेह के मोतियों की मालायें बापदादा के गले में पिरो रही हैं। बाप भी अपने स्नेही बांहों की माला बच्चों को पहना रहे हैं। बेहद के बापदादा की बेहद की बांहों में समा गये हैं। आज सब विशेष स्नेह के विमान में पहुंच गये हैं और दूर-दूर से भी मन के विमान में अव्यक्त रूप से, फरिश्तों के रूप से पहुंच गये हैं। सभी बच्चों को बापदादा आज स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस की पदमापदम याद दे रहे हैं। यह दिवस कितनी स्मृतियां दिलाता है और हर स्मृति सेकण्ड में समर्थ बना देती है। स्मृतियों की लिस्ट सेकण्ड में स्मृति में आ जाती है ना। स्मृति सामने आते समर्थी का नशा चढ़ जाता है। पहली-पहली स्मृति याद है ना! जब बाप के बने तो बाप ने क्या स्मृति दिलाई ? आप कल्प पहले वाली भाग्यवान आत्मा हो। याद करो इस पहली स्मृति से क्या परिवर्तन आ गया ? आत्म अभिमानी बनने से परमात्म बाप के स्नेह का नशा चढ़ गया। क्यों नशा चढ़ा ? दिल से पहला स्नेह का शब्द कौन सा निकला ? ``मेरा मीठा बाबा'' और इस एक गोल्डन शब्द निकलने से नशा क्या चढ़ा ? सारी परमात्म प्राप्तियां मेरा बाबा कहने से, जानने से, मानने से आपकी अपनी प्राप्तियां हो गई। अनुभव है ना! मेरा बाबा कहने से कितनी प्राप्तियां आपकी हो गई! जहाँ प्राप्तियां होती हैं वहाँ याद करनी नहीं पड़ती लेकिन स्वतः ही आती है, सहज ही आती है क्योंकि मेरी हो गई ना! बाप का खजाना मेरा खजाना हो गया, तो मेरापन याद किया नहीं जाता है, याद रहता ही है। मेरा भुलाना मुश्किल होता है, याद करना मुश्किल नहीं होता। जैसे अनुभव है मेरा शरीर, तो भूलता है ? भुलाना पड़ता है, क्यों ? मेरा है ना! तो जहाँ मेरापन आता है वहाँ सहज याद हो जाती है। तो स्मृति ने समर्थ आत्मा बना दिया। एक शब्द मेरा बाबा ने। भाग्य विधाता अखुट खजाने के दाता को मेरा बना लिया। ऐसी कमाल करने वाले बच्चे हो ना! परमात्म पालना के अधिकारी बन गये, जो परमात्म पालना सारे कल्प में एक बार मिलती है, आत्मायें और देव आत्माओं की पालना तो मिलती है लेकिन परमात्म पालना सिर्फ एक जन्म के लिए मिलती है।

तो आज के स्मृति सो समर्थी दिवस पर परमात्म पालना का नशा और खुशी सहज याद रही ना! क्योंकि आज का वायुमण्डल सहज याद का था। तो आज के दिन सहजयोगी रहे कि आज के दिन भी युद्ध करनी पड़ी याद के लिए ? क्योंकि आज का दिन स्नेह का दिन कहेंगे ना, तो स्नेह मेहनत को मिटा देता है। स्नेह सब बातें सहज कर देता है। तो सभी आज के दिन विशेष सहजयोगी रहे या मुश्किल आई ? जिसको आज के दिन मुश्किल आई हो वह हाथ उठाओ। किसको भी नहीं आई ? सब सहजयोगी रहे। अच्छा जो सहजयोगी रहे वह हाथ उठाओ। अच्छा - सहजयोगी रहे ? आज माया को छुट्टी दे दी थी। आज माया नहीं आई ? आज माया को विदाई दे दी ? अच्छा आज तो विदाई दे दी, उसकी मुबारक हो, अगर ऐसे ही स्नेह में समाये रहो तो माया को तो विदाई सदा के लिए हो जायेगी क्योंकि अभी 70 साल पूरे हो रहे हैं, तो बापदादा इस वर्ष को न्यारा वर्ष, सर्व का प्यारा वर्ष, मेहनत से मुक्त वर्ष, समस्या से मुक्त वर्ष मनाने चाहते हैं। आप सभी को पसन्द है ? पसन्द है ? मुक्त वर्ष मनायेंगे ? क्योंकि मुक्तिधाम में जाना है, अनेक दुःखी अशान्त आत्माओं को मुक्तिदाता बाप से साथी बन मुक्ति दिलाना है। तो मास्टर मुक्तिदाता जब स्वयं मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति वर्ष मनायेंगे ना! क्योंकि आप ब्राह्मण आत्मायें स्वयं मुक्त बन अनेकों को मुक्ति दिलाने के निमित्त हो। एक भाषा जो मुक्ति दिलाने के बजाए बंधन में बांधती है, समस्या के अधीन बनाती है, वह है ऐसा नहीं, वैसा। वैसा नहीं ऐसा। जब समस्या आती है तो यही कहते हैं बाबा ऐसा नहीं था, वैसा था ना।

ऐसा नहीं होता, ऐसा होता ना। यह है बहाने बाजी करने का खेल।

बापदादा ने सबका फाइल देखा, तो फाइल में क्या देखा ? मैजॉरिटी का फाइल प्रतिज्ञा करने के पेपर से फाइल भरा हुआ है। प्रतिज्ञा करने के टाइम बहुत दिल से करते हैं, सोचते भी हैं लेकिन अभी तक देखा कि फाइल बड़ा होता जाता है लेकिन फाइनल नहीं हुआ है। दृढ़ प्रतिज्ञा के लिए कहा हुआ है - जान चली जाए लेकिन प्रतिज्ञा न जाए। तो बापदादा ने आज सबके फाइल देखे। बहुत प्रतिज्ञायें अच्छी-अच्छी की है। मन से भी की है और लिख करके भी की है। तो इस वर्ष क्या करेंगे ? फाइल को बढ़ायेंगे या प्रतिज्ञा को फाइनल करेंगे ? क्या करेंगे ? पहली लाइन वाले बताओ, पाण्डव सुनाओ, टीचर्स सुनाओ। इस वर्ष जो बापदादा के पास फाइल बड़ा होता जाता है, उसको फाइनल करेंगे या इस वर्ष भी फाइल में कागज एड करेंगे ? क्या करेंगे ? बोलो पाण्डव ? फाइनल करेंगे ? जो समझते हैं - झुकना पड़े, बदलना पड़े, सहन करना भी पड़े, सुनना भी पड़े, लेकिन बदलना ही है, वह हाथ उठाओ। देखो टी.वी. में सबका फोटो निकालो। सभी का फोटो निकालना, दो तीन चार टी.वी. हैं, सब तरफ के फोटो निकालो। यह रिकार्ड रखना, बाप को यह फोटो निकाल के देना। कहाँ है टी.वी. वाले ? बापदादा भी फाइल का फायदा तो उठावे। मुबारक हो, मुबारक हो, अपने आपके लिए ही ताली बजाओ।

देखो जैसे एक तरफ साइन्स दूसरे तरफ भ्रष्टाचारी, तीसरे तरफ पापाचारी, सब अपने-अपने कार्य में और वृद्धि करते जा रहे हैं। बहुत नये-नये प्लैन बनाते जाते हैं। तो आप तो क्रियेटर के बच्चे हो, वर्ल्ड क्रियेटर के बच्चे हो तो आप इस वर्ष ऐसी नवीनता के साधन अपनाओ जो प्रतिज्ञा दृढ़ हो जाए क्योंकि सभी प्रत्यक्षता चाहते हैं। कितना खर्चा कर रहे हैं, जगह-जगह पर बड़े-बड़े प्रोग्राम कर रहे हैं। हर एक वर्ग मेहनत अच्छी कर रहे हैं लेकिन अभी इस वर्ष यह एडीशन करो कि जो भी सेवा करो, मानो मुख की सेवा करते हो, तो सिर्फ मुख की सेवा नहीं, मन्सा वाचा और स्नेह सहयोग रूपी कर्म एक ही समय में तीन सेवायें इक्ट्ठी हों। अलग-अलग नहीं हों। एक सेवा में देखा जाता है कि जो बापदादा रिजल्ट देखने चाहते हैं वह नहीं होती। जो आप भी चाहते हो, प्रत्यक्षता हो जाए, अभी तक यह रिजल्ट अच्छी है। पहले से बहुत अच्छी रिजल्ट है, सब अच्छा अच्छा, बहुत अच्छा कहके जाते हैं। लेकिन अच्छा बनना अर्थात् प्रत्यक्षता होना। तो अब एडीशन करो कि एक ही समय पर मन्सा-वाचा-कर्मणा में स्नेही सहयोगी बनना, हर एक साथी चाहे ब्राह्मण साथी हैं, चाहे बाहर वाले सेवा के निमित्त जो बनते हैं, वह साथी हों लेकिन सहयोग और स्नेह देना यह है कर्मणा सेवा में नम्बर लेना। यह भाषा नहीं कहना, यह ऐसा किया ना, तभी ऐसा करना पड़ा। स्नेह के बजाए थोड़ा-थोड़ा कहना पड़ा, बाबा शब्द नहीं बोलता। यह करना ही पड़ता है, कहना ही पड़ता है, देखना ही पड़ता है... यह नहीं। इतने वर्षो में देख लिया, बापदादा ने छुट्टी दे दी। ऐसा नहीं वैसा करते रहे, लेकिन अभी कब तक ? बापदादा से सभी रूहरिहान में मैजॉरिटी कहते हैं बाबा आखिर भी पर्दा कब खोलेंगे ? कब तक चलेगा ? तो बापदादा आपको कहते हैं कि यह पुरानी भाषा, पुरानी चाल, अलबेलेपन की, कड़ुवेपन की कब तक ? बापदादा का भी क्वेश्चन है कब तक ? आप उत्तर दो तो बापदादा भी उत्तर देगा कब तक विनाश होगा। क्योंकि बापदादा विनाश का पर्दा तो अभी भी खोल सकता है, इस सेकण्ड लेकिन पहले राज्य करने वाले तो तैयार हों। तो अब से तैयारी करेंगे तब समाप्ति समीप लायेंगे। किसी भी कमजोरी की बात में कारण नहीं बताओ, निवारण करो, यह कारण था ना। बापदादा सारे दिन में बच्चों का खेल तो देखते हैं ना, बच्चों से प्यार है ना, तो बार-बार खेल देखते रहते हैं। बापदादा की टी.वी. बहुत बड़ी है। एक समय पर वर्ल्ड दिखाई दे सकती है, चारों ओर के बच्चे दिखाई दे सकते हैं। जैसे अमेरिका हो, चाहे गुडगांव हो, सब दिखाई देते हैं। तो बापदादा खेल बहुत देखते हैं। टालने की भाषा बहुत अच्छी है, यह कारण था ना, बाबा मेरी गलती नहीं है, ऐसा किया ना। उसने तो किया लेकिन आपने समाधान किया ? कारण को कारण ही बनने दिया या कारण को निवारण में बदली किया ? तो सभी पूछते हैं ना कि बाबा आपकी क्या आशा है। तो बापदादा आशा सुना रहे हैं। बापदादा की एक ही आशा है निवारण दिखाई देवे, कारण खत्म हो जाए। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे। हो सकता है ? हो सकता है ? पहली लाइन - हो सकता है ? कांध तो हिलाओ। पीछे वाले हो सकता है ? हो सकता है ? अच्छा। तो कल अगर टी.वी. खोलेंगे, टी.वी में देखेगे जरूर ना। तो कल टी.वी. देखेंगे तो चाहे फारेन चाहे इन्डिया, चाहे छोटे गांव चाहे बहुत बड़ी स्टेट, कहाँ भी कारण दिखाई नहीं देगा ? पक्का ? इसमें हाँ नहीं कर रहे हैं ? होगा ? हाथ उठाओ। हाथ बहुत अच्छा

उठाते हो, बापदादा खुश हो जाता। कमाल है हाथ उठाने की। खुश करना तो आता है बच्चों को। क्योंकि बापदादा देखते हैं सोचो - जो आप कोटों में कोई, कोई में कोई निमित्त बने हो, अभी इन बच्चों के सिवाए और कौन करेगा ? आपको ही तो करना है ना! तो बापदादा की आप बच्चों में उम्मीदें हैं। और आयेंगे ना, वह तो आपकी अवस्था देख करके ही ठीक हो जायेंगे, उन्हों को मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। आप बन जाओ बस क्योंकि आप सभी ने जन्म लेते ही बाप से वायदा किया है - साथ रहेंगे, साथी बनेंगे और साथ चलेंगे और ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में आयेंगे। यह वायदा किया है ना ? जब साथ रहेंगे, साथ चलेंगे तो साथ में सेवा के साथी भी तो हो ना!

तो अभी क्या करेंगे ? हाथ तो बहुत अच्छा उठाया, बापदादा खुश हो गये लेकिन जब भी कोई बात आवे ना तो यह दिन, यह तारीख, यह टाइम याद करना तो हमने क्या हाथ उठाया था। मदद मिल जायेगी। बनना तो पड़ेगा आपको। अभी सिर्फ जल्दी बन जाओ। आप सोचते हो ना, हम ही कल्प पहले भी थे, अभी भी हैं और हर कल्प हमें ही बनना है, यह तो पक्का है ना कि दो साल बनेंगे तीसरे साल जायेंगे, ऐसे तो नहीं होगा। तो सदा याद रखो हम ही निमित्त हैं, हम ही कोटों में कोई, कोई में कोई हैं। कोटो में कोई तो आयेंगे लेकिन आप कोई में कोई हो।

तो आज स्नेह का दिन है, तो स्नेह में कुछ भी करना मुश्किल नहीं होता। इसलिए बापदादा आज ही सभी को याद दिला रहे हैं। शिवबाबा को, ब्रह्मा बाबा से कितना बच्चों का प्यार है, यह देख करके बहुत खुशी होती है। चारों ओर देखा चाहे सप्ताह का स्टूडेन्ट है, चाहे 70 साल वाला है। 70 साल वाला और 7 दिन वाला भी आज के दिन प्यार में समाया हुआ है। तो शिव बाप भी ब्रह्मा बाप से बच्चों का प्यार देख करके हर्षित होते हैं।

आज के दिन का और समाचार सुनायें। आज के दिन एडवान्स पार्टी भी बापदादा के पास इमर्ज होती है। तो एडवांस पार्टी भी आपको याद कर रही है कि कब बाप के साथ मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेंगे! आज सारी एडवांस पार्टी बापदादा को यही कह रही थी कि हमको तारीख बताओ। तो क्या जवाब दें ? बताओ क्या जवाब दें ? जवाब देने में कौन होशियार है ? बापदादा तो यही उत्तर देते हैं कि जल्द से जल्द हो ही जायेगा। लेकिन इसमें आप बच्चों का बाप को सहयोग चाहिए। सभी साथ चलेंगे ना! साथ चलने वाले हैं या रुक-रूक कर चलने वाले हैं ? साथ में चलने वाले हैं ना! पसन्द है ना साथ में चलना ? तो समान तो बनना पड़ेगा ना। अगर साथ में चलना है तो समान तो बनना ही पड़ेगा ना! कहावत क्या है ? हाथ में हाथ हो, साथ में साथ हो। तो हाथ में हाथ अर्थात् समान। तो बोलो दादियां बोलो, तैयारी हो जायेगी ? दादियां बोलो। दादियां हाथ उठाओ। दादायें हाथ उठाओ। आपको कहा जाता है ना बड़े दादा। तो बताओ दादियां, दादायें क्या तारीख है कोई ? (अभी नहीं तो कभी नहीं) अभी नहीं तो कभी नहीं का अर्थ क्या हुआ ? अभी तैयार है ना! जवाब तो अच्छा दिया। दादियां ? पूरा होना ही है। हर एक अपने को जिम्मेवार समझे। छोटे बड़े, इसमें छोटे नहीं होना है। 7 दिन का बच्चा भी जिम्मेवार है। क्यों साथ चलना है ना। अकेला बाप जाने चाहे तो चला जाए लेकिन बाप जा नहीं सकता। साथ चलना है। वायदा है बाप का भी और आप बच्चों का भी। वायदा तो निभाना है ना! निभाना है ना ? यह मधुबन वाले बैठते हैं ना!

मधुबन में जो भी चार्ज के हेडस हैं, चार्जेज तो बहुत हैं ना, शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, पाण्डव भवन सब जगह हैं। तो जो चार्ज वाले हैं उनके नामों की लिस्ट बापदादा को देना, उनसे हिसाब लेंगे। और जो सभी टीचर्स इन्चार्ज हैं, सेन्टर इन्चार्ज हैं या जोन इन्चार्ज है, उन्हों का एक दिन संगठन करेंगे, हिसाब-किताब तो पूछेंगे ना! क्योंकि बापदादा के पास बहुत दुःख और अशान्ति के आवाज आते हैं। परेशानी के आवाज आते हैं। आप लोगों के पास नहीं सुनने आते, आपके भी तो भक्त होंगे ना! तो भक्तों की पुकार आप इष्ट देवों को नहीं आती ? टीचर्स को भक्तों की आवाज सुनाई देती है ? अच्छा।

महाराष्ट्र ज़ोन, बम्बई और आंध्रप्रदेश के सेवाधारी:- अच्छा सभी चांस अच्छा ले लेते हैं। नाम ही महाराष्ट्र है। अच्छी संख्या आई है। तो महाराष्ट्र अर्थात् महान आत्माओं का राष्ट्र है। तो बापदादा देखते हैं कि महाराष्ट्र में बापदादा के महान बच्चे बहुत अच्छे-अच्छे हैं क्योंकि बापदादा की नज़र, महाराष्ट्र के बाम्बे और दिल्ली में ज्यादा है। बाम्बे नरदेसावर है और दिल्ली आवाज बुलन्द करने के निमित्त है और ड्रामानुसार महाराष्ट्र बाम्बे या आसपास और दिल्ली दोनों को साकार ब्रह्मा बाप और जगदम्बा की पालना मिली है। विशेष पालना मिली है। तो कोई भी कार्य होता है तो बापदादा महाराष्ट्र और दिल्ली को याद करते हैं। बाकी जो भी हैं वह तो साथी बन ही जाते हैं। दूसरे छोटे

ज़ोन नहीं हैं, दूसरे भी बड़े बड़े ज़ोन हैं लेकिन साकार पालना के लिए विशेष बापदादा दिल्ली और बाम्बे को याद करते हैं। छोटे ज़ोन भी कमाल कर सकते हैं, छोटे को हमेशा बापदादा कहता है बड़े तो बड़े हैं लेकिन छोटे समान बाप हैं। अभी महाराष्ट्र को कुछ महान कार्य करना पड़ेगा। अभी बहुत टाइम हो गया है कोई नये कार्य की इन्वेन्शन नहीं निकाली है। वर्गीकरण का कार्य भी अभी काफी टाइम चल चुका, कान्फ्रेन्सेज भी चल चुकी, यूथ यात्रायें भी चल गई। अभी कोई नई सेवा की विधि निकालो। सोचो। जिससे आवाज सहज फैल जाये। अभी तक जो भी किया है, सेवा के प्लैन बापदादा को पसन्द हैं और वृद्धि भी हुई है। लेकिन बहुत समय यह प्रोग्रामस चल चुके। अभी कोई नई इन्वेन्शन तैयार करो। कोई भी करे, छोटे करे तो इनएडवांस मुबारक हैं। अच्छा है महाराष्ट्र में भी वृद्धि अच्छी हो रही है। अभी महाराष्ट्र का टर्न है तो महाराष्ट्र क्यों नहीं नम्बरवन में बाप के स्नेह का रिटर्न देवे। बापदादा ने सुना दिया है - बापदादा को स्नेह का रिटर्न है - स्वयं को और विश्व को टर्न करना। बस रिटर्न में रि निकाल दो तो टर्न हो जायेगा क्योंकि बापदादा को बच्चों में बहुत-बहुत, अच्छी-अच्छी उम्मीदें हैं, उम्मींदवार हो। तो क्या करेगा महाराष्ट्र ? रिटर्न देगा ? अच्छा है, अच्छे अच्छे महारथी हैं महाराष्ट्र में। संगठित रूप में मीटिंग करो, चारों ओर महाराष्ट्र में बापदादा ने देखा है उम्मींदवार सितारे हैं। जो चाहे वह कर सकते हैं। तो ऐसे संगठित रूप में प्रोग्राम करना और नया कोई प्लैन बनाना, कर सकते हैं। महाराष्ट्र कर सकता है। करेंगे ना! अरे नाम ही महाराष्ट्र है तो महान कार्य करना ही है ना! क्या समझते हैं पाण्डव ? करेंगे ? पाण्डव सेना करेंगे, शक्ति सेना करेंगे ? टीचर्स भी बहुत हैं। बहुत अच्छा है।

डबल विदेशी:– बहुत अच्छा - बापदादा ने पहले भी कहा तो जब डबल विदेशी आते हैं तो मधुबन का श्रृंगार हो जाता है। डबल विदेशियों से सभी का प्यार बहुत है। जब भी आपके ग्रुप को देखते हैं ना तो सभी खुश हो जाते हैं क्योंकि आप भी कोटों में कोई, कोई में कोई निकले हो और आजकल विदेश सेवा की अच्छी न्यूज़ है। अच्छे-अच्छे मुस्लिम धर्म में भी सन्देश दे रहे हैं। डबल विदेशियों की विशेषता एक बहुत अच्छी गाई हुई है कि डबल विदेशी अगर किसी भी कार्य में लगेंगे तो हाँ तो हाँ, ना तो ना। जिस कार्य में लगेंगे उस कार्य में फिर विजयी बनेंगे। तो आप जो भी ग्रुप में है वह विजयी ग्रुप है ना। विजय का तिलक लगा हुआ है ना। बापदादा देख रहे हैं कि सेवा में वृद्धि भी हो रही है, सन्देश दे रहे हैं, रहमदिल आत्मा बनके आत्माओं को सन्देश देना यह बाप समान सेवाधारी बनना है। अभी सुनाया ना आज अभी एक समय पर एक सेवा नहीं करो, तीनों ही सेवायें इकट्ठी इकट्ठी हों तो उसका प्रभाव जल्दी होगा। अपने चेहरे से, अपनी चलन से भी सेवा कर सकते हैं। चलते-फिरते म्युजियम हो। जैसे म्युजियम में वा प्रदर्शनी में भिन्न-भिन्न चित्र होते हैं ना वैसे आपके नयन, आपका मस्तक, आपके मुस्कराते हुए होंठ, यह भिन्न-भिन्न जो साधन हैं, उससे सेवा कर सकते हैं। अच्छे हैं, बापदादा को हिम्मत वाले भी लगते हैं सिर्फ अभी थोड़ा सा रियलाइजेशन सूक्ष्म चाहिए। रियलाइज करते हो लेकिन थोड़ा सा सूक्ष्म रूप से रियलाइजे-शन करके नम्बरवन बन जाओ। विन करो और वन, सेकण्ड नम्बर नहीं, वन। ठीक है ना! वन है ना, टू तो नहीं ना! वन नम्बर हैं ? कांध हिलाओ। अच्छा। अच्छा है, बापदादा को विदेशियों का ग्रुप मधुबन में आता रहे, यह अच्छा लगता है। सज़ जाता है मधुबन। अच्छा।

इण्डियन यूथ ग्रुप:– यूथ ग्रुप आया है ना - इन्डियन यूथ ग्रुप उठो। अच्छा इन्डिया का यूथ ग्रुप क्या कमाल करेगा ? सन्देश देने में चारों ओर आवाज फैलाने में यूथ में डबल ताकत है। बापदादा ने सुना, टॉपिक बहुत अच्छी रखी है, विक्ट्री। ऐसा है ना। तो सदा विजयी बन, विजयी बनाने वाले। तो विजयी तब बनेंगे जो बापदादा ने इस वर्ष का काम दिया है, वह एक्जैम्पुल बनकर दिखाना। सब कहें यूथ ग्रुप विजयी अर्थात् निर्विघ्न। ऐसा संकल्प किया है ? किया है ? कोई कारण तो नहीं बतायेंगे ना! ऐसा वैसा तो नहीं कहेंगे ना! मुझे बदलना है। मुझे एडजेस्ट होना है। मुझे सहयोग देना है। मुझे स्नेह देना है। पहले मैं, इसमें पहले मैं भले करो। अच्छा है आपस में संगठन फॉरेन वालों ने भी किया, इन्डिया वाले भी कर रहे हैं, अच्छा है। मुबारक हो। आगे उड़ते रहना। अच्छा।

बापदादा के पास फूलों के श्रृंगार वाले ग्रुप की यादप्यार भी आई है, (कलकत्ता के भाई बहिनें) वह संगठन उठो कहाँ है। देखो सभी को फूलों का श्रंगार अच्छा लगा ना। फूलों का श्रृंगार तो कामन बात है, लोग भी करते हैं लेकिन आपके श्रृंगार और लोगों के श्रृंगार में फर्क है कि आपने स्नेही स्वरूप बन श्रृंगार किया है, वह ड्युटी समझके करते

हैं और आपने स्नेह से किया है तो जहाँ स्नेह होता है वह फूलों की सुगन्ध और श्रृंगार और सुन्दर हो जाती है। तो बापदादा को अच्छा लगा कि स्नेह देखो कलकत्ता से यहाँ ले आते हैं तो स्नेह के विमान में लाये ना, ट्रेन में नहीं लाये, स्नेह के विमान में लाये हैं, अच्छा है। जो आने वाले आपके भाई-बहिन हैं वह भी देख करके खुश हो जाते हैं, वाह! कमाल है, कमाल है। तो आप सभी ने जिस स्नेह से सजाया है, तो बापदादा उससे ज्यादा पदमगुणा आपको स्नेह दे रहा है, मुबारक हो। अच्छा।

चारों ओर के पत्र, याद-पत्र ईमेल, फोन, चारों ओर के बहुत-बहुत आये हैं, यहाँ मधुबन में भी आये हैं तो वतन में भी पहुंचे हैं। आज के दिन जो बंधन वाली मातायें हैं, उन्हों की भी बहुत स्नेह भरी मन की यादें बापदादा के पास पहुंच गई हैं। बापदादा ऐसे स्नेही बच्चों को बहुत याद भी करते और दुआयें भी देते हैं। आजकल बापदादा देख रहे हैं सब बहुत खुशी खुशी से दूर बैठे भी नजदीक में अनुभव कर रहे हैं। लेकिन मधुबन में सम्मुख आना, अपनी झोली भरना, इतने बड़े परिवार से मिलना, यह परिवार कम नहीं है, किसी भी रीति से देख लिया लेकिन सम्मुख परिवार को देख कितनी खुशी होती है क्योंकि 5 हजार वर्ष के बाद मिले हैं। तो वह अनुभव अपना है लेकिन मधुबन निवासी बनना यह गोल्डन चांस बहुत सहयोग देता है। अनुभव भी करते हैं सभी। लेकिन बापदादा खुश है कि सभी को मुरली से प्यार है और मुरली से प्यार अर्थात् मुरलीधर से प्यार। कोई कहे मुरलीधर से तो प्यार है लेकिन मुरली कभी कभी सुन लेते हैं, बापदादा कहते हैं बापदादा उसका प्यार, प्यार नहीं समझते हैं। प्यार निभाना अलग है, प्यार करना अलग है। जिसको मुरली से प्यार है वह है प्यार निभाने वाले और मुरली से प्यार नहीं तो प्यार करने वालों की लिस्ट में है निभाने वाले नहीं। मधुबन में मुरली बाजे, मधुबन का गायन है। मधुबन की धरनी का ही महत्व है। अच्छा।

तो चारों ओर के स्नेही बच्चों को लवली और लवलीन दोनों बच्चों को, सदा बाप के श्रीमत प्रमाण हर कदम में पदम जमा करने वाले नॉलेजफुल पावरफुल बच्चों को, सदा स्नेही भी और स्वमानधारी भी, सम्मानधारी भी, ऐसे सदा बाप की श्रीमत को पालन करने वाले विजयी बच्चों को, सदा बाप के हर कदम पर कदम उठाने वाले सहजयोगी बच्चों को बापदादा का लेकिन आज वतन में जो आपकी एडवांस पार्टी वाले बच्चे हैं, उन्होंने भी, एक एक ने यही कहा है कि हमारी तरफ से भी सभी को, चारों ओर के बच्चों को यादप्यार हमारी देना और हमारा सन्देश देना कि हम आपका इन्तजार कर रहे हैं। आप जल्दी से जल्दी इन्तजाम करो। विशेष आप सबकी प्यारी माँ, दीदी, भाऊ विश्वकिशोर और जो भी साथी गये हैं उन्होंने, सभी ने आप सबको याद प्यार दिया है और साथ-साथ मीठी माँ आपकी, उसने यही कहा है कि अभी विजयी बन दुःख दर्द दूर कर जल्दी-जल्दी मुक्तिधाम का गेट खोलने के लिए बाप के साथी बन जाओ। ब्रह्मा बाप ने, जिन्होंने साकार में बाप को नहीं देखा है तो ब्रह्मा बाप भी विशेष आप सभी को बहुत दिल से यादप्यार दे रहे हैं। तो यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:– (दादी रतनमोहिनी, दादी मनोहर इन्द्रा से) आप भी देखो आलराउन्ड पार्ट बजा रही हो ना। जितना भी कर सकी सेवा में नम्बरवन। आप तो शुरू से नम्बरवन रही हैं। ब्रह्मा बाप के दिल में आपका नाम है। कुछ भी हो करते चलो, देख करके औरों को भी हिम्मत आती है। करावनहार साथ में है ही।

दादी जी से:– बहुत अच्छी, आप मुस्कराती हो ना तो सभी खुश होते हैं। अभी एक बात करो, करेंगी ? करेंगी पक्का ? अभी खाना अच्छी तरह से खाओ। ऑख खोलके खाना खाओ। बन्द नहीं करो क्योंकि आपकी ऑखें बन्द होती है ना, तो सभी का संकल्प चलता है क्यों किया, क्यों किया। इसलिए अभी खाना बहुत प्यार से खाओ। अभी ऑखे बन्द नहीं करना। करेंगी ना। यह बहुत खुश हो जायेंगे। हाँ करेंगी। करना ही है, करना ही है।

दादी शान्तामणी:– अरे वाह! आपको याद है ना, आपको बापदादा ने एक स्पेशल टाइटल दिया था, (सचली कौड़ी) बापदादा ने खास टाइटल दिया था - सचली कौड़ी। उस दिनों में कौड़ी का महत्व था।

सभी को दादियों को देखकर खुशी होती है ना। क्या गीत गाते हो ? वाह! दादियां वाह! और यह वाह! वाह! नहीं होते तो आप भी नहीं होते। अच्छा।

''सच्चे स्नेही बन, सब बोझ बाप को देकर मौज का अनुभव करो, मेहनत मुक्त बनो''

आज बापदादा अपने चारों ओर के बेफिक्र बादशाहों के संगठन को देख रहे हैं। इतनी बड़ी बादशाहों की सभा सारे कल्प में इस संगम के समय होती है। स्वर्ग में भी इतनी बड़ी सभा बादशाहों की नहीं होगी। लेकिन अब बापदादा सर्व बादशाहों की सभा को देख हर्षित हो रहे हैं। दूर वाले भी दिल के नजदीक दिखाई दे रहे हैं। आप सब नयनों में समाये हुए हो, वह दिल में समाये हुए हैं। कितनी सुन्दर सभा है, सबके चेहरों पर आज के विशेष दिवस पर अव्यक्त स्थिति के स्मृति की झलक दिखाई दे रही है। सबके दिल में ब्रह्मा बाप की स्मृति समाई हुई है। आदि देव ब्रह्मा बाप और शिव बाप दोनों ही सर्व बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं।

आज तो सवेरे दो बजे से लेकर बापदादा के गले में भिन्न-भिन्न प्रकार की मालायें पड़ी हुई थी। यह फूलों की मालायें तो कामन है। हीरों की मालायें भी कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन स्नेह के अमूल्य मोतियों की माला अति श्रेष्ठ है। हर एक बच्चे के दिल में आज के दिन स्नेह विशेष इमर्ज रहा। बापदादा के पास चार प्रकार की भिन्न-भिन्न मालायें इमर्ज थी। पहला नम्बर श्रेष्ठ बच्चों की जो बाप समान बनने के श्रेष्ठ पुरुषार्थी बच्चे हैं, ऐसे बच्चे माला के रूप में बाप के गले में पिरोये हुए थे। पहली माला सबसे छोटी थी। दूसरी माला - दिल के स्नेह समीप समान बनने के पुरुषार्थी बच्चों की माला, वह श्रेष्ठ पुरुषार्थी यह पुरुषार्थी। तीसरी माला थी - जो बड़ी थी वह थी स्नेही भी, बाप की सेवा में साथी भी लेकिन कभी तीव्र पुरुषार्थी और कभी, कभी-कभी तूफानों का सामना ज्यादा करने वाली। लेकिन चाहने वाले, सम्पन्न बनने की चाहना भी अच्छी रहती है। चौथी माला थी उल्हनें वालों की। भिन्न-भिन्न प्रकार के बच्चों की मालायें अव्यक्त फरिश्ते फेस के रूप में मालायें थी। बापदादा भी भिन्न-भिन्न मालाओं को देख खुश भी हो रहे थे और स्नेह और सकाश साथ-साथ दे रहे थे। अभी आप सब अपने आपको सोचो मैं कौन? लेकिन चारों ओर के बच्चों में विशेष संकल्प वर्तमान समय दिल में इमर्ज है कि अब कुछ करना ही है। यह उमंग-उत्साह मैजारिटी में संकल्प रूप में है। स्वरूप में नम्बरवार है लेकिन संकल्प में है।

बापदादा सभी बच्चों को आज के स्नेह के दिन, स्मृति के दिन, समर्थी के दिन की विशेष दिल की दुआयें और दिल की बधाईयां दे रहे हैं। आज का विशेष दिन स्नेह का होने कारण मैजारिटी स्नेह में खोये हुए हैं। ऐसे ही पुरुषार्थ में सदा स्नेह में खोये हुए रहो। लवलीन रहो तो सहज साधन है स्नेह, दिल का स्नेह। बाप के परिचय की स्मृति सहित स्नेह। बाप के प्राप्तियों के स्नेह सम्पन्न स्नेह। स्नेह बहुत सहज साधन है क्योंकि स्नेही आत्मा मेहनत से बच जाती है। स्नेह में लीन होने के कारण, स्नेह में खोये हुए होने के कारण किसी भी प्रकार की मेहनत मनोरंजन के रूप में अनुभव होगी। स्नेही स्वत: ही देह के भान, देह के सम्बन्ध का ध्यान, देह की दुनिया के ध्यान से ऊपर स्नेह में स्वत: ही लीन रहती। दिल का स्नेह बाप के समीप का, साथ का, समानता का अनुभव कराता है। स्नेही सदा अपने को बाप की दुआओं के पात्र समझते हैं। स्नेह असम्भव को भी सहज सम्भव कर देता है। सदा अपने मस्तक पर माथे पर बाप के सहयोग का, स्नेह का हाथ अनुभव करते हैं। निश्चयबुद्धि, निश्चिंत रहते हैं। आप सभी आदि स्थापना के बच्चों को आदि के समय का अनुभव है, अभी भी सेवा के आदि निमित्त बच्चों को अनुभव है कि आदि में सभी बच्चों को बाप मिला, उस स्मृति से स्नेह का नशा कितना था! नॉलेज तो पीछे मिलती लेकिन पहला-पहला नशा स्नेह में खोये हुए हैं। बाप स्नेह का सागर है तो मैजारिटी बच्चे आदि से स्नेह के सागर में खोये हुए हैं, पुरुषार्थ की रफ्तार में बहुत अच्छे स्पीड से चले हैं। लेकिन कोई बच्चे स्नेह के सागर में खो जाते हैं, कोई सिर्फ डुबकी लगाके बाहर आ जाते हैं। इसीलिए जितना खोये हुए बच्चों को मेहनत कम लगती उतनी उन्हों को नहीं। कभी मेहनत, कभी मुहब्बत, दोनों में रहते हैं। लेकिन जो स्नेह में लवलीन रहते हैं वह सदा अपने को छत्रछाया के

अन्दर रहने का अनुभव करते हैं। दिल के स्नेही बच्चे मेहनत को भी मुहब्बत में बदल लेते हैं। उन्हों के आगे पहाड़ जैसी समस्या भी पहाड़ नहीं लेकिन रूई समान अनुभव होती है। पत्थर भी पानी समान अनुभव होता है। तो जैसे आज विशेष स्नेह के वायुमण्डल में रहे तो अनुभव किया मेहनत है या मनोरंजन हुआ!

आज तो स्नेह का सबको अनुभव हुआ ना! स्नेह में खोये हुए थे? खोये हुए थे सभी! आज मेहनत का अनुभव हुआ? किसी भी बात की मेहनत का अनुभव हुआ? क्या, क्यों, कैसे का संकल्प आया? स्नेह सब भुला देता है। तो बापदादा कहते हैं सब बापदादा के स्नेह को भूलो नहीं। स्नेह का सागर मिला है, खूब लहराओ। जब भी कोई मेहनत का अनुभव हो ना, क्योंकि माया बीच-बीच में पेपर तो लेती है, लेकिन उस समय स्नेह के अनुभव को याद करो। तो मेहनत मुहब्बत में बदल जायेगी। अनुभव करके देखो। क्या है, गलती क्या हो जाती है! उस समय क्या, क्यों.. इसमें बहुत चले जाते हो। जो आया है वह जाता भी है लेकिन जायेगा कैसे? स्नेह को याद करने से मेहनत चली जायेगी क्योंकि सभी को भिन्न-भिन्न समय पर बापदादा दोनों के स्नेह का अनुभव तो है। है ना अनुभव! कभी तो किया है ना, चलो सदा नहीं है कभी तो है। उस समय को याद करो - बाप का स्नेह क्या है! बाप के स्नेह से क्या-क्या अनुभव किया! तो स्नेह की स्मृति से मेहनत बदल जायेगी क्योंकि बापदादा को किसी भी बच्चे की मेहनत की स्थिति अच्छी नहीं लगती। मेरे बच्चे और मेहनत! तो मेहनत मुक्त कब बनेंगे? यह संगमयुग ही है जिसमें मेहनत मुक्त, मौज़ ही मौज़ में रह सकते हैं। मौज नहीं है तो कोई न कोई बोझ बुद्धि में है, बाप ने कहा है बोझ मुझे दे दो। मैंपन को भूल ट्रस्टी बन जाओ। जिम्मेवारी बाप को दे दो और स्वयं दिल के सच्चे बच्चे बन खाओ, खेलो और मौज करो क्योंकि यह संगमयुग सभी युग में से मौज़ों का युग है। इस मौजों के युग में भी मौज नहीं मनायेंगे तो कब मनायेंगे? बापदादा जब देखते हैं ना कि बच्चे बोझ उठाके बहुत मेहनत कर रहे हैं। दे नहीं देते, खुद ही उठा लेते। तो बाप को तो तरस पड़ेगा ना, रहम आयेगा ना। मौजों के समय मेहनत! स्नेह में खो जाओ, स्नेह के समय को याद करो। हर एक को कोई न कोई समय विशेष स्नेह की अनुभूति होती ही है, हुई है। बाप जानता है हुई है लेकिन याद नहीं करते हो। मेहनत को ही देखते रहते, उलझते रहते। अगर आज भी अमृतवेले से अब तक दिल से बापदादा दोनों अथॉरिटी के स्नेह का अनुभव किया होगा तो आज के दिन को भी याद करने से स्नेह के आगे मेहनत समाप्त हो जायेगी।

अभी बापदादा इस वर्ष में हर बच्चे को स्नेह युक्त, मेहनत मुक्त देखने चाहते हैं। मेहनत का नामनिशान दिल में नहीं रहे, जीवन में नहीं रहे। हो सकता है? हो सकता है? जो समझते हैं करके ही छोड़ना है, हिम्मत वाले हैं वो हाथ उठाओ। आज विशेष ऐसे हर बच्चे को बाप का विशेष वरदान है - मेहनत मुक्त होने का। स्वीकार है? है! फिर कुछ हो जाए तो क्या करेंगे! क्या क्यों तो नहीं करेंगे ना? मुहब्बत के समय को याद करना। अनुभव को याद करना और अनुभव में खो जाना। आपका वायदा है। बाप भी बच्चों से प्रश्न पूछते हैं, कि आप सबका वायदा है कि हम बाप द्वारा 21 जन्मों के लिए जीवनमुक्त अवस्था का पद प्राप्त कर रहे हैं, करेंगे ही, तो जीवनमुक्त में मेहनत होती है क्या? 21 जन्म में एक जन्म संगम का है। आपका वायदा 21 जन्मों का है, 20 जन्मों का नहीं है। तो अभी से मेहनत मुक्त अर्थात् जीवनमुक्त, बेफिक्र बादशाह। अभी के संस्कार आत्मा में 21 जन्म इमर्ज रहेंगे। तो 21 जन्म का वर्सा लिया है ना! या लेना है अभी? तो अटेन्शन प्लीज़, मेहनत मुक्त, सन्तुष्ट रहना और सन्तुष्ट करना। सिर्फ रहना नहीं, करना भी है। तभी मेहनत मुक्त रहेंगे। नहीं तो रोज़ कोई न कोई बोझ की बातें, मेहनत की बातें, क्या क्यों की भाषा में आयेंगी। अभी समय की समीपता को देख रहे हो। जैसे समय की समीपता हो रही है ऐसे आप सबका भी बाप के साथ समीपता का अनुभव बढ़ना चाहिए ना। बाप से आपकी समीपता समय की समीपता को समाप्त करेगी। क्या आप सभी बच्चों को आत्माओं के दु:ख अशान्ति का आवाज कानों में नहीं सुनाई देता! आप ही पूर्वज भी हो, पूज्य भी हो। तो हे पूर्वज आत्मायें, हे पूज्य आत्मायें, कब विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न करेंगे?

बापदादा ने समाचारों में देखा है, हर वर्ग वाले अपनी-अपनी मीटिंग करते हैं, प्लैन बनाते हैं कि विश्व कल्याण की गति को तीव्र कैसे करें? प्लैन तो बहुत अच्छे बनाते हैं, लेकिन बापदादा पूछते हैं आखिर भी कब तक? इसका

उत्तर दादियां देंगी - आखिर कब तक? पाण्डव देंगे - आखिर कब तक? बाप की प्रत्यक्षता हो, यही सभी हर वर्ग के प्लैन बनाने में लक्ष्य रखते हैं। लेकिन प्रत्यक्षता होगी दृढ़ प्रतिज्ञा से। प्रतिज्ञा में दृढ़ता, कभी किसी कारण से वा बातों से दृढ़ता कम हो जाती है। प्रतिज्ञा बहुत अच्छी करते हैं, अमृतवेले अगर आप सुन सको ना, बाप तो सुनते हैं, आपके पास ऐसा अभी साइंस ने साधन नहीं दिया है जो सभी के दिल का आवाज सुन सको। बापदादा सुनते हैं, वायदों की मालायें, संकल्प करने की बातें इतनी अच्छी-अच्छी दिल खुश करने वाली होती हैं जो बापदादा कहते वाह बच्चे वाह! सुनायें क्या क्या करते हो! जब कर्म में आते हो ना, मुरली तक भी 75 परसेन्ट ठीक होते हैं। लेकिन जब कर्मयोग में आते हो उसमें फर्क आ जाता है। कुछ संस्कार कुछ स्वभाव, स्वभाव और संस्कार सामना करते हैं, उसमें प्रतिज्ञा दृढ़ के बजाए साधारण हो जाती है। दृढ़ता की परसेन्टेज़ कम हो जाती है।

बापदादा एक खेल बच्चों का देख मुस्कराते हैं। कौन सा खेल करते हो, बतायें क्या? बतायें तब जब इस खेल को खत्म करो। करेंगे, करेंगे? आज तो स्नेह की शक्ति है ना! करेंगे? हाथ उठाओ। हाथ सिर्फ नहीं, दिल का हाथ उठाना, करना ही पड़ेगा। फिर बापदादा थोड़ा..., थोड़ा-थोड़ा करेगा कुछ। बतायें? पाण्डव बोलो, बतायें? यह पहली लाइन बोलो बतायें? बोलो। करना पड़ेगा। बतायें? अगर हाँ है तो पहली लाईन हाथ उठाओ। यह दो लाइन वाले हाथ उठाओ। मधुबन वाले भी हाथ उठायें। दिल का हाथ है ना। अच्छा। बापदादा को तो खेल देखने में रहम आता है, मज़ा नहीं आता है क्योंकि बापदादा देखते हैं बच्चे अपनी बात दूसरे के ऊपर रखने में बहुत होशियार हैं। क्या खेल करते? बातें बना देते हैं। सोचते हैं कौन देखने वाला है! मैं जानूं मेरी दिल जाने। बाप तो परमधाम में, सूक्ष्मवतन में बैठा है। अगर किसको कहो कि यह नहीं करना चाहिए, तो खेल क्या करते हैं पता है? हाँ हुआ तो है लेकिन... लेकिन जरूर डालते हैं। लेकिन क्या? ऐसा था ना, ऐसा किया ना, ऐसे होता है ना, तभी हुआ, मैंने नहीं किया, ऐसे हुआ तभी। अभी इसने किया, तभी किया। नहीं तो मैं नहीं करता, तो यह क्या हुआ? अपनी महसूसता, रियलाइजेशन कम है। अच्छा, मानों उसने ऐसा किया, तभी आपने किया, चलो बहुत अच्छा। पहला नम्बर वह हुआ, दूसरा नम्बर आप हुए, ठीक है। बापदादा यह भी मान लेते हैं। आप पहला नम्बर नहीं है, दूसरा नम्बर हैं लेकिन अगर आप सोचते हो कि पहला नम्बर परिवर्तन करे तो मैं ठीक हूँगा, ठीक है? यह समझते हैं ना उस समय। मानो पहला नम्बर परिवर्तन करता है। बापदादा और सभी पहले नम्बर वाले को कहते हैं आपकी गलती है, आपको परिवर्तन करना है, ठीक है। अच्छा अगर पहले नम्बर वाले ने परिवर्तन किया, तो पहला नम्बर किसको मिलेगा? आपका तो पहला नम्बर नहीं होगा। परिवर्तन शक्ति में आपका पहला नम्बर नहीं होगा। पहला नम्बर आपने उसको दिया तो आपका कौन सा नम्बर हुआ? दूसरा नम्बर हुआ ना। अगर आपको कहें दूसरा नम्बर हैं तो मंजूर करेंगे। करेंगे? कहेंगे नहीं, ऐसे था, वैसे था, कैसे था... यह भाषा बहुत खेल में आती है। ऐसे वैसे कैसे यह खेल बन्द करके मुझे परिवर्तन होना है। मैं परिवर्तन होके दूसरे को परिवर्तन करूँ, लेकिन अगर दूसरे को परिवर्तन नहीं कर सकते हो तो शुभ भावना, शुभ कामना तो रख सकते हो! वह तो आपकी अपनी चीज़ है ना! तो हे अर्जुन मुझे बनना है। पहला विश्व के राज्यधारी लक्ष्मी-नारायण के समीप आपको आना है या दूसरे नम्बर वाले को?

बापदादा की इस वर्ष की यही आश है कि सभी ब्राह्मण आत्मायें, ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारी जैसे यहाँ यह बैज लगाते हो ना, सभी लगाते हैं ना! यहाँ भी आते हो तो आपको बैज मिलता है ना, चाहे कागज का, चाहे सोने का, चाहे चांदी का। तो जैसे यहाँ बैज लगाते हो वैसे दिल में, मन में यह बैज लगाओ, मुझे परिवर्तन होना है। मुझे निमित्त बनना है। परिवर्तन के कार्य में ब्रह्मा बाप समान पहले मैं। दूसरी बातों में भले पीछे रहो, व्यर्थ बातों में। लेकिन परिवर्तन में पहले मैं। ठीक है ना! मंजूर है? तो कल अमृतवेले बापदादा देखेगा, बापदादा को देरी नहीं लगती है, स्वीच आन हुआ तो सब वर्ल्ड दिखाई देती है। तो कल अमृतवेले सभी बाप से मिलन मनायेंगे ना। तो मिलन मनाते हुए यह बैज लगाना। देखेंगे कौन बैज लगाता है प्रैक्टिकल में। ऐसे नहीं, शो के लिए नहीं लगाना है, परिवर्तन होना ही है। दृढ़ता है ना। दृढ़ हैं ना! हाथ उठाते हैं ना सभी, तो बापदादा को थोड़ा सा लगता है पता नहीं करेंगे, या नहीं करेंगे। यह भी अच्छा, यह हाथ उठाते हो तो एक सेकण्ड तो संकल्प अच्छा किया, लेकिन करके ही छोड़ना है। मुझे बदलना है,

बदलकर बदलाना है। यह बदले, यह बात बदले, यह व्यक्ति बदले, यह सरकमस्टांश बदले, नहीं। मुझे बदलना है। बातें तो आयेंगी, आप ऊंचे जा रहे हो, ऊंचे स्थान पर समस्यायें भी तो ऊंची आती है ना! लेकिन जैसे आज नम्बरवार यथाशक्ति स्नेह के स्मृति का वायुमण्डल था। ऐसे अपने मन में सदा स्नेह में लवलीन रहने का वायुमण्डल सदा इमर्ज रखो।

बापदादा के पास समाचार बहुत अच्छे अच्छे आते हैं। संकल्प तक बहुत अच्छे हैं। स्वरूप में आने में यथाशक्ति हो जाते हैं। अभी दो मिनट के लिए सभी परमात्म स्नेह, संगमयुग के आत्मिक मौज की स्थिति में स्थित हो जाओ।

अच्छा - इसी अनुभव में बार-बार हर दिन में समय प्रति समय अनुभव करते रहना। स्नेह को नहीं छोड़ना। स्नेह में खो जाना सीखो। अच्छा।

सेवा का टर्न गुजरात ज़ोन का है:- गुजरात के कुमार उठो। अच्छा है - कुमार का अर्थ ही है कि शरीर में शक्तिशाली, मन की शक्ति में भी शक्तिशाली और शरीर से भी हल्के, आत्मा में भी हल्के। तो ऐसे कुमार हो? हाथ हिलाओ, हैं? कोई बोझ की रिपोर्ट तो नहीं आयेगी। आज से गुजरात के यूथ की कोई रिपोर्ट नहीं आयेगी ना! ऐसा होगा? रिपोर्ट नहीं आयेगी या आयेगी? जो कहते हैं रिपोर्ट नहीं आयेगी वह हाथ उठाओ। हाँ फोटो निकालो। पक्का काम करना है ना। अच्छा है। बापदादा के पास एक यूथ ग्रुप का समाचार भी आया है, अच्छा पुरुषार्थ किया है, हिम्मत अच्छी रखी है, प्रोग्राम की विधि भी अच्छी है। अगर कोई और ज़ोन वाले इस विधि को अपनाने चाहे तो बापदादा को अच्छा लगा है, प्रोग्राम जो बनाया है और अभी किया है, उसके लिए बापदादा की तरफ से अमरभव का वरदान है। अभी सभी जो भी यूथ आये हैं, सभी को पहले मैं परिवर्तन में आगे कदम उठाऊंगा, यह मंजूर है ना। पहले मैं या पहले यह? पहले मैं वाला हाथ उठाओ। देखो, आप अच्छी तरह से फोटो निकालो। बापदादा को रिजल्ट देखनी है ना। अच्छा है। यूथ सारे विश्व विद्यालय की रिजल्ट को प्रत्यक्ष कर सकते हैं। गवर्मेन्ट की प्राब्लम्स दूर कर सकते हैं, दोनों गवर्मेन्ट। आलमाइटी गवर्मेन्ट भी निर्विघ्न देखने चाहती और आजकल की गवर्मेन्ट भी निर्विघ्न भारत को देखने चाहती, लेकिन निमित्त यूथ को बनाने चाहती। तो करके दिखाना है, अमर रहना है। वायदे निभाने में भी अमर रहना। बाकी पुरुषार्थ कर रहे हैं, संकल्प किया है, आगे भी करते और कराते रहना। तो गुजरात के युवा आज से निर्विघ्न। निर्विघ्न रहेंगे ना! बहुत अच्छा।

मातायें उठो:- अच्छा है, माताओं को वरदान है क्योंकि दुनिया वाले भी यही नवीनता देखते हैं कि मातायें विश्व परिवर्तक बन गई हैं। तो मातायें सदा यह पाठ पक्का कर लो कि हमें सदैव शुभ चिंतक और शुभचिंतन में रहना है। रह सकती हो? रहेंगे? कोई भी आत्मा हो, लेकिन आप शुभ चिंतक रहो और सदा शुभ चिंतन, व्यर्थ चिंतन नहीं। खराब चिंतन नहीं। शुभचिंतन। जो शुभचिंतन और शुभचिंतक है वही 21 जन्म के वर्से के अधिकारी बनते हैं। तो याद रखना - दो शब्द शुभचिंतक और शुभ चिंतन। अच्छी संख्या है। कभी परचिंतन नहीं करना, व्यर्थ चिंतन भी नहीं करना। यह रिजल्ट दिखायेंगी। टीचर्स सभी अपने-अपने सेन्टर्स में यह गुजरात की वरदानों को वरदान है, यह पक्का कराना और रिजल्ट देना। परचिंतन बन्द, व्यर्थ चिंतन बन्द। शुभचिंतन और शुभ चिंतक। हर आत्मा के प्रति, चाहे आपके पीछे ही पड़ा रहे, आपका उल्टा मित्र बना हुआ हो। तो भी शुभचिंतन, पक्का। मातायें हाथ उठाओ। आप टीचर्स रिजल्ट देखना, हर सप्ताह इस बात की रिजल्ट देखना। देख सकती हैं ना। अच्छा।

पाण्डव उठो:- पाण्डवों की संख्या भी कम नहीं है। अच्छा पाण्डव क्या करेंगे! पाण्डवों का गायन क्या है? पाण्डव सदा पाण्डवपति के साथ और साथी रहे हैं। साथ भी रहे हैं, साथी भी रहे हैं इसीलिए पाण्डवों का टाइटिल क्या है? विजयी पाण्डव। विजय हो गई ना पाण्डवों की। कारण? परमात्मा साथ और साथी है। तो आज से दिल से मन से बाप का साथ नहीं छोड़ना है। साथ छोड़ते हैं तो माया आती है। बाप का साथ छोड़ना अर्थात् माया के आने का फाटक खोलना। जब दरवाजा खोलते हो तो वह आयेगी ना। क्यों नहीं आयेगी, 63 जन्म की पुरानी है ना। तो बाप को भूलो नहीं, भूलना माना माया का आना। तो सदा साथ रहना है और सेवा में विश्व के परिवर्तन के कार्य में सदा साथी होके रहना है। परमात्म कार्य के साथी, इसी में ही मन्सा वाचा कर्मणा अर्थात् चेहरे और चलन में साथी

रहो। पसन्द है? साथ रहेंगे, साथी रहेंगे? माया का दरवाजा बन्द? डबल लॉक लगाया, सिंगल लॉक नहीं लगाना। डबल लॉक। निरन्तर सेवाधारी और निरन्तर याद। यह डबल लॉक लगाना। ठीक है? पाण्डव भी निर्विघ्न। निर्विघ्न, हाथ उठाओ। दिल से हाथ उठा रहे हो? जो दिल से उठा रहे हैं वह ज्यादा हिलाओ। देखना टीचर्स। हाथ उठा रहे हैं। अच्छा है। पड़ोसी हो ना गुजरात। मधुबन के पड़ोसी हो, तो पड़ोसी तो कमाल करेंगे ना। अच्छा।

टीचर्स और कुमारियां दोनों ही उठो: जो भी कुमारियां हैं, वह बननी तो टीचर्स है ना। कुमारियां क्या बननी है! टीचर्स तो बननी है ना। इसलिए टीचर्स के साथ उठाया है। नौकरी करनी भी पड़ती है तो भी बापदादा कहते हैं अगर टीचर वा विश्व सेवा का लक्ष्य है, कुमारियों को तो भी हर शनिवार जब छुट्टी होती है तो सेन्टर पर रहना है। लेकिन वहाँ सेवा करनी है, ऐसे ही नहीं रहना है। सेवा का अभ्यास करना है। तो थोड़ा हिसाब किताब है तो उसे पूरा करें, अगर आवश्यक हिसाब है तो, चल नहीं सकते हैं इसलिए नौकरी करते हैं तब तो फेल हैं। सचमुच कोई कारण है, कईयों के सरकमस्टांश हैं लेकिन कईयों की दिल भी है। शनिवार और इतवार सेवा करो। इतवार के दिन पूरी सेवा करो। संस्कार डालो। सिर्फ रहने के संस्कार नहीं, सेवा के संस्कार डालो। समझो मैं सर्विसएबुल बनने के कारण आई हूँ। प्रैक्टिस करते रहो, जितना प्रैक्टिस करती रहेंगी ना, मज़ा आ जायेगा तो आपेही भी कोई बहाना बनाके अपने को छुड़ा सकेंगी। कुमारियां चतुर होती हैं, भोलीभाली नहीं होती हैं। इसीलिए कुमारियां अर्थात् स्व-उन्नति में हर समय कदम उठाती रहें। सिर्फ नौकरी नहीं, स्व उन्नति में अपने सरकमस्टांश अनुसार कदम आगे बढ़ाती रहें। ऐसे नहीं बस चल रही हैं, नौकरी करनी है, कब तक करेंगे, कब तक नहीं करेंगे, कुछ सोच नहीं। कुमारियां ब्रह्माकुमारी तो हो ही। सभी कुमारियां ब्रह्माकुमारी हैं। सर्विस करने वाली भी ब्रह्माकुमारी है, लेकिन ब्रह्माकुमारी वह जो विश्व कल्याण की भावना, कामना रखे। तो बापदादा देखेंगे कि कुमारियां योग्य टीचर बनी, खिटखिट वाली नहीं बनना। योग्य टीचर, क्योंकि योग्य टीचर्स की आवश्यकता है। आजकल क्या होता है, ट्रेनिंग भी कर लेती हैं, लेकिन सेन्टर पर जाते ही कोई प्राब्लम हो जाती, तो हैण्डस तो नहीं बन सकेंगी ना। कुमारी अर्थात् बापदादा के सेवा साथी और निर्विघ्न साथी। अपने को एडजेस्ट करने वाली। एडजेस्ट करने वाली हो ना कि अगेन्स्ट होने वाली हो। किसी के प्रति भी अगेन्स्ट नहीं हो, एडजेस्ट होने वाली। अच्छा तो ऐसी कुमारियां बनेंगी, हाथ उठाओ। एडजेस्ट होने वाली। सोच के हाथ उठाओ। तो सबसे मिलनसार। सबसे अपने को साथी बनाने वाली। निर्विघ्न। तब तो बहुत हैण्डस बन सकते हैं। अभी हैण्डस की कमी है, बापदादा सभी कुमारियों को कह रहा है। मददगार बनेंगी ना। जो मददगार बनेंगी वह हाथ उठाओ। लेकिन कौन सी मददगार! निर्विघ्न मददगार। अभी उठाओ निर्विघ्न मददगार? फिर इनएडवांस मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

टीचर्स से:- टीचर्स भी गुजरात में बहुत हैं। अभी टीचर्स को क्या करना है? टीचर्स को अभी बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल फैलाना है। चाहे सेन्टर पर, चाहे विश्व में, विश्व में भी वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल की आवश्यकता है क्योंकि भ्रष्टाचार पापाचार बढ़ रहा है। बिना वैराग्य वृत्ति के इन आत्माओं का कल्याण नहीं होगा। जो सन्देश देने का कार्य कर रहे हो, अच्छा कर रहे हो। बापदादा को पसन्द है लेकिन उससे सहयोगी बनते हैं, माइक बनते हैं। आप जैसे बाप के वारिस बच्चे समर्पण बच्चे कम बनते हैं। चारों ओर के सेन्टर्स पर वैराग्य वृत्ति की आवश्यकता है। वैराग्य वृत्ति सिर्फ खाने पीने पहनने की नहीं, साधनों की नहीं, लेकिन टोटल मानसिक वृत्ति, दृष्टि और कृति, चारों ओर के ज़ोन में अभी वैराग्य वृत्ति से उपराम, देहभान से उपराम वह अभी लहर चाहिए। बेहद की वैराग्य वृत्ति पहले देह भान की वैराग्य वृत्ति, देह की बातों से वैराग्य वृत्ति, देह की भावना, भाव, इससे वैराग्य वृत्ति चाहिए। तो बापदादा चारों ओर के बच्चों को यह अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि तीव्रगति से चाहे ब्राह्मण, चाहे सहयोगी आत्माओं में श्रेष्ठ उन्नति तब होगी जब वैराग्य वृतति का वायुमण्डल स्वयं में और सर्व में फैलायेंगे तब आवाज फैलेगा। सभी वर्ग वाले भी यही सोचते हैं प्रत्यक्षता करने चाहते हैं, प्रोग्राम भी बनाते हैं लेकिन अभी तक हुई नहीं है क्यों? कारण है चारों ओर, चाहे पाप कर्म चाहे भ्रष्टाचार, चाहे बातों में, पोजीशन में वैराग्य वृत्ति नहीं है। तो प्रत्यक्षता सहज नहीं हो सकती है। तो अभी चारों ओर बेहद की वैराग्य वृत्ति, ब्रह्मा बाप को अन्त तक देखा कितनी बेहद की वैराग्य वृत्ति

रही। अपनी देह से भी वैराग्य वृत्ति। बच्चों के सम्बन्ध में भी वैराग्य वृत्ति। तो क्या करेंगे? यही लक्ष्य लक्षण में लाना। अच्छा। गुजरात वाले तो सेवा में सदा हाज़िर होने वाले हैं। वृद्धि भी सेवा की अच्छी है, संख्या भी अच्छी है, अभी वारिस और माइक, ऐसे माइक निकालो जिसके आवाज का प्रभाव हो। सबके मुख से निकले, यह कहता है, यह कहता है... कुछ तो होगा। अच्छा, मुबारक हो सेवा की। निर्विघ्न सेवा की इसकी बहुत-बहुत मुबारक।

डाक्टर्स (मेडीकल) और इंजीनियर विंग :- अच्छा। दोनों ही वर्ग बहुत आवश्यक हैं। बापदादा ने दोनों ही वर्गो के प्लैन सुने। डाक्टर्स ने जो प्लैन बनाया है, अच्छा बनाया है। बापदादा को पसन्द है। मुबारक हो क्यों पसन्द है? क्योंकि सब डिटेल क्लीयर रूप से बनाया है। क्या करना है, किसको करना है, कब तक करना है, रिजल्ट क्या निकालनी है, यह सारा स्पष्ट रूप से बनाया है। बापदादा जैसे गांव वालों ने, यूथ ग्रुप ने अपना क्लीयर बनाकरके और प्रैक्टिकल किया इसलिए बापदादा इन दोनों के प्लैन और प्रैक्टिकल में भी मुबारक देते हैं, ऐसे ही डाक्टर्स ने भी जो अभी प्लैन बनाया है वह बहुत स्पष्ट बनाया है और हेल्थ का नाम सुन करके तो सभी इच्छुक होते ही हैं क्योंकि दिन प्रतिदिन नई नई बीमारियां तो निकल ही रही हैं, इलाज भी बहुत निकल रहे हैं तो बीमारियां भी बहुत निकल रही हैं और तंग हैं बीमारियों से। तो यह प्लैन देख करके सेवा सहज हो सकती है। तो अच्छी हिम्मत रखी है। सभी सहयोगी भी अच्छे अच्छे आ गये हैं और चारों ओर आवाज फैलाने का प्लैन बनाया है, एक जोन का नहीं है, सारे भारत का है, तो चारों ओर आवाज फैलने से अच्छा आवाज फैल जाता है। मुबारक हो। प्लैन को अभी प्रैक्टिकल करते चलो, सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। डाक्टर्स की संख्या भी बहुत है। अगर सारे वर्ल्ड के डाक्टर्स इक्ट्ठे करें तो बहुत संख्या है। काम में आयेंगे डाक्टर्स। पिछाड़ी के समय आपको बहुत सेवा करनी पड़ेगी। बहुत दु:ख खत्म करने पड़ेंगे। सब चिल्लायेंगे और आप तन और मन के डबल डाक्टर बनके सेवा करेंगे। अच्छा।

इन्जीनियर और साइंस - दोनों ही डिपार्टमेंट बढ़िया है तो ऐसा प्लैन बनाओ जिसमें जैसे साइंस प्रत्यक्ष एक्जैम्पुल दिखाती है, ऐसे ही साइलेन्स पावर के प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाओ क्योंकि आजकल सुनने के बजाए, प्रमाण देखने चाहते हैं। तो ऐसे कोई प्रमाण बनाओ, जैसे साइंस सिद्ध करके सुनाती है, साइन्स से यह प्रमाण है, फायदा हुआ है, या परिवर्तन हुआ है, ऐसे आप भी साइलेन्स शक्ति के प्रत्यक्ष प्रमाण निकालो। तो लोगों में आकर्षण होगी। ठीक है ना। अभी इस वर्ष में इस रूप का कोई प्लैन बनाओ। बन सकता है, होशियार हो। बना देंगे। अच्छा। फिर भी अच्छा है। वर्गीकरण जबसे बने हैं, सेवा में वृद्धि तो हुई है। अच्छा।

डबल विदेशी:- बापदादा को बहुत अच्छा लगता है कि विदेशियों ने चतुराई बहुत की है, हर टर्न में चांस लेते हैं। और सभी कितने देशों से आये हैं! 35 देशों से आ गये हैं। तो 35 देशों का कल्याण तो हो रहा है ना। जहाँ से आप आये हो उस देश का कल्याण तो हो रहा है ना। तो यह टाइटल यथार्थ है ना, विश्व कल्याणकारी हैं। कोई भी कोना रह नहीं जाये। बापदादा ने समाचार सुना है कि विदेश में भी यही प्लैन बनाया है, कि कोई भी कोना सन्देश के बिना खाली नहीं रहे। बनाया है ना? बनाया है। तो बाप के इस विश्व कल्याणी टाइटल को आपने अच्छा प्रैक्टिकल में लाया है। पहले सिर्फ भारत कल्याणकारी था, अभी फलक से कहते हैं विश्व कल्याणकारी। तो बाप का यह टाइटल विश्व कल्याणकारी का आप डबल विदेशियों ने प्रैक्टिकल में लाया है और विदेशी एक बात में चारों ओर होशियार हैं, बतायें कौन सी? हमेशा विदेशी हाथ में हाथ देके चलते हैं। आदत है। तो डबल विदेशी बाप को हाथ में हाथ देकरके चलने वाले। हैं? हाथ में हाथ है? हाथ कौन सा है? निराकार को तो हाथ है नहीं? निराकार का हाथ है श्रीमत। तो श्रीमत पर हाथ में हाथ देकर चलने वाले हो ना। कभी थक तो नहीं जाते हो हाथ में हाथ देने में। थकते हो! थोड़ा-थोड़ा? सदा बाप के श्रीमत रूपी हाथ में हाथ अर्थात् साथी सहयोगी बनने वाले। जो बाप ने कहा वह किया। ऐसे हो ना? ऐसे हो? सामने वाले ऐसे हो? पक्का? देखना, बापदादा पोतामेल देखेगा ना! बाप ने कहा बच्चे ने किया, वह है सुपात्र बच्चा। सोचे नहीं, करूं नहीं करूं, यह तो नहीं होगा, वह तो नहीं होगा... बाप ने कहा मैंने किया, यह हैं पक्के वारिस। सोचने वाले नहीं, करने वाले। कई कहते हैं ना करेंगे, देखना करेंगे जरूर, नहीं।

तुरत कर्म, वह तो तुरत दान कहते हैं लेकिन यहाँ बापदादा कहते हैं तुरत हर कर्म में फॉलो करना महापुण्य है। महापुण्य और पुण्य में भी फर्क है। जैसे भक्ति में देखा है ना जब बलि चढ़ते हैं तो जो झाटकू होता है उसको महाप्रसाद कहा जाता है, अगर सोच सोच के मरता है तो उसको महाप्रसाद नहीं कहा जाता है। तो श्रीमत को फौरन फॉलो करना इसको कहा जाता है महापुण्य। ठीक है। समझदार तो बहुत हो। अच्छा लगता है, यह सिन्धियों का ग्रुप भी अच्छा लगता है। मधुबन का श्रंगार हैं ना। तो बहुत अच्छा है, तो डबल फारेनर्स डबल पुरुषार्थी। आगे ग्रुप में वरदान दिया था डबल फारेनर्स का अर्थ ही है डबल पुरुषार्थी। सोचने वाले पुरुषार्थी नहीं। अच्छा, बाकी सेवा करते हो, जहाँ से भी आये हो, सेवा अच्छी कर रहे हो, स्व पुरुषार्थ में भी अटेन्शन है और आगे तीव्र करना। पुरुषार्थ है लेकिन तीव्र करना क्योंकि समय बहुत फास्ट जा रहा है। अचानक कुछ भी हो सकता है। अच्छा। सभी को दुआयें भी हैं और दिल का यादप्यार भी है। अच्छा।

चारों ओर के योगयुक्त, युक्तियुक्त, राज़युक्त, खुद भी राज़ को जान सदा राज़ी करने वाले और राज़ी रहने वाले, सिर्फ स्वयं राज़ी नहीं रहना है, राज़ी करना भी है, ऐसे सदा स्नेह के सागर में लवलीन बच्चों को, सदा बाप समान बनने के तीव्रगति के पुरुषार्थी बच्चों को, सदा असम्भव को भी सहज सम्भव करने वाली श्रेष्ठ आत्माओं को, सदा बाप के साथ रहने वाले और बाप की सेवा में साथी रहने वाले ऐसे बहुत-बहुत लक्की और लवली बच्चों को आज के अव्यक्त दिवस की, अव्यक्त फरिश्ते स्वरूप की यादप्यार और दिल की दुआयें, अच्छा।

आज बहुत अच्छा वतन का दृश्य था। आज बापदादा ने वतन में सभी एडवांस पार्टी वालों को बुलाया। एडवांस पार्टी ने कहा कि हम सब एडवांस पार्टी वालों का एडवांस स्टेज वालों को यादप्यार देना। तो आप एडवांस स्टेज वाले हो, वह एडवांस पार्टी वाले हैं, तो आपको बहुत यादप्यार दिया और आज बापदादा ने काफी वर्ष अव्यक्त पार्ट चलाने के निमित्त दादी को और गुल्जार को, दोनों को अपने साथ बिठाया। काफी वर्ष अव्यक्त पार्ट को हो गया है, व्यक्त की सेवा से भी अधिक अलौकिक पार्ट का चला है। तो बापदादा ने आज दोनों को बहुत-बहुत स्नेह दिया और एडवांस पार्टी वालों ने बहुत स्वागत की। बापदादा ने दोनों को बाहों का हार पहनाया, गले लगाया और दोनों के कार्य का सुनाया। दादी के लिए कहा तो दादी ने परिवार और सेवा को, साथियों को, सभी को बहुत अच्छी तरह से चलाया, निमित्त बनी चलाने के और निमित्त समझके चलाया। और गुल्जार बच्ची ने बापदादा को समाने का कार्य किया। तो दोनों का कार्य विशेष रहा इसीलिए दोनों को विशेष वतन में स्वागत की और साथ में जो आदि से आदि रत्न दादियां कहो, उन्हों की भी स्वागत की। बापदादा ने यही विशेषता सुनाई कि दोनों के कार्य में सफलता का कारण मैंपन नहीं, गुल्जार बच्ची की भी महिमा की कि निर्मल निर्मान, सेवा के निमित्त बनी और समाने की शक्ति प्रमाण, परमात्मा और आत्मा दोनों को ब्रह्मा बाप आत्मा और परमात्मा को समाने की शक्ति बाप द्वारा जो प्राप्त हुई, उसको कार्य में लगाया। दादी को जो अन्त में हाथ में हाथ देके बापदादा ने विल पावर्स की विल की उस विल पावर से कार्य निर्विघ्न चलाया, तो दोनों की विशेषता कम नहीं हैं। दोनों ने अपना अच्छा, अच्छे ते अच्छा पार्ट बजाया है और अभी भी पार्ट बजाते रहेंगे। तो बापदादा कहते हैं कि जो विशेष कार्य के निमित्त बनते हैं उनको बापदादा की और ब्राह्मणों की बधाईयां जरूर मिलती हैं। उनकी मुबारकें शुभ भावनायें, शुभ कामनायें बहुत मिलती हैं, तो दोनों का पार्ट अपना अपना रहा। लेकिन सफल रहा, सफल रहेगा। अव्यक्त पार्ट भी चल रहा है, चलता रहेगा और दादी का भी सकाश देने का, समय को समीप लाने का पार्ट अच्छा चलेगा और साथ में सभी दादियों को और दोनों के साथी बहिनें जो सेवा के निमित्त बनी, साथ में रही, बहुत अच्छा योगयुक्त हो सेवा की है, कर रही हैं उन्हों को भी बापदादा ने इमर्ज किया और वरदान दिया - सदा ऐसे ही योगयुक्त राजयुक्त बनके चलते चलो। बाप की दुआओं का हाथ आपके मस्तक पर है, ऐसे वहाँ वतन में सीन चली और सभी एडवांस पार्टी वाले और जो आदि रत्न सेवा साथी रहे हैं वह सभी इमर्ज थे। उन्होंने दोनों के ऊपर आज वतन में सोने के पुष्प डाले। देखा है, सोने के फूल देखे

हैं? बहुत हल्के होते हैं, भारी नहीं होते हैं जो लगें, दर्द करें, ऐसे नहीं होते हैं। बहुत हल्के से पतरे के होते हैं लेकिन बहुत रंगबिरंगी अच्छी डिजाइन के होते हैं, तो बापदादा ने आज दोनों के पार्ट की विशेषता सुनाते हुए सभी द्वारा सोने के पुष्पों की वर्षा कराई। बापदादा ने दोनों को बहुत प्यार किया। और दोनों बाबा बाबा कह रही थी, बाबा आपने कराया, बाबा आपने कराया, बाबा आपने कराया ऐसे ही गीत गा रहे थी। यह था दृश्य आज वतन का। अच्छा।

दादियों से:- आदि रत्न फिर भी आदि रत्न हैं। आदि रत्नों की रौनक ही अपनी है। अच्छा है। बापदादा ने देखा कि सभी आप जो निमित्त बने हुए हो, यह सारा ग्रुप निमित्त ही है ना तो सारा निमित्त ग्रुप अच्छा है। एक दो को सहयोग देके अभी भी चला रही हो, और अच्छा चला रही हो, बापदादा देखके दुआयें देते हैं। एक ने कहा दूसरे ने माना और कार्य सफल हो गया। रायबहादुर भी हो और कार्य कर्ता भी हो। लेकिन सब मिल करके चाहे पाण्डव निमित्त हैं, चाहे शक्तियां निमित्त हैं, लेकिन अच्छा चल रहा है, और अच्छा चलता रहेगा। यही बापदादा का वरदान है।

दादी निर्मलशान्ता से:- खुश रहती हो, खुशी में रहती हो, बीमारी में भी चिल्लाती नहीं हो यह बहुत अच्छा है। योग भी अच्छा लगा रही हो। यह बहुत अच्छा है। (दादी ने गीत गाया, खुश रहो आबाद रहो...) यह पाठ बहुत अच्छा है। अच्छा पार्ट बजा रही हो।

शान्तामणी दादी से :- अच्छा है शरीर को चलाते रहो चल जायेगा क्योंकि विल पावर है ना। इतने वर्षों की विल पावर काम में आती है। काम में लगा रही हो लगाते रहो। सेवा भी अच्छी कर रही हो।

मनोहर दादी से:- आदि रत्न सबकी नज़रों में हैं। कैसे भी हो, कहाँ भी हो लेकिन सबकी नज़र में आदि रत्न आदि ही हैं। सभी आदि रत्न हैं। विल पावर है।

(दादी जानकी जी ने कहा, बाबा बहुत अच्छा है) अच्छे बच्चे भी हैं ना। अच्छे बाप ने आप समान बनाया है। अच्छा।

आज विशेष ब्रह्मा बाप ने आप एक एक को याद करते हुए बहुत बहुत बाहों की माला पहनाई। (प्रैक्टिकल करके दिखायें) प्रैक्टिकल हो नहीं सकता ना, क्योंकि एक तो नहीं है सब हैं। सभी हकदार हैं। ब्रह्मा बाप को प्यार बहुत है बच्चों से। ऐसे ही दादी को भी भूलता नहीं है। बार बार याद आता है। कैसे है? कैसे चल रहा है? ठीक चल रहा है, मुझे सुनाया करो, कैसे हो रहा है? पूछती रहती है। फिर भी सखियां तो याद आयेंगी, पाण्डव भी याद आते हैं, यही पूछती है कारोबार ठीक चल रही है। ठीक चल रही है? ठीक चल रही है ना! दादी भी खुश और ब्रह्मा बाबा उनसे ज्यादा खुश। (दादी का पार्ट क्या है!) दादी सकाश और टचिंग देकर उन्हों को तीव्र करेगी। छोटेपन से ही उनके मन में बहुत प्लैन चलेंगे। (जन्म ले लिया है?) अभी नहीं। जन्म टाइम पर लेगी ना। अभी नहीं लिया। टाइम से ही लेना आजकल के समय में यथार्थ है। लेकिन आप सबसे मिलती रहेगी, सूक्ष्म।

(रमेश भाई ने सुनाया कि आपकी यादगार सोमनाथ जा रहे हैं) सन्देश तो सबको मिलता है लेकिन अभी ऐसा माइक और वारिस नहीं निकला है वह निकालो क्योंकि भक्ति के रूप से भी वो बहुत हैं, सन्देश देने का ठीक है लेकिन ऐसा कोई निमित्त बनें वह अभी पुरुषार्थ करो। निकल सकता है, मेहनत थोड़ी चाहिए क्योंकि भक्ति का प्रभाव तो है।

नारायण दादा तथा मनोज से: - खुश रहते हैं, शरीर निर्वाह की चिंता तो नहीं है! इसको है? नहीं। बेफिक्र है? कभी भी सोचना नहीं। आपका परिवार बेहद का है इसलिए बेफिक्र। कोई चिंता नहीं। (बाबा सेवा में लगा दो अभी) अच्छा राय करेंगे फिर बतायेंगे।

भूपाल भाई से:- बापदादा ने सभी को याद करके बांहों की माला पहनाई। सभी को याद करते हैं। दादी को अपनी भुजायें भी नहीं भूली हैं। बड़े तो छोड़ो लेकिन भुजायें भी नहीं भूली है।

''40 वर्ष की अव्यक्त पालना का रिटर्न - 4 बातें - शुभचिंतक बनो, शुभचिंतन करो, शुभ वृत्ति से शुभ वायुमण्डल बनाओ तथा (0) जीरो और हीरो की स्मृति में रहो''

आज बापदादा चारों ओर के अपने सेवा के साथी बच्चों से मिलने आये हैं। आदि सेवा के साथी और साथ में और भी सेवा के साथी बन बहुत अच्छी सेवा की वृद्धि कर रहे हैं, तो बापदादा अपने साथियों को देख खुश हो रहे हैं। और दिल में गीत गा रहे हैं वाह! मेरे विश्व परिवर्तन सेवा के साथी वाह! आज अमृतवेले से चारों ओर स्नेह की मालायें बापदादा को डाल रहे थे। तीन प्रकार की मालायें थी एक थी बाप समान बनने के उमंग-उत्साह की, दूसरी थी अति बिछुड़ी हुई बंधन वाली बांधेली गोपिकाओं की, उन्हों की मालायें तो थी लेकिन चमकते हुए अति अमूल्य आंसुओं की माला भी थी। एक-एक आंसू मोती समान चमक रहे थे और तीसरी माला कुछ-कुछ बच्चों की उल्हनों की थी।

आज अमृतवेले से लेके सभी में विशेष स्नेह समाया हुआ दिखाई दे रहा था। बापदादा ने विराट रूप जैसे बांहें पसार सब बच्चों को बांहों में समा लिया। वैसे आज का दिन स्नेह के साथ सर्व पावर्स की विल देने का भी था। एक बच्ची को हाथ में हाथ मिलाके विल पावर्स की विल सभी बच्चों को शक्ति सेना और पाण्डव, कई बच्चे पाण्डव भी और शक्तियां भी, बापदादा ने देखा, गुप्त रूप से अन्तर्मुखी बन पुरुषार्थ में तीव्र गति से चल रहे हैं। बाहर से दिखाई नहीं देते हैं लेकिन पुरुषार्थी अच्छे हैं। बापदादा ने देखा आज का विशेष रूप स्नेह का सबजेक्ट सभी के चेहरे चमका रहे थे। ज्ञानी तू आत्मा बच्चे तो हैं लेकिन स्नेह की सबजेक्ट आवश्यक है क्योंकि स्नेही मेहनत कम और मुहब्बत के अनुभव में सहज रहते हैं। स्नेह की शक्ति कैसी भी पहाड़ जैसी समस्या हो, पहाड़ को भी रूई बना देते हैं। पहाड़ को भी पानी जैसा हल्का बना देते हैं। स्नेह एक छत्रछाया है। छत्रछाया के कारण वह सदा सेफ रहता है। सहज होता है। स्नेह से परमात्मा वा भगवान को भी अपना दोस्त बना देते हैं। जो यादगार है खुदा दोस्त का। खुदा को दोस्त बनाके कोई भी समस्या दोस्ती के नाते से सहज कर देते हैं। बाप को अपना साथी बना देते हैं। ज्ञान बीज है, लेकिन प्रेम का पानी बीज में फल लगा देता है, प्राप्ति के फल। तो ऐसे बाप के स्नेही बच्चे बाप को याद करना मेहनत नहीं समझते हैं लेकिन भूलना मुश्किल समझते हैं। स्नेही कभी स्नेह को भूल नहीं सकता। मेरा बाबा कहा, दिल के स्नेह से और सर्व खजानों की चाबी मिल जाती है। तो दोनों बापदादा ऐसे स्नेही, जिनके आगे बापदादा भी हज़ूर हाज़िर हो जाता है। याद तो सब करते हैं लेकिन कोई थोड़ी थोड़ी मेहनत से करते हैं और कोई सदा स्नेह के सागर में लवलीन रहते हैं। दुनिया वाले कहते हैं आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती लेकिन आत्मा परमात्मा के प्यार में लव लीन हो जाती है। लीन नहीं होती लवलीन होती।

तो आज का दिन मुहब्बत में लवलीन का है। मेहनत समाप्त हो मुहब्बत के रूप में बदल जाती है। तो बापदादा ने सभी बच्चों की रिजल्ट भी देखी, होमवर्क मैजारिटी ने किया है। बाप समान बनने का लक्ष्य बार-बार रिवाइज भी किया, रियलाइज़ भी किया। 75 परसेन्ट बच्चों की रिजल्ट अच्छी रही। और यह बाप समान बनना ही है, कुछ भी तूफान आये, है ही कलियुग का समाप्ति का समय, तो तूफान तो आयेंगे, परिवर्तन का समय है ना, लेकिन आप बच्चों के लिए तूफान क्या है! तूफान, तूफान नहीं लेकिन तोहफा है क्योंकि बापदादा के वरदान का हाथ सभी पुरुषार्थी बच्चों के माथे पर है। जिन्होंने दृढ़ संकल्प अर्थात् दृढ़ता की चाबी कार्य में लगाई उन्हों की अभी की रिजल्ट प्रमाण सफलता भी प्राप्त की है लेकिन सदाकाल के लिए तूफान को तोहफा बनाए, समस्या को समाधान रूप दे आगे बढ़ते चलो। तो बापदादा अभी की रिजल्ट में खुश है। जो योग तपस्या की है उसमें लक्ष्य दृढ़ रखा है, बनना ही है।

40 वर्ष अव्यक्त पालना के पूरे हुए हैं। तो 40 वर्ष में पहले क्या आता - बिन्दू, जीरो। तो जीरो याद दिलाता कि मैं हीरो, सच्चा हीरो, महान हीरो हूँ और हीरो पार्टधारी बन हर कार्य हीरो समान करना है। तो जीरो, हीरो यह सदा याद रहे और बाकी जो चार हैं, उसमें चार बातें नेचुरल जीवन में करनी है, दृढ़ता पूर्वक करनी हैं, करेंगे? तैयार हैं? कुछ भी पेपर आवे लेकिन चार बातें अपने जीवन में करनी ही है। पक्का? पक्का? पक्का? पीछे वाले, पक्के हैं ना! कच्चे को माया

खा जाती है इसीलिए पक्का रहना। एक बात - सदा शुभचिंतक, कोई की कमजोरी देख वा सुन रहमदिल बन शुभ चिंतक बन उनको सहयोग देना ही है। कमजोरी को नहीं देखना है लेकिन सहयोग देना ही है। इसको कहते हैं शुभ चिंतक। पक्का रहेगा ना! सहारे दाता, रहमदिल बन सहयोग दो। उससे किनारा या घृणा नहीं करना, क्षमा करना। परवश के ऊपर कभी घृणा नहीं की जाती है। सहारा दिया जाता है। तो शुभ चिंतक और दूसरा है शुभ चिंतन। आजकल बापदादा देखते हैं - मैजारिटी बच्चों में कभी-कभी व्यर्थ संकल्प बहुत चलता है, इसमें अपनी जमा हुई शक्तियां व्यर्थ चली जाती हैं, इसलिए शुभ चिंतन की, स्वमान का कोई न कोई अपना टाइटिल मन को होमवर्क दे दो, मन का टाइमटेबल बनाओ, कर्म का तो टाइमटेबल बनाते हो लेकिन मन का टाइमटेबल बनाओ। स्वमान, अमृतवेले मिलन मनाने के बाद मन को दे दो लेकिन जैसे सुनाया है कि 12-13 बारी सभी को टाइम मिलता है, उसमें रियलाइज भी करो, रिवाइज भी करो तो मन बिजी रहने से व्यर्थ संकल्प में समय नहीं जायेगा, मेहनत नहीं करनी पड़ेगी, हर समय संगमयुग जो मौज का युग है, उसी मौज में रहेंगे। तो दूसरा सुनाया - शुभचिंतन। चेक करो और चेंज करो। तीसरा है - शुभ वृत्ति। अशुभ वृत्ति वायुमण्डल भी अशुद्ध फैलाती है इसीलिए शुभ वृत्ति। और चौथा है हर एक को यह जिम्मेवारी लेनी है कि मुझे, मेरा काम है खास, दूसरे को नहीं देखना है, मेरा काम है शुभ वायुमण्डल बनाना। जैसे कभी भी वायुमण्डल में बदबू होती है तो क्या करते हो? खुशबू फैलाते हो ना! बदबू सहन नहीं होती, कोई न कोई खुशबू का साधन अपनाते हो, ऐसे साधारण वायुमण्डल वा अशुभ वायुमण्डल बदलना ही है। चाहे छोटा है, चाहे नया है, लेकिन सबकी जिम्मेवारी है। दृढ़ संकल्प करना है मुझे शुभ वायुमण्डल बनाना ही है। यह प्रतिज्ञा प्रत्यक्षता करेगी। प्रतिज्ञा करते हो, बापदादा खुश होता है लेकिन प्रतिज्ञा में कभी-कभी दृढ़ता नहीं होती है इसीलिए सफलता जो चाहते हो, जितनी चाहते हो उतनी नहीं होती। सारे विश्व का, प्रकृति का, आत्माओं का, आत्माओं में ब्राह्मण आत्मायें भी आ जाती हैं, हर एक अपने सेवास्थान का ऐसा वायुमण्डल दृढ़ता से बनाओ, कुछ त्याग करना पड़े तो कर लो, त्याग करे तो मैं करूं, नहीं। सिस्टम ठीक हो तो... तो तो नहीं करो। मुझे तो करना ही है। विश्व परिवर्तक स्वमान है ना! सभी विश्व परिवर्तक हो ना! हाथ उठाओ। अच्छा विश्व परिवर्तक। बहुत अच्छा। तो पहले बापदादा देखने चाहते हैं, है भी होगा भी लेकिन इस वर्ष में बापदादा छोटे या बड़े सेवाकेन्द्र का चक्कर लगावे तो वायुमण्डल कैसा हो? जैसे आज का दिन स्नेह और शक्ति का है, ऐसे गांव-गांव का सेन्टर, बड़ा सेन्टर का वायुमण्डल चैतन्य मन्दिर हो। निगेटिव को पॉजिटिव बनाना इसमें पहले मैं। पहले आप नहीं करना, पहले मैं, क्योंकि बापदादा और एडवांस पार्टी और आजकल तो प्रकृति भी इन्तजार कर रही है। इन्तजाम करने वाले आप हो, आपको इन्तजार नहीं करना है, इन्तजाम करना है।

आज चारों ओर भय फैला हुआ है, सबके दिल में एक ही संकल्प है मैजारिटी दुनिया वालों के, कल क्या होगा! आपको पता है कल क्या होगा! तो परिवर्तन करने में पहले मैं निमित्त बनूंगा, यह संकल्प कौन करता है? इसमें हाथ उठाओ। करना पड़ेगा। करना पड़ेगा। बदलना पड़ेगा। रक्षक बनना पड़ेगा। कुछ छोड़ना पड़ेगा और प्यार लेना पड़ेगा। मन का हाथ उठाया या यह हाथ उठाया! किसने मन का हाथ उठाया। क्योंकि मन बदला तो विश्व बदला। तो इस वर्ष में क्या स्लोगन होगा? क्या स्लोगन होगा? ''नो प्राबलम''। विजय का झण्डा दिल में लहरेगा। और सभी खुशी की डांस सदा मन में करेंगे, मन की डांस है खुशी। तो हर समय खुशी की डांस करेंगे। और दाता के बच्चे हो तो जो भी आवे हर एक को कोई न कोई गुण की गिफ्ट दो। तो एक सेकण्ड में वह दृढ़ संकल्प, दाता का संकल्प लिफ्ट बन जायेगा और सेकण्ड में परमधाम, सूक्ष्मवतन, स्थूल मधुबन साकार वतन, जहाँ चाहेंगे वहाँ बिना मेहनत के सेकण्ड में पहुंच जायेंगे। कोई भी सामने आये उसको खाली हाथ नहीं भेजना, कोई न कोई गुण की, चेहरे से, चलन से, मुख से गुण की सौगात के बिना नहीं मिलना।

तो इस वर्ष का हर मास रिजल्ट अपने पास भी रखना और यज्ञ में टीचर द्वारा ओ.के. का कार्ड भेजना, लम्बा पत्र नहीं भेजना, ओ.के. का कार्ड भेजना। कार्ड भी लम्बा नहीं भेजना, जो दुनिया में कार्ड चलता है वह नहीं, टीचर द्वारा जो वरदान का कार्ड मिलता है वह भेजना। गुणों की सौगात, शक्तियों की सौगात कितनी है? लिस्ट गिनती करो तो कितनी बड़ी लिस्ट है। और जितना देंगे उतनी कम नहीं होगी बढ़ती जायेगी। जैसे कहते हैं ना छू मन्त्र, तो यह शिव मन्त्र कभी कोई

गुण आपसे कम नहीं होगा, और ही बढ़ेगा क्योंकि कहावत है दे दान छूटे ग्रहण। अच्छा।

इस बारी जो पहले बारी आये हैं वह उठके खड़े हों। अच्छा है - (एम.पी. के राज्यपाल सामने बैठे है) इस संगठन में पधारे हो, अच्छा है। बापदादा आप सभी को, आने वालों को यह वरदान दे रहे हैं कि सदा बाप से गुडमार्निंग और गुडनाइट जरूर करना। क्योंकि पहले-पहले आंख खुलते ही बाप को देखेंगे तो सारा दिन अच्छा होगा। तो पहले बारी आने वाले बच्चों को बापदादा का पदमगुणा यादप्यार और बधाई हो। अच्छा। आज टर्न किसका है?

सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है:- अच्छा, निशानी अच्छी रखी है (सबके हाथ में कमल का फूल है) अच्छा। इन्दौर कहेंगे ना इसको, इन्दौर का अर्थ क्या है? इन डोर अर्थात् अन्तर्मुखी। यह जो निशानी रखी है, इस निशानी अनुसार सदा कमल पुष्प समान न्यारे और बाप के प्यारे। अन्तर्मुखी सदा सुखी। अन्तर्मुखी सदा बाप के दिलतख्तनशीन हैं। अन्तर्मुखी सदा सर्व के प्यारे होते हैं। अच्छा अन्दाज भी काफी आया है, मुबारक हो। यज्ञ सेवा का गोल्डन चांस मिलना यह बहुत बड़ा पुण्य जमा करने का है, हर कदम यज्ञ सेवा करना अर्थात् अपना पुण्य जमा करना। तो इन 10-15 दिन में हर कदम सेवा किया तो कितने पदम बने? यज्ञ सेवा महान सेवा है। और बापदादा ने देखा है कि जो भी ज़ोन यह गोल्डन चांस लेता है वह बहुत सिक व प्यार से सेवा करते हैं। रिजल्ट वेरी गुड होती है। तो आप सबकी भी रिजल्ट अच्छी है और अच्छे ते अच्छी रहेगी। अभी यह बात याद रखना कि मैं कौन! कमल। कमल जल में रहते न्यारा रहता, वैसे कोई भी समस्या या कोई भी वायुमण्डल में रहते न्यारा और प्यारा क्योकि समय तो दु:ख का है, भय का है लेकिन आपके लिए सदा मन में खुशी के नगाड़े बजते रहते हैं। सदा खुश रहते हो ना! हाथ उठाओ। खुशी को नहीं छोड़ना। खुशी गई तो जीवन बेकार। नीरस जीवन अच्छी नहीं। इसलिए सदा खुश रहना है, रहना है ना और खुशी बांटनी है। इतनी खुशी हो जो बांटों भी और खुश रहो भी क्योंकि बाप का ब्राह्मण बच्चा बनना अर्थात् खुशनसीब बनना, खुशकिस्मत बनना। अपना खुशनसीब का टाइटिल सदा याद रखना क्योंकि बाप मिला अर्थात् सर्व प्राप्तियों का भण्डार मिला। तो कहावत है भण्डारा भरपूर, सब दु:ख दूर तो क्या करेंगे! खुश ही रहेंगे ना! अच्छी सेवा भी कर रहे हो। सेवा करना अर्थात् वरदान प्राप्त करना। तो सेवा में सफलतामूर्त हैं ना! कांध हिलाओ। टीचर्स, सफलतामूर्त हैं ना! कहो सफलता तो हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। बोलो। सफलता हमारे गले का हार है। अच्छा।

मेडिकल विंग:- अच्छा, मेडिकल और मेडीटेशन दोनों का ग्रुप है, क्योंकि डबल डाक्टर हैं ना मेडीटेशन द्वारा बाप से मिलाना और मेडिकल द्वारा दु:ख दूर करना। टैम्प्रेरी है लेकिन करते तो है ना। जैसे बाप दु:ख हर्ता है ना तो डाक्टर्स या मेडिकल डिपार्टमेंट भी थोड़े समय के लिए पेशेन्ट का दु:ख तो दूर कर देते हैं। लेकिन अभी तो आप सभी उसको मेडीटेशन सिखाके यह भी पुण्य कमाने वाले मेडिकल डिपार्टमेंट हो। सभी डबल सेवा करते हो। हाथ उठाओ जो डबल सेवा करते हैं, डबल डाक्टर हैं। सिंगल डाक्टर तो बहुत हैं लेकिन आप डबल सेवाधारी डबल काम करने वाले हो। बापदादा को अच्छा लगा। इस सेवा द्वारा भी कई खुश होंगे, खुशनसीब बनेंगे। बापदादा ने देखा कि यह बाम्बे की हॉस्पिटल भी बहुत सेवा के निमित्त है। आबू की तो पहले ही है लेकिन वह बीच में शहर में होने कारण ज्यादा सेवा करने का चांस है। अच्छा कर रहे हो और आगे बढ़ते रहेंगे, आगे बढ़ने का चांस और वरदान दोनों है। अच्छा है। अभी नया प्लैन बनाया है ना कोई। बनाया है? अच्छा, बनाते चलो, परिवर्तन विश्व का करते चलो, उड़ते चलो और उड़ाते चलो। अच्छा।

यूथ ग्रुप:- आजकल की गवर्मेन्ट का भी युवा के लिए बहुत उमंग है, संकल्प है क्योंकि युवा की विशेषता है जो चाहेगा, जो सोचेगा वह करके ही दिखाता है। युवा की डबल शक्ति है, शारीरिक भी और मन की भी। युवा संगठित होके जो चाहे वह कर सकते हैं, पाण्डव गवर्मेन्ट भी देख रही है कि युवा चारों ओर खास अपने स्कूल साथियों की सेवा अच्छी कर रहे हैं। बापदादा के पास युवा वर्ग की रिपोर्ट आती रहती है। अभी एडीशन यह करो कि इस वर्ष में जो भी ब्राह्मणों की मर्यादायें हैं, एक एक मर्यादा को पूर्ण रीति से, मन्सा से, वाचा से, कर्मणा से और सम्बन्ध-सम्पर्क से, चारों ही रूप में पालन करने वाला हो - ऐसा ग्रुप तैयार करो, इस वर्ष में कोई भी मर्यादा भंग न हो। ऐसा ग्रुप बनाओ, आपस में बनाओ। जो ओटे सो अर्जुन। पसन्द है? कौन करेगा? आप करेंगे? हाथ उठाओ। करेंगे? सभी युवा करेंगे? कितने हैं? (400) आपस में ग्रुप ग्रुप में पक्का करो फिर गवर्मेन्ट को दिखायेंगे कि यह मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। गवर्मेन्ट भी चाहती है

लेकिन कर नहीं पाती है आप करके दिखाओ। एक्जैम्पुल बनके दिखाओ। होमवर्क मिल गया ना। बापदादा यही चाहते हैं कि चारों ओर के ब्राह्मण आत्मायें इस वर्ष में कमाल करके दिखायें। व्यर्थ संकल्प की धमाल भी नहीं हो। शुद्ध संकल्प इतना जमा करो जो व्यर्थ को आने का समय नहीं मिले। है ना खजाना। शुद्ध संकल्प का इतना खजाना इकट्ठा है? है हाथ उठाओ। शक्तियां भी हैं, अच्छा है, शक्तियां भी एक्जैम्पुल बनें और पाण्डव भी एक्जैम्पुल बनें। अच्छा। बापदादा खुश है।

सिक्युरिटी विंग:- सिक्युरिटी वाले हैं, आप भी डबल सिक्युरिटी वाले हो ना! एक तो जो हंगामा करने वाले हैं, उनसे सिक्युरिटी करते हो, दूसरे जो बिचारे चाहना रखते हैं कि हम सदा सुख में रहे, शान्ति में रहे, उनकी भी सिक्युरिटी करो, उन्हों को मनमनाभव का मन्त्र देकर शिव मन्त्र देकरके कम से कम खुश रहें, खुशी की सिक्युरिटी, खुशी गंवायें नहीं यह सिक्युरिटी का रास्ता बताओ। तो डबल सिक्युरिटी करो तो कितनी आपको आशीर्वाद मिलेगी। दु:खी को सुखी करना, गमगीन को खुश करना तो आशीर्वाद मिलेगी और ऐसा हर एक के घर को छोटा सा मन्त्र दो, जो खुशी नहीं गंवाये, हर घर में खुशी हो, जितनी यह सेवा करेंगे तो डबल सिक्युरिटी वाले बन जायेंगे। फैलाओ। हर स्थान पर यह रेसपान्सिबिल्टी दो, हैं तो सब स्थान वाले, अपने देश में पहले यह सिक्युरिटी का काम करो, गांव गांव, बड़े बड़े स्थान, खुशनुमा हो जायें। तो करेंगे? करेंगे? अच्छा।

अभी सभी सदा जो चार बातें सुनाई और पांचवा जीरो और हीरो सुनाया, तो इन बातों का मनन करते हुए मग्न अवस्था में रहने वाले ब्राह्मण सो फरिश्ता आत्मायें, देवता बनना तो आपका जन्म सिद्ध अधिकार है, फरिश्ता सो देवता है ही, तो सदा स्नेह के लव में लीन, लवलीन रहने वाले, सदा दृढ़ता के संकल्प की चाबी को मन में, बुद्धि में स्मृति में रखने वाले, क्योंकि इस चाबी के पीछे माया बहुत चक्कर लगाती है। तो मन और बुद्धि से सदा समर्थ रहने वाले चारों ओर के बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादियों से:-(दादी जानकी से) चक्कर लगाकर आई बहुत अच्छा। जो कर रहे हैं बहुत अच्छा। बाबा को चित्र याद आया कि जगदम्बा बीच में खड़ी है झण्डा लहरा रहे हैं और पीछे सब शक्तियां साथ में खड़ी है। तो अभी वह चित्र बापदादा विश्व के आगे दिखाना चाहता है। सारे ब्राह्मणों से शक्ति सेना ऐसी तैयार करो जो निमित्त बनें, चक्कर लगाते हुए वायुमण्डल को पावरफुल बनाये और दृढ़ संकल्प करे तो हम यह दृढ़ संकल्प रखते हैं कि हम वायुमण्डल को बदलके दिखायेंगे। यह झण्डा उठायें। ऐसा ग्रुप निकालो जो चक्कर लगाके वायुमण्डल को ठीक करे, अपनी स्थिति, वाणी और संग से। ऐसा ग्रुप तैयार करके दिखाओ। तो बापदादा को चित्र याद आया तो यह प्रैक्टिकल होना चाहिए। ऐसे नहीं कहना समय नहीं मिलता। कोई नहीं कहेगा, समय नहीं मिलता। समय मिलेगा अगर शुभ भावना है तो, ऐसा ग्रुप बापदादा को बनाके देना।

परदादी से: सेवा कर रही हो, मन्सा सेवा से सकाश बहुत दे रही हो। सेवा में बिजी रहती हो।

कलकत्ता वालों ने फूलों का श्रंगार किया है:- अच्छा, हमेशा करते हैं।

(डाक्टर अशोक मेहता जी और योगिनी बहन से) दोनों ने हिम्मत अच्छी रखी और समय पर पहुंचाया,(दादी गुल्जार को कल बाम्बे से मधुबन लेकर आये) इसकी मुबारक हो। जो ड्युटी दी वह की।

अव्यक्त बापदादा से - मध्यप्रदेश के राज्यपाल महामहिम बलराम जाखड़ जी मिल रहे हैं:

बहुत अच्छा, देखो, यह भी आपका भाग्य है जो ऐसे संगठन में पहुंचे हो। अभी बापदादा यही कहते हैं कि जो इस संगठन में मेडीटेशन सिखाते हैं ना, मेडीटेशन तीन घण्टे का है। तो यह जरूर करना। देखो, तीन घण्टा अलग अलग देना है। अगर बिजी हो तो छुट्टी के दिन दो। अच्छा है। क्योंकि बाप के पास आये हो तो बाप सौगात तो देंगे ना। आशीर्वाद यह है कि मेडीटेशन द्वारा सदा खुश रहेंगे। खुशी कभी नहीं गंवाना। कभी भी कोई बात आवे, कहो बाबा, शिवबाबा। वह बात बाप को दे दो, आप खुश रहो।

''ब्रह्मा बाप समान नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने के लिए, मन का टाइमटेबल बनाकर कर्म करते कर्मयोगी अशरीरी बनने का अभ्यास करो''

आज चारों ओर के बच्चों में विशेष स्नेह समाया हुआ है। आज के दिन को कहते ही हैं स्मृति दिवस। बापदादा ने अमृतवेले से चारों ओर देखा, चाहे देश में, चाहे विदेश में सभी बच्चों के दिल में बाप के स्नेह की तस्वीर दिखाई दी। और बाप के दिल में भी हर एक बच्चे के स्नेह की तस्वीर समाई हुई थी। आज के दिन को विशेष स्नेह का, स्मृति का दिवस कहते हो। बापदादा ने अमृतवेले से भी पहले बच्चों के तरफ से अनेक स्नेह के मोतियों की मालायें देखी। हर एक बच्चे के दिल में आटोमेटिक यह गीत बज रहा है - मेरा बाबा, ब्रह्मा बाबा, मीठा बाबा। और बापदादा के दिल में यह गीत बज रहा है मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे। आज हर एक के अन्दर और शक्तियों के सिवाए स्नेह की शक्ति ज्यादा समाई हुई है। यह परमात्म स्नेह, ईश्वरीय स्नेह सिर्फ संगमयुग पर ही अनुभव होता है। यह परमात्म स्नेह जो अनुभवी जाने, हर एक बच्चे को सहजयोगी बना देता है। बापदादा ने देखा सर्व बच्चों में स्नेह का अनुभव बहुत-बहुत समाया हुआ है। आप सबका जन्म का आधार स्नेह है। ऐसा कोई भी बच्चा नहीं दिखाई देता, और शक्तियां कम भी हों लेकिन बाप का स्नेह या निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं के स्नेह का अनुभव मैजारिटी सभी के दिल में, चेहरे में दिखाई देता है। अभी आप सबको आज विशेष यहाँ तक किसने पहुंचाया? किस विमान में आये? ट्रेन में आये या विमान में आये? सबकी सूरत में स्नेह के प्लेन से पहुंच गये। कुछ भी करना पड़ा लेकिन स्नेह के प्लेन में सभी पहुंच गये हो।

आज के दिन को स्मृति दिवस कहा जाता है लेकिन स्मृति दिवस के साथ-साथ समर्थी दिवस भी कहा जाता है। आज के दिन को ताजपोशी का दिन भी कहा जाता है क्योंकि आज के दिन बापदादा ने विशेष ब्रह्मा बाप ने निमित्त बने हुए महावीर बच्चों को विश्व सेवा का ताज पहनाया। बाप, ब्रह्मा बाप खुद अननोन हुए और बच्चों को विश्व सेवा के स्मृति का तिलक दिया। बच्चों को करनहार बनाया और स्वयं करावनहार बनें। अपने समान फरिश्ते रूप का वरदान देकर लाइट का ताज पहनाया और बापदादा ने जो ताज, तिलक का वरदान दिया, उसी प्रमाण बच्चों का कर्तव्य देख खुश है। बच्चों ने सेवा का वरदान कार्य में लाया, यह देख बापदादा खुश है। अभी तक जो पार्ट बजाया है और आगे भी बजाना है, उसकी पदमगुणा ब्रह्मा बाप विशेष मुबारक दे रहे हैं। वाह बच्चे वाह! विदेश में भी चक्कर लगाया तो क्या देखा? हर बच्चा स्नेह में समाया हुआ है। जो बाप द्वारा समर्थियाँ मिली हैं क्योंकि यह दिन विशेष स्नेह से समर्थियों का वरदान प्राप्त करने का दिन है। बापदादा ने देखा कोई-कोई बच्चे बहुत अच्छे लगन में याद में, सेवा में लगे हुए हैं। अमृतवेला बहुत अच्छी रीति से अनुभव करते हैं। अशरीरीपन का भी अनुभव करते हैं लेकिन जब कर्मयोगी बनने का समय आता है तो दोनों काम योगी का भी और कर्म का भी, दो काम इकट्ठा करने में फर्क पड़ जाता है। पुरुषार्थ करते हैं कि कर्म और योग का बैलेन्स हो लेकिन जैसे अमृतवेले शक्तिशाली अवस्था का अनुभव करते हैं, वैसे कर्म में फर्क पड़ जाता है, मेहनत करनी पड़ती है और बापदादा ने सभी बच्चों को कह दिया है कि विश्व का विनाश अचानक होना है, अगर सारा दिन अटेन्शन के बजाए, किसी भी धारणा की कमी होने के कारण कर्मयोगी की स्टेज में फर्क आता है तो विश्व के विनाश की डेट तो बापदादा अनाउन्स नहीं करेंगे लेकिन अपना जीवन काल समाप्त कब होना है, यह मालूम है? कोई को मालूम है कि मेरा मृत्यु फलानी डेट पर होना है, है मालूम? वह हाथ उठाओ। अचानक कुछ भी हो सकता है, कोई प्रकृति का कारण बनता है तो कितने का मृत्यु साथ में हो जाता है। तो विश्व के डेट के संकल्प से अलबेला नहीं बनना। आपकी जगदम्बा का स्लोगन था - तो कभी भी कब नहीं कहो, अब। कल कुछ भी हो जाए लेकिन मुझे एवररेडी रहना ही है। तो इतनी तैयारी सबके अटेन्शन में है? अपना कर्मों का हिसाब चुक्तू किया है? चार ही सबजेक्ट ज्ञान, योग, सेवा और धारणा, चार ही तरफ, चारों में ऐसी तैयारी है? पूरा बेहद के वैराग्य का अनुभव चेक किया है? अपनी दिल में यह चेक

किया है कि एवररेडी हैं? नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप क्योंकि ब्रह्मा बाप ने भी स्वयं को पुरुषार्थ करके ऐसा बनाया जो अनुभवी बच्चों ने देखा, कोई भी तरफ यह वातावरण नहीं था, कोई हिसाब किताब का, अचानक अशरीरी बनने का अभ्यास अशरीरी बनाकर उड़ गये। कोई ने समझा कि ब्रह्मा बाप जाने वाले हैं! लेकिन नष्टोमोहा, बच्चों के हाथ में हाथ होते कहाँ आकर्षण रही? फरिश्ता बन गये। बच्चों को फरिश्ते बनाने का तिलक दे गये। इसका कारण बहुत समय अशरीरीपन का अभ्यास रहा। कई अनुभवी बच्चे जो साथ रहे हैं उन्होंने अनुभव किया, कर्म करते करते ऐसे अशरीरी बन जाते। तो यह जो कर्मयोग में अन्तर पड़ जाता है, इसका कारण कर्म करते यह स्मृति में इमर्ज नहीं होता, मैं आत्मा हूँ, यह तो सब जानते ही हैं लेकिन मैं आत्मा, कौन सी आत्मा हूँ? मैं करावनहार आत्मा हूँ और यह कर्मेन्द्रियां करनहार हैं, यह करावनहार का स्वमान कर्म करते स्मृति स्वरूप में रहे, चाहे कर्मेन्द्रियों से कर्म कराना है लेकिन मैं करावनहार हूँ, मालिक हूँ, इस सीट पर अगर सेट है तो कोई भी कर्मेन्द्रिय आर्डर में रहेगी। बिना सीट पर सेट होते कोई किसका नहीं मानता। तो करावनहार आत्मा हूँ, यह कर्मेन्द्रियां करनहार हैं, करावनहार नहीं है। जैसे ब्रह्मा बाप का अनुभव सुना कि ब्रह्मा बाप ने शुरू में यह अभ्यास किया जो रोज़ समाप्ति के समय इन कर्मेन्द्रियों की राज दरबार लगाते थे। पुराने बच्चों ने वह डायरी देखी होगी तो रोज दरबार लगाते थे और करावनहार मालिक बन हर कर्मेन्द्रियों का समाचार लेते थे, देते थे। इतना अटेन्शन शुरू में ही ब्रह्मा बाप ने भी किया तो आपको भी करावनहार मालिक समझ, क्योंकि आत्मा राजा है यह कर्मेन्द्रियां साथी हैं। तो यह चेक करना चाहिए कि आज के दिन विशेष मन-बुद्धि संस्कार, स्वभाव कहो संस्कार कहो इन्हों का क्या हाल रहा? और फौरन चेक करने से कर्मेन्द्रियों को अटेन्शन रहता है कि हमारा राजा हमारा हालचाल लेगा, तो आत्मा राजा करनहार कर्मेन्द्रियों से करावनहार बन चेक करो। नहीं तो देखा गया है कई बच्चे कहते हैं कि हम कर्मेन्द्रियों को आर्डर करते हैं लेकिन फिर हो जाता है। पुरुषार्थ करते हैं लेकिन कोई-कोई संस्कार या स्वभाव आर्डर में नहीं रहते। उसका कारण इसी अपने स्वमान की सीट पर सेट नहीं रहते। बिना सीट पर बैठने के आर्डर कितना भी करो तो आर्डर मानने वाले मानते नहीं हैं। तो कर्म करते अपने करावनहार मालिकपन की सीट पर सेट रहो। कई बच्चे यह भी बापदादा से रूहरिहान करते कि बाबा आपने हमें सर्व शक्तिवान बनाया, शक्तिवान भी नहीं सर्वशक्तिवान का वरदान हर एक बच्चे को ब्राह्मण जन्म लेते हुए दिया है, याद है अपने जन्म का वरदान! हर एक बच्चे को बाप ने मास्टर सर्वशक्तिवान भव का वरदान दिया है। किसने वरदान दिया? आलमाइटी अथॉरिटी ने। लेकिन कम्पलेन करते हैं कि जिस समय जो शक्ति चाहिए वह आती नहीं है। आर्डर नहीं मानती है। वह क्यों? जब आलमाइटी अथॉरिटी का वरदान है, उससे बड़ा कोई नहीं। तो वरदान के स्थिति में स्थित रहकरके अगर आर्डर करो तो हो नहीं सकता कि आप आर्डर करो और शक्ति नहीं मानें। एक तो आत्मा मालिक है, सर्वशक्तिवान का वरदान मिला हुआ है, उस स्वरूप में स्थित होके मालिक हूँ, वरदान है, दोनों स्वरूप की स्मृति के स्थिति में रहके आर्डर करो। शक्ति आपका नहीं मानें असम्भव क्योंकि वरदान और बाप के प्रापर्टी का अधिकार संगमयुग पर आप सबको सर्वशक्तिवान का टाइटिल मिला है सिर्फ उस स्थिति में स्थित नहीं रहते। सदा नहीं रहते। कभी-कभी आ जाता है। यह कभी शब्द अपने ब्राह्मण डिक्शनरी से निकाल दो। अभी अभी हाजिर। आप कहते हो ना कि बाबा आपको हम याद करते हैं तो आप हाजिर हो जाते हैं। है अनुभव? हाथ उठाओ। अनुभव है? अभी देखो, हाथ तो उठा रहे हो। बाप हाजिर हो जाता। हज़ूर हाजिर हो जाता, तो यह शक्ति क्या है? यह शक्तियां भी आपको बाप के प्रापर्टी में मिली हैं। तो मालिक बनके आर्डर करो। मालिक बनके आर्डर नहीं करते हो, शक्ति खो जाती है ना तो उसी स्थिति में रहते हुए आर्डर करते हो, तो मालिक ही नहीं है आर्डर क्यों मानें!

तो बापदादा अभी क्या चाहते हैं? पता है ना! बाप अभी यही चाहते हैं कि मेरा एक-एक बच्चा कर्म करते हुए भी राजा बच्चा बन, स्वराज्य अधिकारी बन स्वराज्य की सीट को नहीं छोड़े। तो राजा सारा दिन राजा ही होता है ना! कि कभी राजा होता है कभी नहीं। तख्त पर बैठना या नहीं बैठना वह अलग बात है लेकिन घर में भी रहते मैं राजा हूँ, यह तो नहीं भूलता। तो कर्मयोगी और अमृतवेले के यथार्थ योग शक्तिशाली स्थिति उसमें फर्क नहीं पड़ना चाहिए। डबल काम है लेकिन आप कौन हो? आप तो विश्व के परिवर्तक हो, विश्व कल्याणकारी हो। इसलिए बाप

यही चाहते कि चलते-फिरते राजापन नहीं भूलो, सीट को नहीं छोड़ो। बिना सीट के कोई आर्डर नहीं मानता। आजकल देखो सीट के पीछे कितना कुछ करते हैं? अपना हक लेने के लिए कितना प्रयत्न करते। अपना हक कोई छोड़ने नहीं चाहता। तो आप अपना परमात्म हक मैं कौन! हर समय जो काम करते हो तो काम करते भी अपने मन का टाइमटेबल बनाके रखो। यह काम करते हुए मन का स्वमान क्या रहेगा? आज के दिन कौन सा लक्ष्य रखूंगा? हर काम के टाइम जो भी अपने स्वमान की लिस्ट है, भले भिन्न-भिन्न टाइमटेबल बनाओ जैसे स्थूल कर्म का टाइमटेबल फिक्स करते हो वैसे मन का टाइमटेबल फिक्स करो। मालूम तो है इस समय यह काम करना है, उसके साथ स्वमान कौन सा रखना है? मालिकपन का अधिकार किस स्वमान के रूप में रखना है, यह मन का टाइमटेबल बनाओ। टाइमटेबल बनाने आता है ना! माताओं को आता है? मातायें अपना आपेही प्रोग्राम बनाओ। अच्छा खाना बनाना है उस समय कौन सा स्वमान अपनी बुद्धि में इमर्ज रखना है। बहुत माला है स्वमान की। इतनी बड़ी माला है जो स्वमान गिनती करते जाओ और माला में समा जाओ। तो अभी बहुतकाल का भी कोई बच्चे कहते हैं, अभी तक तो विनाश का कुछ दिखाई नहीं देता है। अभी तो डेट फिक्स नहीं है, कर लेंगे, हो जायेगा, यह अलबेलापन है। सन्देश देने में भी विश्व कल्याणकारी हैं, तो कई बच्चे समझते हैं अभी समय पड़ा है, आगे चलके सन्देश दे देंगे, लेकिन नहीं। जिनको पीछे सन्देश देंगे वह भी आपको उल्हना देंगे क्या उल्हना देंगे? आपने पहले क्यों नहीं बताया तो हम भी कुछ कर लेते थे, अभी आपने लास्ट में बताया। तो हम तो सिर्फ पहचान कर अहो प्रभू तेरी लीला अपार है, यही कह सकेंगे। पद तो पा नहीं सकेंगे। क्यों? बहुत समय का भी सहयोग चाहिए। आप सभी वारिस बैठे हो ना! जो अपने को समझते हैं हम वारिस हैं, वह हाथ उठाओ, वारिस हैं? अच्छा, वारिस हैं तो आपको फुल वर्सा पाना है या थोड़ा? सभी कहेंगे फुल वर्सा पाना है। तो फुल वर्सा है 21 जन्म पूरे, आदि से अन्त तक रॉयल प्रजा नहीं, रॉयल फैमिली में आना। राज्य फैमिली में आना। तख्त पर तो एक ही बैठेंगे ना। युगल बैठेंगे। लेकिन वहाँ की सभा जब भी लगती है तो रॉयल फैमिली के विशेष निमित्त आत्मायें वह ताजधारी बनके बैठते हैं। बिना ताज नहीं बैठते हैं। और हर कार्य में सलाह, राय देने वाले ऐसे नहीं कि सिर्फ वह राज्य करेगा, साथ में राय से ही करते हैं इसलिए अगर सम्पूर्ण वर्सा लेना है तो पहले जन्म से लेके अन्त तक 21 जन्म पूरे आधे भी नहीं, बीच में तो जाना नहीं है, अकाले मृत्यु तो होना नहीं है। तो पूरा वर्सा लेना है कि थोड़े में खुश होना है? आपकी मातेश्वरी जगत अम्बा सदा यह लक्ष्य रखती थी बापदादा ने जो श्रीमत, चाहे मन्सा चाहे वाचा चाहे कर्मणा, जो भी श्रीमत दी वह हमें करना ही है। ऐसे पूरा वर्सा लेने वाले यही लक्ष्य बुद्धि में रखो कि अचानक एवररेडी और बहुत समय, तीनों ही शब्द साथ में याद रखो। इसलिए बापदादा के सभी आशाओं के दीपक बच्चों प्रति यही वरदान है कि सदा यह तीनों ही शब्द याद रखकर सभी आशाओं के दीपक बनने का प्रत्यक्ष सबूत दिखाओ।

बापदादा ने देखा बच्चों ने भिन्न-भिन्न प्रकार के कोर्स बनाये हैं। अच्छा है। बापदादा मुबारक देते हैं लेकिन अब समय प्रमाण कोर्स के बजाए फोर्स का कोर्स कराओ। ऐसा फोर्स का कोर्स कराओ जो वह आत्मायें बाप के सिर्फ स्नेही-सहयोगी नहीं बनें लेकिन हर श्रीमत को पालन करने वाली फोर्स, सर्व फोर्स भरने वाली आत्मा बनें। समीप का रत्न बनें। यह हो सकता है? अभी फोर्स का कोर्स कराओ। क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि अभी प्रकृति हलचल में आ गई इसलिए कोई न कोई कारण प्रकृति की हलचल अपना प्रभाव दिखा रही है और दिखाती रहेगी। जो ख्याल ख्वाब में बातें नहीं हैं वह प्रैक्टिकल देखते चलेंगे। तो प्रकृति को भी सतोप्रधान बनाना है। अभी तो अपने-अपने प्रभाव डाल रही है, इसलिए समय प्रति समय नई-नई बातें होती रहती हैं। लेकिन आप सब तो वारिस हो ना! सिर्फ स्नेही सहयोगी नहीं वारिस, फुल अधिकारी। है? वारिस हैं ना! वारिस है! डबल फारेनर्स भी वारिस हैं ना! वारिस है? फुल वर्सा लेने वाले। अधूरा नहीं। पाण्डव फुल वर्सा लेने वाले हो?

तो बापदादा की आशा का दीपक हूँ। तो यही याद रखो - स्मृति दिवस पर हर एक बच्चा चाहे आये हैं, चाहे अभी नहीं आये हैं, चाहे दूर बैठे दिल में समाये हुए हैं, हर एक को बापदादा की यह आज्ञा - बनना और मानना है कि मुझे कभी शब्द नहीं कहना है। अभी-अभी, कल भी किसने देखा, आज। जो करना है वह करना ही है, सोचना नहीं। सोचेंगे, करेंगे, हो जायेगा, यह बाप को भी दिलासा देते हैं। बाबा आप ख्याल नहीं करो हम समय पर

ठीक हो जायेंगे। लेकिन बापदादा यही चाहते कि अभी-अभी कोई भी पेपर आ जाए तो हर एक बच्चा फुल पास हो जाए। हो सकता है? हो सकता है? फुल पास होना है? अच्छा। आज जो पहली बार आये हैं वह उठो। पहले बारी आने वालों को बापदादा आने की बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं और वरदान दे रहे हैं कि तीव्र पुरुषार्थी बन आप चाहो तो आगे से आगे आ सकते हो। यह वरदान प्रैक्टिकल में लाने चाहे तो बापदादा का वरदान है। इसके लिए पहले आने वालों के लिए बापदादा खुशखबरी सुना रहे हैं कि लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट, यह दिल खुश मिठाई खा लो।

बापदादा को यह खुशी है कि फिर भी टू लेट के बोर्ड के पहले आ गये, यह बहुत खुशी की बात है। आप लोग अगर आगे गये तो हम सब खुश होंगे यह नहीं कहेंगे कि आप क्यों, हम क्यों नहीं, नहीं। पहले आप। अच्छा - बैठ जाओ, दिलखुश मिठाई खाई!

सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है:- इन्डोर का अर्थ ही है, लकीर के अन्दर रहने वाले। तो बापदादा को हर एक ज़ोन की सेवा का उमंग उत्साह देख खुशी होती है और चांस भी सभी अच्छी तरह से लेते रहते हैं क्योंकि जानते हो कि सेवा का मेवा मिलता है। कौन सा मेवा मिलता है? सभी की आशीर्वाद मिलती है। लोग तो समझते हैं एक ब्राह्मण को खिलाया, बहुत पुण्य जमा हुआ। लेकिन आप कितने ब्राह्मणों को खिलाते हो। कितना पुण्य और सभी सच्चे ब्राह्मण हैं। तो आप सभी ने सेवा का मेवा खाया? खाया? तो तन्दरूस्त हो ना! मेवा खाने से तन्दरूस्त बनते हैं। तो अच्छा है। हर ज़ोन में देखा गया कि संख्या बढ़ती जाती है लेकिन बापदादा ने पहले भी कहा है कि संख्या बढ़ रही है, यह तो बहुत अच्छा। सन्देश मिला, बाप का पैगाम मिला और बाप के बने इसके लिए बहुत-बहुत मुबारक हो लेकिन अभी समय अनुसार पहले भी बाप ने कहा है कि वारिस बनाओ। इन्दौर ने पक्के वारिस, क्योंकि बापदादा उन वारिसों का पेपर लेंगे। पहले नाम भेजो फिर बापदादा देखेंगे कि वारिस क्वालिटी कहाँ तक वारिसपन निभा रही हैं। और दूसरा बापदादा ने कहा अनुभवी नामीग्रामी जिनका अनुभव सुनकर औरों को उमंग आवे, मैं भी बनूं, वह माइक क्वालिटी भी तैयार करनी है। तो किया, काम किया? इन्दौर ने किया? अभी बापदादा के पास लिस्ट नहीं आई है। अच्छा। (छतीसगढ़ की पूरी गवर्मेन्ट यहाँ आई, वह अभी माइक बनकर अच्छी सेवा कर रहे हैं) अच्छा है। यह सारे इन्दौर के हैं। काफी संख्या है। अच्छा है। अच्छा। बापदादा की इन्दौर में एक विशेष उम्मींद है क्योंकि यह ब्रह्मा बाप के अन्तिम समय पर खुद बापदादा ने इन्दौर सेन्टर खुलवाया है, इसलिए आज स्मृति दिवस मना रहे हैं तो इन्दौर को कोई ऐसी बात करनी है जो अभी तक न्यारी और प्यारी हो। सभी ज़ोन पुरुषार्थ कर रहे हैं अच्छा, बापदादा के पास समाचार तो सबका आता भी है। लेकिन बापदादा अभी फास्ट आगे बढ़ने का जो चाहना रखते हैं, निर्विघ्न ज़ोन, हर ज़ोन में जितने भी सेवाकेन्द्र हैं, उपसेवाकेन्द्र हैं लेकिन हर एरिया निर्विघ्न सेवाकेन्द्र हो। हर एक में तीव्र पुरुषार्थ की लहर हो। तो नम्बर इन्दौर ले लेवे। इसमें नम्बरवन कोई भी ज़ोन ने रिपोर्ट नहीं दी है कि सारा ज़ोन निर्विघ्न है। पुरुषार्थ कर रहे हैं लेकिन चारों ओर चाहे गीता पाठशाला हो लेकिन निर्विघ्न हो। यह रिर्पोट बापदादा चाहते हैं। अच्छा।

मेडिकल विंग:- इस विंग में प्रैक्टिकल डाक्टर्स कितने हैं? डाक्टर्स हाथ उठाओ। अच्छा इतने डाक्टर्स हैं क्योंकि बापदादा ने देखा कि समय प्रमाण डाक्टर्स की सेवा और आगे बढ़ेगी क्योंकि आजकल के समय में चिंता और भय फैला हुआ है। तो डाक्टर्स यह तो डबल डाक्टर्स होंगे ही। डाक्टर्स जो डबल डाक्टर हैं वह हाथ उठाओ। मन के भी तन के भी। क्योंकि आजकल मन का रोग और बढ़ता जायेगा इसलिए डबल डाक्टर्स की सेवा और बढ़ती जायेगी। प्रकृति की हलचल के कारण नये-नये रोग निकलते हैं तो ऐसे समय पर डबल डाक्टर्स की आवश्यकता है। तो आप सभी एवररेडी हो, कहाँ भी बुलावा हो तो सेवा दे सकते हो? जो सेवा दे सकते हैं वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। नाम नोट करके देना क्योंकि निमन्त्रण तो आते हैं तो समय निकालेंगे? निकालेंगे? जो समय के लिए भी तैयार हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा। बहिनें कम उठा रही हैं। सेवाकेन्द्र चलाना है। इनका नाम नोट करके देना। बापदादा डाक्टर्स की महिमा करते हैं क्यों महिमा करता है? क्योंकि डाक्टर्स भी बापदादा के समान दु:ख लेके सुख तो दे देते हैं। लेकिन अल्पकाल के लिए देते हैं। बाप सदाकाल के लिए देते हैं इसीलिए कहा कि

डबल डाक्टर होंगे और समय निकालेंगे तो आप लोगों को आगे चल करके डबल डाक्टर्स की वैल्यु होगी। बापदादा ने सुना कि डाक्टर्स को फुर्सत नहीं होती है लेकिन डाक्टर्स हर एक बिजी होते भी बहुत बड़ी सेवा कर सकते हैं। पहले भी बापदादा ने सुनाया कि हर एक डाक्टर अपना कार्ड तो छपाते हो। छपाते हो ना कार्ड? तो एक तरफ तो अपना परिचय देते हो और दूसरा तरफ खाली होता है, तो उस खाली तरफ आप मन की दवाई के लिए फलानी एड्रेस है, यह अगर कार्ड जितने भी पेशेन्ट हैं उनको दो तो आपकी घर बैठे सेवा हो जायेगी। क्योंकि डाक्टर्स का सभी मानते हैं। कोई कितना भी कहेगा नहीं यह नहीं खाओ फिर भी खाते रहेंगे। लेकिन डाक्टर्स अगर कहेंगे कि यह हो जायेगा, यह हो जायेगा। तो कर लेते हैं। मजबूरी से करें या प्यार से करें लेकिन करते हैं इसीलिए बापदादा कहते हैं कि डाक्टर्स बहुत सेवा कर सकते हैं और अच्छा है। देखा गया है तो प्रोग्राम करते रहते हैं लेकिन थोड़ा और तेजी से होना चाहिए। आपके भिन्न-भिन्न ज़ोन के डाक्टर्स अपने ज़ोन में ऐसा प्रोग्राम बनाओ जो वहाँ ही प्रोग्राम इकट्ठा होके करते रहें तो आप बहुत सेवा कर सकते हो। बापदादा को डाक्टर्स की सेवा आवश्यक लगती है क्योंकि यह तो बीमारियां बढ़नी ही हैं। मन की बीमारी तो चारों ओर फैली हुई है तो आप लोगों के आक्युपेशन के डर से सभी मान सकते हैं। अच्छा है। बापदादा को पसन्द है इस वर्ग की सेवा और जोरशोर से बढ़ाओ। अच्छा।

डबल विदेशी:- (40 देशों से आये हैं): आज तो विशेष सेरीमनी मनाने भी आये हैं। बापदादा को खुशी है कि मधुबन में सेरीमनी मनाने के निमित्त सभी को उमंग-उत्साह आता है। हाथ उठाओ जो सेरीमनी मनाने आये हैं? अच्छा। जिनकी सेरीमनी है वह हाथ उठाओ। दो हाथ उठाओ। बहुत अच्छा किया। निमन्त्रण देने का, आबू की यात्रा कराने का यह चांस बहुत अच्छा लिया क्योंकि बापदादा की पधरामणी सिन्ध में हुई। फाउण्डेशन सिन्ध है। तो सिन्ध वाले अपना हक रखते हैं कि हम तो सिन्धी हैं। अच्छा है यह भी एक विधि है सभी को यात्रा कराने की। तो बापदादा विशेष मुबारक दे रहे हैं। अच्छा लगा ना। अपना घर। अच्छा लगा? क्योंकि यहाँ देखा होगा किसी भी कमरे में किसका नाम नहीं। क्योंकि यह बाप का घर है। तो आप बाप के बच्चे कहाँ आये हो? अपने घर में।

(हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री सामने बैठे हैं)

यह भी अभी आये हैं ना? तो कहाँ आये हो? अपने घर में आये हो। अपने परिवार में आये हो। बापदादा यही कहते हैं कि राज्य और आध्यात्मिकता अगर दोनों मिलकर विशेष बापू गांधी जी के संकल्प को पूर्ण करने चाहें तो कर सकते हैं। सहज कर सकते हैं और करते जा रहे हैं। बापदादा को खुशी है कि किसी न किसी संग के साथ अभी नेताओं में भी नाम फैल रहा है। तीनों शक्तियां साइंस, आध्यात्मिकता और राज्य सत्ता, तीनों ही सत्तायें मिलकरके एक संकल्प करें, सहयोगी बनें तो हम बापू गांधी जी और बापू का भी बापू परमात्मा दोनों बाप की आशायें पूर्ण करेंगे तो बहुत सहज हो जायेगा। अच्छा।

डबल विदेशी - विदेश में भी भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवायें चल रही हैं और चलती रहेंगी। बापदादा ने देखा कि नये-नये प्लैन बनाते रहते हैं और प्रैक्टिकल में कर भी रहे हैं, फारेन वाले इन्डिया वालों को अपना अनुभव सुनाके सेवा कर रहे हैं और इन्डिया वाले फारेन वालों को अपने अनुभव सुना करके देश विदेश में आवाज फैला रहे हैं, अभी भी प्रोग्राम कर रहे हैं ना। अच्छा है। अभी दूसरा नम्बर है। (अभी सर्व इन्डिया प्रोग्राम चेन्नई में है) बापदादा के पास सभी का उमंग उत्साह का पत्र और यादप्यार एडवांस में मिली है, जो भी करते हैं, आरम्भ करते हैं तो पहले छोटा होता है फिर बढ़ता जाता है क्योंकि आजकल के समय में सभी को आवश्यकता लगती है, तीन सत्ता होते भी धर्म सत्ता भी है, आध्यात्मिकता अलग है, धर्म सत्ता अलग है लेकिन सत्ता तो है। तो भी जो चाहते हैं वह नहीं हो रहा है। तो सभी सोचने लगते हैं कि कमी किसकी है? तीन तो काम कर रही हैं, तो भी जो चाहते हैं वह नहीं हो रहा है। तो अभी चाहते हैं लेकिन समय का बहाना देते हैं। समय नहीं हैं। क्या करें, क्या नहीं करें... लेकिन ऐसे अगर एक दो ग्रुप अपने को सहयोगी बनायें तो बापदादा का वरदान है कि भारत स्वर्ग बनना ही है। दोनों बापू की आशायें पूर्ण होनी ही है। तो फारेन वाले भी मन्सा सेवा से सहयोगी हैं ना! बापदादा ने देखा कि वृद्धि सब धर्मों में हो रही है, एक धर्म नहीं सिर्फ हिन्दू नहीं लेकिन मुस्लिम, बुद्धिष्ठ सब धर्म, क्रिश्चियन, सब धीरे धीरे आध्यात्मिकता में रूची ले रहे हैं। पहले देखो ब्रह्माकुमारियों का नाम सुनके डरते थे, विनाश-विनाश क्या कहती हैं। और अभी क्या

कहते हैं? अभी कहते हैं बताओ विनाश कब होगा, कैसे होगा और क्या करें? इसलिए होना तो है ही यह तो गैरन्टी है। आप सबको गैरन्टी है ना चाहे विदेश वाले चाहे भारत वाले गैरन्टी है ना, आपका सहयोग है ही है। होना ही है। ताली बजाओ। सभी को उमंग अच्छा है। और निमित्त बनी हुई आत्मायें चाहे पाण्डव, चाहे शक्तियां दोनों में उमंग उत्साह है। सिर्फ अभी बापदादा ने जो इशारा दिया पुरुषार्थ को तीव्र करो। पुरुषार्थ नहीं, पुरुषार्थ का समय गया अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। और कभी-कभी पर नहीं ठहरो, अभी। अभी करना है, अभी बनना है। तो होना ही है। अच्छा।

कलकत्ता वालों ने आज फूलों का श्रृंगार किया है:- बापदादा ने देखा कि दिल से करते हैं। श्रृंगार करना कोई बड़ी बात नहीं है, आपसे भी अच्छे करने वाले हैं लेकिन आपको बाप से प्यार है, बाप की पहचान थोड़ी बहुत है इसलिए जो भी श्रृंगार करते हो ना, उसमें सिर्फ काम नहीं लेकिन प्यार भी है। तो जहाँ प्यार है वहाँ प्यार की खुशबू सबको अच्छी लगती है। और हर साल आते हैं। अपनी ड्युटी समझकर नहीं, लेकिन अपना काम समझ करके करते हैं। तो मुबारक हो आप सबको। निमित्त बने हुए उमंग हुल्लास दिलाते हैं। बहुत अच्छा करते हो। स्मृति दिवस आता है और कलकत्ता को याद करते हैं, विशेषता है। मुबारक हो। अच्छा।

चारों ओर के तीव्र पुरुषार्थी सदा उमंग उत्साह से कदम आगे बढ़ाने वाले जो सच्ची दिल से करते हैं उनके मस्तक पर विजय का तिलक बापदादा देख रहे हैं, सभी को निश्चय है, नशा है तो हम विजयी हैं, विजयी थे और विजयी रहेंगे, इसलिए हर एक के मस्तक में बापदादा विजय का तिलक देख रहे हैं। चारों ओर के स्नेही भी हैं, आज अमृतवेले से बहुत-बहुत स्नेह की मालायें बापदादा के पास आई और बापदादा आप सभी बच्चों को रिटर्न में सदा विजयी बनने की माला डाल रहे हैं। तो चारों ओर के बच्चे देख भी रहे हैं क्योंकि साइंस ने यह सब साधन आपके लिए भी बनाये हैं, जो कहाँ भी बैठे देख सकते हो, सुन सकते हो, तो बापदादा देख रहे हैं, जगह-जगह पर कैसे देख भी रहे हैं और सुन भी रहे हैं, तो चारों ओर के बच्चों को बापदादा स्मृति दिवस की यादप्यार दे रहे हैं। बापदादा के दिल में हर बच्चा समाया हुआ है और हर बच्चे की दिल में बाप समाया है, बाप की दिल में बच्चा समाया है, तो मुबारक हो, मुबारक हो और मुबारक के साथ नमस्ते भी।

दादियों से:- मुरब्बी बच्चों का पार्ट बजा रही हो, इसको देख बापदादा खुश है। (मोहिनी बहन से) हिम्मत वाली हो और हिम्मत ही आपकी विशेष दवाई है।

दादी रतनमोहिनी से:- यह भी अच्छी है, हर कार्य में हाँ जी, हाँ जी हाँ जी मिलाके चल रही हो और चलती रहेंगी।

चेन्नई में सर्व इन्डिया प्रोग्राम होने जा रहा है, सभी ने खास याद दी है:- मूल बात तो है कि गवर्नर हाउस मिला है और वह भी इन्ट्रेस्टेट है यह सेवा का सबूत है इसीलिए बापदादा सभी बच्चों को एक बीना के साथ सभी निमित्त बच्चों को लाख गुणा पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं और निज़ार बच्चा भी उमंग वाला है। चाहता है और क्या-क्या करूं, प्लैन बनाता रहता है उसको भी विशेष याद देना। गवर्नर सहयोगी तो है लेकिन जैसे पांव आगे बढ़ाना होता है ना तो पहले एक पांव बढ़ाया जाता है और आगे बढ़ना होता है तो दूसरा पांव बढ़ाया जाता है तो स्नेही और सहयोगी है लेकिन अभी इस प्रोग्राम की रिजल्ट में और पांव आगे बढ़ाके आप लोगों का साथी बन जाये। अभी स्नेही है, सहयोगी है, सेवा का महत्व समझता है, अभी महत्व तक है अभी और दूसरा कदम आगे बढ़ाना है।

माननीय मुख्य मंत्री भ्राता प्रो.प्रेमकुमार धूमल, हिमाचल प्रदेश:- बहुत अच्छा किया जो संकल्प को सम्पूर्ण पूरा किया। अपना घर समझते हो ना! क्योंकि बाप का घर है तो बाप का घर अपना घर। जब भी चाहे, जब चाहे थोड़ी रेस्ट लेनी हो ना तो अपने घर आ जाओ। आप भी खुश हो ना। आप भी आते रहना। अभी सिर्फ इनके साथ आये हैं, नहीं। वैसे भी आते रहना।

''ब्रह्मा बाप समान जीवन में रहते जीवनमुक्त स्थिति की मजा लो, स्नेह की सौगात मनजीत जगतजीत बनकर दो''

आज का दिन विशेष ब्रह्मा बाप के अव्यक्त होने का स्मृति का दिन है। सभी बच्चों के नयनों में ब्रह्मा बाप का स्नेह समाया हुआ है। आज चार बजे से भी पहले बच्चों का स्नेह वतन में पहुंच गया। ब्रह्मा बाप से मिलन मनाने और स्नेह की, अपने दिल के स्नेह की निशानियां, मालायें ब्रह्मा बाप के पास पहुंच गई। हर एक माला के खुशबू में बच्चों का स्नेह समाया हुआ था। हर एक बच्चे के नयन और मुस्कराहट, दिल की बातें बोल रही थी। ब्रह्मा बाप भी हर एक को स्नेह का रिटर्न दे रहे थे। बाप देख रहे हैं कि अभी भी हर बच्चा नयनों की भाषा में अपने दिल का स्नेह दे रहे हैं क्योंकि यह परमात्म स्नेह हर बच्चे को सहज बाप का बनाने वाला है। यह अलौकिक स्नेह मेरा बाबा के अनुभव से अपना बनाने वाला है। यह स्नेह बाप के खजानों का मालिक बनाने वाला है क्योंकि बच्चों ने कहा मेरा बाबा, तो मेरा बाबा कहना और सर्व खजानों के मालिक बनना। यह स्नेह देह का भान सेकण्ड में भुलाकर देही अभिमानी बना देता है। सिवाए बाप के और कुछ भी आत्मा को आकर्षित नहीं करता। इस दिन का बहुत बड़ा महत्व है। सिर्फ स्मृति दिवस नहीं लेकिन समर्थी दिवस है क्योंकि इस दिन बाप ने बच्चों को विश्व सेवा के लिए स्वयं करावनहार बन बच्चों को करनहार बनाने का तिलक दिया। सन शोज़ फादर का करनहार निमित्त बनाया। सेवा में सफलता का साधन स्वयं करावनहार बना और बच्चों को करनहार बनाया क्योंकि सेवा में सफलता का साधन मैं करनहार हूँ, करावनहार करा रहा है, यह स्मृति वा यह स्थिति बहुत आवश्यक है क्योंकि 63 जन्म की स्मृति मैं पन, देह अभिमान में ले आती है। करावनहार करा रहा है, मैं निमित्त करनहार हूँ, इस स्मृति से ही अपने को निमित्त समझने से देह अभिमान समाप्त हो जाता है। तो बच्चों को इसीलिए करनहार बनाया, स्वयं करावनहार बनें। करनहार बनने से स्वत: ही निमित्त हैं, निर्माण बन जाते हैं। अभी भी बापदादा बच्चों को सेवा में निमित्त बन करने के कारण बाप ने देखा कि जो सेवाधारी हैं उन्हों के मस्तक में सेवा का फल सितारा चमक रहा है। मैजारिटी बच्चों की सेवा को देख बापदादा खुश है इसलिए ऐसे बच्चों को विशेष ब्रह्मा बाप वाह बच्चे वाह! कहके मुबारक दे रहे हैं।

ब्रह्मा बाप विशेष खुश भी हो रहे हैं और आगे भी सेवा को निमित्त बन आगे बढ़ाने के लिए मुबारक दे रहे हैं। अभी भी ब्रह्मा बाप बच्चों को आप समान फरिश्ता स्थिति में रहने के लिए इशारे दे रहे हैं। बापदादा ने देखा है कि बच्चों का अटेन्शन है कि सदा जैसे ब्रह्मा बाप जीवन में रहते जीवनमुक्त थे, इतनी जिम्मेवारी होते भी इतने बड़े परिवार को सम्भालना, सभी को योगी जीवन वाला बनाना, इतनी सेवा की जिम्मेवारी सम्भालना, सेवा में सदा आगे बढ़ाना, सब कुछ जिम्मेवारी होते भी जीवनमुक्त के मजे में रहा, इसलिए भक्ति मार्ग में ब्रह्मा का आसन कमल आसन दिखाते हैं। जीवनमुक्त बन अभी जीवनमुक्त का मजा लिया और आप सभी बच्चों को भी ऐसा ही बनाया। अभी भी आप बच्चों को फरिश्ता बनने की भिन्न-भिन्न युक्तियां बताए आप समान बनाने चाहते हैं।

बापदादा ने देखा लक्ष्य हर बच्चे का अच्छा है, कोई से भी पूछते हैं आपका लक्ष्य क्या है तो क्या कहते हो? याद है क्या कहते हो? बाप समान बनना ही है। तो बाप समान क्या बनेंगे? इसी जीवन में जीवनमुक्त जीवन का सैम्पुल बनेंगे। बापदादा ने देखा है जो होमवर्क देते हैं, उसमें अटेन्शन तो देते हैं, अनुभव भी करते हैं, लेकिन सदा नहीं करते हैं। अभी भी जो काम दिया था, उसकी रिपोर्ट कई बच्चों ने पुरुषार्थ कर एक-एक मास अटेन्शन दिया है। कई ज़ोन की रिपोर्ट एक मास की रिजल्ट में अच्छी भी आई है। जिन्होंने रिपोर्ट भेजी है, जिस ज़ोन वालों ने भेजी है, उसको बापदादा वाह बच्चे वाह! कह करके मुबारक दे रहे हैं लेकिन बापदादा अभी क्या चाहता है? अभी

बापदादा हर बच्चे से यही चाहता है कि अभी कभी-कभी ठीक रहते हैं, लेकिन बाप सदा चाहता है। योगी भी अच्छे बने हैं लेकिन सदा योगी बनाने चाहते हैं। आजकल बापदादा ने बच्चों को काम भी दिया था, सदा रहने के लिए हर घण्टे अपने ऊपर कोई न कोई युक्ति रखो, जो कभी-कभी को बदल सदा शब्द आ जाए। अभी बापदादा यही चाहते हैं जैसे कहावत है मन जीते जगतजीत, मन को जो संकल्प दो वही करे। क्यों? जैसे और कर्मेन्द्रियां जब चाहो जैसे चाहो वैसे करती हैं ना! ऐसे ही मन को भी जो आर्डर करो वही करे। अभ्यास करते हो लेकिन कभी-कभी नहीं भी करते हैं। बापदादा अभी यही चाहते हैं कि मन को शक्तियों की लगाम से जैसे चलाने चाहो वैसे चलाओ। जो गायन है, मन जीते जगतजीत, वह किसका गायन है? आप बच्चों का ही तो गायन है। हर कल्प किया है तभी गायन है क्योंकि जैसे और कर्मेन्द्रियों को मेरी कहते हो वैसे ही मन को भी मेरा कहते हो। मेरा कहना अर्थात् मालिक बनो। मन में जो संकल्प करने चाहो, जितना समय वह संकल्प करने चाहो वह बंधा हुआ है क्योंकि मेरा है। तो बापदादा इस स्नेह के दिन यही होमवर्क देने चाहते हैं कि जो संकल्प करने चाहो वही चले अगर आप शुद्ध संकल्प करने चाहते हो तो व्यर्थ संकल्प, शुद्ध संकल्प व्यर्थ को खत्म कर दे। चाहो योग लगाना और संस्कार के कारण व्यर्थ संकल्प चलें, या योग की सिद्धि नहीं मिले, यह कन्ट्रोल होना चाहिए। अगर एक घण्टा योग लगाने चाहते हो तो मन डिस्टर्ब नहीं करे। आत्मा मालिक है, मन मालिक नहीं है, मन तो आत्मा का साथी है। तो साथी को प्यार से आर्डर करो, मनजीत बनो क्योंकि बापदादा के पास बहुत बच्चों का समाचार आता है - व्यर्थ संकल्प समय प्रति समय आते हैं। नहीं चाहते हैं तो भी आते हैं। तो क्या यह मालिक कहेंगे! तो ब्रह्मा बाप से स्नेह है ना तो बाप आज स्नेह में अपने दिल की चाहना सुना रहे हैं कि अभी मनजीत जगतजीत बनना ही है। तो ब्रह्मा बाप को यह स्नेह की सौगात देंगे? स्नेह में क्या दिया जाता है? गिफ्ट दी जाती है ना! तो आज ब्रह्मा बाप बच्चों से यह सौगात देने के लिए कह रहे हैं। तैयार हैं? तैयार हैं? हाथ उठाओ। तो अभी जब भी आर्डर करे तो आज के दिन से व्यर्थ संकल्प आने नहीं देना, कर सकते हो? आज दो घण्टा, चार घण्टा योग की स्टेज में कर्म भी करो, योग भी लगाओ, कर सकते हो? कर सकते हो, करेंगे? चलो अभी बीती सो बीती लेकिन अब आर्डर करें कि आज के दिन व्यर्थ संकल्प को फुलस्टॉप, तो करना पड़ेगा ना।

आज योग में यही लक्ष्य रखो उसी प्रमाण सारे दिन का पुरुषार्थ करना पड़ेगा ना! बाप से स्नेह में जो बाप कहे वह करना है। संकल्प व्यर्थ बन्द, इसकी युक्ति है ब्रह्मा बाप के स्नेह को दिल से याद करो। चाहे साकार में देखा, चाहे नहीं देखा लेकिन बुद्धिबल द्वारा तो सभी ने देखा है ना! देखा है या नहीं देखा है? जो कहते हैं मैंने बाबा का प्यार देखा, मैंने ब्रह्मा बाप की पालना देखी तो क्या, उसी से चल रहा हूँ, वह हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ उठाके तो खुश कर दिया। बापदादा को खुशी है, हिम्मत तो रखी है ना। लेकिन जब भी कोई ताकत कम हो जाए ना तो सदा बाप के सम्बन्ध, कितने सम्बन्ध हैं कभी बाप, कभी बच्चा भी बन जाता है। कभी बाप तो कभी सखा भी बन जाते हैं इसलिए या संबंध याद करो या प्राप्तियां याद करो। प्राप्तियां और संबंध जैसे आज दिल से याद कर रहे हो ना! ऐसे याद करने से प्यार पैदा हो जायेगा। आज भी सबके दिल में ब्रह्मा बाप का प्यार आ रहा है ना! तो जब कुछ नीचे ऊपर हो तो सम्बन्ध और प्राप्तियां याद करना। बाप हर बच्चे के साथ सहयोगी है, सिर्फ आप याद करना। तो समझा आज क्या करना है? मनजीत जगतजीत जो गायन है वह स्वरूप धारण करना है। आर्डर से चलाओ। अभी थोड़ा फ्री छोड़ दिया है ना तो वह अपना काम करता है। अभी अटेन्शन दो। मन मेरे आर्डर में चले न कि आप मन के आर्डर में चलो। चाहते हो ज्ञान की बातों का रमण करें और आ जाती फालतू बात। तो क्या हुआ? मन मालिक बना या आप मालिक बनें? तो सभी ने यह होमवर्क समझा! मन जीत बनना है। जो आर्डर करें, वह मानेगा जरूर मानेगा, अटेन्शन देना पड़ेगा बस। मातायें या टीचर्स, हो सकता है? हो सकता है? टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स हाथ उठा

रहे हैं। अगर समझते हैं हो सकता है तो हाथ हिलाओ। पहली लाइन तो हिलाओ। भाई हाथ हिलाओ। वाह! फिर तो ब्रहमा बाप को स्नेह की सौगात दी, इसकी मुबारक हो, मुबारक हो।

अच्छा है, बापदादा से स्नेह बहुत सहयोग देता है। मेरा बाबा कहा दिल से, तो मेरा बाबा कहा तो मैं कौन? बाप का सिकीलधा बच्चा। सभी कितने बारी कहते हो मेरा बाबा, मेरा बाबा, कितने बार कहते हो? बाप सुनता है ना, सब नोट करता है। डबल फॉरेनर्स भी सुन रहे हैं ना। बापदादा ने देखा कि फुल सीजन में डबल फॉरेनर्स ने हाजिरी भरी है। मधुबन में हर टाइम हाजिर रहे हैं। अभी भी 350 से हैं। अपने टर्न में भी आते हैं लेकिन हर टर्न में भी थोड़े-थोड़े कहाँ न कहाँ से आते हैं। तो अभी यह रिजल्ट बापदादा भी देखते रहेंगे और आप सब भी साक्षी होकर अपने आपकी रिजल्ट देखते रहना। यही याद रखना कि बापदादा को मालिक बनने का वायदा किया है। बापदादा अभी बच्चों को कम से कम एक एक ज़ोन को तो यह कार्य दे सकते हैं कि यह ज़ोन इस सप्ताह या 15 दिन रिजल्ट दे कि व्यर्थ संकल्प नहीं लेकिन जो विषय मन को दिया वह किया या नहीं किया? यह मंजूर है टीचर्स? मंजूर है? ज़ोन को कार्य देवें? हाथ उठाओ। टीचर्स। महाराष्ट्र है ना। तो महाराष्ट्र को तो महान काम देंगे ना। बापदादा को हर एक ज़ोन के लिए प्यार है और सदा यह निश्चय रखते हैं कि यह बच्चे बाप ने कहा और बच्चों ने किया। ऐसा है? महाराष्ट्र, जो बाप ने कहा वह किया, ऐसा है? महाराष्ट्र वाले हाथ उठाओ। बहुत हैं। पौना क्लास है। तो हर एक ज़ोन बाप के आज्ञाकारी हैं, कांध हिला रहे हैं सभी। बाप को भी निश्चय है कि यह मेरे बच्चे हैं ही निश्चयबुद्धि।

बापदादा यही चाहते हैं कि जो रोज़ के महावाक्य सुनते हो वह होम वर्क है। अगर रोज़ की मुरली जो बाप ने कहा और बच्चों ने किया तो उसको कहा जाता है बाप के सिकीलधे बच्चे, आज्ञाकारी बच्चे। क्या करना है, वह रोज़ की मुरली पढ़ लो। क्योंकि बापदादा ने देखा है मैजारिटी बच्चे मुरली से प्यार रखते हैं। अगर कोई नहीं भी रखता हो, तो बापदादा को कोई बच्चा कहे बाबा आपसे मेरा बहुत प्यार है, लेकिन बाप का प्यार किससे है? मुरली से। मुरली के लिए कितना दूर से आते हैं। कोई टीचर ऐसा होगा जो इतना दूर से पढ़ाई पढ़ाने आये। तो जब बाप का प्यार मुरली से है तो जो मेरा बाबा कहता है उसका पहला प्यार बाप के साथ बाप की मुरली से होना चाहिए। देखो ब्रह्मा बाप ने एक दिन भी मुरली मिस नहीं की। चाहे बाम्बे भी जाते रहे, कारणे अकारणे, तो मुरली लिखते थे और मातेश्वरी वह मुरली सुनाती थी। लास्ट डे तबियत थोड़ी ढीली थी, सवेरे का क्लास नहीं कराया लेकिन शाम को क्लास कराने के बाद अव्यक्त हुए। तो ब्रह्मा बाप का प्यार किससे हुआ? मुरली से। जो कोई समझते हैं कि मेरा बाबा से प्यार है तो बाप का जिससे प्यार रहा, बच्चे का रहना चाहिए ना! इसलिए आप समझते हो कि मुरली पढ़ना या क्लास में पढ़ो अगर मजबूरी है, बहाना नहीं है, सही कारण है तो किससे सुनो। जो समझते हैं कि मुरली का इतना महत्व रखूंगा वह हाथ उठाओ। अच्छा, यहाँ तो सब दिखाई दे रहा है, बाप आप पीछे वालों को भी देख रहा है। अच्छा, बहुत अच्छा। बाप बीच-बीच में पेपर लेगा। आज किसने मुरली नहीं सुनी, वह टीचर लिखके भेजे। पसन्द तो है ना। अच्छा।

आज ब्रह्मा बाप हर बच्चों से मिलकर बहुत-बहुत नयनों द्वारा हर बच्चे को स्नेह से, नयनों द्वारा स्नेह दे रहे हैं। अच्छा –

चारों ओर से बच्चों द्वारा सन्देश आये हैं। चारों ओर के आये हुए प्यार के मीठे-मीठे भाव या भिन्न-भिन्न शब्दों की याद चारों ओर से भिन्न-भिन्न पत्र आये हैं, सभी को बापदादा रेसपान्ड कर रहे हैं हर बच्चा स्नेह में बाप के दिल में समाया हुआ है और यह अविनाशी स्नेह सदा बाप का और बच्चों का अनादि अविनाशी है और सारा संगमयुग

यह बाप बच्चों का मिलन निश्चित ही है। अच्छा।

महाराष्ट्र, बाम्बे आन्ध्र प्रदेश:-(14 हजार आये हैं):- सभी को विशेष बापदादा का स्नेही दिन पर स्नेह है और सदा यह स्नेह अमर रहेगा। बाकी आने वाले तो सब उठे ही हैं, टर्न बाई टर्न आने का जो चांस मिलता है वह पसन्द है ना! पसन्द है? कोई का भी उल्हना नहीं रह सकता। हर ज़ोन को टर्न मिलता है। तो यह सिस्टम पसन्द है? पसन्द है? यह सिस्टम पसन्द है ना! अच्छा है। देखा गया हर एक ज़ोन खुली दिल से अपने तरफ के साथी ले आते हैं। यज्ञ सेवा का चांस भी है और मिलने का चांस भी है। यह यज्ञ सेवा चाहे थोड़े से दिन मिलते हैं लेकिन यज्ञ सेवा करके जाने के बाद आपके जीवन में यज्ञ की आकर्षण अनुभव हो जाती है इसलिए परिवार क्या है, यहाँ इतना परिवार इकट्ठा होता है, ज़ोन में भी इतना परिवार इकट्ठा नहीं होगा, लेकिन मधुबन में आना, बापदादा से मिलना, साथ में परिवार से भी मिलना होता है। एक बार यज्ञ सेवा की तो सदा यज्ञ नयनों में आता रहेगा। देखी हुई चीज़ और सुनी हुई चीज़ में फर्क हो जाता है ना। मधुबन हर एक बच्चे का घर है। यह तो सेवा अर्थ भिन्न-भिन्न स्थान में भेजा गया है, क्योंकि विश्वसेवक बनना है ना। उल्हना नहीं रह जाए हमको पता नहीं पड़ा, हमारा बाप आया, वर्सा देके गया और हमें पता नहीं पड़ा, यह उल्हना रह नहीं जाए इसीलिए बापदादा हर समय यही कहते, अड़ोसी-पड़ोसी, गांव-गांव, एरिया-एरिया में यह सन्देश जरूर दो कि आपका बाप आ गया, मानें न मानें उन्हों का अपना भाग्य है लेकिन उल्हना नहीं रह जाए। सन्देश देना आपका काम है मानना, भाग्य बनाना वह उन्हों के हाथ में है। लेकिन आपके तरफ से कोई उल्हना नहीं रहना चाहिए। तो बहुत अच्छा है महाराष्ट्र में सेवा का विस्तार बहुत अच्छा है। इसके लिए बापदादा टीचर्स या सेवा करने वालों को विशेष मुबारक दे रहा है। जैसा नाम है वैसे ही काम है, विस्तार किया है। बाकी नये-नये प्लैन जैसे अभी दिल्ली वाले प्लैन बना रहे हैं, बाप ने ही कहा और प्रैक्टिकल में ला रहे हैं ऐसे महाराष्ट्र भी कोई न कोई नया प्लैन वही नहीं, लेकिन कोई नये रूप से सेवा का प्लैन बनाए और चारों ओर आवाज फैलाये। महाराष्ट्र में तो फैला रहे हैं लेकिन चारों ओर फैलाने के लिए कोई न कोई प्लैन बनाओ। जिससे भिन्न-भिन्न देश में आपके द्वारा सेवा का आवाज जाये। अच्छा लगता है। बिजी रहना अर्थात् मायाजीत बनना। तो बापदादा खुश है महाराष्ट्र पर। टीचर्स भी खुश हैं ना! अच्छा।

डबल विदेशी भाई बहिनें:- डबल विदेशी जब सुनते हैं तो दिल में सबके बहुत प्यार होता है। ब्राह्मण परिवार में भी प्यार की लहर घूम जाती है। कितना भी दूर हो लेकिन दूर को दिल के स्नेह से नजदीक बनाना, यह डबल विदेशियों की विशेषता है। सेवा भी फैला रहे हैं। यह भी समाचार बापदादा सुनते रहते हैं। अभी-अभी कोई भी संख्या रह नहीं जाए, उल्हना नहीं दे हमको तो सन्देश मिला नहीं। तो बापदादा ने देखा कि अभी फॉरेन वाले इन्डिया वालों से मिलके चारों ओर सन्देश देने में अच्छे प्रैक्टिकल ला रहे हैं। कोई भी धर्म रहना नहीं चाहिए। सन्देश देना चाहिए और फॉरेन की सेवा शुरू से वायुमण्डल में फैलने का साधन यह है, जो शुरू में ही सब एक स्टेज पर एक समय में इकट्ठे बैठते थे, क्रिश्चियन भी, मुस्लिम भी है जो भी सभी हैं भिन्न-भिन्न, वह सब एक समय स्टेज पर इकट्ठे बैठते थे तो यह सर्व का पिता है, इसका प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाई देता है, तो कोई भी ऐसे रहना नहीं चाहिए। ऐसे ही भारत में भी विदेश में भी। कोई भी चाहे शाखायें हैं लेकिन सन्देश जरूर पहुंचना चाहिए क्योंकि अभी समय भी सबका दिमाग थोड़ा बदल रहा है। दु:ख अशान्ति की लहर विदेश में भी फैल रही है। भारत में तो है ही। इसलिए अभी सुनने की इच्छा बढ़ रही है। अभी देखो निमन्त्रण देते हैं तो आपका हॉल तो भर जाता है लेकिन और भी रह जाते हैं। तो लोगों की चाहना भी बढ़ रही है इसलिए खूब सेवा फैलाओ। चांस भी मिल रहे हैं तो विदेश वालों को सेवा का उमंग उत्साह है, यह दिनप्रतिदिन देखने में आता है। लेकिन बाप चाहे गांव से कोई आये हैं, चाहे विदेश से, चाहे कहाँ से भी आये हो सभी को बापदादा यही कहता है कि सेवा खूब करो। कभी भी समय बदल सकता है। जो

चाहो सेवा करने लेकिन कर भी नहीं पाओ ऐसा समय भी आने वाला है। इसलिए जो करना है वह अब करो। कब नहीं, अब। बापदादा हमेशा कहते हैं कि कल पर नहीं छोड़ो। आज पर भी नहीं, अब। क्योंकि समय पांचों तत्व बाप के पास आते हैं, हमको बताओ कब तक दु:ख चलेगा! खुद दु:खी हो रहे हैं तो क्या करेंगे? मनुष्यात्माओं को भी दु:खी करेंगे ना। इसलिए जो भी आये हैं उसको संकल्प करना है कि जैसे ब्राह्मण जीवन आवश्यक है वैसे अभी के समय अनुसार हर एक को सेवा भी जरूरी है। करो या कराओ। तो डबल फॉरेनर्स को देख सारा परिवार भी खुश और स्वयं भी खुश और बापदादा भी खुश। बाकी जो बापदादा ने होमवर्क दिया, मनजीत जगतजीत बनना ही है। आपका ही गायन है, उसको रिपीट करना है। अच्छा।

कलकत्ता के भाई बहिनों ने फूलों का श्रृंगार किया है:- अच्छा है मेहनत बहुत करनी पड़ती है लेकिन यह मेहनत आपकी दिल का स्नेह फूलों में दिखाई देता है। चाहे हाथ से मेहनत करो चाहे उत्साह दिलाने की मेहनत करो लेकिन मेहनत का बल और मेहनत का फल मिलता जरूर है। तो बहुत-बहुत स्नेह बापदादा खास कलकत्ते वालों को दे रहे हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप में प्रवेशता भी कलकत्ता में ही हुई है। इसलिए कलकत्ता वाले ही निमित्त बने हैं स्नेह का रेसपान्ड देने के लिए। अच्छे प्यार से करते हैं इसकी मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। आप सबको भी पसन्द आता है ना! परिवर्तन तो चाहिए ना। तो यह अपना स्नेह प्रत्यक्ष रूप में करते हैं। अच्छा।

अभी जो बच्चे सम्मुख है या दूर बैठे भी देख रहे हैं, बापदादा ने सुना कि अभी तो चारों ओर यह कोशिश की है कि हर एक देश में सेन्टर पर भी जाके देखते हैं, सुनते हैं, चाहे रात का कितना भी बजता है तो भी देखते हैं, यह भी साइंस का साधन आपके लिए ही निकले हैं और आपको ही लाभ हो रहा है। अगर साइंस द्वारा विनाश होगा तो भी आपके राज्य के लिए कर रहे हैं। तो चारों ओर के स्नेही बच्चों को विशेष ब्रह्मा बाप का यादप्यार, दिल का दुलार, दिल का प्यार स्वीकार हो।

दादियों से:- भाग्य सेवा के बिना रहने नहीं देता। जिसका जितना भाग्य है, वह भाग्य उसको ले ही जाता है। भाग्य है ना। अच्छा है, अभी समय जो भी भाग्यवान हैं उन्हों को ला रहा है। बाप ने कह दिया है ना तो समय अचानक होना है तो समय कोई न कोई आत्माओं को जगाता ही रहेगा। बहुत अच्छा।

परदादी से:-(बेटी बाप से मिल रही है) अभी तो बाप समान बनने वाली है। अभी सेवा शुरू करेंगी। इसको सेवा कराओ, बिजी रखो। इतने सब आते हैं उनमें से कोई न कोई को अनुभव सुनाती रहे, सेवा करती रहे। बहुत अच्छा।

निर्मला दीदी से:- (तबियत नीचे ऊपर रहती है) समझ गई हो क्यों होती है क्यों का कारण समझ लो तो उस कारण को आने नहीं दो। जानती तो हो, ज्ञानी तू आत्मा हो। जान जाओ और उससे किनारा करो, आने नहीं दो।

तीनों भाईयों से:- पाण्डवों से मिलते रहते हैं यह बहुत अच्छा है और आप तीनों को सेवा का ध्यान, नये नये प्लैन और क्या साधन हो, जिससे जल्दी से जल्दी सबको कोई भी तरफ रह नहीं जाये, यह प्लैन बनाओ। भले जो हैं सेन्टर, ज़ोन भी बनाते हैं लेकिन आप लोगों की भी बुद्धि चलनी चाहिए क्या नवीनता सेवा में करें और साथ-साथ सारे यज्ञ जो चल रहे हैं उनका बीच-बीच में चक्कर लगाओ। सब स्थान में सर्विस का उमंग-उत्साह दिलाओ। कई ज़ोन तो सेवा में करते रहते हैं, कई स्थान ऐसे हैं जो कभी भी बड़े प्रोग्राम नहीं करते हैं उन्हों को उमंग दिलाके निमित्त बनाओ क्योंकि आपस में जब मिलते हो तो यहाँ ही प्लैन पहले बना लो। फिर कहाँ-कहाँ है, हर एक अपने नजदीक जो भी हैं उसमे चक्कर लगाके करो। मतलब समझो सेवा की जिम्मेवारी आप लोगों को कराना है। कराने के साथ करना भी पड़ता है। तो ठीक है। प्लैन आपका सुना था, ठीक है।

जैसे निमित्त बने हो, और तो कोई नहीं आते हैं आप ही आते हो ना। तो निमित्त हो तो निमित्त में धारणा भी सिखाओ और प्यार भी दो। प्यार कोई ऐसा प्यार नहीं, जो आवश्यकता किसकी हो उसको दिलाना या देना यह भी प्यार है। ऐसे निमित्त बनो। ठीक है ना। (रमेश भाई से) तबियत ठीक हो जायेगी। ज्यादा सोचो नहीं। जो हो रहा है उसका एक सेकण्ड में प्लैन सोचो बस। यह हो, यह हो, नहीं। एक सेकण्ड में प्लैन बनाओ। अभी कहा ना तो टाइम जो है वह हर चीज़ में कम दो, थोड़े में फाइनल करो। क्योंकि आजकल टाइम की वैल्यु है, एक-एक ब्राह्मण की वैल्यु है।

अफ्रीका में रिट्रीट सेन्टर बन रहा है, नक्शा बापदादा को दिखाया:- सभी जो भी निमित्त बच्चे बने हैं, उनका उमंग यहाँ तक पहुंच रहा है। बापदादा खुश है, जितने सेन्टर बढ़ेंगे उतने बिछुड़े हुए बच्चे अपना भाग्य बनायेंगे। तो आप उद्घाटन नहीं कर रहे हो लेकिन अनेकों के भाग्य खुलने के निमित्त बने हो।

हंसा बहन से:- समाचार जो लिखा वह मिला, अभी जो आज काम कहा है ना, कितना सोचो, क्या सोचो, यह काम करना इसमें नम्बरवन जाना।

हैदराबाद, शान्ति सरोवर के कोर कमेटी मेम्बर्स प्रति अव्यक्त बापदादा के महावाक्य-

आप सभी सेवा के प्रति निमित्त बने हो। यह सेवा विश्व सेवा है। सिर्फ हैदराबाद की नहीं है लेकिन विश्व की सेवा है। तो विश्व की सेवा करने से आत्मा में खुशी होती है क्योंकि पुण्य का काम कर रहे हो ना। तो जहाँ पुण्य होता है वहाँ दुआयें मिलती हैं। वह दुआयें अपनी जीवन के लिए बहुत ऊंचा उड़ाती हैं। तो बापदादा को समाचार मिला कि यह सब सेवा के निमित्त हैं। तो बहुत अच्छा, करते चलो और दुआयें लेते चलो क्योंकि दुआयें मिलना इस कार्य के लिए बहुत बड़ी प्राप्ति सूक्ष्म में होती है। इसलिए जो भी जहाँ सेवा करते हैं वह सेवा नहीं समझो लेकिन अपना पुण्य जमा कर रहे हैं और पुण्य जमा होने से आटोमेटिकली आपको सेवाभाव का फल मिलता है, बल मिलता है। तो खुशी-खुशी से आह्वान करते चलो और उन आत्माओं के प्रति भी शुभ भावना करते चलो, जो भी आवे वो मालामाल होके जाये। ऐसी शुभ भावना, शुभ कामना से सेवा में आगे बढ़ते जाओ। बढ़ते जाओ, बढ़ाते जाओ तो सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार मिलेगा। लेकिन शुभ भावना और शुभ कामना सेवा की रखेंगे तो सेवा से बल मिलता है। आपको भी खुशी होगी और जिस कार्य के प्रति करते हो उस कार्य में आने वाली आत्माओं को भी खुशी की प्राप्ति होगी। तो बहुत अच्छा, जो भी सेवा करते हो बापदादा के यज्ञ की सेवा करते हो। यज्ञ की सेवा करने में बहुत पुण्य है। बहुत अच्छे हैं। आगे बढ़ते चलो और औरों को भी बढ़ाते चलो। अच्छा, अच्छा है, सभी जहाँ भी हैं अच्छे हैं आगे बढ़ते चलो, बढ़ाते चलो।

विदाई के समय - गीत गाया - अभी छोड़कर नहीं जाओ, दिल अभी भरा नहीं...

दिल तो भरने वाला है ही नहीं। सदा साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे। (84 जन्म ही बाबा के साथ रहेंगे) रहना। अच्छा ही है। ब्रह्मा बाप की तरफ से सभी को बहुत-बहुत प्यार। (बाबा आपको जाने का मन करता है) ड्रामा में है। अच्छा।

''सेवाओं के साथ-साथ एक दो के सहयोगी बन वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ, मनजीत बन आत्माओं की मन्सा सेवा करो''

आज विशेष स्नेह का दिन है। चारों ओर के बच्चे स्नेह स्वरूप से मिलन मना रहे हैं। आप सभी भी स्नेह स्वरूप में मगन हैं। आज अमृतवेले से चारों तरफ के बच्चे अमृतवेले से भी पहले स्नेह रूप से दिल के स्नेह के मोतियों की मालायें लेकर पहुंच गये थे। अनेक प्रकार के भिन्न-भिन्न मन के भावों को बाप के आगे वर्णन कर रहे थे। आप जानते हो कि बच्चों का स्नेह कितना प्यारा है। भिन्न-भिन्न भाषायें, भिन्न-भिन्न भाव से बापदादा के आगे अपने दिल की बात बोल भी रहे थे और नयनों से मुख से अपने भाव भी स्पष्ट कर रहे थे। बापदादा चारों ओर के बच्चों के स्नेह के भाव देख सभी के स्नेह में समा गये और दिल से यही बोल निकले वाह बच्चे वाह! और बच्चों के मुख से वाह बाबा वाह! के गीत सुनाई दे रहे थे। बापदादा हर बच्चे को देख बच्चों के लव में लीन थे और बच्चे बाप के लव में लीन थे।

आज का दिन बाप बच्चों को बालक सो मालिक बनाने की दृष्टि से देख रहे थे। आज का दिन बच्चों के राज तिलक का दिन है। आज के दिन बापदादा स्वयं फरिश्ते रूप में रहकर बच्चों को विश्व सेवा अर्थ निमित्त बनाया। स्वयं बैकबोन बनें, बच्चों को विश्व स्टेज पर प्रत्यक्ष किया और बापदादा अभी बच्चों की सेवा को देख, जो जिम्मेवारी दी उसकी रिजल्ट को देख बच्चों पर बहुत-बहुत खुश है और दिल से मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो।

बापदादा ने देखा अभी भी बाप द्वारा दिये हुए विश्व सेवाधारी का वरदान हर बच्चे ने अति स्नेह और दिल से किया है और कर रहे हैं। रिजल्ट भी बापदादा ने देखी, हर एक बच्चे के दिल में लगन है मेरा बाबा और बाप के दिल में स्नेह है वाह मेरे बच्चे। वर्तमान समय मैजारिटी छोटे बड़े सेन्टर्स निवासी बच्चों में उमंग है कि अभी जल्दी से जल्दी चारों ओर बाप को प्रत्यक्ष करना ही है। यह उमंग, यह उत्साह बापदादा ने चक्र लगाके देखा, छोटे बड़े सेवाकेन्द्र के बच्चों को सेवा का उमंग बहुत-बहुत-बहुत अच्छा है और आगे भी अच्छा रहेगा। तो बापदादा आज स्नेह के दिन चारों ओर के चाहे देश, चाहे विदेश सभी बच्चों को अपने दृष्टि से, दिल से स्नेह और सेवा का रिटर्न दिल का स्नेह यादप्यार पदमगुणा दे रहे हैं।

अभी समय अनुसार जो उमंग है कि बाप को प्रत्यक्ष करना है, वह धीरे-धीरे आत्माओं के दिल में भी आने लगा है। समझते हैं कि ब्रह्माकुमारियों ने कुछ पाया है, परिवर्तन हो रहा है। पहले जो समझते थे पता नहीं क्या करते हैं, अभी यहाँ तक आये हैं कि अच्छा कार्य कर रहे हैं। जो हम नहीं कर सकते वह इन्होंने अपने संगठन में सफलता पाई है इसलिए आज बापदादा सामने बैठे हुए बच्चों को वा चारों ओर जो भी बच्चे सुन रहे हैं, देख रहे हैं सभी बच्चों को दिल का स्नेह, दिल का प्यार विशेष दे रहे हैं। अभी आगे क्या करना है? सेवा की मुबारक तो बापदादा ने दे दी, अब बापदादा यही चाहते हैं कि अभी हर एक बच्चे को यह उमंग-उत्साह, दृढ़ निश्चय, तीव्र पुरुषार्थ करना है कि अब बाप समान फरिश्ता बनना ही है क्योंकि अभी सभी को बाप के साथ रिटर्न जरनी करनी है। समान फरिश्ता बनना ही है क्योंकि सभी का वायदा है साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे। तो ब्रह्मा बाप भी फरिश्ता बन गया, तो साथ कैसे चलेंगे? ब्रह्मा बाप ने जीवन में ही फरिश्तापन का स्वरूप दिखाया। कितनी जिम्मेवारी रही! सभी को योगी बनाना ही है लेकिन इतनी जिम्मेवारी होते भी आप सबने देखा न्यारा और प्यारा रहा। सदा बेफिक्र बादशाह रहा, फिकर नहीं बेफिक्र बादशाह। ऐसे ही आप बच्चों को भी अभी बाप समान बेफिक्र बादशाह फरिश्ता बनना ही है। यह दृढ़ संकल्प है, बनना ही है! कि यह सोचते हो बन ही जायेंगे!

अभी बापदादा ने देखा कि अभी समय अनुसार जितना सेवा का उमंग-उत्साह प्रैक्टिकल में है इतना ही अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना और बनाना, सम्पन्न बनना और बनाना, इस प्वाइंट के ऊपर भी अभी स्वयं भी उमंग-उत्साह में रहना और वायुमण्डल में भी उमंग-उत्साह दिलाना। एक दो के सहयोगी बन अब वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ। जैसे एक दो में सेवा का उमंग वायुमण्डल में फैलाया है ऐसे अभी बापदादा बच्चों में यही शुभ आशा रखते हैं कि यह लहर वायुमण्डल में फैले। बापदादा खुश है लेकिन अभी भी पुरुषार्थ है, तीव्र पुरुषार्थ करना है।

अभी हर बच्चे में बापदादा की यही आश है तो हर बच्चा बाप के आशाओं का सितारा हो ना! हैं? जो समझते हैं हम बाप के आशाओं के सितारे बन यह उमंग-उत्साह वायुमण्डल में फैलायेंगे वह हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं। बापदादा हाथों को देखके खुश हो जाते हैं। मैजारिटी ने हाथ उठाया है, पीछे वालों का दिखाई नहीं देता लेकिन आगे वालों का दिखाई दिया। अभी उठा रहे हैं पीछे वाले भी, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा। बापदादा ने देखा कि विशेष मन में कोई भी बात का उमंग-उत्साह आता है तो वह कार्य साकार रूप में अच्छा हो जाता है इसलिए बापदादा इस बारी स्नेह के दिन में यह होमवर्क दे रहा है कि हर एक बच्चा मन के कारण जो संकल्प और समय व्यर्थ जाता है, अगर कभी भी कोई व्यर्थ संकल्प आ जाता है तो सभी को अनुभव होगा कि उसमें टाइम कितना वेस्ट जाता है। इनर्जी कितनी वेस्ट जाती है। तो बापदादा यह होमवर्क देने चाहता कि यह दो मास हर एक बच्चा मन के व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय की बचत का अपने प्रति विधि बनावे। इन दो मास में हर एक अपना चार्ट रखे कि व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के ऊपर कितना कन्ट्रोल किया? क्योंकि अभी समय के प्रमाण आप सभी को मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की मन्सा सेवा करने का समय होगा। इसके लिए सदा मन के ऊपर अटेन्शन रखना जरूरी है। कहा हुआ भी है मनजीत जगतजीत। तो मनमनाभव के वायुमण्डल में मन के व्यर्थ को सम्पन्न करना है। कर सकते हैं? करेंगे? वह हाथ उठाओ। बापदादा इनाम देगा। अपनी रिजल्ट आप देखना। मन खुश तो मन की खुशी बांटेंगे। यह पुरुषार्थ में नम्बर सभी आगे से आगे लेने का अटेन्शन रखो। व्यर्थ समाप्त, संकल्प समय दोनों समाप्त और समर्थ संकल्प, समर्थ समय आने वाले समय में वायुमण्डल में फैलेगा।

बापदादा एक बात पर बच्चों को देख खुश है। कौन सी बात पर? कि हर बच्चे ने सेवा तो की है लेकिन साथ में जो बापदादा का इशारा है कि डबल राजा बनो। जानते हो ना! एक स्वराज्य अधिकारी और दूसरा भविष्य राज्य अधिकारी। स्वराज्य अधिकारी और बाप को नशा है कि ऐसा और कोई बाप नहीं जिसका हर बच्चा स्वराज्य अधिकारी हो। आप सभी स्वराज्य अधिकारी हो ना! स्व पर आत्मा राज्य करने वाली है। कर्मेन्द्रियों के वश नहीं, राज्य अधिकारी। तो बाप यही चाहते हैं कि हर एक बच्चा स्वराज्य अधिकारी सदा रहे, कभी कभी नहीं। बन सकते हैं? यह दो मास जो दिया है, इसमें नोट करना स्वराज्य अधिकारी रहे? या कर्मेन्द्रियों के वश बन गये? अभी कर्मातीत बनना है, समय समीप आ रहा है। तो क्या करना है? चलते-फिरते स्वराज्य अधिकारी बनना ही है। यह संस्कार आप ब्राह्मण बच्चों के ही हैं। डबल राज्य, स्वराज्य और फिर भविष्य में विश्व राज्य। बापदादा चक्र लगाते बच्चों का रिजल्ट नोट करते हैं तो सदा स्वराज्य अधिकारी इसमें अभी अटेन्शन चाहिए। तो दो कार्य बापदादा ने दिया एक यह दो मास स्वराज्य अधिकारी कहाँ तक रहते? वह अपनी रिजल्ट देखनी है और साथ-साथ मन की कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर द्वारा व्यर्थ समाप्त करना है। इसमें जो नम्बर लेंगे उसको बापदादा इनाम देगा। पसन्द है? करना है ना! करेंगे? करेंगे ना! कांध हिलाओ। अच्छा।

बापदादा ने आज सभी का जो स्नेह है वह स्वीकार किया। अमृतवेले तो वतन में भी बहुत बच्चों की रिमझिम थी। एडवांस पार्टी भी वतन में आज अपने दिल का स्नेह देने लिए, लेने लिए आये थे। अब वह बाप से पूछते हैं कि आखिर हमारा यह पार्ट कब तक? क्या जवाब दें? पहली लाइन वाले बताओ क्या जवाब दें? क्या कहा? (दादी जानकी ने कहा हम रेडी हैं) आप अकेले जायेंगी? (सभी जायेंगे) आपका प्यार है ना, ऐसे छोड़कर राज्य कैसे करेंगे। (एडवांस पार्टी वाले हमको क्यों छोड़कर चले गये) उन्हों का पार्ट था ना। उन्हों को जाना ही था। अभी आप यह कोशिश करो कि जल्दी जल्दी संगठन तैयार करो। जो दो मास काम दिया है ना, अगर यह काम आप सभी को करा देंगे, रिजल्ट निकालेंगे तो जल्दी हो जायेगा। (बाबा के स्नेह में कर लेंगे) स्नेह तो है, स्नेह में सभी पास है। बापदादा भी देखते हैं कि स्नेह सबका है लेकिन स्नेह के साथ शक्ति भी चाहिए। इसके लिए अमृतवेले को पावरफुल बनाओ, बैठते हैं बापदादा बैठने की मुबारक देते हैं लेकिन जो बैठने का वायुमण्डल शक्तिशाली चाहिए, कोई कैसे बैठता है, कोई कैसे बैठता है। अगर आप फोटो निकालो ना, तो आपको खुद लगेगा कि और कुछ होना चाहिए। जो बापदादा ने ज्वालामुखी योग कहा, उसके ऊपर अभी और गहरा अटेन्शन देना। पुरुषार्थ करते हैं सभी लेकिन पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द जोड़ो। अभी बापदादा ने हर बच्चे को यह दो मास दिये हैं, इसमें जितना अटेन्शन देंगे तो अटेन्शन के साथ बापदादा भी एकस्ट्रा आपको सहयोग देगा। मन के मालिक, मन को ऐसे चलाओ जैसे पांव और बांह को चलाते हो। जो चाहते हो वह करते हैं ना। अभी आप चाहो यहाँ नहीं यहाँ रखूं तो रख सकते हो ना। ऐसे माइन्ड कन्ट्रोल, जो चाहे वही मन संकल्प करे। रोज़ रात को रिजल्ट देखो आज मन की रूलिंग पावर,

कन्ट्रोलिंग पावर कहाँ तक रही? अभी व्यर्थ को समाप्त जल्दी-जल्दी करना चाहिए अब समर्थ बन वायुमण्डल में समर्थपन की शक्ति फैलाओ। बापदादा तो बच्चों का दु:ख दर्द, पुकार सुन करके बच्चों द्वारा अभी जल्दी समाप्ति कराने चाहते हैं। सुनाया ना, पुरुषार्थ सब कर रहे हैं लेकिन अभी एड करो तीव्र। करना ही है, करेंगे, देखेंगे... यह गे-गे नहीं चलेगा।

स्नेह का नज़ारा भी आज देखा, हर एक के दिल में कितना प्यार है लेकिन जितना प्यार है ना, साथ में उतना शक्ति भी चाहिए। अभी शक्ति को भरो। कभी भी कोई भी बहनें अपने को सिर्फ शक्ति नहीं, शिवशक्ति समझो। शिवशक्ति, बाप साथ है। पाण्डवों से पाण्डवपति साथ है। तो अभी क्या करेंगे? जो बापदादा ने कहा है पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द लगाओ। वायुमण्डल बनाओ। एक दो के सहयोगी बन हर एक अपने-अपने स्थान पर रहते हैं, स्थान को शक्तिशाली बनाओ, साथियों को शक्तिशाली बनाओ। तो क्या करेंगे अभी? नवीनता करेंगे ना! जब मेरा बाबा कहते हैं, तो 'मेरे' जैसा बनना तो पड़ेगा ना। हर एक अपने दिल में दृढ़ संकल्प करो, संकल्प अच्छे-अच्छे करते हो, अमृतवेले बापदादा देखते हैं कि संकल्प अच्छे करते हो यह करेंगे, यह करेंगे, यह करेंगे लेकिन जब कर्मयोगी बनते हो, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो उसमें फर्क हो जाता है। कर्मयोगी की स्थिति उसमें अटेन्शन ज्यादा चाहिए। अच्छा।

सभी खुश तो हैं ना! खुश हैं? देखो नये-नये भी कितने आते हैं। जो नये पहली बार आये हैं वह हाथ उठाओ। देखो कितने हैं? आधा क्लास नये आये हैं। बापदादा आये हुए नये बच्चों को देख खुश है क्योंकि लास्ट समाप्ति के समय से तो पहले आ गये हैं। लेकिन जितना लेट आये हो इतना ही तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा क्योंकि इस थोड़े टाइम में आपको पूरे 21 जन्मों का भविष्य बनाना है। इतना अटेन्शन रखना पड़ेगा। समय को बचाना, सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाना। तीव्र पुरुषार्थी रहना, साधारण पुरुषार्थ से पहुंचना मुश्किल है। फिर भी बापदादा आये हुए बच्चों को दिल से मुबारक दे रहे हैं। मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है, 7 हजार आये हैं:- अच्छा। इन्दौर ज़ोन की टीचर्स हाथ उठाओ। बापदादा टीचर्स को मुबारक दे रहे हैं। बापदादा सभी टीचर्स को मुबारक क्यों दे रहे हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा कि इन्दौर की सेवा में निमित्त जो बने हैं वह सेवा की रिजल्ट अच्छी दिखा रहे हैं। जो भी वहाँ के विशेष निमित्त बने हैं, बाहर वाले उन्हों से कनेक्शन अच्छा है। सन्देश अच्छा दिया है अभी आगे क्या करना है? इसमें तो ठीक है, इसकी तो बापदादा मुबारक देते हैं। लेकिन जितना सम्बन्ध-सम्पर्क में हैं, इन्हों को अभी वारिस बनाओ। सम्पर्क वाले हैं लेकिन वारिस क्वालिटी बाप के आगे लाओ। ला सकते हो, कनेक्शन अच्छा है। (खांसी आ रही है)

आज रथ की तबियत थोड़ी ढीली है। फिर भी बापदादा तो मिलने आ गये। बापदादा को बच्चों को देखकर खुशी होती है वाह बच्चे वाह! यही दिल से निकलता है। जितना आप दिल से वाह! बाबा वाह! कहते हो उससे ज्यादा बापदादा वाह! बच्चे वाह! कहते हैं। तो इन्दौर वाले कनेक्शन जो है उसको थोड़ा समीप लाओ। ला सकते हो। उम्मींदवार हैं। उम्मींदवार को सामने लाओ। अच्छा। फिर भी सेवा के निमित्त आ गये हो बापदादा भी खुश होते हैं कि एकज़्एक ज़ोन को बहुत अच्छा यह चांस मिलता है। ज्यादा से ज्यादा संख्या लाने का चांस मिलता है, तो यह प्रोग्राम बहुत अच्छा बनाया है। हर एक ज़ोन को चांस मिलता है लेकिन चांस लेके फिर उसका रिजल्ट भी निकालना, बापदादा के सामने लाने का। अच्छा।

डबल विदेशी 400 आये हैं:- बहुत अच्छा। डबल विदेशी यज्ञ का श्रृंगार हैं। जब भी आते हैं ना तो यज्ञ का श्रृंगार हो, सभी कितने खुश होते हैं क्योंकि आपकी एक विशेषता अच्छी है, जो भी करना है ना वह फौरन करते हो, लम्बा नहीं करते हो। बापदादा देखते हैं कि उमंग-उत्साह ज्यादा बढ़ता जा रहा है। कोई भी ऐसा टर्न नहीं होता जिसमें डबल विदेशी नहीं हों। तो बापदादा डबल विदेशियों को टाइटल देता है डबल पुरुषार्थी। अभी करके दिखाना। डबल पुरुषार्थी बनके रिजल्ट दिखाना। बापदादा को मालूम है सेवा बढ़ती रहती है, समाचार आता रहता है। सेवा भी अच्छी है, अभी सिर्फ जो आज कहा ना, पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द सदा लगाओ। तो तीव्र पुरुषार्थी बच्चे सदा बापदादा को अपने दिल में रखते और बापदादा हर बच्चे को अपने दिल में रखते। सबके दिल में बापदादा है ना। हाथ उठाओ। दिल में कौन रहता है? बापदादा। और बापदादा के दिल में आप बच्चे हैं। बापदादा, जिन बच्चों ने खास यादप्यार भेजी है उन्हों को खास यादप्यार दे रहे हैं। जयन्ती बच्ची ने भी बहुत दिल से यादप्यार भेजा है,

गायत्री बच्ची ने भी भेजी है और किसका भी नाम था, तो जिन्होंने विशेष यादप्यार भेजी है, बाप ने भी उन्हों को विशेष यादप्यार दी है। और अगर किसी की कोई भी आश है तो उस आश को पूरा करते हुए उन्हों को आगे बढ़ाते चलो। आशायें इन्हों की खराब नहीं होती हैं, अच्छी होती हैं। सेवा का उमंग भी अच्छा होता है तो जिन्होंने खास याद भेजी है उन्हों को बापदादा पदमगुणा यादप्यार दे रहे हैं। अच्छी आलराउण्ड सेवाधारी है। ऐसे नहीं कहो और याद नहीं हैं, याद सब हैं लेकिन उन्होंने विशेष भेजी है इसलिए विशेष दे रहे हैं। कमाल हैं, कोई ज़ोन में विदेशी मिस नहीं होते हैं। (वजीहा ने बहुत प्यार से याद करके पत्र लिखा है) बच्ची अच्छी याद में रहती है। बापदादा ने देखा कि बच्ची की बीमारी ने कितनों का कल्याण किया है। डाक्टर्स भी इसको देखकर खुश होते हैं कि बीमार देखने में नहीं आती है, जितनी बीमारी है! खुशमिजाज रहती है। इसको कहा जाता है बीमारी के ऊपर विजयी। बीमारी अपना काम कर रही है और बच्ची अपने याद के काम में बिजी है। यह भी डबल विदेशियों का एक्जैम्पुल है। तो डबल विदेशियों को बापदादा दिल से यादप्यार भी देते हैं और विशेष मुबारक देते हैं मधुबन का श्रृंगार बनके आने का। अच्छा लगता है ना आप लोगों को? सभी बच्चों को भी आप लोगों का आना देख करके खुशी होती है। सबके दिल से वाह! वाह! निकलती है। अभी कमाल तो की है जो जगह-जगह पर अपना सन्देश दिया है लेकिन अभी वारिस क्वालिटी तैयार करो, विदेश से वारिस लाओ तैयार करके। कर सकते हो क्योंकि सबमें फास्ट जाने वाले हो ना। तो यह भी कर सकते हो। अच्छा।

टीचर्स बहिनें बहुत आई हैं:- टीचर्स को देखकर तो बापदादा बहुत खुश होते हैं क्योंकि जो निमित्त टीचर्स बनी हैं, वह बापदादा को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनी हुई हैं। कोई भी टीचर को देखते खुश होते हैं क्योंकि टीचर्स माना ही जिसके फीचर्स से फ्युचर दिखाई दे। फ्युचर आपका क्या है? फ्युचर है सदा दिलखुश, सदा अधिकारी, अधीन होने वाले नहीं। तो टीचर्स के फीचर्स यह साक्षात्कार कराते हैं। हर एक टीचर सदा यही समझे कहाँ बोला, कहाँ नहीं बोला भले, लेकिन आपके फीचर्स वर्तमान समय की प्राप्ति और भविष्य की प्राप्ति आपकी शक्ल दिखाती है। सदा यह अटेन्शन रखो कि हमारा चेहरा ऐसा साक्षात्कार कराने वाला है? कोई भी टीचर के सामने आये, टीचर को देख एक तो खुशमिजाज हो जाए, खुशी उसके जीवन में दिखाई दे। ऐसे खुशनुमा और खुशकिस्मत हो। बापदादा ने देखा है हर एक टीचर का लक्ष्य अच्छा है। करना ही है। बनना ही है। ऐसे है ना? लक्ष्य क्या है? यही लक्ष्य है ना! तो यह लक्ष्य लक्षण में दिखाई देता भी है और ज्यादा दिखाई देना चाहिए। जो भी आवे खुशी जरूर ले जाये क्योंकि खुशी हर मनुष्य को आवश्यक है। चाहते हैं लेकिन बन नहीं पाते हैं तो टीचर्स माना फीचर्स द्वारा भी सेवा करे। अनुभव करें कि यह क्या बन गई है! अभी आगे चल करके आपका चेहरा और चलन यह सेवा ज्यादा करेगा क्योंकि जैसे समय नाजुक आयेगा तो समय कम मिलेगा लेकिन चाहना बढ़ेगी, कुछ मिले, कुछ मिले। इसके लिए टीचर्स को सदा ऐसे एवररेडी रहना चाहिए, जो कोई आवे वह कम से कम कुछ लेके ही जावे। चेहरे और चलन द्वारा भी कुछ न कुछ लेके जाये। दाता के बच्चे हो ना! बापदादा तो टीचर्स को देखकर बहुत खुश होते हैं। दिल ही दिल में गुण गाते हैं वाह टीचर्स वाह! क्योंकि हर एक टीचर सेवा तो करते ही हैं और अपनी रिजल्ट रात को भी देखते होंगे कि आज की सेवा क्या हुई! अपना चार्ट तो आपेही देखते हैं। जो लक्ष्य रखा सेवा का वह हुआ। अगर नहीं हुआ कारणे अकारणे, तो दूसरे दिन डबल करो। खाली नहीं छोड़ो क्योंकि टीचर्स माना निमित्त दाता के बच्चे दाता। तो बापदादा तो खुश होते हैं चाहे छोटे सेन्टर की हैं चाहे बड़े सेन्टर की हैं लेकिन त्याग करके सेवास्थान पर आना यह भी हिम्मत है ना। तो बापदादा आपकी हिम्मत पर तो खुश है। अब और साथी बनाओ। और भी टीचर्स निकालो क्योंकि सेवा बढ़नी ही है। अभी थोड़ा हंगामा होगा और सब उत्कण्ठा से आपके आगे आयेंगे। सर्विस बढ़ने वाली है, कम होने वाली नहीं है। अच्छा है, एक ज़ोन की हैं और दूसरी तो थोड़ी होंगी। (2000 टीचर्स आई हैं) मुबारक हो टीचर्स को।

कलकत्ता वालों ने बहुत अच्छा श्रृंगार किया है:- कलकत्ता वालों ने यह सेवा बहुत अच्छी दिल से ली है। बापदादा देखते हैं श्रृंगार क्या भी हो लेकिन दिल से करते हैं। बापदादा दिल देखते हैं इसमें, श्रृंगार नहीं देखता वह तो चलते-फिरते दिखाई दे देता है लेकिन दिल से करते हैं इसकी मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा है। वैसे भी कलकत्ता ब्रह्मा बाप की दिव्य जन्म भूमि है। अच्छा है। आपकी इन्चार्ज दादी भी वन्डरफुल पार्ट बजा रही है। अभी सभी ज़ोन को बापदादा कहते हैं अभी सेवा वारिस क्वालिटी लाओ अभी इसमें नम्बर लो। सेवास्थान बढ़ाये और

बाप के बच्चे भी बढ़ाये इसकी तो मुबारक है लेकिन अभी हर ज़ोन लक्ष्य रखे वारिस क्वालिटी बढ़ाओ। बापदादा हमेशा कहते हैं कि माइक भी हो वारिस भी हो, ऐसी क्वालिटी बढ़ाओ। जिसके कहने से, एक के कहने से अनेक प्रभावित हो जाएं। इसको कहते हैं क्वालिटी। अच्छा।

चारों ओर के अति स्नेही, सहयोगी, सर्विसएबुल बच्चों को बापदादा स्नेह के दिन की, स्नेह भरी यादप्यार दे रहे हैं और साथ-साथ बापदादा हर स्नेही बच्चों को यह बात कह रहे हैं कि अब हर बच्चे को तीव्र पुरुषार्थ में नम्बरवन का लक्ष्य रख बनना ही है और ड्रामा बनायेगा ही। सभी बच्चों को चारों ओर के कहाँ भी बैठे हैं, बापदादा सभी को देख रहे हैं कैसे उमंग-उत्साह से बैठे हैं, सुन भी रहे हैं, देख भी रहे हैं। एक-एक बच्चे को स्नेह भरी यादप्यार और मुबारक हो, मुबारक हो।

दादियों से:- अच्छा देखो, सभी दादियां जो भी हैं ना निमित्त वह बहुत प्यारी हैं। (दादी गुल्जार बहुत अच्छी है) आप नहीं होती तो क्या करते। सभी दादियां भी प्यारी हैं, न्यारी हैं। (बाबा की दुआयें बहुत हैं)

मोहिनी बहन से:- यह बहादुर है, ठीक हो जायेगी। बापदादा चला रहा है ना। यह भी चल रही है, बापदादा चला रहा है। थोड़ा बहुत हिसाब चुक्तू करके चल तो रही है, आ तो गई। बहुत अच्छा।

बापदादा को हर बच्चा ऐसा प्यारा है, चाहे दादियां आगे आती हैं आप नहीं आते हो लेकिन बाप को हर बच्चा प्यारा है। ऐसे नहीं समझो हम तो दूर से देखने वाले हैं, दिल में रहने वाले हैं। अच्छा।

परदादी से:- आपका ज़ोन आया है, देखा कितने अच्छे-अच्छे आये हैं। अच्छा।

(तीनों भाईयों ने बापदादा को गुलदस्ता दिया) आपकी त्रिमूर्ति भी अच्छी है।

(रमेश भाई ने गाडली वुड स्टुडियो का फोटो बापदादा को दिखाया और बताया कि 26 जनवरी को उद्घाटन है) बहुत अच्छा, अभी खूब चलाना, सभी जोर देके चलाना। नई-नई बातें करना, होंगी। सेवा माना मेवा खाना। सेवा नहीं कर रहे हो मेवा खा रहे हो। (ऊषा बहन को बहुत उमंग था सेवा का) उसकी भावना काम करेगी। जो भावना सेवा की रही ना, उसके दिल में भावना रही सेवा हो, सेवा हो, वह काम करेगी। सेवा का उमंग था तभी तो परिवार को भी प्यारी, बाप को भी प्यारी। (रमेश भाई से) आपकी तबियत ठीक है? चलाओ।

भूपाल भाई से:- अभी आफीसर ठीक हो गया। अभी कुछ न कुछ करता रहता है। उसको योग से ठीक करो और जाकरके थोड़ा सेवा करो। जिससे उसको लगे कि यह कितने शुभचिंतक हैं। यह अनुभव जरूर करें। ठीक हो जायेगा फिर। अच्छा।

गोलक भाई से:-(बहुत मेहनत करता है) मेहनत का फल इसको अन्दर मिल रहा है। मेहनत व्यर्थ नहीं जाती। मेहनत का फल यह है जो सबका प्यार है, यह फल है। कोई बात हो जाती है वह बात दूसरी है, लेकिन दिल का प्यार है। अच्छा।

नारायण दादा और मनोज से:- दोनों आये हैं बहुत अच्छा। अच्छा है आ गये ना। हर टर्न में आपको आना चाहिए। पहले आते थे, अभी कभी-कभी आते हो। कभी-कभी बाबा को अच्छा नहीं लगता। आना चाहिए क्योंकि बाप चाहते हैं कि हर आत्मा आगे से आगे बढ़े। आयेंगे, जायेंगे, मिलेंगे खुशी होगी। चेहरा खुशनुमा हो जायेगा और विचार खत्म हो जायेंगे। विचार करते हो ना! वह खुशमिजाज हो जायेंगे क्योंकि फिर भी ज्ञान मिला हुआ है ना। यह भी खुश। आप दोनों को तो ऐसा खुश रहना चाहिए जो कोई पूछे कहाँ से मिली खुशी। होना चाहिए। अच्छा है। खुश रहेंगे ना तो प्रॉब्लम सब खत्म हो जायेंगी, गैरन्टी है। सोचते हो ना, खुश रहो। जितना खुश रहेंगे उतनी तबियत भी अच्छी और सभी देख करके भी खुश हो जायेंगे। फिर भी सम्बन्ध है ना, परिवार से, कितने सम्बन्धी हैं। कहाँ भी रहो लेकिन सेवा करो चेहरे से। जो भी देखे कौन हैं यह, कहाँ से आये हैं। पालना तो ली है ना।

''बापदादा की आश - अब ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने का कदम उमंग-उत्साह से तीव्र करो, इसका विशेष प्लैन बनाओ''

आज बापदादा अपने मीठे-मीठे प्यारे-प्यारे बच्चों को देख खुश हो रहे हैं। सबके दिल से वाह बाबा वाह निकल रहा है और बाप के मुख से वाह बच्चे वाह! यही बोल निकल रहे हैं। आज चारों ओर के बच्चों को भी बापदादा देख रहे हैं, सबके मन में ब्रह्मा बाप के स्नेह की झलक दिखाई दे रही है। सबके मन में प्यार की लहर दिखाई दे रही है। बाप के मन में भी हर बच्चों के प्रति प्यार की लहरें आ रही हैं। यह प्यार अलौकिक प्यार है। बापदादा ने देखा मैजारिटी बच्चे प्यार की शक्ति से ही चल रहे हैं। बाप को भी हर बच्चे के प्रति प्यार आ रहा है और दिल से हर बच्चे प्रति यही निकलता मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, हर बच्चे को बाप ने तीन तख्त के मालिक बनाया है। जानते हो ना! सारे कल्प में कोई भी आत्मा तीन तख्त के मालिक नहीं बन सकती लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें तीन तख्त के मालिक बन कितने रूहानी प्यार में, नशे में रहते हो! हर एक अपने से पूछे इतनी खुशी, इतना रूहानी नशा सदा स्मृति में रहता है? सदा शब्द सदा याद है? बापदादा को कभी-कभी शब्द अच्छा नहीं लगता।

तो आज सभी चाहे सामने बैठे हैं, चाहे अपने-अपने स्थानों पर बैठे हैं लेकिन बाप तो देख ही रहे हैं, दूर होते भी बाप के तो सामने ही हैं। तो बाप ने देखा हर एक बच्चा आज विशेष ब्रह्मा बाप के स्नेह में समाये हुए हैं। स्नेह मुश्किल बात को भी सहज करने वाला होता है। तो बापदादा हर एक बच्चे से अति स्नेह करते हैं। चाहे पुरुषार्थी हैं लेकिन हैं तो बाप के बच्चे। तो आज बापदादा यही चाहते हैं कि हर एक बच्चे के मुख से सदा शब्द निकले। हो सकता है? जो समझते हैं कि अब से सदा शब्द सहज है, लक्ष्य रखकर लक्षण आ ही जायेंगे क्योंकि बापदादा मददगार है, वह हाथ उठाओ। वाह वाह! वाह बच्चे वाह! ताली बजाओ।

बापदादा भी सिर्फ सामने वालों को नहीं लेकिन चारों तरफ के बच्चों को देख प्यार से कहते वाह बच्चे वाह! जैसे मैजारिटी बच्चे बापदादा से दिल के प्यार में नम्बरवन हैं ऐसे सदा विजयी, इससे भी कभी-कभी शब्द निकल जाए। यह हो सकता है? हो सकता है? इसमें हाथ उठाओ। हाथ बड़ा उठाओ, हिलाओ। हाथ तो बहुत अच्छे हिल रहे हैं। बापदादा बच्चों को हिम्मत में देख खुश होते हैं। एक-एक बच्चे से बाप का, दोनों बाप, बापदादा दोनों का दिल का प्यार सदा है और सदा रहेगा। अगर चलते-चलते थोड़ा सा माया का वार हो भी जाता है तो भी बाप का प्यार समाप्त नहीं हो सकता। और ही बापदादा साथी बच्चों को यही कहते इनको एकस्ट्रा सहयोग, प्यार दे करके उड़ाओ। अब बापदादा यही चाहते हैं समय को तो सब जानते ही हो। समय कहाँ जा रहा है, यह सब जानते हैं। तो समय को देखते बापदादा की अचानक की बातें याद करो। बापदादा की यही दिल की आश है एक भी बच्चा पीछे न हो, साथ रहे, साथ चले। साथ रहना स्थूल नहीं, लेकिन दिल से सदा श्रीमत पर चलना, यही सदा साथ है। तो अभी समय प्रमाण जैसे प्यार होता है तो समझते हैं साथ रहें, साथ रहना स्थूल में तो हो नहीं सकता लेकिन जो बाप चाहता है, परिवार साथी चाहते हैं उसमें समान और साथी बनके चलना यही साथ है।

तो जैसे आज के दिन बापदादा के पास प्यार की लहर चारों ओर के हर बच्चे की पहुंची है, ऐसे ही बापदादा की शुभ आशा है कि हर रोज़ अमृतवेले से लेके रात तक जो भी मन, वचन, कर्म में कार्य करते हो, उसमें चेक करो बाप का कहना और मेरा करना समान रहा? यह हो सकता है! इजी है? मुरली रोज़ की बाप का कहना है। तो हर एक चेक करे बाप का कहना मेरा करना, एक रहा? यह मुश्किल तो नहीं क्योंकि हर एक रात को सोने के पहले अपने रोज़ की रिजल्ट चेक तो करते ही होंगे। बाप अभी चाहते हैं कि आप बच्चे स्वयं सम्पन्न बन समय को समीप लाओ। ब्रह्मा बाप भी आवाह्न कर रहे हैं आओ बच्चे साथ चलें अपने राज्य में। आत्माओं को भी मुक्ति का गेट

खुलवाकर मुक्ति का पार्ट बजाने दो। किसको राज्य, किसको मुक्ति।

तो आज के दिन अमृतवेले से लेके स्नेह की मालायें तो सब तरफ से बहुत पहुंच गई। बापदादा सबको भेजने वालों को मुबारक दे रहे हैं। अब क्या करना है? अब जो बापदादा और आपकी भी चाहना यही है कि सब सम्पन्न और सम्पूर्ण बन जायें। इस कदम को और तीव्र करो। आपको भी पसन्द है ना! दु:ख अशान्ति अपने भाई बहनों की सुनते अच्छी नहीं लगती है ना! अब आपस में मिलके और बातों में समय न देके यह प्लैन बनाओ। चारों ओर सम्पन्न सम्पूर्ण बनने का उमंग-उत्साह हो। ब्रह्मा बाप यही चाहते हैं मेरा एक-एक बच्चा मेरे समान सम्पन्न बन जाये। यह ब्रह्मा बाप की आशा पूर्ण तो करेंगे ना! तो आज ब्रह्मा बाप चारों ओर के बच्चों पर स्नेह और शक्तियों की लहर वा शुभ संकल्प की लहर फैला रहे थे। बाप भी ब्रह्मा बाप से बच्चों का प्यार देख करके आज फूल फैलाने का दिन है ना, तो बाप भी शुभ आशाओं के फूल ''कहा और किया'' इस उम्मीदों के नहीं लेकिन तीव्र पुरुषार्थ के फूल आप चारों ओर के बच्चों पर डाल रहे थे। अच्छा।

बापदादा हर बच्चे को चाहे नये भी आये हो, पहले बारी जो आये हैं वह उठो। देखो, सभी मैजारिटी आधा नये आये हैं। आने वालों को बहुत-बहुत बापदादा का यादप्यार स्वीकार हो। बापदादा खुश है लेकिन कमाल करके दिखाना। अच्छा। देख रहे हैं, हर एक बच्चा सामने दिखाई दे रहा है, चाहे वहाँ है चाहे लास्ट है लेकिन इसमें (बापदादा के सामने टी.वी. रखी है) सामने ही दिखाई दे रहा है तो एक-एक बच्चे को बापदादा का यादप्यार स्वीकार हो। अभी परिवर्तन जल्दी-जल्दी करना पड़ेगा। आ गये उसकी मुबारक, अभी पुरुषार्थ कर नम्बर आगे लेके फिर मुबारक लेना। अच्छा, बैठ जाओ, भले पधारे।

सेवा का टर्न पंजाब ज़ोन का है:- भले पधारे। अच्छा है, पंजाब में ब्रह्मा बाप का बहुत प्यार था। खास पंजाब में चक्कर लगाके रहा। सभी जगह नहीं गये ब्रह्मा बाप लेकिन थोड़े स्थानों में गये, उसमें भी पंजाब में भी गये तो पंजाब को बाप ने अपने डायरेक्ट वरदान दिये हैं और पंजाब की विशेषता कुमारियां टीचर्स बहुत अच्छी निकाली हैं। बहादुर, डरने वाली नहीं। ठीक है ना टीचर्स। बहादुर हो ना, डरने वाली तो नहीं हो। नहीं हैं। आखिर भी सभी को कितने भी बड़े हैं, क्या भी हैं लेकिन आखिर तो जय शिव शक्तियां कहना ही पड़ेगा। अच्छा है बापदादा सेवा में तो हर एक को देखते हैं कि कर रहे हैं, करते रहेंगे लेकिन एक बात सभी ज़ोन के लिए जो बापदादा ने कही है, सर्टीफिकेट लेने के लिए वह अभी तक किसी ज़ोन ने नहीं ली है। अभी पंजाब को नम्बरवन जाना चाहिए। एक ने कहा, सभी ने प्यार से किया और जैसे स्थूल में एक दो को साथ देते हो वैसे संस्कारों के मिलन में भी प्रत्यक्ष फल दिखाओ। ठीक है ना! अभी वह नम्बर नहीं आया है, अभी तक कोई भी ज़ोन की यह रिजल्ट नहीं आई है। पंजाब करेगा। करेंगे ना? टीचर्स हाथ उठाओ। टीचर्स तो बहुत हैं। बहुत अच्छा, बापदादा खुश है।

डबल विदेशी:- विदेशी, लेकिन बापदादा विदेशी बच्चों का उमंग उत्साह देख खुश है और बापदादा को विशेष खुशी है कि मधुबन में आके हर एक अपने पुरुषार्थ में एडीशन करते हैं। आप जो भी सभी आये हैं तो विशेष कोई न कोई बात में अटेन्शन दिया है ना! आगे से यह बात नहीं करनी है और यह बात करनी है, दोनों का स्पष्टीकरण लेके जाते हैं और बापदादा ने देखा अटेन्शन देते भी हैं और निमित्त बने हुए अटेन्शन दिलाते भी हैं इसलिए बापदादा खुश होते हैं कि अटेन्शन देके कई परिवर्तन भी करते हैं यह रिजल्ट बापदादा ने देखी है और आगे के लिए यह अटेन्शन देना कि मधुबन में आना अर्थात् कोई न कोई बात का प्रोग्रेस करना। तो आप सभी ने किया है? हाथ उठाओ। कुछ न कुछ परिवर्तन करके ही जाना। है ठीक है, मंजूर है? बापदादा का भी प्यार है क्योंकि बापदादा ने देखा है डबल सर्विस करते भी कई बच्चे बहुत अच्छे तीव्र पुरुषार्थी भी हैं। बापदादा खुश है और नम्बर सदा आगे लेते रहना। चल रहे हैं, नहीं। नम्बर कौन सा? आ रहे हैं, क्लास कर रहे हैं नहीं। हर दिन प्रोग्रेस क्या किया? मुरली सुनना, धारण करना, इसका प्रूफ है परिवर्तन करना। तो अच्छा है बापदादा खुश है। करते हैं

और आगे भी करते रहेंगे। अच्छा है। हाथ हिलाओ बापदादा सभी को देख रहे हैं क्योंकि इसमें (टी.वी.में) खास आता है। देखो ड्रामानुसार जब बच्चे आये थे उनसे 100 साल पहले यह साइंस ने तरक्की की, तो अभी भी देखो यह साइंस आपके काम में आ रही है। ठीक है ना! अच्छा। सभी बच्चों से, एक-एक बच्चा पीछे वाला भी ऐसे ही समझो हम बापदादा के सामने हैं और बापदादा मेरे को यादप्यार दे रहे हैं।

कलकत्ता वालों ने सभी स्थानों पर फूलों से श्रृंगार किया है:- - अच्छा करते हैं, दिल से करते हैं, मेहनत भी करते हैं इसीलिए इन्हों को खास बापदादा की तरफ से दो दो टोली और 6-6 फल इन्हों को देना। मेहनत जिन्होंने की है, उन्हों को फल तो मिलना चाहिए ना। बाकी अच्छा है दिल से करते हैं और दिल को अच्छा लगता है। मुबारक हो। सेवा की, एक आने की दूसरा सेवा की तो मुबारक हो। अच्छा।

अभी चारों ओर के बच्चे बापदादा उन्हों को देख रहे हैं, वह भी बापदादा को देख रहे हैं, तो सभी को बहुत-बहुत तीव्र पुरुषार्थी, सोचा और किया, इसको कहते हैं तीव्र पुरुषार्थी। तो जो भी तीव्र पुरुषार्थी बच्चे हैं, उन एक-एक को बापदादा तीव्र पुरुषार्थ के लक्ष्य की मुबारक भी दे रहे हैं और साथ-साथ आगे बढ़ने की बधाई भी दे रहे हैं। अच्छा।

आज तो सबसे मिले ना। देखो, एक-एक से अलग सामने तो मिल नहीं सकते लेकिन एक-एक को दूर बैठे भी साथ में अनुभव करते यादप्यार दे रहे हैं। अच्छा। अभी क्या करना है!

बापदादा ने दादी जानकी जी को फूलों का हार पहनाया:- क्या करूं, नहीं कर रही हो। सभी अच्छा कर रहे हैं। जो भी निमित्त बने हैं वह सब अच्छा कर रहे हैं। सुना। (दादी जानकी जी ने कुछेक भाई बहिनों की बाबा को याद है) उनको कहना बापदादा अमृतवेले चक्कर लगाते हैं तो इन्हों के पास भी चक्र लगाते हैं। (नारायण दादा हॉस्पिटल में हैं) सेवा ध्यान से करना और यादप्यार भी देना।

मोहिनी बहन ने अहमदाबाद हॉस्पिटल से याद भेजी है:- कितनी भी बीमारी हो लेकिन बापदादा याद है तो बीमारी कम हो जाती है। जितनी कोशिश करके याद में रहते हैं, तो बीमारी आधी हो जाती है। जैसे वह दवाई है तो पहली दवाई यह याद की है, तो कर रहे हैं, करते रहेंगे। अच्छे हैं। फिर भी इतना सहन करने की हिम्मत है। अच्छा है, ठीक हो जायेगी।

निर्मलशान्ता दादी कमरे में हैं:- अभी भी कमरे में सुनेंगी। वह याद करती है और बाप भी यादप्यार देते हैं। नारायण को बाप की तरफ से टोली भेज देना।

सभी को बाप की याद देते ही रहना। अच्छा है। दिल्ली वाले भी अच्छा पुरुषार्थ कर रहे हैं। (बृजमोहन भाई ने शिवजयन्ती के प्रोग्राम की जानकारी दी) बहुत अच्छा मिलकर करने से आवाज फैलता है। भले कोने कोने में तो करना पड़ता है लेकिन इकट्ठा करने से चारों ओर फैलता है। अच्छा है, सभी को हर एक दिल्ली वाले समझें, हमको यादप्यार मिला है। (रमेश भाई से) तबियत ठीक है। बहुत अच्छा। (स्टुडियो की सेवा कैसे बढ़ायें) उसमें कोई ग्रुप बनाओ। सेवा की कमेटी थोड़ी बनाओ, उसके ऊपर जिसे चाहिए उसको रखो और फिर रिजल्ट पूछो, जो सोचा वह किया! अगर कोई प्रॉबलम हो तो वह भी उनकी हल करो। रात को 5 मिनट भी बैठकरके मुबारक दो, उमंग में आवे। मेहनत तो करनी पड़ती है। अच्छा है। सभी को याद देना।

यज्ञ निवासी बापदादा के बच्चों से सबका बहुत प्यार है। बापदादा के निमित्त बने हुए जो भी बच्चे हैं। दादियां निमित्त बनी हैं, तो उन्हों को भी बाबा विशेष दुआयें देते हैं। दुआओं से ही वह चलती हैं और चलाते हैं। विशेष दुआयें स्पेशल उन निमित्त बने हुओं को, चाहे भाई हो चाहे बहन हो, लेकिन निमित्त बने हुए कोई भी कार्य के लिए है, उन्हों को स्पेशल दुआयें मिलती रहती हैं। मिलती रहेंगी। अच्छा।

''ब्रह्मा बाप की विशेष शिक्षा - बापदादा दोनों के स्मृति स्वरूप बनो, फालो फादर करो''

आज के दिन सभी के मन में विशेष ब्रह्मा बाप की याद समाई हुई है। आज के दिन विशेष यादगार है ब्रह्मा बाप के साकार से अव्यक्त रूप में पार्ट बजाने का, तो अमृतवेले से लेके बापदादा ने देखा हर बच्चे के मन में विशेष ब्रह्मा बाप आंखों में समाये हुए थे। आज के दिन ही यादगार में ब्रह्मा बाप अव्यक्त रूप में पार्ट बजाने के निमित्त बनें। साकार रूप में बाप के साथ मिलन मनाने वाले बच्चे थोड़े थे, उन्हों के मस्तक में ब्रह्मा बाप के चरित्र और बोल, वरदान स्मृति में हैं। भल वह थोड़े थे अभी वृद्धि ज्यादा है लेकिन अभी भी अव्यक्त रूप में पालना दे रहे हैं। ब्रह्मा बाप को याद करते साकार रूप में पार्ट बजाने की प्रेरणा लेने वाले, साथी बनने वाले थोड़े थे लेकिन अब आप सब साथी बने हो। भले साकार रूप में नहीं देखा लेकिन अब अव्यक्त रूप में पालना ले रहे हैं। तो ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त रूप में पालना लेने वाले हाथ उठाना। नहीं, साकार में नहीं थे, अव्यक्त में आये हैं वह हाथ उठाओ। अव्यक्त ब्रह्मा अब भी कितनी पालना दे रहे हैं, अव्यक्त रूप में। शिव बाप तो साथ में हैं लेकिन ब्रह्मा बाबा भी अभी आकार रूप में पालना दे रहे हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप का साकार तन में होने कारण स्थापना में बहुत अच्छे से अच्छा पार्ट बजाया, ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण भी थे, जो ब्रह्मा के समय साकार में थे, वह हाथ उठाना। थोड़े थे। अभी आये हुओं में थोड़े हैं और भी हैं जो टर्न बाई टर्न आते हैं।

तो आज ब्रह्मा बाप के दिन अमृतवेले से सभी के दिल में शिवबाबा के साथ ब्रह्मा बाप याद रहा है। साकार में ब्रह्मा बाप की पालना लेने वाले हाथ उठाना। लम्बा उठाओ लम्बा। थोड़े हैं, थोड़े हैं। चलो आगे अभी अव्यक्त ब्रह्मा की पालना ले रहे हैं इसीलिए अपने को कहलाते हो ब्राह्मण। साकार ब्रह्मा के साथ पार्ट बजाना यह भी भाग्य की निशानी है लेकिन अब भी सभी बच्चों की बापदादा दोनों मिलके सेवा कर रहे हैं। कितने भाग्यवान हैं! बापदादा बच्चों का भाग्य देख वाह बच्चे वाह! का गीत गाते हैं। लेकिन अब भी दोनों ही मिलके बापदादा दोनों ही बच्चों की सेवा कर रहे हैं। तो ब्रह्मा बाप की पालना का विशेष पार्ट है, फालो बापदादा दोनों को करो क्योंकि सभी दिल से याद करते हैं ब्रह्मा बाप को और साथ-साथ आज के विशेष दिन पर सभी के मन में अमृतवेले से लेके बापदादा दोनों की शिक्षायें बार-बार स्मृति में आती रही हैं। ब्रह्मा बाप की विशेष शिक्षा है - स्मृति स्वरूप बापदादा के बनो। अकेले बाप भी नहीं, अकेले ब्रह्मा बाप भी नहीं। दोनों को याद करो। दोनों की पालना आगे से आगे बढ़ा रही है। तो आज विशेष दिन के हिसाब से विशेष ब्रह्मा बाप की याद सबके दिल में है और फालो फादर कर रहे हैं क्योंकि साकार में आपके समान ब्रह्मा बाप भी रहा। तो ब्रह्मा बाप सदैव कहता है बापदादा दोनों को फालो करो। जैसे ब्रह्मा बाबा साकार में रहते, साकार में पार्ट बजाते बच्चों से भी और बाहर की सेवा में भी, ऐसे आप भी फालो ब्रह्मा बाबा करो। और बापदादा ने देखा बच्चे दोनों को फालो कर चल रहे हैं। बापदादा दिल में रोज़ अमृतवेले उन सिकीलधे बच्चों को, जो फालो करने वाले हैं उन्हों को विशेष यादप्यार देते हैं। वाह बच्चे वाह! का वरदान देते हैं।

तो आज के दिन जैसे ब्रह्मा बाप की विशेषता देखी है या सुनी है, ऐसे ही फालो कर रहे हैं ना! ब्रह्मा बाप की आप जैसे साकार में होते सर्व सम्बन्धों में आते प्रैक्टिकल लाइफ सुनी या देखी, तो ब्रह्मा बाप ने आज विशेष बापदादा दोनों को फालो करने वाले बच्चों को सामने लाके विशेष यादप्यार दी है। तो ब्रह्मा बाप की याद स्वीकार की! बहुत-बहुत दिल से प्यार दिया है। प्यार माना फालो फादर का वरदान मिलना। तो सब बापदादा को फालो कर रहे हैं ना। कर रहे हैं हाथ उठाओ। भले देखा नहीं ब्रह्मा बाप को साकार में लेकिन चरित्र सुनकर ब्रह्मा बाप से दिल में मिलन मनाते

फालो कर रहे हैं। ब्रह्मा बाप भी बच्चों पर खुश है। तो फालो को कभी नहीं छोड़ना, बाप दादा दोनों को फालो करो क्योंकि ब्रह्मा बाप ने आप ही जैसा साकार रूप में पार्ट बजाया और पास हो गये। आज का यादगार ब्रह्मा बाप के पास होने का है। फालो फादर है ना। है? फालो करते हो ब्रह्मा और शिवबाबा को? जो फालो कर रहे हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा सभी उठा रहे हैं। बहुत-बहुत बधाई हो, बधाई हो।

आज अमृतवेले अव्यक्त ब्रह्मा बाप ने विशेष दिल से अति स्नेह रूप से एक एक बच्चे को बहुत स्नेह से इमर्ज कर, साकार में इमर्ज कर बहुत यादप्यार दिया है। आपने देखा इतना प्यार साकार रूप में बाप देता जो देखते ही दिल में सम्पूर्ण बनने का उमंग-उत्साह आ जाये। तो आप सबके मन में ब्रह्मा बाप समान साकार में पार्ट बजाने का स्मृति में रहता है ना! देखा नहीं, सुना तो है ना! ब्रह्मा बाप ने साकार में क्या क्या किया। कैसे प्रीति की रीति निभाई। सेवा भी की प्रीति की रीति भी निभाई। फालो फादर करने वाले हो ना! हाथ उठाओ जो करने वाले हैं, कर रहे हैं। कर भी रहे हैं, कर रहे हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप से सबका प्यार है। भले साकार में नहीं देखा लेकिन ब्रह्मा बाप की पालना सुनते ही फालो करने का संकल्प दिल में आता है।

तो आज ब्रह्मा बाप का विशेष यादगार दिन है और ब्रह्मा बाप ने सभी बच्चों को हर ज़ोन को इमर्ज किया। ज़ोन में तो आप सब होंगे ना। तो एक एक को यादप्यार दिया। याद मिली? हाथ उठाओ। बहुत प्यार से याद किया वाह बच्चे वाह! सिकीलधे बच्चे वाह! और अभी भी ब्रह्मा बाप तो अव्यक्त रूप में मिलते रहते हैं। तो सभी बापदादा के पालना में चल रहे हैं ना! कि कभी-कभी मिस भी करते हैं? जो चल रहे हैं, अटेन्शन है, ब्रह्मा बाप और शिव बाप दोनों में फालो करने का उमंग उत्साह है वह हाथ उठाओ। अच्छा। भले ब्रह्मा बाप को कई बच्चों ने देखा नहीं है लेकिन जानते तो हैं ना हमारा बाप। ब्रह्मा बाप को याद करते सहज साकार में पालना में ताकत आती है। कईयों को मुश्किल लगता है ना! आज की दुनिया में फालो करना मुश्किल भी लगता है लेकिन ब्रह्मा बाप ने कितना पार्ट एक्यूरेट बजाया। ऐसे ही फालो फादर। ब्रह्मा बाप ने भी तो सामना किया लेकिन पास हो गये। तो आप सबका भी यह दृढ़ संकल्प है कि अन्त तक पार्ट बजाते पार्ट में पास होना ही है, हुआ ही पड़ा है। हुआ पड़ा है कि होना है! हुआ पड़ा है निश्चय है ना! हमारी विजय पाने की मौसम है, संगमयुग की विशेषता है। तो समय की विशेषता को यूज़ करते चलो। वरदान है संगमयुग को, बापदादा को फालो करने का। तो सभी वरदान यूज़ करते हैं, हाथ उठाओ। ब्रह्मा बाप और शिव बाप, बापदादा का वरदान चला रहा है।

आज तो ब्रह्मा बाप का यादगार दिन है। तो सुबह से लेके ब्रह्मा बाप को सालों साल साकार में पालना करने का अटेन्शन रहा ना। ब्रह्मा बाप ने कैसे किया! कितना प्यार निराकार बाप से लिया और दिया। तो आज ब्रह्मा बाप को देखने वाले तो कम है लेकिन जिन्हों ने ब्रह्मा बाप को साकार में देखा वह लम्बा हाथ उठाओ। अच्छा। यह सब, मैजारिटी यह तरफ (बहिनों की तरफ) पीछे आये हैं। हाँ जो ब्रह्मा बाप के समय में आये वह हाथ उठाओ। पीछे आने वाले हाथ नहीं उठा रहे हैं। तो आज ब्रह्मा बाप ने विशेष सभी बच्चों को चाहे पुराने चाहे नये दोनों को बहुत-बहुत दिल से याद दी है। आ गये ब्रह्मा बाप सामने। सामने आ गया, हाथ उठाओ। सभी के दिल में आ गया क्योंकि चित्र तो सबने देखा है।

तो आज का दिन याद तो साथ-साथ बापदादा दोनों आते हैं लेकिन आज विशेष दिन के कारण जिन्होंने पालना ली है ब्रह्मा बाप द्वारा उन्हों को याद ज्यादा आती है। तो ब्रह्मा बाप ने जो साथ रहे, प्रैक्टिकल पालना ली उन्हों को विशेष याद सिर पर हाथ घुमाके ऐसे करते दी है, दी तो सभी को है लेकिन पहले उन्हों को दिया फिर सभी को दिया। तो आज ब्रह्मा बाप का दिन होने के कारण विशेष ब्रह्मा बाप की याद आप हर एक को ब्रह्मा बाप ने दी है। अच्छा। अब तो समय हुआ है, आज कौन मिलना है?

सेवा का टर्न इन्दौर ज़ोन का है, होस्टल की कुमारियां भी आई हैं, टोटल 7 हजार आये हैं:- बहुत अच्छा। बहुत करके इन्दौर वाले आये हैं। इन्दौर वाले हाथ उठाओ। मुबारक हो। अच्छा है। सन्देशी जब भी वतन में जाती है तो ब्रह्मा बाप खास बच्चों को वाह बच्चे वाह करके याद करते हैं। अच्छा - इन्दौर वाले सब पुरुषार्थ में आगे से आगे हैं ना! कोई पीछे नहीं रहना। पीछे रहने वालों को प्राप्ति भी तो पीछे होगी ना, इसलिए सदा नम्बरवन। हमेशा हर कार्य में नम्बरवन जाना ही है। चाहे अभी इन्दौर ज़ोन है लेकिन आये तो सभी ज़ोन हैं तो खास आज इन्दौर को और सभी को ब्रह्मा बाप की तरफ से विशेष यादप्यार है। इन्दौर वाले हाथ उठाओ। बहुत अच्छा पार्ट बजाया, सर्विस का फल स्वयं भी लिया औरों को भी दिया, अच्छा किया।

डबल विदेशी 400 आये हैं :- खास डबल विदेशियों को डबल यादप्यार स्वीकार हो। बापदादा को विश्व कल्याणी प्रसिद्ध करने में विदेशी निमित्त बने हैं। पहले भारत कल्याणी थे अभी विश्व कल्याणी नाम प्रसिद्ध है। तो विदेश ने कमाल की ना! बापदादा भी विशेष विदेशी बच्चों को दिल से आफरीन देते हैं। पहचान तो लिया लेकिन सेवा भी कर रहे हैं। विदेश की सेवा हमेशा सुनते रहते हैं। अच्छे उमंग-उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। (ताली बजाओ)

कलकत्ता के ग्रुप ने तीनों स्थानों पर फूलों का अच्छा श्रृंगार किया है:- जिन्होंने फूलों का श्रृंगार किया वह अभी हैं। अच्छा। भले आये, जी आये। बापदादा बच्चों को देखके खुश होते हैं। अपने घर में आये हैं ना। यह तो सेवा के कारण अलग-अलग गये हैं। बाकी हैं तो सभी मधुबनवासी। अच्छा।

बापदादा को तो हर एक बच्चा दिल में समाया हुआ है। चाहे कहाँ भी रहते हैं देश में या विदेश में। लेकिन दिलाराम के दिल में समाया हुआ है। अच्छा।

दादी जानकी से:- (लण्डन जा रही है इसलिए खुश है) सदा खुश है। बाप साथ देंगे।

निर्वैर भाई से:- तबियत ठीक है। हिसाब पूरा हुआ। अभी वह हिसाब तो पूरा हुआ। सेवा हुई। अच्छा।

मोहिनी बहन से:- खुश रहती हो खुशी चला रही है। बाप की याद के साथ खुशी भी चला रही है।

बृजमोहन भाई से:- (ओ.आर.सी वालों की और मोहित भाई की याद दी) उसको याद देना, टोली भेज देना।

रमेश भाई से:- तबियत ठीक है।

गोलक भाई से:- ठीक है। सदा ठीक रहना ही है और कोई सवाल ही नहीं। (सभी के लिए) सब ठीक रहने वाले हैं।

''स्मृति दिवस पर कोई न कोई विशेषता स्वयं में धारण कर कमियों को समाप्त करना, भारत में भारत का पिता गुप्तवेष में आ गया है, इस आवाज को चारों ओर स्पष्ट फैलाना''

सभी चैतन्य दीपकों को मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। हर एक चैतन्य दीपक अपनी-अपनी चमक से विश्व को चमका रहे हैं। एक-एक चैतन्य दीपक कितना अच्छे ते अच्छा चमक रहा है। यह देखकर बापदादा एक-एक दीपक को देखकर खुश हो रहे हैं। वाह दीपकों वाह! सच्ची दीवाली अगर देखनी हो तो इन चैतन्य दीपकों के बीच में देख सकते हैं। बापदादा भी एक-एक दीपक को देख खुश हो रहे हैं। वाह! एक-एक दीपक वाह! क्योंकि आप एक-एक दीपक बाप के अति लाडले हो। इतनी बड़ी विश्व में से आप सिकीलधे दीपको को बाप देख खुश हो रहे हैं और दिल में गीत गा रहे हैं, हर एक दीपक परमात्म प्यारे और दिल में समाने वाले हैं। सच्ची दीपमाला तो बाप सम्मुख देख रहे हैं और एक-एक दीपक के लिए वाह वाह के गीत दिल में गा रहे हैं। हर एक दीपक की अपनी-अपनी विशेषता बाप भी देख रहे हैं और आप सभी तो देखते ही रहते हैं। आप दीपकों द्वारा विश्व चमक रहा है और हर एक दीपक अपनी रोशनी से विश्व को रोशन बना रहे हैं। बापदादा रिजल्ट को देख खुश है कि हर एक दीपक अपनी रोशनी से चारों ओर चमकाना, यह कार्य बहुत अच्छा दिल से कर रहे हैं।

अभी इस दिव्य रोशनी को देख दुनिया वालों की भी नज़र में आ रहा है कि विश्व में यह अलौकिक रोशनी कहाँ से आई है! सबकी नज़र आप सबकी तरफ जा रही है।

आज स्मृति दिवस पर बापदादा आप स्मृति के दीपकों को देखकर हर्षित हो रहे हैं। कितना एक-एक दीपक अपनी झलक दिखा रहे हैं, जिससे विश्व परिवर्तन हो रहा है। अंधकार बदल रोशनी में आ रहा है और अभी दिल में सभी आत्माओं को यह संकल्प है कि कहाँ से रोशनी आ रही है! धीरे-धीरे इस रोशनी को देख वा आप दीपकों को देख खुश भी बहुत हो रहे हैं। यह रोशनी चारों ओर फैलनी ही है। अच्छा।

दिल्ली - आगरा ज़ोन की सेवा का टर्न है:- ऐसे हाथ उठाओ। भले पधारे। देहली वालों को बापदादा एक-एक को विशेष यादप्यार दे रहे हैं। देहली वालों को देहली को परिस्तान बनाए अपना राज्य दिल्ली में स्थापन करना है। सेवा कर रहे हैं, अभी और ज़ोर से आवाज हो कि देहली अभी परिस्तान बनना है। सबको पता पड़े, सेवा अच्छी कर रहे हो लेकिन अभी सभी तक आवाज नहीं गया है। कोने-कोने में यह तो पता पड़ना चाहिए कि हमारे सतयुगी राज्य अधिकारी गुप्तवेष में आ गये हैं। अभी सेवा द्वारा यह तो परिवर्तन आया है कि ब्रह्माकुमारियां जो बताती हैं वह अच्छा बताती हैं, अभी यह आवाज हो कि सत्य बताती हैं। वह भी दिन आ जायेगा क्योंकि अभी आवाज पहुंचा है लेकिन अभी आवाज में फोर्स चाहिए। सबकी नज़र परिवर्तन हो रही है, यह समझते हैं लेकिन करने वाले कौन, वह अभी पूरा प्रत्यक्ष नहीं हुआ है। धार्मिक लोग समझते हैं कि कुछ होने वाला है लेकिन अभी यह आवाज प्रसिद्ध हो कि परमात्मा द्वारा यह नई दिल्ली बनाने वाले आ गये हैं। यह अभी स्पष्ट रीति से आना चाहिए। आप लोग सेवा कर रहे हो, सेवा अच्छी कर रहे हो। पहले जो सुनने नहीं चाहते थे, अभी सुनने चाहते हैं लेकिन सुनने वाले क्या बनने वाले हैं, हो रहा है। बापदादा बच्चों की सेवा पर खुश है, कर रहे हो लेकिन आवाज अभी बुलन्द नहीं है, चारों ओर नहीं फैलता। फैल रहा है लेकिन ऐसी रफ्तार से फैले जो सबके मुख से निकले विश्व पिता आ गये, विश्व पिता के बच्चे गुप्तवेष में अपना कार्य कर रहे हैं। अभी थोड़ा थोड़ा आवाज फैल रहा है लेकिन अभी थोड़ा ज़ोर से फैलना चाहिए। शुरू हुआ है लेकिन कोने कोनों में अब चारों ओर आवाज करने वाले स्पष्ट बोलें कि परिवर्तन होना ही है, हो रहा है।

कलकत्ता का गुप आया है, पूरा फूलों का श्रृंगार किया है:- कलकत्ता वाले सभी भाई बहिनों को चाहे यहाँ आये हैं, चाहे वहाँ हैं लेकिन यह आवाज कलकत्ता से चारों ओर फैला है कि कुछ हो रहा है लेकिन सोच रहे हैं, अन्दर-अन्दर समझ रहे हैं कुछ परिवर्तन दिखाई तो देता है लेकिन अभी ज़ोर से धूम मचाके बोले परिवर्तन करने वाले हमारे साथी अब अपना कर्तव्य कर रहे हैं और आगे चलके यही कर्तव्य स्पष्ट हो जायेगा। लेकिन समझते हैं कुछ परिवर्तन हो रहा है। अभी पहले जैसे वह नहीं है कि होना मुश्किल है, कैसे होगा, क्या होगा, यह क्वेश्चन नहीं है। अभी समझते हैं हो रहा है लेकिन कहाँ कैसे कभी-कभी समझ में भी आता है लेकिन अभी स्पष्ट बुद्धि में यह नहीं आया है कि यहाँ आबू तरफ इशारा करे, आबू में यह कार्य हो रहा है, यह आवाज से स्पष्ट नहीं कर सकते लेकिन अभी पहले जो समझते थे तो यह कर्तव्य ब्रह्माकुमारियां कहती हैं लेकिन हो गुप्त रहा है, अभी समझते हैं कि ब्रह्माकुमारियां कुछ परिवर्तन करने का कार्य कर तो रही हैं लेकिन अभी स्पष्ट नहीं है। यही समझे ब्रह्माकुमारियां ही निमित्त हैं, कोई-कोई समझने लगे हैं लेकिन प्रत्यक्ष रूप में नहीं है वह भी समय आ जायेगा। अभी आप लोगों का जो परिवर्तन हो रहा है, उसका प्रभाव पड़ रहा है और पड़ते

पड़ते आखिर स्पष्ट हो जायेगा।

दादी जानकी से:- (मेरा बाबा) मेरी बच्ची। बहुत अच्छा चला रही हो, चलता रहेगा। आपको निमित्त बनने की बहुत-बहुत मुबारक हो।

डबल विदेशी-400 आये हैं:- अच्छा है, बधाई हो। आप सब निमित्त बने हैं बाप के कर्तव्य को प्रसिद्ध करने के लिए। तो बापदादा खुश है। कर रहे हैं, बढ़ भी रहे हैं लेकिन अभी स्पीड थोड़ी बढ़ाओ। बाकी शुरू हुआ है, समझते हैं कुछ होने वाला है, आसार सभी के पास पहुंच रहे हैं लेकिन अभी कोई निमित्त बनें कहने के लिए, वह अभी निकलेगा। गुप्त है। हो जायेगा। अभी आप लोग भी यह दृढ़ संकल्प रखो तो बाबा को प्रत्यक्ष करना ही है। है संकल्प है, लेकिन अभी दृढ़ता लाओ संकल्प में। होना ही है, होना है लेकिन इस तरफ थोड़ा अटेन्शन दो। कर रहे हैं, अपने अपने तरफ से, अपना कर रहे हैं। ऐसे भी नहीं, नहीं कर रहे हैं लेकिन मिलकर यह आवाज बुलुन्द हो। जो होना है, वह हो रहा है। वह हो जायेगा।

सभी खुश है! खुश हैं सभी, हाथ उठाओ। तैयार हो? तैयार हो ना! उमंग सबमें हैं, कुछ करना है, कुछ करना है, हो भी रहा है लेकिन स्पीड बढ़ाओ।

बापदादा सभा को देख खुश भी हो रहे हैं क्योंकि सभी बच्चों के अन्दर अभी यह संकल्प है कुछ करना है, करना है, और यह संकल्प आपका कोई न कोई जलवा दिखायेगा। संकल्प अच्छा है। सभी के दिल में है ना, अब कुछ नया हो, नया हो। तो सबने खुशी-खुशी से संगठन में यह संकल्प किया है कि अभी भारत में कम से कम जो एरिया रही हुई है वहाँ अपना फर्ज निभाना है। हर एक की एरिया में जो भी मुख्य शहर है, वहाँ अभी यह प्रसिद्ध हो तो ब्रह्माकुमारियां क्या चाहती हैं। अब ब्रह्माकुमारियां जो चाहती हैं उसमें मददगार बन रहे हैं और बनना है। अभी धीरे-धीरे प्रसिद्ध हो रहा है, हो ही जायेगा इसलिए उमंग-उत्साह से आगे बढ़ते चलो। आप एक-एक निमित्त हो, ऐसे नहीं जो बड़े करते हैं, हम भी करते हैं। करते हैं उसके लिए पास हो, उसके लिए मुबारक हो। परन्तु अभी आवाज थोड़ा बुलुन्द हो। भारत में भारत का पिता गुप्तवेष में आ गये हैं, यह आवाज थोड़ा स्पष्ट फैलाओ। दुख तो बढ़ रहा है। सब तंग तो हैं लेकिन कहाँ-कहाँ अल्पकाल का सुख उन्हों को सुला देता है। तो अब सेवा में भी चेक करो किस-किस तरफ किस-किस एरिया में करना है, वह हर एक सेन्टर अपने-अपने एरिया को चेक करे और वहाँ सर्विस का आवाज फैलाये। कहाँ-कहाँ अच्छे हैं लेकिन सारे भारत को जगाना है तो अभी चेक करो और चांस लो। चारों ओर अभी आवाज फैलना चाहिए कि अभी हमें खुद भी परिवर्तन होना है और विश्व को भी परिवर्तन करने के कार्य में लगना है। तो सभी खुश है? खुश हैं? दो-दो हाथ उठाओ।

मोहिनी बहन से:- अभी तबियत अच्छी हो रही है, हो जायेगी इसीलिए सेवा में धीरे-धीरे पार्ट लेती जाओ। (आपके वरदान से शक्ति मिलती है) सेवा का शौक भी है वह आपको आगे बढ़ा रहा है और बढ़ाता रहेगा। (सेवा का उमंग है) हो जायेगा। आप जैसे अपने को चला रही हो ना, तो सेवा भी चल रही है, कोई ऐसी बात नहीं है।

तीनों भाइयों से:-समय की रफ्तार तो आप सब भी देख रहे हो। समय अभी स्पष्ट हो रहा है कि कार्य जो गुप्तवेष में कर रही हैं ब्रह्माकुमारियां, वह पहले समझ नहीं सकते थे क्या करती हैं यह, अभी धीरे-धीरे यह समझते हैं कि यह विश्व परिवर्तन करने के लिए उमंग-उत्साह बढ़ा रहे हैं इसीलिए अभी वायुमण्डल में भी बहुत फर्क है, भावना धीरे-धीरे बढ़ रही है। अभी सेवा की धरनी बन गई है। अभी जितना करना चाहो उतना फायदा ले सकते हो।

आज के स्मृति दिवस पर एक-एक बच्चे को इस दिन की स्मृति के साथ समर्थी चाहिए। तो सभी बच्चे इस स्मृति दिवस पर आज अपने में कोई न कोई विशेषता ध्यान में रख और अपने में धारण करें, विशेष दिन पर विशेषता धारण करें। जो भी अपने में कमी समझते हो उस कमी को आज के दिन समाप्त कर कोई न कोई उमंग उत्साह की धारणा का संकल्प करना। सोने के पहले यह संकल्प करके सोना और अमृतवेले उसी को दोहरा कर हमेशा के लिए अटेन्शन देते-देते बाप समान बन जाना ही है। सभी को बहुत-बहुत यादप्यार स्वीकार हो क्योंकि सभी बहुत उमंग-उत्साह से आये हैं और सब मिल करके 18 जनवरी मना रहे हैं तो 18 जनवरी की विशेषता क्या है, उस विशेषता को अपने में धारण करके आगे बढ़ते रहना, बढ़ना ही है यह पक्का निश्चय करो कि जो भी कोई कमी है उसको आज रात तक सोच करके और संकल्प लेके सोना। अच्छा।

डबल विदेशी उठो, खड़े हो जाओ। बहुत अच्छा। सभी को बहुत बहुत बहुत बहुत यादप्यार और आगे के लिए बिल्कुल सम्पन्न, यह वरदान है।

दादी जानकी से विदाई के समय:- बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो।

''रूचि से पढ़ाई पढ़ने वाले स्टूडेन्ट कभी किसी सबजेक्ट में फेल नहीं हो सकते, फेल होना माना फील करना''

ओम् शान्ति। सभी ने बापदादा द्वारा पहले तो दृष्टि प्राप्त की, भले देखा तो आपने इन स्थूल नेत्रों द्वारा लेकिन इन नेत्रों में भी बाप की दृष्टि पड़ने से यह दृष्टि भी परिवर्तन हो जाती है। सभी को सारी सभा में कौन दिखाई देते हैं? सभी नम्बरवार ब्राह्मण दिखाई देते हैं। थोड़ा बहुत बीच-बीच में मिक्स तो होता है लेकिन सभी की बुद्धि में बापदादा ही है। हर एक यही सोचते हैं हमारा बाबा आ गया। सभी की बुद्धि में मेरा बाबा, मेरा बाबा आ गया। हर एक के नयनों में यही खुशी की झलक समा गई हैं, मेरा बाबा आ गया। सबके नयनों में कौन? मेरा बाबा। नयनों में भी बाबा दिखाई देता, बुद्धि में भी बाबा ही दिखाई देता इसीलिए आप सबकी आंखों में प्यारा बाबा, मीठा बाबा, मेरा बाबा समा गया है। बाप भी बच्चों को उसी रूप में देखते मेरे बच्चे और बच्चे भी उसी रूप से देख रहे हैं मेरा बाबा। सभी के दिल में क्या दिखाई दे रहा है? मेरा बाबा आ गया। मेरा बाबा, मेरा कहने में कितनी खुशी होती है। मेरा बाबा, भले कितना भी कहें - यह लण्डन के हैं, यह इन्डिया के हैं। कितना भी कहें लेकिन सबसे पहले क्या आता? मेरा बाबा आ गया। बाबा और बच्चे का मिलन हो रहा है। यह मिलन भी विचित्र मिलन है। स्थूल में कोई किस एज़ का है, कोई किस एज़ का है लेकिन कौन है, तो शार्ट में कहेंगे बाप और बच्चे बैठे हैं। चाहे 100 वर्ष वाला हो, चाहे डेढ़ सौ वर्ष वाला हो लेकिन क्या कहेंगे? सब बाबा के बच्चे बैठे हुए हैं। जब यहाँ बैठते हो आके तो परिचय क्या देंगे? भले किस भी रूप में आये हो लेकिन यहाँ आने से किस रूप में बैठते हो? स्टूडेन्ट रूप में। बाबा के आगे स्टूडेन्ट के रूप में बैठे हैं और बाबा के बच्चे पूरे वर्ल्ड के चारों तरफ के कोई न कोई आये हुए हैं। भले कोई किस देश के, कोई किस देश के हैं लेकिन यहाँ बैठे हुए क्या फील कर रहे हो? गॉडली स्टूडेन्ट हैं और टीचर भी कौन है? स्वयं भगवान हमारे लिए विशेष मिलने आये हैं। भगवान हमसे मिलने आये हैं या हम भगवान से मिलने आये हैं। जो भी आये, पहचानते हैं तो क्या कहेंगे? बाबा के पास जा रहे हैं, बाबा के पास जा रहे हैं और हर एक की शक्ल में मिलने की भावना कितनी दिखाई देती है। सभी की शक्ल में बाप और बच्चों के भावना की सूरत है। सभी की शक्ल में कितना प्यार है, वाह बाबा वाह! सबकी दिल यही गीत गा रही है और कितना प्यार, कैसा बाप और बच्चे के रूप में मिलन, आज की सभा में देखो तो और कोई सम्बन्ध नहीं, बाप और बच्चा। चाहे बुजुर्ग हो, चाहे कोई भी सम्बन्ध में हो लेकिन हैं सब स्टूडेन्ट के रूप में। सभी की बुद्धि में स्टूडेन्ट की भावना समाई हुई है। सभी की बुद्धि में एम आबजेक्ट यही है, अनेक देश अनेक आत्मायें, लेकिन इस ब्राह्मण जीवन में सभी स्टूडेन्ट के रूप में हैं। चाहे बुजुर्ग है, चाहे छोटा बच्चा भी है। वह तो है ही बच्चा लेकिन फिर भी स्टडी करने वाले सब स्टूडेन्ट बैठे हैं।

आज बाबा ने यह कहा, आज बाबा ने यह कहा, आज बाबा ने अशरीरी बनने की बात सुनाई, कितनी अच्छी बातें बाबा सुना रहे हैं। सभी के मन में इस समय अपना रूप भी कौन सा दिखाई दे रहा है? स्टूडेन्ट। चाहे बुजुर्ग है, चाहे छोटा है। काम भी वही कर रहे हैं पढ़ाई और इस पढ़ाई में शक्ति कितनी भरी हुई है। हैं कितने साधारण लेकिन पढ़ाई द्वारा क्या बन रहे हैं? कोई से भी पूछेंगे आज क्या पढ़ने आये हो? तो सब कहेंगे हम मनुष्य से देवता बन रहे हैं और कितने प्यार से पढ़ाई पढ़ते हैं। हर एक ऐसे रूचि से पढ़ रहे हैं लेकिन अगर दूसरी बात बीच में आ गई तो मुख्य बात जो चल रही है वह तो मिस हो जायेगी ना। लेकिन देखा गया मैजारिटी मिक्स तो होता है सबमें लेकिन आये सब पढ़ने के लिए हैं, स्टूडेन्ट रूप में और देखा गया है कि जब सभी स्टडी करने के रूप में आते हैं तो इनकी शक्ल से ही लगता है यह कोई बहुत पढ़ाई में बिजी है और इन्हों को पढ़ाने वाला कौन है? वह अगर ध्यान में रहे तब तो बेड़ा पार हो गया। परमात्मा पढ़ाने वाला है, यह कभी सुना है क्या कि परमात्मा पढ़ाता भी है लेकिन इस पढ़ाई में मैजारिटी सब पास हो जाते हैं क्यों? यहाँ का जो टीचर है, ऐसी विधि से पढ़ाता है जो सुना वह जैसे छपाई हो रही है। भूलता नहीं है। सब खुशी खुशी से पढ़ रहे हैं। अभी भी तो देख रहे हैं ना बहुत थोड़े हैं जो कोई न कोई सरकमस्टांश अनुसार आये पढ़ने के लिए हैं लेकिन कहाँ पढ़ाई के बजाए और कोई सबजेक्ट में अटेन्शन चला जाता है। सबको विशेष जो होमवर्क दिया गया है, कई तो अभी भी उसकी तरफ अटेन्शन दे रहे हैं, अब भी वही याद कर रहे हैं। पढ़ाई से प्यार है, लास्ट टाइम तक भी पढ़ाई में अटेन्शन है। ऐसे स्टूडेन्ट हाल में पौने से भी ज्यादा हैं। यह बापदादा देख रहे हैं कि इस क्लास में बैठे हुए स्टूडेन्ट की विशेषता है और कमाल यह है कि पढ़ाई के तरफ अटेन्शन देने वाले हैं। तो आप कौन हो? वह

तो हर एक खुद जानते हैं। लेकिन देखा गया तो अभी के स्टूडेन्ट जो हाज़िर हैं, उन्हों में मैजारिटी पढ़ने के शौकीन हैं। यह देखकरके बाप को भी अच्छा लग रहा है। पढ़ाई के तरफ अटेन्शन अच्छा है। यह रिजल्ट अच्छी है। अभी इसको आगे बढ़ाना है। पढ़ाई में शौक बढ़ाना है। पढ़ने में अटेन्शन देने वाले अच्छे हैं। तो जैसे आज की रिजल्ट में पढ़ाई वाले ज्यादा है और अपनी पढ़ाई शौक से पढ़ रहे हैं। संख्या भी अधिक है। तो देखा गया पढ़ाई पढ़ने वाले भी रूचि वाले हैं और टीचर भी पढ़ाने के शौकीन अच्छे हैं। वह भी हमेशा समझते हैं कि स्टूडेन्ट ज्यादा किसी कारण से फेल न हों, कम मार्क्स न लेवें। यहाँ तो सबने पढ़ाई का फल ले लिया है। सभी पढ़ाई का फल लेने वाले हैं इसीलिए अभी तक बैठे हैं, नहीं तो आधा क्लास तो चला जाता। रूचि की बात होती है, पढ़ाई में रूचि हो तो पढ़ाई छोड़ना बहुत बुरा लगता है। लेकिन देखा गया फिर भी रिजल्ट में यह जो क्लास आया है, इसमें रिजल्ट अनुसार रूचि है पढ़ाई में। ताली बजाओ। पढ़ाई की तरफ अटेन्शन है इसकी बधाई क्योंकि हैं तो स्टूडेन्ट। स्टूडेन्ट और पढ़ाई में रूचि न हो तो यह नहीं शोभता, इसलिए कहा कि सभी स्टूडेन्ट पढ़ाई तरफ अटेन्शन देने वाले हैं। तो जितने हैं उसके अनुसार रिजल्ट अच्छी है इसीलिए इस क्लास को फिर भी कहेंगे पास है और सभी की शक्लें देखो, सभी मुस्करा रहे हैं। हमेशा जो भी करो टाइम तो देते हो ना, चाहे घण्टा हो, चाहे आधा घण्टा हो लेकिन टाइम तो देते हो ना। तो टाइम की वैल्यु है इसलिए आपकी नेचर है जो काम करते होंगे ना, वह पूरा लगाकर ही करते होंगे। तो अभी का क्लास जो है वह अच्छी रिजल्ट देने वाला है और टीचर को कौन से स्टूडेन्ट अच्छे लगते हैं? आप जैसे। भले कहेंगे आज ही हम रेग्युलर हुए हैं लेकिन हुए तो सही ना। रेग्युलर की लिस्ट में आये तो सही ना, एक दिन भी आये। लेकिन यह नहीं सीखना तो एक दिन भी चलेगा, वह तो देखते हैं तो सभी खुश होते हैं। ज्यादा रिजल्ट देख करके खुश होते हैं कि हम भी पास में आ गये। इससे सभी समझ ही गये होंगे। बाकी अटेन्शन देना हमारा फर्ज है क्योंकि देखो टीचर भी मेहनत तो करते हैं ना। तो टीचर्स या स्टूडेन्टस दोनों को ज्यादा पास होने की मुबारक हो, मुबारक हो। अभी कभी भी कोई भी पेपर हो उसमें फेल नहीं होना। यह जो आपको सबक सिखाया, वह यह सिखाया, आज आप पास हो गये हो तो शक्लें देखो और जो फेल हुए हैं वह जैसे कांध नीचे कर लेते, नेचरल हो रहा है। कितना भी चाहें तो भी कांध नीचे हो जाता है। तो जब भी पेपर देने बैठो तो सदा यह दिन याद रखना कि पास होना ही है। टोटल रिजल्ट भी देखी गई, तो हिसाब से भी अच्छी रिजल्ट है। कभी भी जब भी पेपर देने बैठो तो हमेशा यह ध्यान रखना चाहिए कि फेल कभी नहीं होना है। फेल होना माना फील करने वाले। सारा साल आपको याद रहेगा कि मैं फेल हुआ, फेल हुआ इसलिए कायदे अनुसार तो बदली हो जायेगी लेकिन यह संकल्प कभी भी नहीं रखना कि जो हुआ सो अच्छा, कभी फेल, कभी पास तो होंगे ही! हमेशा पास तो नहीं होंगे! लेकिन यह शिक्षा तो सबको मिली कि जो पास हुए इसमें, वह कितने हैं और कितने निकले। वह हाथ उठाओ जो पास हुए। हाथ उठाने वाले कम हैं। सभा के हिसाब से कम हैं। हमेशा जब भी पढ़ाई पढ़ते हैं ना, उसमें यह भी लक्ष्य हो कि मुझे पास होके ही दिखाना है। अभी तक जो भी आप लोग पढ़े हैं। पहली से लेकर अब तक जितना भी दर्जे पढ़े हैं उसमें समझो अभी आठवीं का चल रहा है, तो आप कितने पास हुए? पास कितने होने चाहिए? चलो फुल पास नहीं तो थोड़ा कम, एक दो मार्क्स कम हुआ तो ठीक है लेकिन अगर ज्यादा मार्क्स में फेल हुआ तो ठीक नहीं, इसलिए अभी एम क्या रखेंगे? फेल हुआ तो भी एक ही बात है क्या! आप में से भी कोई समझते हैं कि एक दो मार्क्स से पास हुआ तो यह राइट है, या यह भी चलता है...। लक्ष्य यह रखो कि एक भी क्लास मिस नहीं हो क्योंकि स्टूडेन्ट की सदा एम यही रहती है कि मैं पास हो जाऊं। कोशिश करूंगा नहीं, हो जाऊं।

तो आज सभी ने मेहनत की। कितने परसेन्ट ने हाथ उठाया। हाथ तो उठाया लेकिन पास किस नम्बर तक हुए, वह भी तो देखना है ना। पास तो हो गये लेकिन पास ना के बराबर ही हुए, एक दो नम्बर से या ठीक पास जिसको कहते हैं वह हुए। तो हमेशा यह ध्यान रखो किसी भी बात में पास माना पास। फेल का नम्बर आवे, यह अच्छा नहीं। जरूर कोई ऐसी आदत होगी जिसमें बिजी रहते होंगे। फिर भी कितने लोग बैठे हैं यहाँ, जो पास हुए हैं वह हाथ उठाओ। अच्छे हैं, या आगे आगे ही बैठे हैं पास वाले। अच्छा है, जब पास में हाथ उठाते हैं तो नशा कितना चढ़ता है।

सेवा का टर्न महाराष्ट्र ज़ोन का है, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मुम्बई के 15 हजार आये हैं, बाकी सब 22 हजार आये हैं

महाराष्ट्र, तो बापदादा भी मुबारक देते हैं क्यों! इम्तहान दिया भी यहाँ हैं और यहाँ के पास भी ज्यादा हुए हैं। तो जो पास हुए हैं उन्हों को बहुत-बहुत बधाई। मेहनत की या लक है तो हो गये हैं। मेहनत किया है? जिसने मेहनत किया है वह हाथ उठाओ। मेहनत कम ने की है जितनी रिजल्ट है। लेकिन फिर भी इतने भी निकले हैं तो यह भी बापदादा को अच्छा लग रहा है। आधे से ज्यादा हैं। अच्छा है।

डबल विदेशी 50 देशों से 550 भाई बहिनें आये हैं:- अच्छा है फिर भी इतने तो निकले हैं। पुरुषार्थ फिर भी किया है अच्छा है। अच्छा, इन पास वालों के लिए ताली बजाओ। क्योंकि रिजल्ट मिलने से यह प्रभाव पड़ता है कि यह स्टूडेन्ट कैसे थे। पढ़ने के तरफ रूचि थी या और किसी बात में रूचि थी। फिर भी अच्छा है, (रतन दादा, रत्ना बहन, लण्डन के) एक ही घर में दोनों पास हैं! दोनों ही पास हो गये, यह तो बहुत अच्छा। अच्छा आप सबकी तरफ से बाप ही इनको मुबारक दे रहे हैं, इतने तो बोलेंगे नहीं इसलिए सभा के बीच में ही दे रहे हैं। अच्छा है रिजल्ट मिलने से उमंग आता है, तो इतनी रिजल्ट कम क्यों हुआ। हर एक समझेगा कि हम भी स्टडी करते तो नम्बर लेने में थोड़ा और आगे बढ़ जाते। और कर सकते हैं थोड़े अलबेले रहे हैं, हो जायेगा, हो जायेगा, नहीं। होना ही है।

(तीनों स्थानों पर फूलों का श्रंगार कलकत्ता वालों ने किया है) अच्छा है, कलकत्ते वाले बहुत आये हैं। इनसे यह सीखो कि हम भी इसी लाइन में उठें। ऐसे ही सीखते जायेंगे। अच्छा है जिन्होंने हाथ उठाया उनकी तरफ से इनको 100 गुणा ज्यादा मुबारक है। अच्छा है। सब उमंग उत्साह में हैं तो दूसरी बारी फिर नम्बर और आगे होंगे। एक बारी किया है ना, तो अभी उमंग आ गया कि हम भी हो सकते हैं तो दुबारा फिर जीत जायेंगे। तो कोशिश करना नम्बर और आगे हो।

फर्स्ट टाइम बहुत आये हैं:- आधा क्लास तो है। इतनी सभा में इतने थोड़ों ने हाथ उठाया। अगर थोड़ा और ज्यादा हो जाते तो कितना अच्छा होता। हम तो कहेंगे कि यह बहुत उमंग-उत्साह होना चाहिए। यह नम्बर लेना कोई रिवाजी बात नहीं है। नाम तो हुआ ना। सारी क्लास उनके मित्र सम्बन्धी कितने खुश हुए। वह भी अगर गिनती करें तो कितने होंगे। उनके माँ बाप चाचा चाची कितने खुश होंगे। लेकिन अच्छा है जो आपने नम्बर तो ले लिया। फिर भी नम्बर में तो आ गये ना। यह भी अच्छा है। ना से अच्छा है।

अच्छा, जो पहले नम्बर वाले आये हैं उन सभी को, इतनी सारी सभा को मुबारक।

दादी जानकी से:- आपको देख करके सबको उमंग आयेगा, यह कर सकती हैं तो हम क्यों नहीं कर सकते हैं। (मोहिनी बहन,न्युयार्क ने बहुत याद दी, जयन्ती बहन ने भी बहुत याद दी।) याद दी लेकिन आ नहीं सके। (वहाँ भी 18 जनवरी बहुत प्यार से सभी मनाते हैं)

कलकत्ता वालों ने बापदादा को हार पहनाया:- (मुन्नी बहन को देखकर) आप भी तो कलकत्ता से निकली हो ना।

मोहिनी बहन:- (बाबा आपके वरदानों से ठीक हूँ) अभी आगे भी ठीक रहेंगी। वह तो अच्छा है बाबा सभी को वरदान में हाँ हाँ कहता है, सिर्फ याद रखें।

(मधु बहन 20 साल से 18 जनवरी को तीनों स्थान फूलों से सजाती हैं) इन्होंने कोशिश की है नम्बरवन जाने की। कोशिश में अभी थोड़े नम्बर आये फिर दूसरे आ जायेंगे। कोई बात नहीं। लेकिन उमंग आयेगा कि हम थोड़ा पीछे रह गये हैं।

नारायण दादा से:- अभी और आगे जाकर दिखाओ। जैसे अभी नजदीक आके दिखाया, ऐसे इसमें भी नम्बर आगे जाके दिखाओ। कर सकता है। अभी कोई बुढ़ा नहीं है, जवान है। यह करना चाहे तो कर सकता है। ले सकता है, बस सिर्फ थोड़ा जोश भरना अपने में। (सबका सपोर्ट है) आपकी सपोर्ट है! पहले आपकी सपोर्ट है? पहले आपकी सबको सपोर्ट चाहिए। अच्छा।